DURGA SAH
MUNICIPAL LIBRARY
NAINI TAL
दुर्गा साह म्युनिसिपल पुस्तकालय
नैनी ताल

Class no 891·3
Book no M49T
Reg no 4165

तूलिका

सॉमरसेट मॉम की ख्यातिप्राप्त कृति

['दि मून एण्ड सिक्सपेंस' का हिन्दी अनुवाद]

अनुवादक :

नूर नबी अब्बासी

प्रकाशक :

नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्स,

दिल्ली ।

प्रकाशक :
नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्स
दरीबा कलाँ, दिल्ली ।

Durga Sah Municipal Library,
NAINITAL.
दुर्गासाह म्युनिसिपल लाईब्रेरी
नैनीताल

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण
सन् १९५७

Class No. ....
Book No. ....
Received on ....

मूल्य ५ रुपये ४ आने

मुद्रक :
हरिहर प्रेस, देहली ।

Toolika : Somerset Maugham : Rs. 5. 25 N.P.

१

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि जब पहले-पहल मेरी मुलाक़ात चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड से हुई तो मैं एक क्षण के लिए भी न भाँप सका कि उसमें कोई असाधारण बात है। फिर भी आज ऐसे विरले ही होंगे जो उसकी महानता से इन्कार करें। मैं उस महानता की बात नहीं करता जो कि सौभाग्यशाली राजनीतिज्ञ या सफल सैनिक अपने गुणों व प्रयत्नों द्वारा प्राप्त करते हैं—असल बात यह है कि वह महानता या विशेषता उस व्यक्ति की अपनी नहीं होती बल्कि उस ओहदे या स्थान की होती है जिस पर वह बैठता है और बहुधा परिस्थितियों में परिवर्तन आ जाने पर उस महानता में कमी भी आ जाती है। दफ्तर से बाहर एक प्रधान मंत्री बहुधा एक आडम्बरी वक्ता-मात्र नजर आता है और बिना सेना के सेनापति क़स्बे का एक निरीह नायक प्रतीत होता है लेकिन इसके विपरीत चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड की महानता अधिकृत थी। हो सकता है आप उसकी कला पसन्द न करें लेकिन यह असम्भव है कि आप उस कला में रुचि न लें और उसे श्रद्धांजलि न पेश करें। वह आप के विचारों को झिंझोड़ता है और साथ ही आप का ध्यान आकर्षित करता है। वह समय बीत गया जब उसका उपहास किया जाता था और अब यह हमारी कोई सनक या झक नहीं है कि हम उसका आदर करने लगे हैं और न ही यह हमारा कोई भटकाव है कि हम उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। उसके अपराध और न्यूनताए

वस्तुतः उसके गुणों और विशेषताओं के आवश्यक पूरक माने गये हैं। उसका कला में क्या स्थान है इस विषय पर आज भी तर्क-वितर्क किया जा सकता है और उसके प्रशंसकों की चापलूसी महत्व को घटाने वालों के तिरस्कार से शायद कुछ कम विवेकहीन नहीं है। किन्तु एक बात निस्संदेह है कि वह मेधावी था—असीम प्रतिभा का धनी था। मेरे नज़दीक कला की सर्वाधिक रोचक चीज़ कलाकार का व्यक्तित्व है और यदि वह अनुपम है तो मैं उसके तमाम अपराधों को क्षमा करने के लिए तैयार हूँ। मैं समझता हूँ वेलास्क्वे एलग्रेसों[1] से बेहतर चित्रकार था लेकिन समय व लोगों की रुचि में परिवर्तन आ जाने से उसकी उतनी पूछ नहीं रही। क्रेतान विषयी और शोकान्त अपनी आत्मा का रहस्य बलिदान की नाईं हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है। कलाकार, चित्रकार, कवि या संगीतज्ञ अपनी सजावट द्वारा चाहे वह उन्नत हो अथवा सुन्दर, सौंदर्यात्मक पक्ष की तृप्ति करता है परन्तु इस सबका वासना सम्बन्धी प्रकृति से घनिष्ठ सम्बन्ध है और इसीलिए उसमें उसका वहशीपन या पाशविकता भी अवश्य झलकती है साथ ही वह अपनी कला द्वारा अपनी महानता शक्ति भी आपके सम्मुख प्रस्तुत करता है। उसके रहस्य की खोज जासूसी कहानी जैसी आकर्षक और कौतूहलपूर्ण है। यह एक ऐसी पहेली है जो संसार की अन्य पहेलियों की तरह अपना जवाब नहीं रखती। स्ट्रिकलैण्ड की सर्वथा तुच्छ और महत्वहीन कृति भी एक व्यक्तित्व प्रगट करती है जो विचित्र है, सन्तप्त है और पेचीदा है। और यही दरअसल वह विशेषता है जिसके कारण वे लोग भी जो उसके चित्र पसन्द नहीं करते, उनके प्रति उदासीन नहीं रह सकते। और यही बात है जिसने उसके जीवन व चरित्र के प्रति हममें एक अद्भुत रुचि उत्पन्न की है।

स्ट्रिकलैण्ड की मृत्यु के चार वर्ष बाद मौरिस ह्यूरे ने 'मर्क्युरे द फ्रांस' में अपना वह लेख लिखा था जिसने उस अज्ञात चित्रकार को विस्मृति के गर्भ से बचा लिया और वह मार्ग प्रशस्त किया जिसका बाद के लेखकों ने कमोबेश आज्ञाकारिता के साथ अनुसरण किया है। एक लम्बे अर्से तक फ्रांस में ऐसा

१. स्पेन के प्रसिद्ध समकालीन चित्रकार, १६ वीं-१७ वीं शताब्दी।

दूसरा आलोचक नहीं जन्मा जिसका ऐसा अद्वितीय अधिकार था और जिसके दावों से प्रभावित हुए बिना रहना असम्भव था। उसके दावे यद्यपि अपरिमित लगते थे लेकिन बाद में लोगों ने जो निर्णय दिये उनसे चित्रकार के बारे में उस आलोचक के अनुमान और स्ट्रिकलैण्ड की कीर्ति की पुष्टि हो गई है और अब उन्हीं स्थापनाओं के अनुसार चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड का यश पूर्णरूपेण प्रमाणित हो चुका है। कला के इतिहास में इस यश का उत्थान सबसे अधिक रोचक घटनाओं में से एक है। लेकिन मैं चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड की कृतियों का उल्लेख अधिक नहीं करना चाहता बल्कि सिर्फ वहीं तक सीमित रखना चाहता हूँ जहाँ तक उनका उसके चरित्र से सम्बन्ध है। मैं उन चित्रकारों से सहमत नहीं हूँ जो बड़ी अहमन्यता से यह दावा करते हैं कि जन-साधारण तैल चित्र को बिल्कुल नहीं समझ सकते और जन-साधारण किसी पेंटिंग की सराहना यदि कर सकते हैं तो केवल मौन या चेकबुक द्वारा। यह एक ऐसा बेढंगा भ्रम है जो यह प्रकट करता है कि कला एक ऐसा माध्यम है जिसे केवल कलाकार ही भली प्रकार समझ सकता है। सच तो यह है कि कला भावना की अभिव्यक्ति है और भावना की भाषा सभी कोई समझ सकते हैं। हाँ, मैं यह मान सकता हूँ कि वह आलोचक जो किसी कला-विशेष की टेकनीक से अनभिज्ञ है और उसे उसका कोई व्यवहारिक ज्ञान भी नहीं है वह किसी भी महत्त्वपूर्ण विषय पर शायद ही कोई विचार व्यक्त कर सके और असल में मैं चित्र कला व पेंटिंग के बारे में बहुत ही कम ज्ञान रखता हूँ। मेरा सौभाग्य है कि मैं अपने इस कार्य में भटकूँगा नहीं क्योंकि मेरे एक मित्र मि० एडवर्ड लेगत ने जो एक योग्य लेखक व प्रशंसनीय चित्रकार हैं, अपनी पुस्तक में चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड की कृतियों का विशद विश्लेषण किया है और जो शैली का एक अत्यन्त सुन्दर उदाहरण है जिसका मैं समझता हूँ, फ्रांस में अधिक प्रचलन है अपेक्षाकृत इंग्लैण्ड के।

मौरिस ह्यूरे ने अपने लेख में चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड के जीवन की एक झाँकी भी दी थी जिससे कला-प्रेमियों की जिज्ञासा बहुत हद तक पूरी हो जाती है। वह कला के लिए एक निष्पक्ष उत्साह रखता था। इसीलिए वह समझ-बूझ वाले लोगों का ध्यान चित्रकार की उस प्रतिभा की ओर आकृष्ट करना चाहता था

जो पूर्णतया मौलिक थी। साथ ही एक अच्छा पत्रकार होने के नाते वह इस तथ्य से भी अपरिचित न था कि 'मानव-रुचि' उसे अपने उद्देश्य को प्रभावक बनाने में अधिक सहायक सिद्ध होगी और जब उन लोगों ने जो स्ट्रिकलैण्ड के सम्पर्क में आ चुके थे—वे लेखक जो उसे लंदन में जानते थे, चित्रकार जो उससे माँतमार्त्र के काफे में मिल चुके थे—यह जाना कि जिसे वे एक असफल कलाकार समझे हुए थे वह असल में एक अधिकृत मेधावी था तो उन्हें बड़ा अचरज हुआ और फिर तो फ्राँस और अमरीका की पत्रिकाओं में एक के बाद दूसरा लेख, किसी के संस्मरण, तो किसी का प्रशंसात्मक लेख छपा जिससे स्ट्रिकलैण्ड की कुख्याति और बढ़ गई और जनता की जिज्ञासा-पूर्ति भी हुई यद्यपि वह उन सबसे संतुष्ट न हो सकी। विषय बड़ा सुखद था और उद्यमी वीतब्रेक्त रोथौल ने अपने प्रभावक लेख में कई अधिकारी लेखकों की एक लम्बी सूची प्रस्तुत कर दी।

मानव जाति में कल्पित कथा के प्रति प्रवृत्ति स्वाभाविक है। वह उन लोगों के, जिन्होंने अपने को जन-साधारण से प्रमुख कर लिया है, जीवन में किसी भी घटना से बड़ी दिलचस्पी लेती है चाहे वह आश्चर्यजनक हो या रहस्यमय और उसके आधार पर एक ऐसी आख्यायिका गढ़ लेती है जिस पर कालान्तर में धार्मिक विश्वास पैदा हो जाता है। जीवन की सामान्यता के विरुद्ध यही रोमांस का विरोध है। आख्यायिका की घटनाएँ नायक की अमरता की निश्चित पासपोर्ट बन जाती हैं। व्यंग्यकारी दार्शनिक मुस्कराकर व्यंग्य से कहता है कि सर वाल्टर रैले को मानवता इसलिए पूजती है कि उसने महारानी एलिजबेथ के चलने के लिये अपना लबादा बिछा दिया था न कि इसलिए कि उसने इंगलिश लोगों का नाम अंधकारमय देशों में फैलाया था। चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड ने अज्ञातवास में जीवन बिताया था। उसने लोगों को दुश्मन ज़्यादा बनाया दोस्त कम। इसलिए यह कोई अजीब बात नहीं है कि उन लोगों ने, जिन्होंने उस पर लिखा, बड़े शौक़ के साथ अपनी थोड़ी-सी यादों को झिझोड़ा और लिपिबद्ध किया होगा और यह तो ज़ाहिर ही है कि जो कुछ भी थोड़ा-बहुत उसके बारे में प्रसिद्ध था वह किसी भी रोमांटिक लेखक को प्रेरित करने के लिए काफी था। उसके

जीवन में बहुत कुछ विचित्रता और भयंकरता थी, उसके चरित्र में एक घोर विद्रोह था और उसके भाग्य में तनिक करुणा भी न थी। कुछ ही समय में उसके सम्बन्ध में एक ऐसी आकस्मिक कथा गढ़ ली गई जिसका कोई भी समझदार इतिहासज्ञ सरलता से खण्डन नहीं कर सकेगा।

लेकिन एक समझदार इतिहासज्ञ माननीय रॉबर्ट स्ट्रिकलैण्ड (चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड के पुत्र) के बिल्कुल विपरीत हैं। उन्होंने चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड की जीवनी अपने पिता के जीवन के अंतिम भाग के बारे में 'उन भ्रांतियों को दूर करने के लिए लिखी जो लोगों में फैल गई थीं' और जिनसे 'जीवित लोगों को दुःख होता था।' यह स्पष्ट है कि लोगों ने स्ट्रिकलैण्ड के जीवन के बारे में जो आम बातें पढ़ी या सुनी थीं उनसे कोई भी सम्मानित परिवार उलझन में पड़ सकता था। मैंने यह रचना स्वयं बड़ी रुचि से पढ़ी है और मैं अपने को बधाई देता हूँ इसलिए कि वह नीरस और फीकी है। मि० स्ट्रिकलैण्ड ने एक श्रेष्ठ पति और पिता का, दयालु स्वभाव व्यक्ति का, उद्यमी और नैतिकता पर खरा उतरने वाले व्यक्ति का चित्रण किया है। इस आधुनिक पादरी ने अपने विज्ञानाध्ययन में वह बात प्रस्तुत की है जिसे मैं समझता हूँ व्याख्यापूर्ण लेख कहना चाहिये—यानी एक ऐसी सरल युक्ति जिससे चीजों को समझा दिया जाय लेकिन जिस मार्मिकता के साथ माननीय रॉबर्ट स्ट्रिकलैण्ड ने अपने पिता के जीवन के तथ्यों की 'व्याख्या' की है और जिसे एक आज्ञाकारी पुत्र स्मरण करने में उलझन महसूस करता है, वह निश्चित ही समय के तक़ाजे के अनुसार उन्हें चर्च के उच्चतम पद पर आरुढ़ करेगी। मैं अभी से उनकी शारीरिक मांस-पेशियों को धर्माध्यक्ष के वेश में ढँका हुआ देख रहा हूँ। यह एक संकटपूर्ण बात थी हालाँकि यह एक वीरतापूर्ण कार्य ही था इसलिए कि शायद वह कथा जो आम तौर पर लोगों ने सुनी है उसका स्ट्रिकलैण्ड की कीर्ति की वृद्धि में कोई योग न हो। इसलिए कि ऐसे असंख्य लोग हैं जो उसकी कला की ओर उसके चरित्र के प्रति उनकी ग्लानि ही की बदौलत आकृष्ट हुए हैं या उस करुणा के कारण जो उन्होंने उसकी मृत्यु से नत्थी की थी। और उसके पुत्र के सद्भावनापूर्ण प्रयासों ने वस्तुतः उसके

प्रशंसकों को निराश करने में ही सहायता दी। यह कोई आकस्मिक बात न थी कि जब उसका एक महत्वपूर्ण चित्र 'समारिया की नारी' जो मि० स्ट्रिकलैंड द्वारा लिखित जीवनी के प्रकाशन के बाद हुई बहस के फलस्वरूप क्रिस्टी को बेचा गया था उसके २३५ पौण्ड कम लगाये गये थे जबकि नौ मास पूर्व वही चित्र जब एक विख्यात चित्र-एकत्रकर्ता को बेचा जाने वाला था और जिसकी आकस्मिक मृत्यु के कारण उसे फिर से नीलाम किया गया था, उसके दाम उतने ज्यादा लगे थे। शायद चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड की प्रतिभा और मौलिकता उसके चित्रों की कीमत बढ़ाने में काम न आती यदि मानवजाति की कल्पित कथा पर विश्वास करने की वृत्ति इतनी बेचैनी से उस कहानी को नज़र-अंदाज़ न कर देती जिसने उसकी असाधारण वस्तु के प्रति जिज्ञासा व अभिलाषा को निराश कर दिया था। और फौरन ही डॉ० वीतब्रेक्त रोथौल ने वह कृति प्रस्तुत की जिसने समस्त कला-प्रेमियों के भ्रमों व संदेहों को खत्म कर दिया।

डॉ० वीतब्रेक्त रोथौल इतिहासज्ञों की उस शाला के अनुयायी हैं जिसका यह विश्वास है कि मानव-स्वभाव उतना बुरा ही नहीं है जितना कि हो सकता है बल्कि उससे कहीं बढ़कर बदतर है; और इसलिए पाठक का उन इतिहासज्ञों को पढ़ कर अधिक मनोरंजन हो सकता, बनिस्बत उन लेखकों को पढ़ कर जो काल्पनिक कथा के महान् विभूतियों को घरेलू गुण-सम्पन्न आदर्शपात्रों के रूप में प्रस्तुत करने में एक प्रकार का आनन्द प्राप्त करते हैं। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मुझे यह सोच कर दुःख होता है कि एन्तनी और क्लियोपात्रा के बीच आर्थिक स्थिति-विशेष के अतिरिक्त कुछ न था। और मुझे इस बात पर क़ायल करने के लिए कि तिबेरियस उतना ही निर्दोष शासक था जितना कि जार्ज पाँचवाँ इनसे कहीं अधिक पुरावों की ज़रूरत है जितने कि फिलहाल मौजूद हैं। डॉ० वीतब्रेक्त-रोथौल ने माननीय रॉबर्ट स्ट्रिकलैण्ड की मासूम जीवनी का ऐसे ढंग से ज़िक्र किया है कि इस अभागे पादरी के प्रति हमारी सहानुभूति उमड़ पड़ती है। उनका सुसंस्कृत मौन पाखण्ड बताया गया है, उनकी गोल-मोल बातों को साफ-साफ झूठ कहा गया है और उनकी खामोशी को विश्वास-

घात की संज्ञा देकर अपमानित किया गया है। और छोटे-मोटे अपराधों के आधार पर जो एक लेखक में यदि हों तो उसे दोषी ठहराया जा सकता है परन्तु यदि एक पुत्र में हों तो क्षम्य हैं—एंग्लो-सैक्सन वंश पर पाखण्ड, बकवास, छल, धोखा, धूर्तता और बुरे रसोइये होने के अपराध लगाये गये हैं। मेरा व्यक्तिगत विचार है कि मि० स्ट्रिकलैण्ड ने उन बातों का खण्डन करने में जो उनके माता-पिता के बारे में दुःखद भ्रम फैलाती थीं, कुछ जल्दबाजी से काम लिया। उन्होंने कहा है कि चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड ने पेरिस से एक पत्र लिखा था जिसमें अपनी पत्नी को 'एक अच्छी स्त्री' कहा था जबकि डॉ० वीतब्रेक्त-रोथौल ने उस पत्र की प्रतिलिपि भी छाप दी थी। और मालूम होता है कि जिस वाक्य का उन्होंने हवाला दिया था वह इस प्रकार था, 'खुदा गारत करे मेरी पत्नी को। वह बड़ी अच्छी स्त्री है। काश, वह नरक में होती!' कहना न होगा कि चर्च ने अपने अच्छे दिनों में गवाही व प्रमाणों को जो ठीक नहीं थे इस प्रकार इस्तेमाल नहीं किया था।

डॉ० वीतब्रेक्त-रोथौल चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड के बड़े जोशीले प्रशंसक थे और उनसे इस बात का कोई खतरा नहीं था कि वह उसकी महानता को समाप्त कर देंगे। बज़ाहिर निर्दोष लगने वाले कृत्यों के अन्दरूनी घृणित ध्येय को पहचानने में उनकी दृष्टि अचूक थी। वह मानसिक रोगों के विशेषज्ञ थे साथ ही कला के विद्यार्थी भी और उनकी अन्तश्चेतना की कोई बात भी उनसे छिपी न थी। अब तक ऐसा कोई सूफ़ी नहीं हुआ जो साधारण चीज़ों में से भी इतना गहरा अर्थ निकाल सकता। सूफ़ी उन चीज़ों को देखता है जिनकी व्याख्या न हो सके और मानसिक रोगों का विशेषज्ञ उन चीज़ों को, जिन्हें बयान न किया जा सके। किसी भी विद्वान लेखक की उत्सुकता को देखने में, जिसके द्वारा वह एक-एक ऐसी घटना खोज कर लाता है जो उसके नायक को अविश्वसनीय बना दे, जो अपूर्व आनन्द आता है वह अकथनीय है। जब वह क्रूरता अथवा नीचता का कोई उदाहरण पेश करता है तो उसका हृदय उत्साह व ओजता से भर जाता है और वह एक साधु के धर्म-कृत्य पर एक परीक्षक की नाईं उत्फुल्ल हो जाता है जब वह किसी विस्तृत कहानी द्वारा माननीय रॉबर्ट स्ट्रिकलैण्ड की

पैतृक पुण्यता को उलझा सकता है। उनका उद्यम आश्चर्यजनक है। ऐसी कोई बारीकी नहीं थी जिसे उन्होंने न देखा हो और आप खातिर जमा रखें कि यदि चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड ने कोई लाण्ड्री बिल अदा न किया हो तो उसका आपको पूरा विवरण दिया जायगा और यदि वह आधा क्राउन कर्ज लेकर वापस न देगया हो तब भी उस सौदे का उल्लेख होने से बच नहीं सकता।

२

जब कि चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड के बारे में इतना कुछ कहा जा चुका है तो और कुछ कहना अनावश्यक-सा लगता है। एक चित्रकार का स्मारक उसके चित्र हैं। यह सच है कि मैं उसे दूसरों की अपेक्षा ज्यादा क़रीब से जानता था। मैं सबसे पहले उससे उस समय मिला था जब वह चित्रकार नहीं बना था और उस समय जबकि वह पेरिस में बड़ी मुसीबत की जिन्दगी बिता रहा था, मैं उससे कई बार मिला था। लेकिन शायद मैं अपने संस्मरण कभी लिपिबद्ध न करता यदि युद्ध के संकट मुझे टाहिटी जाने पर विवश न कर देते। जैसा कि मशहूर है यही वह जगह है जहां उसने अपनी जिन्दगी के अंतिम वर्ष बिताये थे और वहीं मैं उन लोगों से भी मिला जो उससे परिचित थे। मैं इस स्थिति में हूँ कि उसके शोकान्त जीवन के केवल उस भाग पर प्रकाश डालूँ जो बहुत ही अंधकारमय और अज्ञात रहा है। यदि वे जो स्ट्रिकलैण्ड की महानता में विश्वास करते हैं, सही हैं तो उन लोगों के व्यक्तिगत वर्णन जिन्होंने उसे जीवित देखा था बेकार या अनावश्यक न होंगे। क्या हम उस व्यक्ति के संस्मरणों को जो एलग्रेसो से उसी

प्रकार निकट तासे परिचित था जैसे कि स्ट्रिकलैण्ड से मैं था स्वीकार नहीं करेंगे ?

लेकिन मैं इस क़िस्म के बहानों का सहारा नहीं लेना चाहता। मुझे याद नहीं वह कौन था जिसने इन्सानों की आत्मा की भलाई के लिए दो वे बातें प्रतिदिन करने का सुझाव दिया था जिन्हें वे पसन्द नहीं करते। निश्चय ही वह कोई बुद्धिमान व्यक्ति था और उसके इस उपदेश का मैंने बड़ी विवेकशीलता से पालन किया है क्योंकि मैं हर रोज बिस्तर से उठा करता था और रात को सो जाता था। किन्तु मेरे स्वभाव में कुछ माद्दा वैराग्य का है और मैं हर सप्ताह इन्द्रियों को वश में करने के लिए अपने शरीर को सख्त पीड़ा देता रहा हूँ। 'टाइम्स' के साहित्यक परिशिष्ट को मैं नियमित रूप से पढ़ता रहा हूँ। पुस्तकें जो लाखों की तादाद में लिखी जाती हैं और जिनको लेखक बड़ी सुखद आशाओं से प्रकाशित कराते हैं और उसका अन्त में जो हश्र होता है—इस सब पर विचार करना एक सार्थक अनुशासन है। क्या गारण्टी है कि कोई भी किताब असंख्य लोगों द्वारा पढ़ी और पसन्द की जायगी ? और यह भी असलियत है कि पुस्तकों की सफलता मौसम या युगविशेष की सफलता होती है। भगवान न जाने लेखक ने कितनी मेहनत अपनी कृति पर की है, क्या-क्या कटु अनुभव उसे हुए हैं और क्या-क्या हार्दिक वेदना उसे सहनी पड़ी है तब जाकर वह पाठक को कुछ घण्टों का विश्राम या किसी यात्रा की नीरसता व बोझिलपन को दूर करने का मौक़ा दे सका है। और मैं यदि समीक्षाओं के आधार पर इन पुस्तकों को जाँचूं तो इनमें से बहुत-सी पुस्तकें बड़ी सावधानी और सुन्दरता के साथ लिखी गई हैं; इनकी रचना में काफ़ी सोच-विचार से काम लिया गया है और कुछ में तो शायद जिंदगी-भर की मेहनत लगादी गई है। इनसे मैं यही सबक़ सीखता हूँ कि लेखक को अपना इनाम अपनी कृति के सृजन के आनन्द में और अपने विचार के बोझ से छुटकारा पाने में प्राप्त करना चाहिये और बाक़ी किसी भी चीज़ के प्रति उदासीन होकर न तो प्रशंसा या बुराई, न असफलता या सफलता की तनिक परवाह करना चाहिये।

अब युद्ध शुरू होगया है और उसने एक नया दृष्टिकोण हमारे सम्मुख पेश किया है। नवयुवक भगवान की ओर प्रवृत्त होगये हैं और हम जो उनसे कुछ

बड़े हैं जान भी न सके, और अभी ही से हम वह दिशा देख सकते हैं जिसमें वे जो हमारे बाद आये हैं, चलेंगे। नई पीढ़ी के लोग जो अपनी शक्ति से परिचित हैं और उपद्रवी हैं वे दरवाज़ों पर दस्तकें दे चुके हैं ; वे हमारे यहाँ घुस आये हैं और हमारी जगहों पर आकर बैठ गये हैं। वायुमण्डल उनके शोर से गूंज रहा है। उनसे जो बड़े हैं वे नवयुवकों की ठिठोलों की नकल करके अपने आपको यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि अभी उनके दिन नहीं लदे हैं चुनाँचे वे भी उत्साही नौजवानों के साथ शोर मचाते हैं लेकिन युद्ध की चिल्लपों उनके मुंह से बड़ी खोखली मालूम होती है। वे उन तुच्छ गणिकाओं की तरह हैं जो पेंसिल, गाज़ा और पावडर लगा कर अपने शबाब का भ्रम पुनः स्थापित करके फूली नहीं समाती हैं। इनमें जो बुद्धिमान हैं वे कुछ शायस्ता ढंग से अपने मार्ग पर चलते हैं। उनकी बज़ाहिर संयमित मुस्कान में दयालु विडम्बना झलकती है। वे स्मरण करते हैं कि वे भी एक सबल पीढ़ी के दोशबदोश ऐसे ही कोलाहल और ऐसी ही ग्लानि के साथ चलते रहे हैं और साथ ही वे यह भविष्यवाणी करते हैं कि ये शूर नेता भी उसी प्रकार अपने स्थान छोटों के लिए छोड़ देंगे जिस प्रकार उन्होंने उनके लिए छोड़ दिये थे। इसका कोई फैसला नहीं हो सकता। ईसाई धर्म का नया उपदेश पुराना हो चुका था जब नाइनवेह ने उसके महात्म्य को आकाश तक उछाला था। ये शौर्यमय शब्द जो उन लोगों को जो इनका प्रयोग करते हैं, इतने नये और सुन्दर लगते हैं, ऐसे उच्चारणों और ऐसे ढंग से कहे जाते थे जो पहले सैकड़ों बार बदल चुके हैं। पेण्डुलुम आगे और पीछे हिलता है। वृत्त सदैव नवीन ढंग से घूमता है।

कभी-कभी मनुष्य की कीर्ति व ख्याति किसी युग-विशेष में ऐसे दर्जे पर भी रहती है जो उसके लिए समुचित है और फिर समय के परिवर्तन के साथ ऐसे दर्जे पर भी उसे रहना पड़ता है जो उसके लिए विचित्र और अटपटा-सा होता है और फिर जिज्ञासुओं को इसी मानवीय सुखांत में बड़े भव्य दृश्य देखने को मिलते हैं। मिसाल के तौर पर आज कौन जार्ज क्रैबे के बारे में सोचता है ? वह अपने समय का प्रसिद्ध कवि था और संसार ने उसकी प्रतिभा को उस एकमत से स्वीकार किया था जिसे आधुनिक जीवन की बृहत्तर उलझनों

और पेचीदगियों ने कहीं कम और न्यून कर दिया है। उसने अपनी कला अलेक्ज़ान्द्र पोप की विचार-शाला में सीखी थी और उसने तुकान्त पदों में नैतिक कथाएँ लिखी थीं। फिर फ्रांस में क्रांति हुई और नेपोलियन द्वारा लड़े गये युद्ध सामने आये और कवियों ने नये गीत गाने शुरू कर दिये मि० क्रैबे ने तुकान्त पदों में अपनी नैतिक कथाएँ लिखना जारी रखीं। मैं समझता हूँ उसने उन नौजवानों की कविताएँ पढ़ी होंगी जो संसार में ऐसी महान् हल-चल मचा रहे थे और मेरा ख्याल है कि उसे वे सब छिछली और घटिया लगी होंगी। और उनमें से अधिकतर तो निस्संदेह घटिया ही थीं। लेकिन कीट्स और वर्ड्सवर्थ के गीतों, कोलरिज की दो-एक कविताओं, कुछ और शैली की कविताओं ने आत्मा के उन व्यापक स्थलों की खोज की जो उनसे पहले कोई न कर सका था। मि० क्रैबे हालाँकि अब मुर्दे जैसा था लेकिन उसने तुकांत पदों में नैतिक कथाएँ लिखना फिर भी जारी रखा। मैंने भी नई पीढ़ी के लेखकों की कृतियाँ अनियमितता से पढ़ी हैं। हो सकता है कि उनमें से किसी नवयुवक ने जो कीट्स से भी अधिक गर्मजोश व उत्साही हो और किसी नौजवान ने जो शैली से भी बढ़कर लतीफ हो, पहले ही इतनी चीज़ें प्रकाशित करा दी हों जिन्हें संसार बखुशी याद करेगा। लेकिन इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता। मैं उनके परिष्कार की सराहना करता हूँ, उनकी तरुणाई अभी से इतनी सुदृढ़ और समुचित है कि उन्हें होनहार कहना कुछ भद्दा-सा लगता है। उनकी शैली के जौहर पर मुझे महान आश्चर्य होता है लेकिन उनकी विद्वत्ता के बावजूद (उनकी शब्दावली से प्रकट होता है कि रोजे का 'थिजैरस' उन्होंने पालने में ही देख लिया था।) उनके पास कोई संदेश नहीं हैं जो वे मुझे दे सकें। मेरे ख्याल में वे जरूरत से ज्यादा जानते हैं और बड़ी स्पष्टता के साथ महसूस भी करते हैं। मैं उनकी निष्कपटता को जिससे कि वे मुझे पीठ पर थपड़ाते हैं या भावना जिससे कि वे मेरे सीने पर टूट पड़ते हैं स्वीकार नहीं कर सकता। उनका उत्साह मुझे कुछ रक्तहीन और उनके स्वप्न कुछ नीरस लगते है। मैं उन्हें पसन्द नहीं करता। मैं तो अब विस्मृत हो चुका हूँ। मैं तुकांत पदों में नैतिक कथाएँ लिखता रहूँगा। लेकिन

यदि मैंने उन्हें अपने स्वतः के मनोरंजन के बजाय किसी और चीज़ के लिए लिखा तो मुझसे बड़ा मूर्ख कोई न होगा।

३

लेकिन यह सब तो यों ही कह दिया गया है।

जब मैंने अपनी पहली पुस्तक लिखी थी तो मैं बहुत छोटा था। सौभाग्य की बात कि उसने लोगों का ध्यान मेरी ओर आकर्षित किया और अनेक व्यक्ति मेरे मित्र बन गये।

उन दिनों की यादों में जब पहले-पहल लन्दन के साहित्यिक क्षेत्र में कुछ शर्माते-लजाते और कुछ उत्सुकता लिये मैंने पदार्पण किया था जब मैं विचरता हूँ तो मुझे कुछ दुःख अवश्य होता है। ज़माना हो चुका जबकि मैंने ऐसा बार-बार किया था और यदि वे उपन्यास जो उसके वर्तमान अनूठेपन का वर्णन करते हैं शुद्ध हैं तो आप देखेंगे कि उसमें अब एक महान् परिवर्तन आगया है। अब गोष्ठी का स्थान दूसरा है। चेल्सी और ब्लूम्सबरी ने हैम्सटेड, नाटिंग हिल गेट और हाई स्ट्रीट, केन्सिग्टन की जगह ले ली है। उस ज़माने में चालीस वर्ष से कम की अवस्था में होना एक विशेष योग्यता समझी जाती थी लेकिन अब पच्चीस वर्ष से अधिक आयु का होना बेहूदगी और भद्दापन समझा जाता है। मैं समझता हूँ उस ज़माने में हम अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करने में कुछ झेंप महसूस करते थे। और हमारा मज़ाक न बने इस डर से हम छल-छिद्र का अक्सर सहारा लिया करते थे। उस सुशील व विनीत विशृंखल जमघटे में

शिष्टता और पवित्रता वर्तमान थी ऐसा मेरा विश्वास नहीं लेकिन मुझे यह भी याद नहीं कि उसमें ऐसी भोंडी विच्छृङ्खलता या अभेद ही था जो कि आजकल प्रचलित है। हम अपनी सनकों पर सुसभ्य ढंग से पर्दा डालने को पाखण्ड नहीं समझते थे। और ज़हर हलाहल को हमने कभी क़न्द भी नहीं कहा था। स्त्री तब तक अपने अस्तित्व के महत्व को न समझ सकी था।

मैं विक्टोरिया स्टेशन के पास रहा करता था और मुझे याद है मैं अनेक बार बसों में सवार होकर मेहमाननवाज साहित्यकारों के घरों पर गया था। मैं कुछ डरा-डरा सा गली में चक्कर लगाया करता था और बड़ी मुश्किल से घण्टी बजाने के लिए साहस बटोरा करता था और उसके बाद कौतूहल में ग़र्क—कि न जाने वे मुझसे कैसा व्यवहार करें—मैं लोगों से भरे हुए बन्द कमरे में दाखिल होता था। वहीं मेरा परिचय इस सुविख्यात व्यक्ति से कराया गया था और जब उन्होंने बड़ी कृपालुता से मेरी पुस्तक पर मुझे बधाई दी थी तो मैं कुछ उलझन महसूस करने लगा था। मुझे महसूस हुआ कि वे मुझसे कुछ बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुनने की आशा रखते थे और मैं वहाँ ऐसा सिटपिटाया-सा बैठा रहा था कि मेरे दिमाग़ में ऐसी कोई चीज तब तक आई ही नहीं जब तक कि वह गोष्ठी समाप्त न होगई। मैंने अपनी दुबिधा छिपाने की ग़रज से चाय के प्याले और बुरी तरह काटे हुए मक्खन और डबलरोटी के टुकड़े लोगों को बांटना शुरू कर दिये थे। मैं चाहता था कि कोई मेरी ओर ध्यान न दे ताकि मैं इन प्रसिद्ध महानुभावों को इत्मीनान से देख सकँ और उनकी बुद्धिमत्तापूर्ण उक्तियों को ध्यान से सुन सकूँ।

मुझे वे लम्बी-चौड़ी, सीधी स्त्रियाँ भी याद हैं जिनकी लम्बी कटार-सी नाकें थीं, चमकदार आँखें थीं और जो अपने वस्त्र इस प्रकार पहने हुए थीं जैसे वे कवच पहने हुए हों; और वे छोटी, चूहों जैसी अविवाहिता स्त्रियाँ भी जिनकी नर्म-नाजुक आवाजें थीं और बड़ी चालाकी भरी निगाहें। वे जिस दृढ़ता के साथ दस्तानोंसहित मक्खन लगे टोस्ट खा रहीं थीं वह मुझे बड़ा आकर्षक लगा और यह देख कर मैंने उनकी बड़ाई की कि वे बड़ी निश्चिंतता और लापरवाही के साथ यह देख कर कि उन्हें कोई देख तो नहीं रहा अपनी

उँगलियाँ पीछे कुर्सियों पर पोंछ लेती थीं। फ़र्नीचर के लिए यह बड़ी फूहड़पन की बात थी लेकिन मेरा अन्दाज़ा है कि मेज़वान भी जब उनके यहाँ जाया करती थी तो उस फूहड़पन और गन्दगी का बदला ले लेती थीं। उनमें से कुछ बड़े फ़ैशनेबुल वस्त्र पहने हुए थीं और उनका कहना था कि उम्र भर उनकी समझ में यह न आया कि यदि किसी ने एकाध उपन्यास लिख लिया तो इसका यह अर्थ तो नहीं कि वह भद्दे और गन्दे कपड़े पहिने फिरे। अगर किसी का नाक-नक्शा और जिस्म सुन्दर व सुडौल है तो उसे चाहिये कि उसका पूरा-पूरा फायदा उठाये। यह भी मानी हुई बात है कि यदि चमकीले-भड़कीले बूट पहने हुए हों तो कोई भी सम्पादक आपकी 'बकवास' को स्वीकार कर लेगा। लेकिन कुछ और ऐसी थीं जो इसे ओछापन समझती थीं और वे 'आर्ट फैबरिक' और बहशतनाक आभूषण पहने हुए थीं। पुरुष अपने हुलिये से कभी अजीब या अनोखे नहीं लगते थे। वे जितने कम लेखक दिखाई दे सकें उतना ही बेहतर समझते थे। वे चाहते थे कि उन्हें जन-साधारण जैसा ही समझा जाय और इसीलिए कोई भी उन्हें किसी फर्म के मैनेजिंग क्लार्क समझ सकता था। वे हमेशा कुछ थके हुए दिखाई देते थे। मैं उसके पहले किसी लेखक को भी न जानता था इसीलिए वे मुझे बड़े अजीब-से लगे और मेरा खयाल है कि वे कभी भी असली नहीं लगे।

मुझे याद है कि मैंने उनकी बातचात को बहुत बुद्धिमानीपूर्ण समझा था और जिस पैनी व चुभती हुई रसिकता के साथ वे अपने लेखक-दोस्तों के उनकी पीठ फिरते ही परखचे उड़ाते थे उसे भी मैंने बड़ी ग़ौर से सुना था। दुनिया भर में यह विशेष अधिकार सिर्फ एक कलाकार को ही है। उसके मित्रगण न केवल अपना हुलिये और चरित्र को ही उसके व्यंग्य का निशाना बनाते हैं बल्कि उनका काम भी उनके व्यंग्य का विषय बन जाता है। इस कौशल और धारावाही के साथ अपने आपको अभिव्यक्त न कर सकने का मुझे रंज है। उस जमाने में वार्तालाप भी एक कला की तरह सीखा जाता था और सुथरे व्यंग्य की मामूली बड़बड़ाहट से ज्यादा क़द्र की जाती थी और चुटकुला, जिसे कोई हतबुद्धि यांत्रिकरूप से प्रयोग करके रसिक नहीं बन सकता था, शिष्ट लोगों

के वार्तालाप को प्रफुल्लता प्रदान करता था। बड़े दुःख की बात है कि मुझे इस आमोद-प्रमोदपूर्ण वार्तालापों में से कुछ भी याद नहीं रहा है। लेकिन मैं समझता हूँ कि वह बातचीत कभी इतनी स्थायी न होती थी जितनी उस समय जबकि हम व्यवसाय-सम्बन्धी विवरणों पर आते थे जो हमारी कला का दूसरा पहलू था। जब हम ताजातरीन किताब की खूबियों पर बहस कर चुके तो यह स्वाभाविक था कि हम यह भी सोचें कि उसकी कितनी प्रतियाँ बिक चुकी हैं, लेखक को कितने दाम पेशगी मिल चुके हैं और कितने पैसे वह इस किताब में से बनाने वाला है। फिर हम कभी इस प्रकाशक की बात करते, कभी उसकी; एक की दानशीलता की दूसरे की नीचता से तुलना करते। हम लोग बहस करते कि आया उस प्रकाशक के पास जायें जो अच्छी रकम रायल्टी की देता है या उसके पास जो किताब कैसी ही हो उसे 'निकालने' में दक्ष है। कुछ प्रकाशक अच्छा विज्ञापन करते थे और कुछ बुरा। कुछ आधुनिक थे और कुछ दक़ियानूसी। फिर हम एजेंटों की और उन्होंने जो आर्डर हमारी किताबों के लिए हासिल किये हैं उसकी बातें करते। सम्पादकों पर भी बहस होती और किस प्रकार के लेखादि वे सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं इसका भी जिक्र होता। एक हज़ार पर वे कितना पारिश्रमिक देते हैं और जल्दी दे देते हैं या रो-झींक कर यह भी हमारे वार्तालाप का विषय बनता। मेरे लिए यह सब ज्यादा दिलचस्प था। यह मुझे ऐसा आभास देता कि मैं सूफियों के किसी संघ का सदस्य हूँ।

४

उस समय रोज़ वाटरफोर्ड से बढ़कर मेरे साथ और कोई दयालुता का व्यवहार न करता था। उसके अन्दर मर्दाना चतुरता और स्त्रियों की-सी हठ का मिश्रण था और उसके उपन्यास मौलिक तथा ऊटपटांग किस्म के थे। उसी के घर एक दिन चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड की पत्नी से मेरी मुलाक़ात हुई। मिस वाटरफोर्ड ने एक चाय-पार्टी पर लोगों को निमंत्रित किया था और उसका छोटा कमरा असाधारणतया ठसाठस भरा हुआ था। हरेक बातें करता हुआ दिखाई दे रहा था और मुझे खामोश बैठे हुए बड़ा अटपटा महसूस हुआ। लेकिन मैं बहुत शर्मीला था और उन अपनी-अपनी बातों में व्यस्त गिरोहों में जाकर शामिल हो जाने की मुझमें शक्ति न थी। मिस वाटरफोर्ड बड़ी अच्छी मेजबान थी और जब उसने मुझे हैरानी की हालत में देखा तो वह मेरे पास आई।

"मैं चाहती हूँ तुम श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड से बातचीत करलो।" उसने कहा, "वह तुम्हारी पुस्तक की तारीफ के पुल बाँधे जा रही है।"

"वह करती क्या हैं?"

मैं अपने अज्ञान को समझता था मैंने सोचा यदि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड कोई मशहूर लेखिका है तो इस बात की भी उससे मिलने के पहले ही तस्दीक हो जाय तो अच्छा है।

रोज़ वाटरफोर्ड ने विनय से अपनी नजरें झुकाईं ताकि अपने उत्तर में अधिक प्रभाव पैदा कर सके।

"वह लन्चन-पार्टी देती है और क्या ? ज़रा लम्बी हाँकना और वह तुम्हें भी निमंत्रित कर लिया करेगी।"

रोज़ वाटरफोर्ड एक नकचढ़ी औरत थी। वह जिन्दगी को उपन्यास लिखने का अवसर और जनता को उसकी सामग्री समझती थी। यदा-कदा वह जनता में से कुछ को यदि वे उसकी सलाहियत की सराहना करते, अपने घर पर निमंत्रित करती थी और उनको खूब आवभगत के साथ खिलाती-पिलाती थी। उनके प्रसिद्ध लोगों के प्रति स्नेह को वह कुछ ग्लानि के साथ हँसी में उड़ा देती थी लेकिन एक ख्यातिप्राप्त लेखिका की हैसियत से वह उनके साथ बड़ी शायस्तगी से पेश आती थी।

वह मुझे श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड के पास ले गई और दस मिनट तक हम लोग बातें करते रहे। मैंने उसकी कोई भी चीज़ नहीं देखी सिवाय उसकी सुखद वाणी के। उसका वेस्ट मिनिस्टर में एक फ्लैट था जहाँ से अपूर्ण गिरजा दिखाई देता था और चूँकि मैं भी उसके पड़ौस में ही रहता था इसलिए हम दोनों की दोस्ती जल्दी क़ायम होगई। नदी और सेण्ट जेम्स पार्क के दरम्यान रहने वालों में आर्मी और नेवी स्टोर्स ही एकता क़ायम करते हैं। श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने मुझसे पता माँगा और कुछ दिन बाद उसने मुझे दोपहर के खाने पर निमंत्रित किया।

मुझे कोई काम धंधा था नहीं इसलिए मैंने खुशी-खुशी उसकी दावत क़बूल करली। जब मैं यहाँ कुछ देर से पहुँचा, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं समय से पहले न पहुँच जाऊँ इसलिए मैंने गिरजे के तीन चक्कर लगाये, तो देखता क्या हूँ कि पार्टी पूरी हो चुकी है। मिस वाटरफोर्ड, श्रीमती जे, रिचर्ड ट्विनिंग और जार्ज रोड सब वहाँ मौजूद थे। हम सब लेखक थे। वसन्तऋतु अभी आई-आई थी, दिन बड़ा सुहावना था और हम सब बड़े अच्छे मूड में थे। सैकड़ों चीजों पर हमने बातें कीं। मिस वाटरफोर्ड जो अपनी विगत जवानी की सौंदर्यप्रियता में जब कि वह हरे वस्त्र पहन कर हाथ में

डैफोडिल फूल लेकर पार्टियों में जाया करती थी और अपनी बड़ी उम्र के दिनों की चपलता की जबकि वह ऊँची एड़ी के जूते और पेरिशियन फ्रॉक पहनती थी, दुविधा में गिरफ्तार थी। वह नया हैट ओढ़े हुए थी। उससे वह बड़ी प्रफुल्लित नजर आती थी। और जिस प्रकार वह हमारे सामान्य मित्रों पर कीचड़ उछाल रही थी वैसा मैंने उसे पहले कभी करते हुए न देखा था। श्रीमती जे जो शायद इस उक्ति के प्रति सतर्क थीं कि अनौचित्य ही विनोद की आत्मा है, केवल स्वर-परिवर्तन द्वारा विचार प्रगट कर रही थीं और यदि बोलती भी थीं तो सरगोशी के अंदाज में। मालूम होता था मुँह से फूल झड़ रहे हैं। रिचर्ड ट्विनिंग मूर्खों की नाईं भड़भड़ कर रहा था और जार्ज रोड, जिसे इस बात का एहसास था कि उसे अपनी बुद्धिमत्ता दर्शाने की जरूरत नहीं है, अपना मुँह बस तभी खोलता था जब उसे कुछ खाना होता था। श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड बहुत ज्यादा बातें नहीं कर रही थी लेकिन उसमें यह खूबी थी कि वह बातचीत जारी रखने में बड़ी पटु थी। जब कभी भी कोई रुक जाता तो वह एकाध शोशा छोड़ देती और बातें फिर होने लगतीं। वह ३७ वर्ष की, ऊँची और भरे जिस्म की स्त्री थी पर मोटी नहीं थी। वह खूबसूरत नहीं थी पर उसका चेहरा प्यारा लगता था शायद उसका मुख्य कारण उसकी बड़ी-बड़ी कत्थई आँखें थीं। उसका चर्म कुछ पीला था; काले बाल बड़ी खूबसूरती से बने हुए थे। वहाँ मौजूद तीन स्त्रियों में शायद वही एक ऐसी थी जिसके चेहरे पर कोई मेकअप नहीं था और उन तीनों के विपरीत वह बड़ी सादगीपसन्द और सुशील नज़र आ रही थी।

डाइनिंग रूम उस समय के लिहाज़ से अच्छा था। वह बड़ा सादा-सा था। सफेद लकड़ी का हाशिया और एक हरा कागज़ था जिस पर सुथरी काली चौखटों में व्हिस्लर द्वारा नक्काशी की हुई थी। हरे पर्दे जिन पर मोरों के-से डिजाइन बने हुए थे सीधी क़तार में लटके हुए थे और हरी क़ालीन जिस पर पीले ख़रगोशों की पत्तेदार पेड़ों में खेल-कूद वाला डिजाइन बना हुआ था यह ज़ाहिर करता था कि उन पर विलियम मौरिस का प्रभाव है। चिमनीपीस

पर एक नीला बर्तन रखा था। उस समय लन्दन में कुल पाँच सौ डाइनिंग रूम होंगे जो इस तरह सजे हुए हों। वह बड़ा सुथरा, कलापूर्ण और नीरस था।

जब हम रुख्सत हुये तो मैं मिस वाटरफोर्ड के साथ चलने लगा। चूँकि दिन बड़ा सुहाना था और वह अपना हैट ओढ़े हुए थी इसलिए हम पार्क में होते हुए धीरे-धीरे चलते रहे।

"पार्टी बड़ी अच्छी थी," मैंने कहा।

"क्या खाना तुम्हें अच्छा लगा? मैंने उससे कह दिया था कि अगर वह लेखकों को बुलाना चाहती है तो उन्हें खूब खिलाये-पिलाये।"

"यह आपने खूब किया," मैंने जवाब दिया। "लेकिन वह लेखकों को बुलाती क्यों है?"

मिस वाटरफोर्ड ने अपने कंधे सिकोड़े।

"उसे उनको बुलाकर बड़ा आनन्द आता है। वह आगे आना चाहती है। मैं समझती हूँ कि वह बड़ी सीधी-सादी है; बड़ी बेचारी है और समझती है कि हम सब बड़े बढ़िया लोग हैं। क्योंकि हम लोगों को दोपहर के खाने पर दावत देकर वह खुश होती है और हमें कोई उससे तकलीफ होती नहीं। बस इन्हीं खूबियों की वजह से मैं उसे पसन्द करती हूँ।"

फिर उसी का जिक्र करते हुए मैं समझता हूँ कि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड बड़े लोगों को ढूँढने वालों में से, जो अपने शिकार के पीछे 'हैम्पस्टैड' की कम घनी ऊँची जगहों से लेकर 'चेयनेवाक' के सबसे नीचे स्टूडियो तक भागते हैं, सबसे ज्यादा निरीह थीं। उन्होंने देहात में अपनी जवानी बड़ी खामोशी और रूखेपन से बिताई थी और मूडी की लायब्रेरी से जो पुस्तकें उनके पास आती थीं उनमें न केवल उनका अपना रोमांस होता था बल्कि लन्दन का रोमांस भी शामिल होता था। पढ़ने की उन्हें वास्तव में बड़ी तीव्र उत्कण्ठा थी (जो अपनी किस्म की अकेली ही थी) जिनमें अक्सर ऐसी थीं जो लेखक में अधिक दिलचस्पी रखती थीं बजाय उसकी पुस्तक में; चित्रकार उन्हें अधिक प्रिय था बनिस्बत उसके चित्रों के। और उन्होंने कल्पना का एक ऐसा संसार बना लिया

था जिसमें वह ऐसी स्वतंत्रता के साथ रहती थीं जो उन्हें वास्तविक संसार में कभी प्राप्त न हो सकी थी। जब उन्हें लेखकों का पता चलता तो ऐसा लगता कि वह उस मंच पर पदार्पण करने का साहस कर रही हैं जिसे अब तक उन्होंने फुटलाइट्स की दूसरी ओर से ही देखा था। वह उनसे बड़े नाटकीय ढंग से मिलती थीं और उनकी दावतें करके तथा उनके गढ़ों में उनसे मिल कर वह समझती थीं कि एक दीर्घजीवन व्यतीत करेंगीं। जिस प्रकार और जिन नियमों के साथ वे अपनी जिन्दगी का खेल खेलते थे उन नियमों को उसने भी स्वीकार किया था लेकिन उसने क्षण भर के लिए भी यह कभी न सोचा कि उनके अनुकूल ही अपना आचरण भी संयमित करले।

उनकी पोशाक के भद्दे पन का ही तरह उनकी नैतिक सनकें, उनके स्वच्छंद सिद्धान्त और उल्टी-सीधी बातें ऐसी मनोरंजन की सामग्री थी जिससे वह आनन्दित होती थीं लेकिन इन तमाम बातों का उनके अपने सिद्धान्तों व विचारों पर ज़रा-सा भी प्रभाव न पड़ता था।

"क्या कोई साहब स्ट्रिकलैण्ड नाम के हैं?"

"जी हाँ, शहर में वह कुछ हैं तो। मैं समझती हूँ वह दलाल है बड़ा मंदबुद्धि है।"

"क्या वे दोनों अच्छे दोस्त हैं?"

"एक-दूसरे की पूजा करते हैं साहब। अगर कभी तुम रात को उनके यहाँ खाने पर गये तो उससे मुलाक़ात हो जायगी। लेकिन वह ज्यादातर लोगों को रात के खाने पर बुलाती नहीं है। बहुत शांत स्वभावी है। साहित्य या कलाओं में तो उसे रत्तीभर दिलचस्पी नहीं है।"

"सुशील स्त्रियाँ बुद्धिहीन पुरुषों से क्यों विवाह करती हैं?"

"इसलिए कि बुद्धिमान पुरुष सुशील स्त्रियों से शादी नहीं करते।"

इसके जवाब में मुझे कुछ न सूझा चुनाँचे मैंने पूछा कि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड के कोई बाल-बच्चे भी हैं।

"जी हाँ, एक बच्चा और एक बच्ची हैं। दोनों स्कूल में पढ़ते हैं।"

जब वह प्रकरण समाप्त होगया तो हम दूसरी बातें करने लगे ।

५

गर्मी के दिनों में मैं कई बार श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड से मिला । गाहे-गाहे मैं उनके फ्लैट पर दोपहर के खानों और चाय-पार्टियों में शिरकत करने के लिये गया । हम दोनों एक-दूसरे को पसन्द करने लगे । मैं उम्र में बहुत छोटा था इसलिए उसने चाहा कि साहित्यक क्षेत्र में मेरे बचकाने क़दमों को सहारा दे और मेरा मार्ग-प्रदर्शन करे । और मैं किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में था ही जिसके पास मैं अपनी कठिनाइयाँ ले जाऊँ और जो मेरी बातें ध्यान से सुने व समुचित राय दे । श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड में हमदर्दी के साथ पेश आने की स्वाभाविक वृत्ति थी । यह बड़ी आकर्षक व सुन्दर विशेषता है लेकिन जो लोग इसे हासिल किए हुए हैं और इसके प्रति सतर्क हैं वे अक्सर इसका दुरुपयोग करते हैं क्योंकि वे बड़ी भयंकर उत्सुकता के साथ अपने मित्रों के दुर्भाग्य पर टूट पड़ते हैं ताकि वे अपनी चतुरता का उन अभागे मित्रों पर इस्तेमाल कर सकें । वह तेल के कुएँ की भाँति उबल पड़ती है और हमदर्द लोग ऐसी लापरवाही के साथ अपनी हमदर्दी दिखाते हैं कि वह कभी-कभी उन बेचारों को जिन पर कि वह दिखाई जारही है, हैरान कर देती है । ऐसे सीने भी हैं जिन पर इतने आँसू बहाये गये हैं कि मैं उन्हें अपने आँसुओं से नहीं भिगो सकता । श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड अपने इस गुण का इस्तेमाल बड़ी चतुरता से करती थीं । आपको ऐसा महसूस होता जैसे आपने उनकी सहानुभूति स्वीकार करके उस पर एहसान किया है । जब मैंने अपनी जवानी के जोश में उसकी इस बात का रोज वाटरफोर्ड से जिक्र किया तो उसने जवाब दिया ।

"दूध बड़ी उम्दा चीज़ है और खासतौर से अगर उसमें ब्रांडी की एकाध बूंद डालली जाय लेकिन घर की गाय जब उसका दूध निकाल लिया जाय तो बड़ी खुश होती है। थन अगर दूध से भरे हुए हों तो उसे बड़ी उलझन होती है।

रोज़ वाटरफोर्ड की भाषा में बड़ा व्यंग्य था। और कोई ऐसी कड़वी बात न कह सकता था बल्कि इसके विपरीत उससे बढ़कर दिलचस्प बातें भी कोई न कर सकता था।

एक और खूबी श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड में थी जो मुझे बहुत पसन्द थी। वह अपना घर-बार बहुत सुव्यवस्थित रखती थीं। उनका फ्लैट हमेशा साफ-सुथरा और आँखों को भला लगता था। उसमें फूल यत्र-तत्र सजे हुए होते थे, ड्राइंग रूम में छींट के कपड़े के मेज़पोश आदि लगे होते थे और हालाँकि उनकी डिज़ाइन बिल्कुल सादा थी लेकिन वे लगते बड़े चमकदार और सुन्दर थे। कलापूर्ण, सजे-धजे छोटे से डाइनिंग रूम में खाने लगे हुये बड़े प्यारे लगते थे। मेज़ बड़ी अच्छी लगती थी और दो नौकरानियाँ भी बड़ी नाजुक-सी और सुन्दर थीं, खाना बड़ी अच्छी तरह पकाया जाता था। यह कहना ही पड़ता था कि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड बहुत ही उत्कृष्ट गृहिणी थीं। साथ ही यह भी निश्चित बात थी कि वह एक माँ की हैसियत से भी प्रशंसनीय थीं। ड्राइंग रूम में उनके बेटे और बेटी के फोटो रखे हुए थे। उनका बेटा—जिसका नाम रॉबर्ट था सोलह वर्ष का था और रुग्बी में था। वह फलालैन के कपड़े और क्रिकेट कैप पहने था और दूसरे चित्र में वह दोपाखा कोट और खड़े कालर वाली कमीज़ में नज़र आता था। उसकी भवें माँ पर थीं और आँखें बड़ी गंभीर थीं। वह साफ-सुथरा, सेहतमंद और आम लड़कों की तरह दिखाई देता था।

एक दिन जब मैं उनके फोटोग्राफ की ओर देख रहा था तो वह कहने लगी, "वह चालाक है या नहीं यह तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन हाँ मैं यह जानती हूँ कि वह है बड़ा अच्छा लड़का। उसकी बातें, रंग—ढंग वगैरह बड़े दिलचस्प हैं।"

उसकी लड़की की उम्र चौदह वर्ष की थी। उसके बाल जो माँ की तरह

मोटे, घने और खूब गहरे काले थे, उसके कंधों पर लटके हुए थे और उसका चेहरा भी वैसा ही विनीत, गंभीर था। आँखें ऐसी थीं जैसे पानी में तैर रही हों।

"ये दोनों बिल्कुल आपके ऊपर हैं," मैंने कहा।

"जी हाँ, मेरा भी यही खयाल है कि मुझ पर अधिक अपने पिता पर कम हैं।"

"आपने उनसे मेरी मुलाक़ात कभी क्यों नहीं कराई ?" मैंने पूछा।

"क्या आप चाहते हैं उनसे मिलना ?"

वह मुस्करादी; उनकी मुस्कान बड़ी मृदुल थी और वह कुछ शर्मा-सी गई। बड़ी अजीब बात है कि उस उम्र की स्त्री इतनी-सी बात पर शरमां जाये। शायद उसकी सादगी व भोलापन ही उसका सबसे बड़ा आकर्षण था।

"आप जानते हैं साहित्य से उन्हें दूर का भी वास्ता नहीं है," उसने कहा। "वह तो पक्के दक़ियानूसी हैं।"

उन्होंने यह सब उसकी बुराई के तौर पर नहीं बल्कि बड़ी सादगी और स्नेहपूर्ण ढंग से कहा जैसे कि उसकी बदतरीन बुराइयों का उन्हें एहसास हो और अपने दोस्तों की निन्दा से उसे बचाना चाहती हों।

"वह स्टॉक एक्सचेंज में हैं और ठेठ क़िस्म के दलाल हैं। आप अगर उनसे मिले तो वह आपको बुरी तरह बोर कर देंगे।"

"क्या आपको बोर करते हैं ?" मैंने दरियाफ्त किया।

"देखिये ना, मैं तो उनकी पत्नी हूँ और मुझे उनसे बहुत लगाव है।"

इस बार फिर उसने मुस्कराहट में अपनी झेंप छिपाली और मैंने अनुमान लगाया कि वह डरती है कि कहीं मैं उस पर छींटा न कस दूँ या व्यंग्य न करूँ क्योंकि जो बातें वह मुझे बता रही थी वही मैं रोज़ वाटरफोर्ड से भी मालूम कर सकता था। वह कुछ झिझकीं और उसकी आँखों पर एक प्रकार की कोमलता छा गई।

"वह कोई मेधावी होने का दम नहीं भरते। बल्कि वह तो स्टॉक एक्सचेंज से भी कोई बहुत धन नहीं कमाते। लेकिन वह हैं बहुत ही भले और दयालु।"

तब तो मैं उनसे जरूर मिलूंगा और मैं समझता हूँ वह मुझे पसन्द भी बहुत आयेंगे।"

मैं किसी दिन आपको रात के खाने पर निमंत्रित करूँगी लेकिन याद रखिये आप अपनी जिम्मेदारी पर आइयेगा। अगर आप उक्ता जायें तो उसके लिए मुझे दोष न दीजियेगा।"

६

लेकिन आखिरकार जब मैं चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड से मिला तो हालात कुछ ऐसे थे कि उनमें मैं सिर्फ परिचित ही हो सका। इससे अधिक किसी चीज़ की गुँजाइश न थी। एक दिन सवेरे श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे सन्देश भेजा कि वह उसी दिन शाम को एक डिनर पार्टी दे रही हैं और उसके एक मेहमान ने आने में असमर्थता प्रकट की है। और वह चाहती थीं कि मैं वह जगह पूरी करदूँ। उन्होंने लिखा था :

"आपको तम्बीह करना मैं बहुत मुनासिब समझती हूँ कि आप बुरी तरह बोर किये जायेंगे। वैसे तो यह पार्टी सिरे से बड़ी खुश्क और नीरस है लेकिन यदि आप आजायें तो मैं आपकी हृदय से आभारी रहूँगी। और हम और आप अलग से कुछ बातचीत भी कर लेंगे।"

उसके निमंत्रण को स्वीकार करना पड़ौसी होने के नाते मेरा फ़र्ज भी था।

जब श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने मेरा परिचय अपने पति से कराया तो उसने बड़ी लापरवाही से अपना हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया। और बड़ी प्रफुल्लित हो उसकी ओर मुड़ कर वह मजाक करने लगीं।

"मैंने इनसे कहा था आप उनसे मिल लीजिये तो कम से कम यह तो जाहिर हो जाय कि मेरे भी पति हैं। शायद वह इस पर शक करते थे।"

स्ट्रिकलैण्ड बड़े विनीत भाव से तनिक हँसा और उसकी हँसी ऐसी थी जैसी कि वे लोग हँसते हैं जो यह स्वीकार करते हैं कि हँसोड़पन में किसी प्रकार का उपहास नहीं होता। लेकिन वह बोला कुछ नहीं। और अतिथि आने लगे और मेरी मेजबान उनकी ओर चली गई, मैं वहाँ अकेला उसके साथ रह गया। आखिरकार जब हम सब जमा होगये और खाने की प्रतीक्षा करने लगे तो मैं उस स्त्री से बातें करने लगा जिसका 'स्वागत' करने के लिए मुझसे कहा गया था। मैंने बड़े खुलूस व ईमानदारी से कहा कि सभ्य व्यक्ति अपनी मुख्तसर जिन्दगी बोझिल और उक्ता देने वाली हरकतों में बड़ी पटुता के साथ लगा देता है। यह एक ऐसी दावत थी जिसको देख कर आप सोचने लगते कि आखिर मेजबान ने क्यों मेहमानों को बुलाने की तकलीफ की है और मेहमानों ने क्यों वहाँ आने का कष्ट किया है। दस आदमी दावत में आये थे। वह खालिसतन एक सामाजिक जलसा था। स्ट्रिकलैण्ड दम्पत्ति पर ऐसे बहुत से लोगों की दावत 'आती' थी जिनमें उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए उन्होंने उन्हें निमंत्रित किया था और उन लोगों ने वह निमंत्रण स्वीकार कर लिया था। क्यों? अकेले खाना खाने की उक्ताहट दूर करने के लिए, अपने नौकरों को आराम देने के लिए क्योंकि इन्कार करने की कोई वजह न थी और क्योंकि उन पर 'डिनर' 'आता' था।

डाइनिंग रूम इतना भरा हुआ था कि उलझन हो रही थी। वहाँ एक के. सी. (सम्राट के परामर्शदाता) और उनकी श्रीमती थीं; एक सरकारी अफ़सर और उनकी पत्नी थीं; श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड की बहिन और उनके पति थे; कर्नल मैकएण्ड्रयू और एक संसत्सदस्य की पत्नी थी। संसद-सदस्य के

लिए आना सम्भव न था उनकी जगह मुझे बुलाया गया था। दावत की सभ्य जनों की उपस्थिति बड़ी शानदार थी। स्त्रियाँ इतनी सुस्वभावी थीं कि साधारण वस्त्रों में भी जँच रही थी और उनकी उपस्थिति बड़ी दिलचस्प और सुखदायक थी, इस बात का शायद उन्हें विश्वास था। मर्दों में सब समझदार थे। और उन सबके चेहरों व वस्त्रों से वह स्पष्ट था कि वे अच्छे खाते-पीते और समृद्ध लोग हैं।

हरेक कोई यह समझ कर कि उसी की बातों से दावत में दिलचस्पी और जिंदगी है कुछ ज्यादा ज़ोर-ज़ोर से बोल रहा था और कमरे में बहुत ज़्यादा शोर-गुल हो रहा था। लेकिन कोई आम बातचीत नहीं हो रही थी। हरेक सूप, मछली और कोई और चीज़ खाते वक्त अपने दायीं ओर बैठे व्यक्ति से बातें करता और टोस्ट, मिठाई और नमकीन चीज़ खाते हुए अपने बायें पड़ौसी से गप्पें मारने लगता। उन्होंने विविध विषयों पर बातें कीं मसलन राजनीतिक परिस्थिति पर, गोल्फ पर, अपने बच्चों के बारे में तो कभी ताज़ातरीन ड्रामे के बारे में। कभी रॉयल एकाडमी के चित्रों पर तो कभी मौसम पर, तो कभी छुट्टियों में अपने कार्यक्रम पर वे बातें करते रहे। वक्फ़े का तो कहीं नाम न था और शोर बढ़ता जा रहा था। श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड अपने को बधाई दे सकती हैं इसलिए कि उसकी दावत सफल रही थी। उसके पति ने अपनी भूमिका बड़ी शायस्तगी से अदा की। शायद उसने ज़्यादा बातें नहीं कीं और मैंने देखा कि दावत ख़त्म होने पर उसके दायें-बायें बैठी हुई स्त्रियों के चेहरे पर कुछ थकावट सी दिखाई देरही थी। उनके लिए वह बहुत बोझिल और नीरस था। एकाध बार तो श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड की नज़रें उस पर गड़ गई और बड़ी उत्सुकता से उसकी हरकतें देखने लगे।

आख़िरकार वह उठी और महिलाओं को छोड़ने के लिए बाहर तक गई। स्ट्रिकलैण्ड ने उसके जाते ही किवाड़ बन्द किए और मेज के दूसरे सिरे पर जाकर के. सी. और सरकारी अफ़सर के बीच में जाकर बैठ गया। उसने हमें एक बार और शराब दी और सिगार दिये। के. सी. ने शराब की बड़ी तारीफ़

की और स्ट्रिकलैण्ड ने बताया कि वह उसने कहाँ से ख़रीदी थी। अब हम तम्बाकू के बारे में बातें करने लगे। के. सी. ने अपने एक मुक़द्दमे की बात की जिसमें वह फँस गया था और कर्नल पोलो के बारे में बातें करने लगा। मुझे कुछ कहना ही नहीं था चुनाँचे मैं चुपचाप बैठा रहा और उनकी बातों में अपनी दिलचस्पी जाहिर करता रहा और चूँकि मैंने समझ लिया कि मुझ पर कोई ध्यान ही नहीं दे रहा इसलिए मैं बड़े इत्मीनान से स्ट्रिकलैण्ड को जाँचने लगा। मैंने जो अंदाजा लगाया था वह उससे कहीं बड़ा निकला। न जाने क्यों मैंने यह सोचा था कि वह बड़ा दुबला-पतला और मामूली शक्ल-सूरत का आदमी होगा, लेकिन असलियत में वह लम्बा-चौड़ा और भारी-भरकम शख्स था—बड़े-बड़े हाथ-पैर थे और वह शाम के कपड़े बड़े भोंडेपन से पहने हुए था वह ऐसा लगता था जैसे कोई कोचवान हो और उसे उस मौक़े पर कपड़े पहना दिये हों। चालीस साल की उसकी उम्र थी, खूबसूरत नहीं था लेकिन ऐसा बदसूरत भी नहीं क्योंकि उसका नाक-नक्शा अच्छा था लेकिन चूँकि उसके नक़्श औसत दर्जे से कुछ बड़े थे इसलिए कुछ अच्छे नहीं लगते थे। उसकी दाढ़ी बनी हुई थी और उसका लम्बा मुँह कुछ नंगा-नंगा सा लग रहा था। बाल लाल रंग लिये हुए थे जो बहुत छोटे-छोटे थे, आँखें छोटी थीं और नीले या सफ़ेद रंग की थें देखने में वह बहुत साधारण लगता था। मुझे इस बात पर तनिक आश्चर्य न हुआ कि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड उसकी ओर से कुछ घबरा-सी रही थीं। ऐसी स्त्री के लिए जो साहित्यिक क्षेत्र में अपना नाम पैदा करना चाहती थी वह व्यक्ति किसी फ़ायदे का क्या हाँ नुक्सानदेह जरूर हो सकता था। यह तो स्पष्ट था कि उसमें कोई सोशल होने की सलाहियतें न थीं लेकिन यह कोई हर आदमी के लिए जरूरी भी नहीं है पर उसमें तो कोई विचित्रता कोई असाधारणता भी न थी जिससे कि उसे आम लोगों से ऊपर उठाया जा सकता। वह तो बस एक भला, मंदबुद्धि, ईमानदार और सीधा-सादा आदमी था। उसकी खूबियों की कोई भी बड़ाई कर सकता था लेकिन उसे अपने साथ रखना कोई भी गवारा न करता। वह बिल्कुल प्रभावहीन था। कहना चाहिये

वह समाज का एक योग्य सदस्य था, एक अच्छा पति और पिता था और एक ईमानदार दलाल था ; लेकिन उस पर अपना समय नष्ट करना बेकार था।

७

मौसम दम तोड़ रहा था, चारों ओर धूल उड़ती नजर आती थी और मेरे सारे परिचित जाने की तैयारियों में लगे हुए थे। श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड अपने बाल-बच्चों को लेकर नॉर्फ़ोक जा रही थीं जहाँ उनके बच्चों के दिलबहलाव के लिए ठाठें मारता हुआ समुद्र और पति के मनोरञ्जन के लिये गोल्फ का प्रबन्ध था। हमने एक-दूसरे को आख़िरी सलाम किया और पतझड़ में फिर से मिलने का कार्यक्रम बनाया। लेकिन जिस दिन हम शहर छोड़कर बाहर जाने वाले थे जब मैं बाज़ार से कुछ ख़रीद-फरोख़्त करके निकला तो वह मुझे अपने बच्चे व बच्ची के साथ मिली। मेरी ही तरह वह भी लन्दन छोड़ने से पहले अपनी जरूरत की चीजें ख़रीदने वहाँ आई थी ; हम दोनों बहुत थक गये थे और गर्मी के मारे हमारे पसीने छूट रहे थे। मैंने सुझाया कि हम सब पार्क में जाकर आइसक्रीम खायें।

मेरे ख्याल से श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड अपने बच्चों से मुझे मिलाकर बड़ी खुश थीं और उसने मेरी दावत बड़ी ख़ुशी से क़बूल कर ली। बच्चे अपने चित्रों से कहीं अधिक आकर्षक और सुन्दर थे और उनका उन पर गर्व करना भी सही था। चूँकि मैं उनके लिए कोई बड़ा-बूढ़ा बुज़ुर्ग नहीं था इसलिए वे मुझसे ज़रा न शरमाये और उन्होंने मुझसे खूब हँसी-खुशी इधर-उधर की बातें

कीं। वे असाधारणतया सुशील, स्वस्थ और अच्छे बच्चे थे। हम लोग दरख्तों के साये में बैठ गये जहाँ हमें बड़ा चैन महसूस हुआ।

जब घण्टे-भर बाद एक बग्घी पर सवार हो कर वे घर की ओर चल दिये तो मैं भी ख़रामा-ख़रामा अपने मकान की ओर रवाना हुआ। मुझे कुछ अकेलेपन का एहसास हुआ और मुझे उस पारिवारिक-जीवन के प्रति थोड़ी ईर्ष्या हुई जिसकी एक झलक मैंने अभी-अभी देखी थी। ऐसा मालूम होता था कि उनमें आपस में जबरदस्त मुहब्बत है। उनके अपने छोटे-छोटे घरेलू लतीफे थे जो अजनबी की समझ में तो नहीं आते थे लेकिन वे उससे बड़ा आनन्द लेते थे। शायद चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड को इसलिए मूढ़ और नीरस समझा जाता था कि उन लोगों को सबसे बढ़कर एक विनोदी या रसिक की आवश्यकता थी लेकिन उसकी बुद्धिमत्ता केवल उसके घरबार तक ही सीमित थी और यही वह साधन था जिससे न केवल समुचित सफलता मिलती है बल्कि उससे भी कहीं ज्यादा सुख प्राप्त होता है। श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड बड़ी शालिनी और दिलचस्प स्त्री थीं और वह उससे प्रेम करती थीं। मैंने उनकी ज़िन्दगियों की तस्वीर कुछ इस प्रकार खींची थी—उनके जीवन में कोई दुष्कर जोखिम नहीं है, वे ईमानदारी और शिष्टता का जीवन बिता रहे हैं और दो सेहतमन्द सुखदाई बच्चे जो अपने वंश व परिवार की आम परम्परा को आगे बढ़ायेंगे बड़े होनहार हैं। उन दोनों को महसूस भी न होगा और वे बूढ़े होते जायेंगे, उनके बच्चे बालिग़ होंगे, वक्त आने पर शादी करेंगे—एक के सुन्दर दुलहिन घर आयेगी जो कि भविष्य में जन्म लेने वाले स्वस्थ बच्चों की माँ बनेगी और दूसरी किसी खूबसूरत, वीर पुरुष के, जो ज़ाहिर है कोई सैनिक ही होगा, घर जायेगी। और आखिरकार एक शानदार ज़िन्दगी बसर करने, अपनी सन्तान का स्नेह प्राप्त कर चुकने के पश्चात् जब उनके दिन पूरे हो जायेंगे तो वे अपनी क़ब्रों में जा सोयेंगे।

यही असंख्य दम्पयियों की दास्तान होगी और जीवन-यापन के इस ढंग में एक घरेलू आकर्षण भी है। यह ज़िन्दगी आपको एक ऐसी शांत नदी का

स्मरण कराती है जो बड़ी अबाध गति से घूमती-बलखाती, हरे-भरे मैदानों में से और सायेदार दरख्तों से होकर बहती हुई अख़िरकार उस विशाल समुद्र में जा मिलती है। लेकिन समुद्र इतना खामोश, निस्पन्द और उदासीन होता है कि उसे देखकर आपको अचानक कसक-सी महसूस होती है। शायद यह मेरे स्वभाव में जो एक प्रकार की गुत्थी है और जो उस ज़माने में बहुत सबल थी, उसका ही नतीजा है कि मैंने इस प्रकार की ज़िन्दगी में जो अक्सर लोगों के हिस्से में आती है, कुछ कमी-कमी-सी महसूस की। मैंने उस किस्म की ज़िन्दगी की सामाजिक महत्ता को स्वीकार किया, उसके व्यवस्थित व निश्चित सुख को समझा लेकिन मेरे खून में जो उत्तेजना थी वह किसी उच्छृङ्खल मार्ग पर चलना चाहती थी। उस बेफ़िक्री और सरलता-भरे सुखों में मुझे कुछ खतरनाक-सा लगा। मेरे अन्तर में यह इच्छा उबल रही थी कि ज़िन्दगी ज्यादा-से-ज्यादा खतरनाक और संकटपूर्ण बना ली जाय। मैं उन नुकीली और खुरदरी चट्टानों तथा भयंकर रास्तों पर चलने को तैयार था यदि उनसे मुझे कुछ तब्दीली मिल सकती—और परिवर्तन तथा अज्ञात चीज़ों की उत्तेजना में ही मुझे ज़िन्दगी दिखाई देती थी।

८

●●●

स्ट्रिकलैण्ड दम्पति के बारे में जो कुछ मैं लिख चुका हूँ उसको पढ़कर लोगों को शक घेर लेंगे इस बात का मुझे एहसास है। मैंने उनमें ऐसी कोई विशेषता नहीं उत्पन्न की है जिसके द्वारा किसी उपन्यास के पात्र वास्तविक और सच्चे प्रतीत हो सकें। इसीलिए जब मैं समझता हूँ कि इसमें

दोष मेरा ही है तो मैं उनकी उन सनकों और स्वभाव-विशेष को याद करने का प्रयास करता हूँ ताकि उनके पात्रों में किसी हद तक स्पष्टता तथा सजीवता पैदा हो सके। मैं अनुभव करता हूँ कि उनकी बोलचाल में कुछ विचित्रता या उनके स्वभाव में कुछ विलक्षणता उत्पन्न करके मैं उन्हें ऐसी विशेषता व महत्त्व प्रदान कर सकता हूँ जिनमें वे अपने आप में यक्ता लगें। लेकिन फ़िलहाल वे जैसे हैं उनकी किसी पुरानी तस्वीर की आकृतियों से तुलना की जा सकती है। वे अपने पार्श्वदृश्य से अलग नहीं दिखाई देती, और यदि उन्हें कुछ फ़ासले से देखा जाय तो उनका अपना डिज़ाइन भी धुँधला पड़ जाता है और वे सिर्फ किसी एक रंग-विशेष का सुखद-सा टुकड़ा प्रतीत होने लगती हैं। मैं यह कहकर दामन बचा सकता हूँ कि उन्होंने जो प्रभाव मुझ पर डाला था वह केवल इतना ही था। उनमें ठीक वही संदिग्धता वर्तमान थी जो आपको उन लोगों में दिखाई देती है जो समाज-रचना के एक भाग के रूप में और केवल उसी के सहारे जीवित रहते हैं। वे शरीर की इंद्रियों के समान हैं—आवश्यक, किन्तु तभी तक जब तक कि वे स्वस्थ रहें और सारे शरीर में गुथी हुई रहें। स्ट्रिकलैण्ड दम्पति समाज के मध्य वर्ग के एक औसत परिवार के-से थे। पत्नी बड़ी प्यारी-सी, और मेहमान-नवाज स्त्री थी जो साहित्यिक समाज में नाम कमाने की निरीह पिपासा की शिकार थी। पति तनिक रुक्ष और नीरस था जो 'जेहि विधि राखे राम तेहि विधि रहिए' के अनुसार अपना कर्तव्य निबाह रहा था; और दो सुन्दर और प्यारे-से तथा स्वस्थ बच्चे थे। इससे अधिक साधारण बात और क्या हो सकती है। मुझे अब तक ऐसी कोई बात नहीं मालूम जो किसी जिज्ञासु का ध्यान आकर्षित कर सके।

जब मैं बीती हुई बातों को याद करता हूँ तो यकायक अपने आपसे यह प्रश्न पूछता हूँ कि क्या मैं ऐसा विचार-शून्य था कि चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड में मुझे कोई असाधारण विशेषता ही न दिखाई दी ? संभव है यह सच ही हो। मैं समझता हूँ कि तब से लेकर अब तक जो समय गुजरा है उसमें मैंने मानव-जीवन का पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर लिया है; लेकिन यदि स्ट्रिकलैण्ड-दम्पति से मिलते समय भी मेरा यही अनुभव होता जो आज है तब भी मैं समझता हूँ

मेरे उनके जानने और परखने में कोई अंतर न होता। लेकिन चूंकि मैं जानता हूँ कि मनुष्य अपने आप में बड़ा गूढ़ और पेचीदा है इसलिए मुझे उस खबर से किंचित आश्चर्य भी न होना चाहिए जो मुझे वसंतागमन के समय लन्दन से वापसी पर उनके बारे में मिली थी।

जब मैं जर्मिन स्ट्रीट में रोज़ वाटरफोर्ड से मिला तो वापस आने में घण्टे लग गये।

"आप तो बहुत आनन्दित और मग्न दिखाई देती हैं," मैंने कहा। "आखिर बात क्या है ?"

वह मुस्कराई और उसकी आँखों में वही द्वेष चमक उठा जिससे मैं पहले से परिचित था। उस द्वेषपूर्ण मुस्कान का अर्थ यह था कि उसने अपने किसी मित्र के बारे में कोई बुरी अफवाह सुनी थी और उस साहित्यकार की आंतरिक भावना जाग उठी थी।

"चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड से तो आपकी मुलाक़ात हुई थी ना ?"

इतना कहते हुए न केवल उसका चेहरा बल्कि सारा शरीर उल्लास से हिल उठा। मैंने सर हिला दिया। मैं एकदम सोच में पड़ गया कि कहीं वह बेचारा स्टॉक एक्सचेंज में पीटा न गया हो या कहीं बस के नीचे न आगया हो।

"है ना कितनी डरावनी बात ? वह अपनी पत्नी को छोड़ भागा है।"

मिस वाटरफोर्ड ने महसूस किया कि वहाँ जर्मिन स्ट्रीट के नुक्कड़ पर खड़े होकर वह सारा माजरा नहीं सुना सकती थी, अतः एक कलाकार की नाईं उसने यह सूचना-मात्र मुझे देकर कहा कि उसका विवरण वह बिल्कुल नहीं जानती। मैंने भी सोचा कि ऐसी भी कौनसी बड़ी बात है जो यह यहाँ नहीं बता सकती, पर वह बहुत ढीठ थी अपनी ज़िद की पक्की।

"मैं कहती हूँ मुझे इससे ज्यादा कुछ नहीं मालूम," उसने मेरे भावोत्तेजक प्रश्नों के उत्तर में कहा और फिर ज़रा लापरवाही से कंधे सिकोड़ कर बोली : "मेरे ख्याल से कोई नवयुवक यह सूचना एक होटल में छोड़ गया है।"

वह मेरी ओर देख कर मुस्करायी और यह कहते हुए कि उसे किसी डेंटिस्ट से मिलना है, इत्मीनान से चल दी। यह खबर सुन कर मुझे परेशानी कम हुई, दिलचस्पी अधिक। उस समय जिंदगी का प्रत्यक्ष अनुभव मुझे बहुत कम था और जाने-पहचाने लोगों, जो कुछ वैसे ही थे जिनके बारे में मैं पढ़ भी चुका था, कि इस घटना ने मुझे काफी उकसाया। मैं स्वीकार करता हूँ कि समय ने अब मुझे अपने लोगों की इस प्रकार की घटनाओं का आदी बना दिया है। किन्तु उस समय इस खबर से मुझे धक्का-सा भी महसूस हुआ। स्ट्रिकलैण्ड उस समय निश्चित रूप से ४० का होगा और मुझे यह बात बड़ी अटपटी-सी लगी कि इतनी उम्र वाले व्यक्ति भी दिल के वश में हो जाते हैं। जवानी की मदांधता की भी एक सीमा होती है अतः मैंने ३५ वर्ष की अवस्था ऐसी क़रार दी जिसमें कोई आदमी मूर्ख बने बिना किसी के प्रेम-जाल में यदि फँस जाय तो क्षम्य है। फिर यह समाचार व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए चिंताजनक थे क्योंकि मैंने श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड को पत्र में लिखा था कि मैं वापिस आ रहा हूँ और साथ ही यह भी कि यदि वह स्वीकार करें तो मैं किसी भी दिन उनके यहाँ चाय पीने के लिए आऊँगा। और यही वह दिन था, पर मुझे श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड का कोई संदेश तब तक न मिला था। तो क्या वह मुझसे मिलना चाहती थी या नहीं ? यह भी मुमकिन था कि अपनी ही आवल-धावल में वह मेरे पत्र को भूल गई हों। इसलिए शायद यही बेहतर हो कि मैं न जाऊँ। दूसरे यह भी हो सकता है कि वह इस मामले को एक रहस्य बनाये रखना चाहें और ऐसे में उन पर यह जाहिर कर देना कि मुझे वह खबर पहुँच चुकी है कुछ अनुचित ही था। अब मुझे एक ओर तो यह भय था कि कहीं एक अच्छी महिला के विचारों को ठेस न लगे और दूसरी ओर यह डर था कि कहीं मैं उनके मार्ग में बाधक न बन जाऊँ। मैंने अनुभव किया कि वह दुखी होंगी और मैं ऐसा दुःख या व्यथा देखना नहीं चाहता था जिसे मैं सहन न कर सकूँ। किन्तु मेरे अन्तर में यह उत्कण्ठा थी, जिस पर मुझे शर्म आ रही थी, कि मैं यह देख लूँ कि इस सारी

घटना के प्रति उसकी क्या प्रतिक्रिया है। मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ था।

अंततः मुझे यह सूझा कि मैं उनके यहाँ जाऊँ और ऐसे जैसे कोई खास बात हुई ही नहीं और नौकरानी के हाथ अन्दर यह सन्देश भेजूँ कि यदि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड आज्ञा दें तो मैं उनसे मिलना चाहता हूँ। इससे उन्हें यह मौक़ा मिल जायेगा कि वह मुझे आने दें या यों ही लौटा दें। लेकिन जब मैंने वह वाक्य जिसकी तैयारी की थी, नौकरानी से कहा तो मेरी घबराहट और विस्मय का ठिकाना न रहा और जब मैं उस अँधियारे बरामदे में खड़ा उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था तब तो मैंने बड़ी मुश्किल से अपने दिमाग़ को क़ाबू में रखा। नौकरानी वापिस आगई। उसकी चालढाल से यह मालूम होता था कि घर की विपत्ति का उसे पूर्ण ज्ञान है।

"इस ओर से पधारिये साहब!" उसने कहा।

मैं उसके पीछे-पीछे ड्राइंग रूम में गया। खिड़कियों के पर्दे आधे खिंचे हुए थे ताकि कमरे में कुछ अँधेरा रहे और श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड रोशनी की ओर पीठ किये हुए बैठी थीं। उनके बहनोई कर्नल मैक्एन्ड्रयू अँगीठी के सामने खड़े अपनी पीठ सेंक रहे थे। मुझे खुद को अपना प्रवेश कुछ बहुत ही भद्दा-सा लगा। मैंने सोचा कि मेरा वहाँ पहुँचना उनके लिए आश्चर्यजनक सिद्ध हुआ है और श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे सिर्फ इसलिए अन्दर बुला लिया है क्योंकि वह मुझे कोई और दिन बुलाना भूल गई थीं। दूसरे मैंने यह भी अनुमान लगाया कि कर्नल को मेरा पहुँचना नागवार गुज़रा है।

"मुझे यकीन ही नहीं था कि आप मुझे याद कर रही होंगी।" मैंने कुछ लापरवाही और उदासीनता प्रकट करते हुए कहा।

"नहीं, नहीं मैं तो आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। एने अभी एक मिनट में चाय ले आती है।"

अँधेरे में भी मैंने भलीभाँति देख लिया कि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड का चेहरा आँसुओं से सूजा हुआ था। और उनका चर्म जो कभी भी बहुत अच्छा नहीं था बहुत ही मैला मालूम हो रहा था।

"मेरे बहनोई को तो जानते हैं ना आप ? छुट्टियों से पहले एक बार यहीं खाने पर मिले थे इनसे ?"

हमने हाथ मिलाये। मैं इतना झेंप रहा था कि उस समय मुझसे कुछ कहते ही न बना, किन्तु श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने मेरी सहायता की। उन्होंने मुझसे पूछा कि आप गर्मियों में क्या करते रहे और उनके सवाल की मदद से मैं कुछ बातें कर सका, इतने में चाय आगई। कर्नल ने व्हिस्की और सोडा माँगा।

"अरे अमी, तुम भी एकाध पेग लो ना," उसने कहा।

"नहीं, नहीं। मैं सिर्फ चाय ही पियूँगी।"

यह उस अनहोनी घटना की ओर पहला संकेत था। मैंने उस पर ध्यान ही न दिया और श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड को बातों में लगाये रहा। कर्नल ने जो अब तक अँगीठी के सामने खड़ा था, एक शब्द भी न कहा। मै इसी सोच में था कि किस तरह खूबसूरती के साथ उनसे जाने की आज्ञा माँगूँ और मैंने अपने आपसे पूछा कि आखिर श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे क्यों अंदर आने दिया। गुलदस्ते वहाँ मौजूद न थे और खूबसूरत खिलौने व सजावट की अन्य चीजें जो गर्मी के समय वहाँ से हटा दी गई थीं, अभी तक नहीं लाई गई थीं; वही कमरा जो कभी बड़ा आनंदमय और सुखद लगता था अब नीरस-सा मालूम हुआ। उसे देखकर कुछ ऐसा लगता था जैसे दीवार के दूसरी ओर कोई मुर्दा लेटा हुआ हो। मैंने चाय समाप्त की।

"सिगरेट लेंगे आप ?" श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने दरियाफ्त किया।

उन्होंने सिगरेट का डिब्बा तलाश किया पर वह कहीं न मिला।

"शायद सब समाप्त हो गये।"

अचानक वह जोर-जोर से रो पड़ीं और कमरे से बाहर चली गईं।

मैं घबरा गया। मेरा खयाल है कि सिगरेटों की, जो उनका पति सदैव लाया करता था, कमी ने उन्हें पति की याद दिलादी और उनके दिल में यह नया विचार पैदा हुआ कि वे साधारण आवश्यकता की वस्तुएँ अब नहीं हैं

जिनकी वह आदी थीं और यही सोचकर उन्हें सदमा हुआ। उन्होंने महसूस किया कि बीते हुए जीवन की बातें अब गईं, वे वापस नहीं आयगी। अब हमारे समाजिक रख-रखाव बाक़ी न रह सकेंगे।

"क्षमा कीजिएगा, मैं अब आपसे इजाज़त चाहूँगा।" मैंने उठते हुए कर्नल से कहा।

"शायद आपने सुन लिया होगा कि उस नराधम ने उन्हें छोड़ दिया है," वह ज़ोर से चीखा।

मैं सकुचाया।

"लोग जिस तरह गपबाज़ी करते हैं, आपको मालूम ही होगा," मैंने जवाब दिया। "मुझे तो सिर्फ इतना मालूम हुआ कि कोई गड़बड़ होगई है।"

"वह तो तमाम हुआ। किसी स्त्री के साथ वह पेरिस चला गया है और अमी के लिए एक कौड़ी भी नहीं छोड़ गया।"

"मुझे बड़ा अफसोस हुआ,"और क्या कहता, सिर्फ यही कह दिया मैंने।

कर्नल ने अपनी ह्विस्की पी। वह ५० वर्षीय लंबा-तड़ंगा आदमी था जिसकी मूंछें झुकी हुई और बाल सफेद थे। आँखें रूखी नीली थीं और मुँह बहुत ही निर्बल-सा। अब मुझे उससे अपनी पहली मुलाक़ात याद आई कि उसका चेहरा मूर्खों का-सा था। उसे इस बात पर बड़ा गर्व था कि फौज की नौकरी छोड़े हुए हालाँकि उसे दस वर्ष हो चुके थे फिर भी वह सप्ताह में तीन दिन पोलो खेल लेता था।

"मैं नहीं समझता श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड मुझसे अभी इस विषय पर बात करने के लिए तैयार होंगी," मैंने कहा। "कृपया आप स्वयं ही उनसे कह दें कि मैं इस पर कितना दुखी हूँ। और यदि मेरे योग्य कोई सेवा हो तो मैं सदैव तत्पर हूँ।"

उसने मेरी बातों पर कोई ध्यान ही नहीं दिया।

"भगवान जाने उस पर क्या बीतेगी। फिर उसके बच्चे भी तो हैं। क्या हवा पर जियेंगे वे सब? सत्रह साल!"

"क्या मतलब सत्रह साल ?"

"उनकी शादी को हो गये," उसने तुरंत कहा । "मुझे वह कभी अच्छा न लगा । ठीक है वह मेरा साढ़ू था और मैंने अपना रिश्ता बड़ी अच्छी तरह निभाया भी । क्या आप उसे शरीफ आदमी समझते थे ? उन्हें चाहिये था कि वह उससे शादी ही न करतीं ।"

"क्या जो कुछ हुआ बिल्कुल आखरी है ?"

"अब एक ही चीज़ बाक़ी रहती है और वह यह कि वह उसे तलाक़ देदे । जब आप अंदर आये थे मैं उससे यही कह रहा था । 'दे डालो जल्दी से अर्ज़ी, अभी, यह न केवल तुम्हारे अपने लिए बल्कि तुम्हारे बच्चों के लिए ज़रूरी हैं ।' अच्छा हो मुझे उसका मनहूस चेहरा न दिखाई दे, वरना मैं उसे मार-मार कर हुत्तू बनादूंगा ।"

मुझे फौरन ख़याल हुआ कि कर्नल मैक्एण्ड्रयू जो कुछ कह रहा है, ग़लत है । वह उसे नहीं मार सकता क्योंकि मैं समझता हूँ स्ट्रिकलैण्ड बड़ा बलवान है । लेकिन मैं खामोश रहा । जब कभी कोई सदाचार की ख़ातिर उत्तेजित हो जाता है किन्तु उसमें पापी को दण्ड देने की शक्ति नहीं होती तो बड़ा अटपटा-सा लगता है । अब मैं वहाँ से उठने के लिए कोई और बहाना तलाश कर रहा था कि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड वापस आगई । उन्होंने अपने आँसू पोंछ कर चेहरे पर पावडर मल लिया था ।

"माफ कीजिएगा, मुझ पर दौरा पड़ गया," वह बोलीं । "मुझे खुशी है आप गये नहीं ।"

वह बैठ गई । मैं अब भी भौंचक्का-सा बैठा था । उन तमाम बातों का जिनसे मेरा कोई वास्ता नहीं, ज़िक्र करते समय मुझे बड़ी शर्म महसूस हुई । तब तक मैं नारी के उस घोर पाप से अनभिज्ञ था जो उसे इस बात के लिए उकसाता है कि वह अपने खानगी मामलों का ज़िक्र हर उस व्यक्ति से करे जो उन्हें सुनने के लिए तैयार हो । अब श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड अपने पर जब्र करके सब कुछ कह रही थीं ।

"क्या लोग इसके बारे में चेमेगोइयाँ कर रहे हैं ?" उन्होंने पूछा ।

मुझे यह जानकर बड़ा विस्मय हुआ कि उन्होंने यह कैसे समझ लिया कि मैं उनकी घरेलू विपदा के बारे में सब कुछ जानता हूँ ।

"मैं तो अभी-अभी वापस आया हूँ । और अब तक केवल रोज़ वाटर फोर्ड से ही मेरी मुलाक़ात हुई है ।"

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने अपने हाथ जोड़ लिये ।

"बताइये उसने आपसे क्या-क्या कहा ।" और जब मैं हिचकिचाया तो उन्होंने ज़ोर देते हुए कहा, "मैं खास तौर से यह जानना चाहती हूँ ।"

"आप तो जानती हैं लोग किस तरह अफवाहें उड़ाते हैं । और वह तो ऐसी विश्वास-पात्र भी नहीं है, है ना ? कहने लगी आपके पति ने आपको छोड़ दिया है ।"

"बस इतना ही ?"

मैंने यह मुनासिब न समझा कि रोज़ वाटरफोर्ड का वह हवाला जो उसने होटल की किसी लड़की के बारे में दिया था, वहाँ दुहरा दूं । मैंने झूठ बोल दिया ।

"और किसी के साथ जाने की बात उसने आप से नहीं कही ?"

"जी नहीं ।"

"बस यही मैं जानना चाहती थी ।"

मैं कुछ घबरा गया लेकिन हर क्षण मुझे महसूस होता रहा कि अब मुझे वहाँ से उठ जाना चाहिये । जब जाते समय मैंने श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड से हाथ मिलाये तो मैंने उनसे कह दिया कि यदि मैं किसी काम आ सकूँ तो मुझे बड़ी खुशी होगी । वह रूखेपन से मुस्करा दीं ।

"आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ! मैं नहीं समझती मेरी कोई सहायता कर सकता है ।"

मैं बहुत झेंप रहा था ; इतना कि अपनी सहानुभूति भी प्रकट न कर सका और कर्नल को सलाम करने के लिए मुड़ा । उसने मुझसे हाथ नहीं मिलाया ।

"मैं अभी आया। अगर आप विक्टोरिया स्ट्रीट से होकर जा रहे हैं तो मैं आपके साथ ही चलता हूँ।"

"बहुत अच्छा," मैंने कहा, "आइये।"

६

ज्यों ही हम गली में से निकले उसने कहा, "बड़ी भयंकर बात है यह !"

मैं ताड़ गया कि वह मेरे साथ इसलिए बाहर आया है ताकि वही बात जो वह घण्टों अपनी साली से करता रहा था एक बार मुझसे और उस पर राय ले सके।

"हमें तो पता भी नहीं था कि वह औरत है कौन, समझे ?" उसने कहा, "हम तो सिर्फ इतना जानते मैं कि वह दुष्ट पेरिस चला गया है।"

"मैं तो समझा था वे दोनों बड़े सुख से रह रहे हैं।"

"और यह है भी सच। बल्कि आपके आने के कुछ देर पहले ही अमी कह रही थी कि शादी के बाद वे कभी एक बार भी नहीं झगड़े। अमी को तो जानते हैं ना आप ? उससे बेहतर स्त्री तो संसार-भर में नहीं मिलेगी।"

अब चूँकि उसने मुझे अपना राजदार बना लिया था चुनाँचे मैंने उससे कुछ सवाल पूछना बेजा न समझा।

"तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि उन्हें कभी कोई संदेह ही न था ?"

"जी हाँ, किसी प्रकार का नहीं। अगस्त में तो वह उनके साथ ही था और बच्चे नार्फोक में थे। वहां भी वह हमेशा का-सा ही था। दो-तीन दिन

के लिए मैं और मेरी पत्नी उसके यहाँ गये और मैंने उसके साथ गोल्फ खेला। सितम्बर में वह अपने घर आया ताकि उसका साथी जा सके पर अभी वहीं देहात ही में रही। वहाँ उन्होंने ६ सप्ताह के लिए एक मकान ले रखा था और जब मकान में रहने के दिन पूरे होगये तो पत्नी ने उसे अपने लन्दन आने की सूचना दी। जवाब उसका आया पेरिस से जिसमें लिखा था कि उसने निश्चय कर लिया है कि अब वह उसके साथ नहीं रहेगा।"

"आखिर कोई वजह भी बताई उसने ?"

"अरे भाई मेरे, कैसी वजह ? मैने खुद खत देखा है सिर्फ दस तो पंक्तियाँ थीं उसमें।"

"लेकिन यह तो कुछ असाधारण-सी बात है।"

फिर हमें सड़क पार करनी थी और लोगों की भीड़ के कारण हम बातें न कर सके। कर्नल मैक्एण्ड्रयू ने मुझसे जो कुछ कहा था वह बड़ा ग़लत और अविश्वसनीय लगा और मुझे शक हुआ कि हो-न-हो श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने अपने कुछ व्यक्तिगत कारणों से मामले की कुछ बातें इससे भी छिपाई हैं। स्पष्ट था कि कोई भी शख्स जो बीस वर्ष तक सुख से विवाहित जीवन बिताता रहा हो यकायक बिना किसी कारण के अपनी पत्नी को नहीं छोड़ सकता और न यही समझ में आता था कि विवाहित जीवन के दौरान ऐसी कोई घटना भी नहीं घटी जो पत्नी पर यह प्रकट करदे कि उनके सम्बन्धों में कोई दुराव है या नहीं। कर्नल ने फिर कहना जारी किया :

"जाहिर है इसके अलावा वह क्या दलील दे सकता था कि वह किसी स्त्री के साथ जा रहा है। मेरे ख्याल में तो उसने यह समझा होगा कि बाकी सब कुछ वह खुद मालूम कर लेगी। वह ऐसा ही आदमी था।"

"अब श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड क्या करने वाली हैं ?"

"जी, अव्वल तो यह कि सबूत एकत्र किये जायँ। मैं खुद पेरिस जा रहा हूँ।"

"और उसके व्यापार का क्या होगा ?"

"जी, यहीं तो उसने अपनी धूर्तता प्रकट की है। वह तो पिछले साल से ही ऐसा करने के लिए ज़मीन हमवार कर रहा है।"

"क्या उसने अपने साझीदार को बता दिया था कि वह जाने वाला है ?"

"अजी बिल्कुल नहीं।"

व्यापारिक मामलों का कर्नल मैक्एण्ड्रयू को बहुत ही मामूली ज्ञान था और मुझे वह भी नहीं था, इसलिए मैं यह न समझ पाया कि किन शर्तों पर स्ट्रिकलैण्ड अपना व्यापार छोड़ कर गया है। मुझे मालूम हुआ कि जिस साझीदार को वह छोड़ गया है वह बहुत नाराज़ है और दावा करने की धमकी दे रहा है। ऐसा मालूम हुआ कि जब सब कुछ तै हो चुकेगा तो उसे चार या पाँच सौ पौण्ड का नुक्सान होगा।

"वह तो ग़नीमत जानिए कि फ्लैट का फर्नीचर अमी के नाम है। और वह हमेशा उसी का रहेगा।"

"क्या आप गंभीरता से कह रहे थे कि उसे एक कौड़ी भी नहीं मिलेगी ?"

"जी हाँ, बिल्कुल। उसके पास दो या तीन सौ पौण्ड हैं और फर्नीचर है।"

"लेकिन वह गुज़ारा कैसे करेंगी ?"

"भगवान जाने।"

मामला और भी पेचीदा होता गया और कर्नल ने अपनी शेखीभरी क़समों और क्रोध से मुझे सूचित करने के बजाय और उलझन में डाल दिया। आर्मी एण्ड नेवी स्टोर्स के घण्टे को देख कर उसे किसी क्लब में ताश खेलने का वादा याद आगया और वह मुझे सेंट जेम्स के पार्क के इस पार छोड़ कर चला गया। उसके जाने की मुझे बेहद खुशी हुई।

दो-एक रोज़ बाद श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे एक पर्चा भेजा जिसमें उसी दिन शाम को डिनर के बाद मुझे बुलाया। मैं पहुँचा तो वह अकेली थीं। उनकी काली पोशाक जो बहुत ही सादी थी उनकी व्यथा की द्योतक थी। और मुझे अचरज हो रहा था कि यद्यपि वास्तव में उनका हृदय दुखित था उन्होंने शिष्टता व सुन्दरता के अपने विचारों के अनुसार ही कपड़े पहने थे जो उस भूमिका के लिए सर्वथा उचित थे जो वह निर्वाहित करने वाली थीं।

"आपने कहा था ना कि यदि मैं आपसे कोई काम लेना चाहूँ तो आप खुशी से कर देंगे ?"उन्होंने पूछा।

"जी हाँ, मैंने कहा था और मैं तैयार भी हूँ।"

"क्या आप पेरिस जाकर चार्ली से मिल सकते हैं ?"

"मैं ?"

मैं दंग रह गया। मैंने बहाना बनाते हुए कहा कि मैं उससे सिर्फ एक बार ही मिला हूँ। मुझे मालूम ही न था कि वह मुझसे करवाना क्या चाहती हैं ?

"फ्रेड जाने पर तुला हुआ है।" फ्रेड कर्नल मैक्एण्ड्रयू था।"लेकिन मैं समझती हूँ इस काम के लिए वह ठीक नहीं है। वह तो मामला और बिगाड़ देगा। अब बताइए किससे कहूँ इस काम के लिए ?"

उनकी आवाज़ कुछ लड़खड़ाई और मैंने सकुचाहट को भी क्रूरता समझा।

"लेकिन मैंने तो आपके पति से दो-दो बातें भी नहीं की हैं। न ही वह मुझे जानते हैं। वह शायद मुझे घुड़की देकर निकाल दें।"

"उसका आप बुरा तो न मानेंगे ?" श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने मुस्कराकर कहा।

"तो आखिर आप मुझसे करवाना क्या चाहती हैं ?"

उन्होंने स्पष्टतया उत्तर नहीं दिया।

"मैं तो समझती हूँ उनका आपको न जानना भी हमारे ही हित में है। देखिये ना उन्हें फ्रेड कभी फूटी आँख न भाये; वह उन्हें मूर्ख समझते रहे क्योंकि सैनिकों के स्वभाव को वह नहीं समझते थे। फ्रेड एकदम उत्तेजित हो जायेंगे और उनमें झगड़ा हो जायेगा। नतीजा यह होगा कि मामला बजाय सुधरने के और बिगड़ जाएगा। यदि आप उनसे कहें कि आप मेरी ओर से आये हैं तो वह आपकी बात ज़रूर सुनेंगे।"

"मैं आपको बहुत कम अर्से से जानता हूँ," मैंने उत्तर दिया। "मैं नहीं समझता कि एक ऐसा शख्स जिसे सारा विवरण मालूम न हो इस प्रकार का मामला कैसे सुलझा सकता है। जिस बात से मेरा वास्ता नहीं उसमें दिलचस्पी लेना या उसमें पड़ना मैं नहीं चाहता। आप खुद जाकर उनसे क्यों नहीं मिल लेतीं ?"

"आप यह भूलते हैं कि वह अकेले नहीं हैं।"

मैं खामोश हो गया। मैंने कल्पना की कि मैं चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड से मिलने गया हूँ और मैंने अपना कार्ड अंदर भेजा है; फिर देखता क्या हूँ कि वह उसे अपने हाथ में लिये कमरे में आता है :

"आपके यहाँ पधारने का उद्देश्य ?"

"मैं आपसे आपकी पत्नी के बारे में मिलने आया हूँ।"

"सच ? जब आप कुछ और बड़े हो जायेंगे तो आपको पता चलेगा कि 'तुझे पराई क्या पड़ी तू अपनी ही निबेड़' वाली कहावत का क्या लाभ होता है। यदि आप कृपया अपना मुँह ज़रा बाईं ओर घुमायें तो आपको दरवाज़ा नज़र आयेगा। नमस्कार !"

मैंने अनुमान लगाया कि मुझे वहाँ से सगर्व वापस आने में दिक्कत होगी और मैं अफसोस करता रहा कि काश मैं तब तक लंदन वापस न आता जब

तक कि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड का मामला तय न हो जाता। मैंने कनअँखियों से उनकी ओर देखा। वह विचारों में ग़र्क़ थीं। फिर एकदम उन्होंने मेरी ओर देखा, एक गहरी साँस ली और मुस्करा दीं।

"यह सब ऐसे यकबयक हो गया," वह बोलीं। "सत्रह वर्ष होगये हमारी शादी को। मैंने कभी सपने में भी नहीं देखा कि चार्ली इस प्रकार किसी के साथ भाग भी सकते हैं। हम सदैव सुखी जीवन बिताते रहे हैं। यह और बात है कि मेरी अन्य सैंकड़ों दिलचस्पियों में वह मेरा साथ न देते थे।"

"आपको पता चला कि कौन,"—मैं नहीं जानता था किस तरह कहूँ—"है वह व्यक्ति जिसके साथ वह गये हैं ?"

"जी नहीं। किसी को कुछ पता नहीं। बड़ी अजीब बात है यह। आम तौर पर जब कोई व्यक्ति किसी लड़की से प्रेम करने लगता है तो लोग उन्हें साथ-साथ देखते हैं—यानी खाना खाते हुए या कुछ और करते हुए और लड़की की सहेलियाँ आकर उसकी पत्नी को सब कुछ बता देती हैं। लेकिन मुझे तो किसी ने भी आकर न बताया। उनका पत्र भी बिल्कुल अचानक ही आया। मैं तो समझती थी वह मेरे साथ बिल्कुल सुखी हैं।"

वह बेचारी रोने लगीं और उन्हें देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। लेकिन थोड़ी ही देर बाद वह खामोश होगईं।

आँखें सुखाते हुए बोलीं, "क्या फायदा इस तरह रोकर जी हल्कान करने से ? अब तो यह तय करना है कि ऐसी स्थिति में किया क्या जाय ?"

वह अपनी ऊटपटाँग बातें करती रहीं, कभी हाल ही में हुई बातें, कभी अपनी पहली मुलाक़ात और शादी की बातें, लेकिन अब मुझे उनकी जिन्दगियों का अच्छा-खासा अंदाजा हो गया और मुझे लगा कि मेरे अनुमान ग़लत न थे। श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड किसी हिन्दुस्तानी सिविलियन की लड़की थीं जो रिटायर होने के बाद देश के दूरस्थ कोने में बस गया था; उसकी यह आदत थी कि हर साल अगस्त में वह अपने परिवार को आबोहवा बदलने की खातिर ईस्टबोर्न ले जाया करता था; और यहीं पर जब वह बीस वर्ष की थीं तो एक बार उनकी मुलाक़ात चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड से हुई। वह तेईस वर्ष का था। वे साथ-

साथ टेनिस खेलते थे, साथ-साथ घूमते थे, नीग्रो भाट के गाने सुनते थे और उसके विवाह के प्रस्ताव के एक सप्ताह पूर्व ही लड़की ने उसे अपना जीवन-साथी बनाने का निश्चय कर लिया था। वे लन्दन में रहते थे, पहले तो हैम्पस्टेड में, पर बाद में जब वह बहुत खुशहाल होगया तो शहर में रहने लगे। उनके दो बच्चे हुए।

"वह उनसे हमेशा बड़ा प्यार करते थे। यदि वह मुझसे ऊब भी गये थे तब भी मैं नहीं समझती वह इन बच्चों को छोड़ने का साहस कैसे कर सके। यह सब कितना अविश्वस्त लगता है। मुझे तो अब भी इस सब पर विश्वास नहीं।"

अंत में उन्होंने मुझे उसका पत्र दिखाया। मुझे उसे देखने की बड़ी जिज्ञासा थी, लेकिन माँगने का साहस मुझे न हो सका था।

"प्रिय अमी,

मैं समझता हूं घर पर सब कुछ कुशल और व्यवस्थित होगा। मैंने ऐन को तुम्हारे लिए हिदायतें देदी थीं और जब तुम यहाँ पहुंचोगी तो तुम्हारे और बच्चों के लिए डिनर तैयार मिलेगा। मैं तुमसे वहाँ न मिल सकूँगा। मैंने तुमसे अलग रहने का निश्चय कर लिया है। और मैं कल सुबह पेरिस के लिए रवाना हो रहा हूँ। वहाँ पहुंचने के बाद मैं यह पत्र पोस्ट करूँगा। मैं अब वापस नहीं आऊँगा। मेरा फैसला अटल है।

"सदा तुम्हारा ही,

"चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड"

"खेद या कैफियत का एक शब्द भी नहीं। क्या आप इसे अमानुषिक नहीं समझते ?"

"ऐसी स्थिति में यह पत्र बड़ा ही विचित्र है," मैंने उत्तर दिया।

"अब तो दिल को समझाने की एक ही दलील है और वह यह कि वह आपे में नहीं हैं। न जाने यह कौन औरत है जिसने उन्हें पकड़ लिया है,

लेकिन यह तै है कि उसने इन्हें बिल्कुल बदलकर रख दिया है। यह मामला काफी अर्से से होरहा होगा।"

"यह आपने कैसे समझ लिया ?"

"फ्रेड ने पता लगाया इसका। मेरे पति कहा करते थे कि वह हर हफ्ते तीन या चार रातें क्लब में ब्रिज खेलकर गुज़ार देते थे। फ्रेड उस क्लब के एक मेम्बर को जानते हैं, उसी से उन्होंने कहा कि चार्ल्स बहुत बढ़िया ब्रिज-खिलाड़ी हैं। वह व्यक्ति हक्का-बक्का रह गया। उसने कहा कि चार्ल्स को तो उसने कभी खेल के कमरे में भी नहीं देखा। इससे यह बात स्पष्ट होगई कि जब हम यह समझा करते थे कि चार्ल्स क्लब में होंगे तो वह उसी औरत के साथ होते होंगे।"

मैं क्षण-भर तक खामोश रहा। फिर मुझे बच्चों का खयाल आया।

"राबर्ट को तो सारा माजरा समझाने में बड़ी कठिनाई हुई होगी।"मैंने मालूम किया।

"अजी नहीं, मैंने तो उन दोनों को एक शब्द भी नहीं कहा। ऐसा हुआ ना कि जिस दिन उन दोनों को स्कूल जाना था, हम उसके एक ही दिन पहले यहाँ आए। मैंने ज़रा हाज़िरदिमाग़ी से काम लिया और कह दिया कि उनके पिता को व्यापार के सिलसिले में बुला लिया गया है।"

उस आकस्मिक दुर्घटना को एक राज़ बनाकर रखना और ऊपर से हँसी-खुशी रहना तथा हर ज़रूरी काम करना और बच्चों को स्कूल के लिए भेजना सहज काम न था। श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड का फिर दिल भर आया।

"और उन बेचारे मासूम बच्चों का क्या होगा ? हम सब कैसे रहेंगे ?"

वह अपने दिल पर क़ाबू पाने की चेष्टा करने लगीं और मैंने देखा कि कुछ-कुछ देर बाद वह अपनी मुट्ठियाँ भींचतीं और फिर खोल लेतीं। वह दृश्य भी बड़ा भयानक और दुखद था।

"यदि आप समझती हैं कि मेरा जाना कारगर साबित होगा तो मैं निश्चित रूप से पेरिस जाऊँगा। लेकिन आपको मुझे एक-एक चीज़ विवरण-सहित बतानी पड़ेगी।"

"मैं उन्हें वापस बुलाना चाहती हूँ, बस।"

"मुझे कर्नल मैक्एण्ड्र्यू से पता चला है कि आपने उन्हें तलाक़ देने का निश्चय किया है।"

"मैं उन्हें कभी तलाक़ नहीं दूँगी," उन्होंने एकदम भड़ककर कहा। "यह आप उन्हें जता दें कि वह उस स्त्री से जीवन भर विवाह नहीं कर सकते। मैं भी ज़िद में उनसे दो क़दम आगे ही हूँ, मैं उन्हें कभी तलाक़ नहीं दूँगी। मुझे अपने बच्चों को भी तो पालना-पोसना है।"

मैं समझता हूँ कि उन्होंने यह सब अपनी राय ज़ाहिर करने की ग़रज़ से कहा लेकिन फिर मैं यह भी सोचता हूँ कि यह उनकी स्वाभाविक डाह ही होगी। मातृत्व और बच्चों के प्रति उनकी चिंता तो सिर्फ कहने के लिए होगी।

"क्या आप उनसे अब भी प्रेम करतीं हैं?"

"मैं नहीं जानती। मैं उन्हें वापस बुलाना चाहती हूँ। अगर वह वापस आजाते हैं तो हम पिछली बातें सब भूल जायेंगे। आख़िर हमें पति-पत्नी की तरह रहते हुए सत्रह वर्ष होगये हैं। मैं बहुत रोशन ख़याल औरत हूँ। जब तक यह सब जो उन्होंने किया मुझे मालूम न होता तब तक मुझे कोई आपत्ति न होती। उन्हें मालूम होना चाहिए कि उनका यह दुराचार अधिक नहीं चल सकता। अब भी यदि वह आजायें तो सारी बात बन जाय और किसी को कानों-कान ख़बर न हो।"

मुझे यह जानकर झुरझुरी-सी हुई कि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड अफवाहों से डरती हैं क्योंकि तब तक मैं यह न जानता कि स्त्री के जीवन में दूसरों की राय कितना काम करती है। और यही तथ्य उनकी अत्यंत गहरी भावनाओं में एक प्रकार की बेईमानी पैदा करता है।

स्ट्रिकलैण्ड की रिहाइश का पता चल गया था। उसके साझीदार ने बैंक को जो क्षोभपूर्ण पत्र लिखा उसमें कहा कि स्ट्रिकलैण्ड छिपा-छिपा फिर रहा है और स्ट्रिकलैण्ड ने कुछ नकचढ़पने और उपहासपूर्ण स्वर में जवाब दिया और अपने साझीदार को अपना पूरा पता बता दिया। ज़ाहिर है वह एक होटल में ठहरा हुआ था।

"मैंने तो इसके बारे में कभी सुना तक नहीं," श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने कहा। "लेकिन फ्रेड जानते हैं अच्छी तरह से। कहते हैं बहुत मँहगी है होटल।"

सहसा लज्जा से उनका चेहरा तमतमा उठा। मैं कल्पना करता हूँ कि उन्होंने अपने पति को बड़ी एशो-इशरत की जिन्दगी बसर करते हुए समझा होगा—कि वह बेहतरीन क़िस्म के कमरे में रह रहा होगा, एक-से-एक बढ़कर होटलों में खाना खाता होगा और साथ ही उसने अपने वे दिन याद किए होंगे जब वह अपने दिन रेस मीटिंगों में और शामें खेल में गुज़ारता था।

"उनकी इस उम्र में यह सब नहीं चल सकता," वह बोलीं। "आख़िर चालीस के हैं। कोई नवयुवक होता तो मैं मान भी लेती लेकिन उनकी उम्र में तो जब कि दो बड़े-बड़े बच्चे हैं यह बड़ा भयानक लगता है। उनकी सेहत इसे हरगिज़ बर्दाश्त न करेगी।"

उनके सीने में क्रोध और दीनता का संघर्ष होने लगा।

"उनसे कहिएगा कि आपके बाद घर हमें फाड़ खाने को दौड़ता है। हरेक चीज़ अपनी जगह पर है पर फिर भी हर चीज़ अलग दिखाई देती है। मैं उनके बग़ैर नहीं जी सकती। बहुत जल्दी मैं अपना खून कर लूंगी। उनसे गुज़रे हुए ज़माने की बातें कीजिए, कहिए हम दोनों ने किस प्यार-मुहब्बत और सुख-चैन से दिन गुज़ारे हैं। जब बच्चे उनके बारे में पूछेंगे तो मैं उन्हें क्या जवाब दूंगी? उनका कमरा अब भी ठीक वैसा ही है जैसा वह उसे छोड़ गये थे। ऐसा लगता है मानो उनकी प्रतीक्षा कर रहा हो। हम सब बेचैनी से उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

अब उन्होंने मुझे उससे क्या कहना चाहिए यह बताया। जो-जो प्रश्न वह संभवतया मुझसे पूछ सकता था उसके विस्तृत उत्तर श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे बता दिए थे।

"आप जो कुछ मेरे लिए कर सकें, करेंगे ना?" उन्होंने बड़ी दीनता से "मेरी हालतेज़ार उन्हें बता दीजिए।"

मैं समझ गया कि वह चाहती थीं कि जिस तरह भी हो सके मैं स्ट्रिकलैण्ड की सहानुभूति उनके लिए प्राप्त करूँ। वह फूट-फूट कर रो रही थी। और मुझे अपार दुख हो रहा था। साथ ही मुझे स्ट्रिकलैण्ड की क्रूरता पर बहुत क्रोध आरहा था। मैंने उनसे वादा किया कि मैं उन्हें वापस लाने का भरसक प्रयत्न करूँगा। मैं दूसरे रोज़ जाने के लिए राज़ी होगया और यह निश्चय किया कि जब तक मेरा मक़सद पूरा न होगा मैं पेरिस में ही रहूँगा। अब काफी देर हो चुकी थी और हम दोनों भावुकता से थककर चूर होगए थे चुनांचे मैं वहाँ से चल दिया।

११

यात्रा के दौरान में मुझे अपने उद्देश्य पर संदेह हो गया। अब चूँकि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड का व्यथित चेहरा मेरे सामने नहीं था, इसलिए मैंने मामले पर शांति से ग़ौर करना आरंभ किया। उनकी बातचीत में जो अंतर्विरोध था उसने मुझे उलझन में डाल दिया। वह बहुत दुखी थीं, पर मेरी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए उन्होंने अपने दुख और संकट का दिखावा किया था। ज़ाहिर था कि वह रोने के लिए तैयार थीं क्योंकि उनके पास रूमाल काफ़ी तादाद में थे; वैसे उनकी सूझ-बूझ का मैं क़ायल होगया लेकिन इससे उनके आँसू कम प्रभावशील हो गए। मैं यही निश्चय न कर पाया कि वह अपने पति को इसलिए वापस बुलाना चाहती हैं कि उन्हें उससे अपार प्रेम है या इसलिए

कि वह इस बदनामी से घबराती हैं; और मुझे इस संदेह से बड़ी परेशानी हुई कि तिरस्कृत प्रेम का भाव उनके टूटे हुए दिल में स्त्रीत्व की पराजय और प्रतीकार के भाव लेकर उत्पन्न हुआ है। मुझे तब तक यह मालूम न था कि मानव-प्रकृति में कितने अंतर्विरोध हैं। मैं न जानता था कि बाहर से भले और नेक लगने वालों में कितनी कुटिलता होती है; ऊँचे लोगों में कितनी नीचता छिपी होती है और तिरस्कृत लोगों में कितनी नेकी।

लेकिन मेरी इस यात्रा में कुछ साहसिक कार्य का-सा आभास था और जब मैं पेरिस पहुँचा तो मुझमें एक नवीन उत्साह व स्फूर्ति पैदा हो गई। मैंने अपने आपको नाटकीय ढंग से देखा और मुझे अपनी भूमिका पर प्रसन्नता हुई कि मैं एक विश्वस्त मित्र की भाँति एक भटके हुए पति को उसकी दयालु पत्नी के पास वापस ले जाने वाला हूँ। मैंने तय किया कि अगले दिन शाम को मैं स्ट्रिकलैण्ड से मिलूँ; क्योंकि मैंने स्वभावतया ही यह सोचा कि मिलने का ज़रा ठंडा समय ठीक रहेगा। दोपहर के पहले मिलकर किसी के मर्म पर प्रभाव डालना ज़रा मुश्किल होता है। उसके बाद मेरे विचार निरंतर प्रेम में गुँथे रहे लेकिन विवाहित जीवन का यथार्थ आनन्द मैं सायं तक नहीं अनुभव कर सका।

मैंने अपने होटल वालों से चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड के होटल का पता मालूम किया। होटल का नाम 'होटेल देस बेल्जे' था। लेकिन मुझे यह जानकर ताज्जुब हुआ कि होटल के पोर्टर ने उस होटल का कभी नाम ही न सुना था। मुझे श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड से मालूम हुआ था कि रू द् रिवोली के पीछे यह एक बहुत बड़ी और शानदार जगह है। फिर हमने डाइरेक्टरी में उसका पता देखा। उस नाम का वहाँ केवल एक ही होटल था और वह भी रू देस मॉइन्स में स्थित था। जहाँ वह रहता था वह क्वार्टर कुछ फैशनेबुल न था, बल्कि यह कहना चाहिए कि सभ्य लोगों के रहने का भी नहीं लगता था। मैंने सिर हिलाया।

"नहीं, यह तो हो ही नहीं सकती," मैंने कहा।

पोर्टर ने अपने कंधे सिकोड़े। उस नाम का पेरिस में दूसरा होटल न था।

मैं समझ गया कि आखिर स्ट्रिकलैण्ड ने अपना असल पता छिपा ही लिया। उसने अपने साझीदार को वही ग़लत पता देकर चकमा दिया होगा। न मालूम मुझे यह क्यों सूझा कि यदि किसी बफरे हुए दल्लाल को योंही मज़ाक में पकड़कर पेरिस ले आया जाय और उसे घुमाने के लिए यदि किसी सड़ी-गंदी गली के वेश्यागृह में लेजाया जाय तो स्ट्रिकलैण्ड को यह मज़ाक पसंद आयेगा। फिर भी मैंने बेहतर यही समझा कि मैं जाकर खुद देखूँ। दूसरे दिन ६ बजे के क़रीब मैंने एक टैक्सी पकड़ी और रू देस मॉइन्स की ओर चल दिया। नुक्कड़ पर टैक्सी छोड़ी और होटल तक पैदल गया ताकि अंदर जाने के पहले मैं होटल को देख लूँ। ग़रीब-ग़ुरबा की ज़रूरत की चीज़ों की दूकानें उस सड़क पर थीं और उसके बीच में बाईं ओर को जो मैं चला तो होटल देस बेल्जे नज़र आया। मेरा अपना होटल भी बहुत सादा था लेकिन इसके मुक़ाबले में वह कहीं अधिक शानदार था। इमारत बहुत ऊँची और गंदी थी, जिस पर बरसों से रोग़न नहीं हुआ था और कुछ इतनी गंदी और भद्दी थी कि उसके आस-पास के मकान उससे कहीं ज्यादा साफ-सुथरे दिखाई दे रहे थे। गंदी खिड़कियाँ सब बंद थीं। मेरी समझ में नहीं आया कि क्या यही वह जगह हो सकती है जहाँ चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड अपनी उस अज्ञात प्रेमिका के साथ रह रहा है जिसकी खातिर वह अपनी सारी शान और अपना फर्ज़ तक भूल बैठा। मुझे बड़ी कोफ्त हुई और मैंने महसूस किया कि मुझे बेवकूफ बनाया गया है। और मैं बिना किसी पूछताछ के वापस होने लगा। मैं अंदर भी गया तो महज़ इसलिए कि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड से कह सकूँ कि मैंने अपना भरसक प्रयत्न किया पर सफल न हो सका।

होटल का दरवाज़ा एक दूकान की बाज़ू में था। वह खुला हुआ था और उसके अंदर एक जगह लिखा हुआ था 'होटल वासियों की सूची' संकीर्ण ज़ीने पर चढ़कर मैं ऊपर गया और वहाँ मुझे एक बक्स-सा दिखाई दिया, जिसमें मैंने झाँक कर देखा कि उसके अन्दर एक डेस्क और दो-चार कुर्सियाँ पड़ी हुई हैं। बाहर एक बेंच पड़ी हुई थी जिस पर शायद रात को चौकीदार लेट कर करवटें बदलता रहता होगा। वहाँ आसपास कोई मौजूद न था लेकिन इलेक्ट्रिक

घण्टी के नीचे 'बैरा' लिखा हुआ था। मैंने घण्टी बजाई और तुरंत एक बैरा बाहर आया। वह नवजवान था, आँखें उसकी बड़ी-बड़ी और चेहरा कुछ भद्दा था। वह क़मीस और स्लीपर पहने हुए था।

न जाने मैंने उससे पूछताछ इतनी मामूली ढंग से क्यों की होगी?

"मि० स्ट्रिकलैण्ड तो यहाँ नहीं रहते?" मैंने पूछा।

"छठे मंज़िल पर कमरा नं० ३२ में रहते हैं।"

मुझे इतना अचम्भा हुआ कि एक क्षण के लिए तो मैंने कुछ कहा तक नहीं।

"क्या वह कमरे पर होंगे?"

बैरे ने सूची में लगी तख्ती की ओर देखा।

"पर चाबी तो यहाँ रख नहीं गये। आप ऊपर जाकर देख लीजिए।"

अब मैंने सोचा एक प्रश्न और इससे पूछ लूँ।

"क्या उनके साथ कोई महिला भी हैं?"

"जी नहीं, साहब सिर्फ अकेले ही हैं।।"

ज्योंही मैं ऊपर को चला बैरे ने मुझे संदेह की नज़रों से देखा। सीढ़ियाँ अँधियारी और बे-हवा थीं और वहाँ बड़ी दूषित और खट्टी गंध आरही थी। तीन ज़ीनों के बाद ड्रेसिंग गाउन पहने, बाल बिखेरे एक स्त्री ने आकर दरवाज़ा खोला और ज्योंही मैं वहाँ से गुज़रा, उसने खामोशी से मुझे घूरा। आखिरकार मैं छठी मंज़िल पर पहुँचा और वहाँ कमरा नं० ३२ पर जाकर मैंने दस्तक दी। किवाड़ कुछ भिड़े हुए थे और अंदर आवाज़ आ रही थी। चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड आकर मेरे सामने खड़ा हो गया। उसने एक शब्द भी न कहा। ज़ाहिर है वह मुझे न पहचान सका।

मैंने उसे अपना नाम बताया। और मैंने भरसक रौब गाँठने का प्रयत्न किया।

"आप मुझे नहीं जानते शायद। गत जुलाई में मैंने आपके साथ खाना खाया था"।

"अंदर आइए।" उसने आनंदित हो कहा। "बड़ी खुशी हुई आपसे मिल कर। तशरीफ रखिए।"

मैं दाखिल हुआ। कमरा बहुत छोटा था और लुई फिलिप की डिज़ाइन के फर्नीचर से भरा पड़ा था। वहाँ एक बड़ा लकड़ी का पलंग बिछा हुआ था जिस पर लाल गद्दा लगा हुआ था। एक बड़ा वारड्रोब था, गोल मेज़ थी, एक छोटा-सा वाशस्टैण्ड था और दो गद्देदार कुर्सियाँ लाल रेप के झालर से सजी हुई रखी थीं। हरेक चीज़ भद्दी और गंदी थी। जिन ऐशो-इशरत की चीज़ों का कर्नल मैक्एण्ड्र्यू ने ज़िक्र किया था उनका तो कहीं नाम-निशान तक न था। स्ट्रिकलैण्ड ने गंदे कपड़ों का एक गट्ठर एक कुर्सी पर से उठाकर फर्श पर फेंक दिया और मैं उस कुर्सी पर बैठ गया।

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" उसने पूछा।

उस छोटे-से कमरे में तो वह मेरी कल्पना से भी बढ़कर विशालकाय दिखाई दिया। वह पुराना नार्फोक जाकेट पहने हुए था और कई दिन से उसने हजामत नहीं बनवाई थी। पिछली बार जब मैं उससे मिला था तो वह काफी साफ-सुथरा लगा था पर उस समय वह था उद्विग्नमन। और अब एक ओर जबकि बड़ा गंदा और फूहड़-सा लगा रहा था तो दूसरी ओर उसके चेहरे पर सुख व संतोष के भाव थे। मैं यही सोच रहा था कि जो वाक्य मैं कहने जा रहा हूँ, उसे अच्छा भी लगेगा या नहीं।

"मैं आप से आपकी पत्नी की ओर से मिलने आया हूँ।"

"मैं अभी खाने के पहले पीने जा रहा था, आप भी चलिए। आपको शराब पंसद है ना?"

"जी हाँ, पीलूँगा।"

"आइए तो फिर।"

उसने अपना बॉलर हैट जिस पर अर्से से ब्रश नहीं हुआ था, पहन लिया।

"हम खाना भी साथ-साथ ही खालेंगे। आप पर मेरा एक डिनर वाजिब भी है, याद है आपको?"

"हाँ हाँ, ज़रूर। आप अकेले ही हैं क्या?"

मैं मन-ही-मन बड़ा खुश हुआ क्योंकि मैंने मन-चाहा प्रश्न उससे कर लिया था।

"जी हाँ, असल पूछिए तो पिछले तीन दिन से मैंने किसी प्राणी से बात तक नहीं की है। मेरी फ्रेंच कुछ बहुत बढ़िया नहीं है।"

ज्योंही मैं उसके आगे-आगे ज़ीने पर उतरा तो मुझे खयाल हुआ कि वह टी शॉप वाली लड़की का क्या हुआ होगा। वे दोनों पहले ही झगड़ बैठे थे या उसका पागलपन अब दूर हो गया है? जैसा कि लोगों ने अनुमान लगाया था कि वह इस काम के लिए पहले से प्रयत्न कर रहा होगा, अब वह भी कुछ असंभव लगा। हम अवेन्यू दि क्लिशी तक गये और एक बहुत बड़े काफे के बाहर एक मेज़ पर जा बैठे।

१२

उस समय अवेन्यू दि क्लिशी ठसाठस भरा हुआ था और वहाँ से गुज़रने वाले लोगों में बहुत-से निराशाग्रस्त प्रेमियों के गिरोह चलते-फिरते दिखाई दे रहे थे। कहीं क्लर्क और दूकानों पर काम करने वाली लड़कियाँ थीं; बूढ़े खूसट थे जो मालूम होता था ओनोर दि बाल्ज़ाक की पुस्तकों में से निकल पड़े थे; स्त्री-पुरुष थे जो ऐसे पेशे से सम्बन्ध रखते थे जो मानवता की कमज़ोरी से सदा फायदा उठाना चाहते हैं। पेरिस में ग़रीब-गुरबा की बस्ती में कुछ ऐसी विशेषताएँ वर्तमान हैं जो इन्सान को उत्तेजित करती हैं और अनहोनी का सामना करने के लिए उसे तैयार करती हैं।

"आप तो पेरिस की गली-गली से वाक़िफ़ होंगे?" मैंने पूछा।

"जी नहीं। हम यहाँ सिर्फ आनंद-मास के लिए आये थे। तब से फिर आना ही न हुआ।"

"तो फिर भला आपने वह होटल कैसे तलाश किया ?"

"वह तो मुझे किसी ने बताया था। मैं ज़रा सस्ती होटल चाहता था।"

शराब आई। और बड़ी खामोशी के साथ हमने पिघली हुई शकर पर पानी डाला।

"मैंने सोचा मैं आते ही आपसे अपने आने का मक़सद बयान कर दूँ," मैंने बिना किसी घबराहट के साथ कहा।

उसकी आँखें झपकीं।

"मैं तो खुद समझ रहा था कि आजकल में कोई-न-कोई ज़रूर आएगा। अभी के मेरे पास कई पत्र आ चुके हैं।"

"फिर तो आप मेरा मन्तव्य जान ही गये होंगे ?"

"लेकिन मैंने उन्हें पढ़ा नहीं है।"

कुछ क्षण का अवकाश लेने की ग़रज़ से मैंने अपना सिगरेट सुलगाया। अब मैं ज़रा सोच में पड़ गया कि आखिर आगे कैसे बढ़ूँ। वे धाराप्रवाह वाक्य और तर्क-वितर्क जो चाहे करुणाजनक हों वा क्रोधपूर्ण, जो मैंने तैयार कर रखे थे, अवेन्यू दि विलशी में सर्वथा अनुपयुक्त मालूम हुए। सहसा वह खी-खी करके हँस पड़ा।

"बड़ा भयानक काम है यह आपके लिए, है ना ?"

"क्या पता," मैंने उत्तर दिया।

"हाँ तो ऐसा कीजिए आप इससे निबट लीजिए ताकि हम शाम ज़रा हँसी-खुशी और दिल्लगी के साथ गुज़ार दें।"

मैं सकुचाया।

"कभी आपको यह ख़याल भी हुआ कि आपकी पत्नी कितनी दुखी है ?"

"वह उसे बर्दाशत कर लेगी।"

मैं बयान नहीं कर सकता कि उसके इस उत्तर में कितनी लापरवाही छिपी थी। उससे मुझे काफी दुख हुआ पर मैंने वह प्रकट नहीं किया। मैंने भी ठीक वही स्वर अपनाया जो मेरे चाचा हेनरी जो पादरी थे अपने रिश्तेदारों से एडिशनल क्यूरेट्स सोसायटी के लिए चंदा माँगते समय अपनाया करते थे।

"यदि मैं आपसे स्पष्टवादिता से बातचीत करूँ तो आप बुरा तो नहीं मानेंगे ?"

वह मुस्कराया और सिर हिला दिया।

"क्या उन्होंने आपके साथ ऐसा ही सुलूक किया था जिसका आपने उन्हें यह बदला दिया ?"

"नहीं तो।"

"क्या आपको उनसे कोई शिकायत है ?"

"कुछ भी नहीं ?"

"तो फिर सत्रह साल की शादीशुदा जिन्दगी बसर करने के बाद, बिना किसी दोष के उन्हें इस प्रकार त्याग देना भयंकर नहीं है ?"

"सर्वथा भयंकर !"

मैंने चकित नेत्रों से उसकी ओर देखा। जिस मैत्री-भाव से वह मेरी हर बात को स्वीकार कर रहा था उसे महसूस करके मैंने सर पीट लिया। उसके उस रवैये ने मेरी स्थिति को हास्यास्पद तो क्या कहूँ, हाँ पेचीदा जरूर बना दिया। मैं हर प्रकार का लबोलहजा अपनाने को तैयार था—समझाने-बुझाने का, मर्म को छूने का, प्रोत्साहित करने का, झिड़कने का, यहाँ तक कि गाली-गलौच का, क्षोभ का और जरूरत हो तो व्यंग्य का भी, लेकिन जब पापी अपने पाप स्वीकार करने की ओर प्रवृत्त ही न हो तो कोई सुधारक क्या खाक सिर मारेगा ? मेरा अपना कोई अनुभव ही नहीं था क्योंकि मेरी आदत हमेशा से हर बात से इन्कार कर देने की रही है।

"तो फिर किया क्या जाय ?" स्ट्रिकलैण्ड ने पूछा।

मैंने अपने होंठ भींचने की चेष्टा की।

"हाँ तो अगर आप यह सब स्वीकार करते हैं तब तो कुछ कहने गुञ्जाइश ही नहीं।"

"जी हाँ, कोई गुञ्जाइश नहीं मैं समझता हूँ।"

मैंने महसूस किया कि मैं अपना दायित्व कुछ खूबी से नहीं निभा रहा हूँ। मेरे अन्दर आग भड़क उठी।

"खैर छोड़िये भी। कोई भी व्यक्ति इस प्रकार अपनी पत्नी को कंगाल बनाकर नहीं छोड़ देता।"

"क्यों नहीं ?"

"तो वह जिन्दा कैसे रहेंगी ?"

"मैंने सत्रह वर्ष तक उनका भार सम्हाला। अब ज़रा तब्दीली के तौर पर वह खुद क्यों नहीं अपना गुजारा कर लेतीं ?"

"वह अपना गुज़ारा नहीं कर सकतीं।"

"कोशिश करने दीजिए उन्हें।"

ज़ाहिर है इस बात के मैं कई तरह से जवाब दे सकता था। मैं स्त्री की आर्थिक स्थिति की बात कर सकता था, उस मुआहदे का ज़िक्र कर सकता था चाहे वह मूक हो वा सार्वजनिक जिसे मर्द शादी के समय स्वीकार करता है, और ऐसी ही बहुत-सी बातें मैं कर सकता था। लेकिन मैंने महसूस किया कि एक बात ऐसी ज़रूर है जिसका महत्त्व है।

"क्या अब आपको उनकी कोई चिन्ता नहीं ?"

"जी नहीं, ज़री बराबर भी नहीं।"

मामला अब सभी लोगों के लिए गंभीर हो चला था लेकिन उसके जवाबों का लहजा कुछ ऐसा हल्का और विनोदपूर्ण था कि मैं हँस पड़ता परन्तु होंठ चबाकर ही रह गया। मैंने फिर ख्याल किया कि उसका बर्ताव बड़ा घृणापूर्ण है। अब मैंने अख़लाक़ी ग़ुस्से की हालत अपने पर तारी करली।

"गोली मारिए इस सबको, आपके बच्चों का भी खयाल है आपको ? उन्होंने आपको कभी कोई कष्ट नहीं पहुँचाया, न ही उन्होंने इस दुनिया में आने की आपसे इच्छा प्रकट की। अगर हर बात पर आप 'ना' कहने लगे और बेख़बर हो गए तो वे सड़कों पर मारे-मारे फिरेंगे।

"उन्होंने कई वर्ष तक आराम की जिन्दगी बसर कर ली है। बड़े-बड़े घराने के बच्चों को भी वह नसीब नहीं होती। फिर कोई-न-कोई तो देखभाल करेगा ही उनकी। जब ऐसा ही नाज़ुक समय आयेगा तो मैकएण्ड्रयू दम्पती उनकी पढ़ाई का खर्च चला लेंगे।"

"लेकिन क्या आपको उनसे कोई लगाव नहीं ? कितने प्यारे बच्चे हैं वे ? आपका यह मतलब है कि अब आपको उनसे कोई सरोकार नहीं ?"

"जब वे बालक थे तो मुझे अच्छे लगते ही थे, पर अब तो वे बड़े हो गये हैं इसलिए अब कोई विशेष चाह नहीं मुझे उनसे ।"

"यह कोई इन्सानियत नहीं है ।"

"हाँ शायद ।"

"आपको ज़रा शर्म भी नहीं आती ।"

"जी हाँ, बिल्कुल नहीं ।"

अब मैंने एक और चाल चली ।

"हर कोई आपको परले दर्जे का दुष्ट समझेगा ।"

"समझने दीजिए ।"

"क्या आपको इसका ज़रा खयाल न होगा कि लोग आपको गिरी निगाह से देखते हैं और आपसे घृणा करते हैं ?"

"जी, क़तई नहीं ।"

उसके संक्षिप्त उत्तर इतने घृणित थे कि उनके कारण मेरे स्वाभाविक प्रश्न भी बेहूदा लगने लगते । दो-एक मिनट तक मैं मौन रहा ।

"मैं नहीं कह सकता कि एक शख्स ऐसी सूरत में कैसे सुख-चैन से रह सकता है जब उसे यह मालूम है कि उसके जाननेवाले सभी उसका बहिष्कार कर रहे हैं ? क्या आप यक़ीन से कह सकते हैं कि आपको यह चीज़ बिल्कुल परेशान न करेगी ? हरेक व्यक्ति का किसी-न-किसी प्रकार का अन्तःकरण होता है और आज नहीं तो कल वह आपको ज़रूर वेधेगा । फ़र्ज़ कीजिए आपकी पत्नी का देहान्त हो जाता है तो क्या आपको उसका अभिशाप नहीं सताएगा ?"

उसने कोई उत्तर न दिया और मैं उसी की प्रतीक्षा में कुछ देर बैठा रहा । आखिरकार मुझे खुद ही मौन तोड़ना पड़ा ।

"अब इसके लिए आप क्या कहते हैं ?"

"यही कि आप निरे मूर्ख हैं ।"

"हर सूरत में आपको अपनी पत्नी और बच्चों का खर्च बर्दाश्त करना पड़ेगा," मैंने कुछ चिढ़ कर कहा। "मेरे ख़याल से वे क़ानून की मदद भी ले सकते हैं।"

"क्या क़ानून पत्थर में से खून निकाल लेगा? मेरे पास पैसे-वैसे बिल्कुल नहीं हैं। सिर्फ १०० पौंड के क़रीब हैं।"

अब तो मुझे पहले से भी अधिक उलझन हुई। यह भी सच था कि उसकी होटल ही उसकी बुरी हालत दर्शा रही थी।

"जब वह भी खर्च कर चुकेंगे तो क्या करेंगे आप?"

"कुछ कमा लूंगा।"

वह बड़ी शांति और सन्तोष से बातें कर रहा था और उसकी आँखों में मुझे चिढ़ाने वाली वह मुस्कान नाच रही थी जो मेरे सारे कहे-सुने को मूर्खतापूर्ण सिद्ध कर रही थी। मैं एक क्षण के लिए रुका ताकि आगे क्या कहना है उसे सोच लूँ। लेकिन वही खुद पहले बोल पड़ा।

"अभी दोबारा शादी क्यों नहीं कर लेती? दूसरों की अपेक्षा वह ऐसी बूढ़ी नहीं लगती फिर है भी ख़ासी सूरत-शक्ल की। मैं तो उसकी बेहतरीन पत्नी की हैसियत से किसी से भी सिफारिश कर सकता हूँ। अगर वह मुझे तलाक़ देना चाहे तो मैं उसके लिए जरूरी कारण भी दे सकता हूँ।"

इस बार मुस्कराने की बारी मेरी थी। वह बहुत चालाक था लेकिन ज़ाहिर है कि वह घूम-फिर कर आना इसी बात पर चाहता था। मुमकिन है किसी वजह से वह यह बात छिपा रहा हो कि वह किसी स्त्री के साथ भागा है और उसके रहने की जगह का पता छिपाने का वह भरसक प्रयत्न कर रहा था। मैंने दृढ़ता से जवाब दिया।

"आप की बीवी कहती हैं कि आप कुछ ही क्यों न कर बैठें वह आपको तलाक़ हरगिज़ न देंगी। इसका उन्होंने निश्चय कर लिया है। इस क़िस्म का अगर कोई ख़याल आपके दिमाग़ में हो तो उसे आप फौरन निकाल दें।"

उसने चकित नेत्रों से मेरी ओर देखा जिनमें कृत्रिमता नाम को न थी। उसके होंठों की मुस्कान लुप्त हो गई और वह बड़ी गंभीरता से कहने लगा।

"लेकिन भाई मेरे, मुझे इसकी ज़रा परवाह नहीं। चाहे कुछ भी हो जाय मेरी बला से।"

मैं हँस दिया।

"अजी छोड़िये भी, आप हम सबको इतना बेवकूफ न समझिये। हमें पता है कि आप किसी औरत के साथ यहाँ आये हैं।"

पहले तो वह कुछ घबराया और फिर यकायक जोर से हँस पड़ा। वह इतने ज़ोर से ठहाका मार कर हँसा कि हमारे आसपास बैठे हुए लोग हमें देखने लगे और उनमें से कुछ तो हँसने भी लगे।

"मुझे इसमें हँसने की तो कोई बात दिखाई नहीं देती।"

"बेचारी अमी," वह हँसा।

फिर उसके चेहरे पर सख्त ग्लानि के भाव उभर आये।

"औरतों के भी कैसे सड़े दिमाग होते हैं! प्रेम, सदा प्रेम ही प्रेम बकती हैं। वे समझती हैं कि उनका पति उन्हें छोड़ता ही तब है जब वह दूसरों पर रीझता है। क्या आप समझते हैं मैंने जो कुछ किया है वह सिर्फ़ किसी औरत के लिए किया है? आप मुझे इतना बेवकूफ समझते हैं?"

"आपके कहने का मतलब यह है कि आप किसी दूसरी स्त्री के पीछे अपनी पत्नी को छोड़ कर नहीं आये हैं?"

"बिल्कुल नहीं।"

"आप ईमानदारी से कह रहे हैं?"

न मालूम मैंने वह क्यों पूछ लिया। वैसे वह प्रश्न था बहुत महत्त्व का।

"जी हाँ ईमानदारी से कह रहा हूँ।"

"तो फिर भला आपने अपनी पत्नी को क्यों छोड़ दिया?"

"इसलिए कि मैं चित्रकारी करना चाहता हूँ।"

मैं बड़ी देर तक उसकी ओर देखता रहा। मैं समझ ही न सका। मैंने सोचा वह पागल हो गया है। यह स्मरण रहे कि मैं बहुत छोटा था और उसे अधेड़ उम्र का समझ कर उससे बर्ताव कर रहा था। अब मैं सिवाय उस महान् आश्चर्य के सब कुछ ही तो भूल गया।

'लेकिन आपकी तो उम्र भी ४० है ।"

इसी वजह से तो मैंने सोचा कि अब वक्त आ गया है कि मैं अपना काम शुरू कर दूँ ।"

"पहले कभी भी आपने चित्रकारी की है ?"

"मैं तो बचपन ही से इस ओर प्रवृत्त था और चित्रकार बनना चाहता था लेकिन मेरे पिता ने कहा कला-वला में पैसे नहीं मिलते और मुझे बिजनेस में डाल दिया। कोई साल-भर पहले मैंने थोड़ा-थोड़ा पेण्ट करना शुरू किया। पिछले साल से मैं रात को कुछ क्लासों में जाता रहा हूँ ।"

"ओहो तो क्या यह वही जगह तो नहीं जहाँ आप जाते थे और आपकी श्रीमती जी समझती थीं आप क्लब में ब्रिज खेलने गये हैं ?"

"जी हाँ, बिल्कुल ।"

"तो आपने उनसे कहा क्यों नहीं ?"

"मैंने इसे अपने तक सीमित रखना ही बेहतर समझा ।"

"तो क्या आप पेण्ट कर सकते हैं ?"

"अभी तो नहीं। लेकिन मैं करूँगा। इसीलिए तो मैं यहाँ आया हूँ। जो कुछ मैं चाहता था वह मुझे लन्दन में नहीं मिल सकता था। यहाँ शायद वह मुझे मिल जायेगा ।"

"क्या आप समझते हैं कि इस उम्र में आकर यदि कोई व्यक्ति यह काम शुरू करे तो सफल हो सकता है ? ज्यादातर लोग १८ वर्ष की आयु से पेण्ट करना शुरू कर देते हैं ।"

"मैं तो आज ज्यादा जल्दी सीख सकता हूँ बनिस्बत १८ वर्ष की उम्र के ।"

"आपने यह अनुमान कैसे लगाया कि आप में सलाहियत भी है ?"

कुछ क्षण के लिए उसने जवाब नहीं दिया। उसकी आँखें गुजरती हुई भीड़ पर लगी थीं लेकिन मैं समझता हूँ उसने उन्हें देखा नहीं। उसका जवाब कोई तुक का न था।

"मुझे किसी भी सूरत से पेण्ट करना है ।"

"क्या यह एक संकटापन्न प्रयास नहीं है ?"

फिर उसने मेरी ओर देखा। अब के उसके नेत्रों में कुछ विचित्रता थी जिससे मुझे काफी उलझन महसूस हुई।

"आपकी क्या उम्र है ? तेईस ?"

मुझे लगा कि वह प्रश्न अप्रासंगिक था। मैं इस उम्र में था कि जिन्दगी में प्रयोग करके देखता, लेकिन उसकी जवानी बीत चुकी थी, वह एक स्टॉक ब्रोकर था जिसकी इज़्ज़त थी, जो बीबी बच्चों वाला था। मेरे लिए जो काम स्वाभाविक था वही उसके लिए अस्वाभाविक और बेहूदा था। मैं न्यायपूर्ण बात करना चाहता था।

"यह संभव है कि कोई चमत्कार हो जाये और आप बहुत महान् चित्रकार बन जायें लेकिन यह तो आपको मानना ही पड़ेगा कि आपकी सफलता की संभावना १ प्रतिशत भी नहीं है और यदि अन्त में आपको मालूम हुआ कि आपने यह सब गड़बड़ यों ही की थी तो बड़ा बुरा सौदा रहेगा यह आपके लिए।"

"मुझे पेण्ट करना है, चाहे कुछ भी क्यों न हो।" उसने दोहराया।

"फर्ज़ कीजिए आप पेण्टर बन गये और हमेशा निम्न कोटि के चित्रकार ही समझे गये तो क्या फिर यह सब छोड़ देना आप लाभप्रद समझेंगे ? जिन्दगी में और भी बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ यदि आप बहुत सफल न भी हों तब भी कोई हर्ज नहीं होता, अगर आप मामूली तौर पर काम करते हैं तब भी कोई नुक्सान नहीं लेकिन चित्रकार के लिए यह लागू नहीं होता।"

"मूर्ख कहीं के।" उसने कहा।

"जी हाँ, यदि न्यायपूर्ण बात मूर्खता है तो फिर ठीक कहते हैं आप।"

"मैंने आप से कह दिया कि मुझे पेण्ट करके अपना जीवन बिताना है। इसमें मैं कुछ नहीं कर सकता। जब आदमी पानी में गिर पड़ा तो फिर चाहे वह किसी भी तरह क्यों न तैरे—अच्छी तरह या बुरी तरह—उसे उसमें से निकलना ही पड़ता है या नहीं तो वह डूब जाता है।"

उसकी आवाज़ में सच्चा उत्साह था और न चाहते हुए भी मैं प्रभावित हुए बिना न रह सका। मैंने देखा कि उसके अन्दर कोई बलवान शक्ति संघर्ष

कर रही है। ऐसा लगा जैसे कोई बहुत शक्तिशाली विचार उसकी इच्छा के विरुद्ध उसे इस ओर धकेल रहा है। अब मैं कुछ न सोच-समझ सका। वास्तव में उस पर कोई भूत सवार था और मुझे लगा जैसे वह सहसा मुड़कर उसे कुचल देगा। लेकिन सब कुछ के बावजूद वह बहुत मामूली लग रहा था। मेरी जिज्ञासु आँखें उस पर गड़ी हुई थीं, पर वह जरा भी नहीं घबरा रहा था। मैं सोच रहा था कि कोई अजनबी उसे उस हुलिये में—पुरानी नार्फोक जाकेट, मैला बॉलर हैट, ढीले-ढाले बिना स्तरी के पतलून और मैले हाथों में देखकर क्या समझेगा। चेहरे पर दाढ़ी बढ़ी हुई, छोटी-छोटी आँखें बड़ी और भद्दी नाक और फूहड़पन ये सब अजीब-सा दिखाई दे रहा था। उसका मुँह बहुत बड़ा था और होंठ भारी और वासनाग्रस्त थे। नहीं उसे पहचानना कठिन था।

"तो आप अपनी पत्नी के पास नहीं जाएँगे?" मैंने अन्त में कहा।

"कभी नहीं।"

"वह सब कुछ भूल जाने और अब नये सिरे से जीवन प्रारम्भ करने को तैयार हैं। वह कभी आप को इस हरकत के लिए उलाहना न देंगी।"

"जहन्नुम में जाये वह।"

"यदि लोग आपको दुष्ट और नराधम समझें तो आपको कोई खयाल न होगा? आपको कोई चिन्ता न होगी यदि आपके बीवी-बच्चे सड़कों पर भीख माँगते फिरें?"

"जर्रा बराबर भी नहीं।"

मैं कुछ क्षण के लिए चुप हो गया ताकि अपनी अगली दलील में अधिक जोश पैदा कर सकूँ और जितनी दृढ़ता से मैं कह सकता था मैंने कहा:

"आप परले दर्जे के दुष्ट और नीच हैं।"

"आइये अब आपके दिल का गुबार निकल चुका हम चल कर खाना खा लें।"

१३

शायद उसका निमंत्रण अस्वीकार करना ही अधिक उपयुक्त होता। मैं सोचता हूँ कि मुझे दर असल अपने ग़म व ग़ुस्से का इज़हार दिखावे के रूप में ही करना चाहिए था और इससे कर्नल मैक्एण्ड्रयू तो यक़ीनन बहुत खुश होता कि मैंने बड़ी दृढ़ता के साथ ऐसे दुष्चरित्र व्यक्ति के साथ खाना खाने से इन्कार कर दिया। लेकिन फिर यह भय भी था कि यदि कहीं मैं अपना अभिनय सफलता से न निबाह सका तो और भी बुरी बात होगी और यही भय अक्सर मुझे रोकता रहा है। और यहाँ इस बात का भी डर था कि मेरी तमाम बातों का स्ट्रिकलैण्ड पर तनिक प्रभाव भी न पड़ेगा इसलिए मैं और भी हिचकिचाया। क्योंकि अभिनय करके अपना उद्देश्य पूरा करना भी हरेक के बस की बात नहीं होती।

मैंने शराब का बिल अदा किया और हम एक सस्ती-सी रेस्तोराँ में गये जो ठसाठस भरी थी पर जहाँ का वातावरण सुखद था। यहाँ बैठ कर हम दोनों ने खुशी-खुशी खाना खाया। मेरी जवानों की-सी भूख थी और उसकी एक कठोर हृदयी की-सी। फिर हम एक शराबखाने में काफी और शराब पीने के लिए गये।

जिस उद्देश्य से मैं पेरिस गया था उसके बारे में मुझे जो कुछ कहना था, मैं कह चुका था और हालाँकि मेरा उस सिलसिले में आगे न बढ़ना श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड के प्रति ग़द्दारी थी लेकिन उस भैंस के आगे मैं कब तक बीन बजाता। यह विशेषता तो स्त्रियों में ही होती है कि एक ही बात को तीन मरतबा उसी जोर व ढीठता के साथ कह सकती हैं। अब मैंने यह सोचकर अपने को तसल्ली

दी कि अगर मैं स्ट्रिकलैण्ड की मानसिक स्थिति का पता लगा लूँ तो यह मेरे लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इस बात में मेरी दिलचस्पी भी बढ़ गई। लेकिन यह बात भी आसान न थी क्योंकि स्ट्रिकलैण्ड रवानी के साथ बातचीत नहीं कर सकता था। वह इतनी कठिनाई से बोलता था मानो उसके विचार प्रकट करने का माध्यम शब्द नहीं हैं और उसके पिटेपिटाये मुहावरों, घटिया शब्दों और मुबहम तथा अपूर्ण हाव-भावों से वह जो कुछ कहता था उनसे उसके आंतरिक भावों का भी अनुमान लगाना पड़ता था। लेकिन जो भी उसने मतलब की कोई बात नहीं की फिर भी उसका व्यक्तित्व कुछ ऐसा था कि उसे मंद-बुद्धि कहा जा सकता। हो सकता है यह उसका ख़ुलूस हो। जिस पेरिस में वह अब रह रहा था और जिसे देख रहा था उसकी उसे अधिक परवाह नहीं थी और वहाँ उसे वे स्थान अधिक पसन्द थे जो यद्यपि आश्चर्यजनक तो न थे पर थे बहुत विचित्र। मैं सैकड़ों बार पेरिस गया हूँ और जब कभी भी गया वहाँ के वातावरण ने मुझमें नई स्फूर्ति और उत्साह भर दिया। मैंने सदैव उस शहर की सड़कों पर चलकर यही महसूस किया कि अब मैं कोई साहसिक कार्य करने वाला हूँ। स्ट्रिकलैण्ड सर्वदा शान्त रहा। उसके अतीत पर नज़र डालते में मैं अब सोचता हूँ कि वह सिवाय अपनी आत्मा में कसमसाती हुई कल्पना के बाक़ी हरेक चीज़ से बेख़बर था।

एक बहुत ही बेहूदा-सी घटना घटी। शराबखाने में अनेक वेश्याएँ थीं; कुछ तो मर्दों के साथ बैठी हुई थीं और कुछ अकेली। और यकायक मैंने ग़ौर किया कि उनमें से एक हमारी ओर देख रही है। जब उसकी आँख स्ट्रिकलैण्ड पर पड़ी तो वह मुस्करा दी। मैं नहीं समझता कि स्ट्रिकलैण्ड ने भी उसे देखा। क्षण भर में वह बाहर चली गई और दूसरे ही क्षण वापस आगई; बड़ी विनम्रता से हमारी मेज़ के सामने से गुज़रते हुए उसने हमसे कुछ शराब खरीदने के लिए कहा। फिर वह वहीं बैठ गई और मैंने उससे बातें करना शुरू कर दिया। लेकिन यह स्पष्ट था कि उसकी दिलचस्पी स्ट्रिकलैण्ड में थी। मैंने उसे समझाया कि वह फ्रेंच के दो चार शब्द भी नहीं समझता। लेकिन उसने स्ट्रिकलैण्ड से

बातचीत करने की कोशिश की—कुछ बातें वह संकेतों से और कुछ खिचड़ीनुमा फ्रेंच में करने लगी और समझी कि स्ट्रिकलैण्ड ऐसी खिचड़ी ज़रूर समझ जायेगा साथ ही चार-छः मुहाविरे उसे अंग्रेज़ी के भी याद थे। जो कुछ वह अपनी विशिष्ट भाषा में बोल रही थी उसका मुझे अनुवाद करना पड़ा और जो कुछ स्ट्रिकलैण्ड बोलता उसके लिए वह बड़ी उत्सुकता से मुझसे पूछती कि वह क्या कह रहा है। वह वैसे बड़ा भली प्रकृति का व्यक्ति था, इस बात से वह ज़रा खुश भी हुआ लेकिन उस ओर उसकी लापरवाही तथा अरुचि भी स्पष्ट ही थी।

"मेरा ख़याल है आपने मैदान मार लिया," मैंने हँस कर कहा।

"माफ़ कीजिए, मैं इसे अपनी प्रशंसा नहीं समझता।"

यदि मैं उसकी जगह होता तो मुझे घबराहट अधिक होती, शांति व सुकून कम। उस वारांगना की बड़ी-बड़ी और तैरती हुई आँखें थीं तथा अत्यंत आकर्षक मुँह था। वह नवयुवती थी। भगवान जाने स्ट्रिकलैण्ड में उसे कौन-सी आकर्षक बात लगी। उसने बड़े स्पष्ट ढंग से अपनी इच्छा प्रकट कर दी और मुझे उसका अनुवाद करना पड़ा।

"यह आपको अपने साथ घर लेजाना चाहती है।"

"मैं किसी को अपने साथ नहीं लेजाना चाहता," उसने उत्तर दिया। मैंने भी उसके उत्तर का अनुवाद जितनी खुशी से कर सकता था किया। हालाँकि उस प्रकार के निमंत्रण को अस्वीकार कर देना मुझे कुछ असभ्य-सा लगा और इसलिए मैंने उसका कारण पैसों की कमी बता दिया।

"लेकिन मुझे वह बहुत पसंद हैं," वह बोली। "इनसे कहिए कि मैं तो सिर्फ प्यार के लिए ऐसा करना चाहती हूँ।"

जब मैंने इस वाक्य का अनुवाद किया तो स्ट्रिकलैण्ड ने घबराहट से अपने कंधे सिकोड़े।

"इससे कह दीजिए यह जहन्नुम में जाय," उसने कहा।

उसके हावभाव ने उसके उत्तर को और भी स्पष्ट बना दिया और लड़की ने यकायक झटका देकर अपना मुँह फेर लिया। शायद वह क्रोध में लाल हो गई और सहसा उठ खड़ी हुई।

"महाशय विनम्र नहीं हैं।"

वह शराबखाने के बाहर चली गई। मैं कुछ घबरा-सा गया।

"उस बेचारी को झिड़कने या उसका अपमान करने की तो कोई जरूरत थी नहीं," मैंने कहा, "आखिर वह आपका अभिनन्दन ही तो कर रही थी।"

"इस किस्म की चीजों से मुझे उलझन होती है," उसने कठोर स्वर में कहा।

मैं उसकी ओर उत्सुक नेत्रों से देखने लगा। उसके चेहरे पर एक वास्तविक अनेच्छा झलक रही थी लेकिन इसके बावजूद उसका चेहरा एक खुरदरे, रुक्ष तथा वासना-ग्रस्त व्यक्ति का-सा लग रहा था। मेरा ख़याल है कि उसके चेहरे में जो वहशीपन था उसी ने उस लड़की को आकृष्ट किया था।

"लड़कियाँ तो मैं जितनी चाहता लंदन में भी हासिल कर सकता था, मैं यहाँ उस काम के लिए थोड़े ही आया हूँ।"

१४

इंगलैण्ड वापस होते समय रास्ते-भर मुझे स्ट्रिकलैण्ड का ख्याल आता रहा। अब मुझे जो कुछ उसकी पत्नी से जाकर कहना था उसे मैं एक व्यवस्थित रूप से मस्तिष्क में जमाने लगा। वह सब था असन्तोषजनक और मैं यह कल्पना ही न कर सका कि वह मुझसे संतुष्ट हो सकेंगी, क्योंकि मैं स्वयं अपने से संतुष्ट न था। स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे गड़बड़ा दिया था। मैं उसके उद्देश्य न समझ सका था। जब मैंने उससे पूछा कि आख़िर चित्रकार बनने की धुन आपको

पहले-पहल कैसे सवार हुई तो मुझे बता न सका, शायद बताना ही न चाहता था। मेरे लिए वह एक पहेली बन गया। मैंने अपने दिल को यह विश्वास दिलाना चाहा कि शायद उसके गतिमंद मस्तिष्क के किसी कोने में विद्रोह का विचार उत्तरोत्तर घर करता रहा होगा जिसकी पराकाष्ठा उसके उस पलायन में व्यक्त हुई थी किन्तु यह भी अधिक विश्वस्त न प्रतीत हुआ क्योंकि अपने जीवन की नीरसता से वह कभी व्यग्र न हुआ था। यदि अपने शुष्क व असह्य रूप से नीरस जीवन से ऊबकर वह अपने ममता के बंधनों को तोड़ता और चित्र-कार बनने की ठान लेता तो बात समझ में आ सकती थी और होती भी साधारण-सी ही लेकिन मैंने यह महसूस किया कि वह साधारण व्यक्ति नहीं है। आखिरकार चूँकि मैं जरा रोमांटिक व्यक्ति था, मैंने इस गूढ़ पहेली का हल सोचा जो मेरे विचार में काफी दूररस था किन्तु साथ ही एकमात्र संतुष्टि का विषय भी। और वह यह था : मैंने अपने आपसे यह प्रश्न किया कि क्या उसकी अन्तरात्मा में सृजन की कोई प्रवृत्ति जड़ पकड़े हुए नहीं थी जिसे जीवन की परिस्थितियों ने सुप्त कर दिया हो, लेकिन जो बाद में बड़े वेग से उभर आई हो जैसे कि जीवित कोषाणुओं में नासूर उभर आता है और अंत में वह उस पर इतनी हावी हो गई हो कि वह ऐसे कृत्य के लिए बाध्य हुआ हो। कोयल सदैव दूसरे पक्षी के घोंसले में अण्डे देती है और जब बच्चा निकल आता है तो वह अपने धात्री-भाइयों को वहाँ से निकाल बाहर करता है और अंत में नष्ट कर देता है उसी घोंसले को जिसने उसे आश्रय दिया था। लेकिन विडम्बना तो देखिए कि सृजन-प्रवृत्ति ने भी घर देखा तो इस मंदबुद्धि दल्लाल का और न केवल वह उसके लिए विनाशकारी सिद्ध हुई अपितु उन लोगों के लिए भी जो उस पर निर्भर थे और उससे भी अधिक विचित्र है यह बात कि किस प्रकार ईश्वर की शक्ति ने मानव को—धनाढ्य तथा दरिद्र को—इस प्रकार दबा रखा है और वह इस तरह उनके पीछे पड़ जाती है कि अंततः वह उस पर विजय प्राप्त करती है और उन्हें विवश हो धर्म-सम्बन्धी आत्म संयम की खातिर संसार के मायाजाल तथा नारी-प्रेम आदि से विरक्त होना पड़ता है। धर्म-परिवर्तन अथवा कायापलट कई स्वरूप का होता है और उसके

प्रकार भी अनेक हैं। कुछ लोगों में कायापलट के लिए प्रलय आवश्यक है जिस प्रकार एक पत्थर मूसलाधार बारिश के भारी आघातों से चूर-चूर हो जाता है ; परन्तु कुछ लोगों में यह क्रमशः होता है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार पानी की बूंदों के निरन्तर पड़ते रहने पर पत्थर में गढ़े पड़ जाते हैं और वह टूट जाता है। स्ट्रिकलैण्ड के अन्दर एक कट्टर धर्मावलम्बी की-सी स्पष्टवादिता तथा एक देवता की-सी क्रूरता विद्यमान थी।

किन्तु मेरे व्यावहारिक मस्तिष्क में यह उत्सुकता शेष थी कि जिस उत्तेजना ने उसे अभिभूत किया था वह उसकी कृतियों द्वारा न्यायोचित भी ठहरती है या नहीं। जब मैंने उससे पूछा कि लंदन की जिस रात्रि-शाला में वह पढ़ता था वहाँ के उसके सहपाठियों का उसके चित्रों के बारे में क्या विचार था तो उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया :

"वे उन्हें उपहास-मात्र समझते थे।"

"क्या आपने यहाँ किसी स्टूडियो में जाना शुरू कर दिया है ?"

"जी हाँ। हमारा वह अध्यापक है ना, आज सवेरे आया था यहाँ। जब उसने मेरे चित्र देखे तो ज़रा अपनी भँवें उठाईं और चल दिया।

स्ट्रिकलैण्ड खी-खी करके हँस दिया। निरुत्साह के भाव उसके चेहरे पर दिखाई दिये। उसे अपने साथियों की राय की रत्ती भर परवाह न थी।

और यही बात थी जिसने मुझे घबड़ा दिया और उससे बातचीत करने में मुझे उलझन महसूस हुई। जब लोग कहते हैं कि उन्हें दूसरों की राय की तनिक परवाह नहीं है तो अधिकतर वे अपने आपको ही धोखा देते हैं। साधारणतया उनका अर्थ होता है कि वे अपनी इच्छानुसार काम करेंगे और ऐसा करते समय उन्हें यह विश्वास होता है कि कोई उनकी सनकों को न जान पायेगा। साथ ही वे यह समझते हैं कि क्योंकि उनके पड़ौसी उनके कार्य की प्रशंसा करते हैं अतः बहुमत के विरुद्ध व्यवहार करना न्यायोचित है। संसार वालों की आँखों में रूढ़ि-विरोधी होना कोई कठिन बात नहीं जबकि आपका रूढ़ि-विरोध आपके अपने ढंग की ही रूढ़ि विशेष है। उस समय यह बात आपके अन्दर एक अपरिमित आत्म-गौरव उत्पन्न करती है। आप अपने उत्साह से आत्म-संतुष्ट

होते हैं और भय की असुविधा आपके पास तक नहीं फटकती। लेकिन अनुमोदन की इच्छा शायद सभ्य मानव की सबसे अधिक गहरी जमी हुई प्रवृत्ति होती है। कोई भी इन्सान सम्मान के आवरण की तलाश में इतनी तेजी से नहीं भागता जितनी रूढ़ि-विरोधी नारी जिसने सम्मान के अमर्यादित स्तरों के कटाक्षों व बाणों का अपने आपको लक्ष्य बना रखा है। मुझे उन लोगों पर जरा विश्वास नहीं जो कहते हैं कि उन्हें अपने साथियों की राय की जर्रा बराबर परवाह नहीं है। यह अज्ञान की डींग-मात्र है। उनकी उस शेखी का केवल यह अर्थ होता है कि उनके अल्प दोषों वा त्रुटियों पर लोगों की फबतियों या निन्दाओं का उन्हें कदापि भय नहीं है क्योंकि लोग वे अल्पदोष पकड़ ही नहीं सकते।

लेकिन यह एक ऐसा व्यक्ति था जो ईमानदारी के साथ लोगों की परवाह नहीं करता था और इसीलिए लोकरीति या रूढ़ियाँ उसके लिए निरर्थक थीं। वह एक ऐसे पहलवान की नाईं था जिसके शरीर पर तेल मला हुआ हो और जिसे गिरफ्त में न लिया जा सके। और इसी भावना ने उसे एक प्रकार की स्वतन्त्रता प्रदान की थी जो वस्तुतः एक विद्रोह था। मुझे याद है मैंने उससे कहा था :

"देखिए, यदि हर व्यक्ति आप ही की तरह व्यवहार करने लगे तो संसार का काम नहीं चल सकेगा।"

"यह बकवास है। हर व्यक्ति मुझ जैसा व्यवहार नहीं करना चाहता। संसार का बहुमत साधारण कार्य करके ही संतोष का अनुभव करता है।"

और एक बार मैंने उस पर अपना व्यंग्य-बाण छोड़ा।

"जाहिर है आपको इस कहावत पर विश्वास नहीं है कि "इस प्रकार व्यवहार करो कि तुम्हारा हर कार्य एक सार्वभौम सिद्धान्त का रूप धारण कर सके।"

"मैंने यह पहले सुनी तक नहीं, और फिर यह है भी निरी बकवास।"

"लेकिन साहब कांट ने कही थी यह।"

"कही होगी, मेरी बला से। पर यह है सब मूर्खता।"

ऐसे व्यक्ति से तो यह भी आशा नहीं की जा सकती कि उसके अन्तःकरण को लगने वाली बात भी उसे प्रभावित कर पायेगी या नहीं। ऐसा करना बिना दर्पण के प्रतिबिम्ब देखने के समान होगा। मेरा विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति में अन्तःकरण उन नियमों का अभिभावक होता है जो समाज ने अपनी सुरक्षार्थ बनाये हैं। वह हम सबके दिलों में विद्यमान ऐसा सिपाही है जिसे वहाँ इसलिए बैठाया गया है कि वह व्यक्ति अपने नियमों का उल्लंघन न कर सके। वह आत्मा के केन्द्रीय दुर्ग में बैठा हुआ एक जासूस है। मनुष्य के कृत्यों के अनुमोदन की इच्छा उसके मानस में इतनी सबल होती है, उनकी निन्दा अथवा तिरस्कार का भय इतना भयंकर होता है जिससे उसे महसूस होने लगता है मानो वह स्वयं अपने शत्रुओं को अपने करीब ले आया हो और यही अंन्तःकरण उस पर नजर रखता है और वह अपने क़बीले से अलग होने की अधबनी इच्छा को अपने स्वामी ही के हित में उसे नष्ट करता है। यह अन्तःकरण उसे इस बात के लिए बाध्य करता है कि वह अपने हित से पहले समाज-हित को रखे। यही वह सबल कड़ी है जो एक व्यक्ति को सम्पूर्ण समाज से जोड़ती है। और वह व्यक्ति जो यह समझता है कि समाज-हित उसके अपने हितों से महानतर हैं और उसी के अनुसार व्यवहार करता है, अपने स्वामी का दास होता है। वह उसे एक सम्मानित पद प्रदान करता है। अन्ततः उस दरबारी की तरह जो शाही लकड़ी अपने कंधों पर रखे चापलूसी करता फिरता है अपने अन्तःकरण के चापल्य पर गर्व अनुभव करता है। जो व्यक्ति अन्तःकरण के आधिपत्य को नहीं मानता वह उसकी निन्दा नहीं करता क्योंकि समाज का सदस्य होने के नाते वह यह स्वीकार करता है कि उसके विरुद्ध वह असमर्थ है। जब मैंने देखा कि स्ट्रिकलैण्ड अपने उस दोष के प्रति जो उसके आचरण पर लगाया जा सकता था, वास्तव में उदासीन है तो मैं उसी प्रकार वहाँ से वापस आ गया जिस प्रकार एक अमानुषिक रूप वाले भयंकर राक्षस से डरकर वापस आता।

जब मैं उससे विदा हुआ तो उसके अंतिम शब्द थे :

"अभी से कहिएगा मेरे पीछे पड़ना बेकार है। फिर मैं अपनी होटल भी बदल दूँगा ताकि वह मुझे तलाश ही न कर सकेगी।"

"मेरा अपना ख्याल तो है कि वह आपसे अलग ही सुखी हैं," मैंने कहा।

"लेकिन भाई मेरे, मैं यही तो चाहता हूँ कि आप उसे यह समझा दें। क्योंकि स्त्रियाँ बड़ी मूर्ख होती हैं।"

१५

जब मैं लंदन पहुँचा तो वहाँ एक पत्र पड़ा हुआ था जिसमें मुझसे निवेदन किया गया था कि संध्या के भोजन के शीघ्र बाद ही मैं श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड के यहाँ पहुँचूँ। वहाँ पहुँचने पर मैंने देखा कि वहाँ कर्नल मैक्एण्ड्रयू और उनकी पत्नी भी हैं। श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड की बहन उनसे बड़ी थीं हालाँकि दोनों समान ही थीं पर वह उनसे कहीं अधिक मुर्झाई हुई थीं; कार्य साधकता का उसकी यह आलम था जैसे ब्रिटिश साम्राज्य को वह अपने जेब में लिए फिरती हों। इस प्रकार का भाव बरतर जाति के सदस्य होने के कारण सीनियर अफसरों की पत्नियों में बहुधा आ जाता है। उनमें काफी फुर्ती-चुस्ती थी, उनका पैतृक सुस्वभाव उनके इस विचार का साक्षी था कि जो व्यक्ति सैनिक नहीं है वह महज़ किसी दूकानदार का सहायक है। चौकीदारों से उन्हें नफरत थी क्योंकि वह समझती थीं कि उन लोगों में अहंकार बहुत है। और जो लोग अपने कार्य में इतने शिथिल तथा आलसी थे, उनकी स्त्रियों के बारे में वह कभी कुछ कहना न चाहती थीं। उनका गाउन बहुत ही भद्दा किन्तु क़ीमती था।

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड स्पष्टतया बड़ी बेचैन थीं।

"हाँ भई, तो क्या समाचार लाये आप ?" उन्होंने कहा।

"मैं आपके पति से मिला था। खेद है उन्होंने वापस न आने का निश्चय कर लिया है।" मैं क्षण-भर के लिए रुका। "वह चित्रकारी करना चाहते हैं।"

"क्या मतलब है आपका ?" श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने विस्मित हो चीखकर कहा।

"क्या आपको यह कभी मालूम नहीं हुआ कि उन्हें उस प्रकार की चीज से दिलचस्पी थी ?"

"वह तो पागलों की-सी बातें करता है।" कर्नल ने अचरज के भाव से कहा।

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने ज़रा त्योरी चढ़ाई। वह अपनी अतीत की स्मृतियों में मेरे प्रश्न का उत्तर ढूँढ रही थीं।

"मुझे याद पड़ता है हमारे विवाह के पहले वह एक रंगदान से कभी-कभी कुछ बनाया तो करते थे। लेकिन हमने उनके भद्दे चित्र कभी नहीं देखे। हम तो असल में उनका मजाक बनाया करते थे। इस प्रकार की बातों में उनमें कोई प्रतिभा या होनहारिता हमने नहीं देखी।

"हाँ, हाँ भई, यह तो एक बहाना-मात्र है," श्रीमती मैक्एण्ड्र्यू ने कहा।

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड कुछ क्षण के लिए गहरे सोच में पड़ गईं। जाहिर है मेरे उस एलान का सिर-पैर उनकी समझ में न आया। अब उन्होंने अपने ड्राइंगरूम में वस्तुएँ व्यवस्थित रूप से रख दी थीं क्योंकि उनकी गृहस्थ-सम्बन्धी प्रवृत्तियों ने उनके दुख और उदासी को पराभूत कर दिया था। और अब वह कमरा पहले का-सा उजाड़ न दीखता था जैसा कि मैंने उस दुर्घटना के बाद सर्वप्रथम वहाँ जाने पर देखा था। लेकिन अब चूँकि मैं स्ट्रिकलैण्ड को पेरिस में देख चुका था इसलिए उसे इस वातावरण में कैसा लगता इसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। मैंने यह नतीजा निकाला कि उन लोगों की यह बात क्यों नहीं समझ में आती कि उस व्यक्ति में कुछ बातें असंगत थीं।

"लेकिन यदि वह चित्रकार ही बनना चाहते थे तो उन्होंने हमसे वैसा कहा क्यों नहीं ?" श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने आखिरकार कहा। "मैं समझती हूँ मैं तो कभी भी उनका विरोध न करती—बल्कि उनकी इस आकांक्षा में उनका साथ देती।"

श्रीमती मैक्एण्ड्रयू ने अपने होंठ भींचे। मैंने अनुमान लगाया कि वह अपनी बहन की इस प्रवृत्ति के विरुद्ध थीं क्योंकि वह एक ऐसे व्यक्ति की चाह कर रही थीं जो कला-प्रेमी था। संस्कृति का वह उपहास करने लगी।

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने कहना जारी रखा :

"आखिर अगर उनमें किसी तरह की भी कोई सलाहियत होती तो मैं सबसे पहले उन्हें प्रोत्साहित करता। मैं तो क़ुरबानियाँ करने को भी तैयार हो जाती। बल्कि मैं तो किसी दल्लाल की अपेक्षा एक चित्रकार से विवाह करके अपने को धन्य समझती। यदि बच्चों का ख़याल न होता तो मुझे किसी बात की भी चिन्ता न होती। मैं तो चेल्सी के किसी गंदे-भद्दे स्टूडियो में उतनी ही सुखी अनुभव करती जितनी कि इस फ्लैट में।"

"अमी, मेरे तो कान पक गये तुम्हारी बातें सुनकर," श्रीमती मैक्एण्ड्रयू चिल्लाई। "इस बकवास पर तुमने भला विश्वास किया।"

"लेकिन मैं समझता हूँ यह सब सच है।" मैंने विनीत भाव से कहा। उसने मेरी ओर कुछ उपहास और कुछ ग्लानि की-सी नज़रों से देखा।

"कोई भी आदमी चालीस वर्ष की आयु में अपने बीबी-बच्चे छोड़कर चित्रकार नहीं बना करता जब तक कि कोई स्त्री उसके बीच न हो। मैं तो समझती हूँ वह आपके किसी चित्रकार मित्र से मिले हैं और उसी ने उनका दिमाग़ ख़राब कर दिया है।"

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड के पीले, रक्तविहीन कपोलों पर रंग का एक धब्बा उभर आया।

"वह है कैसी दीखने में ?"

मैं कुछ सकुचाया। मैं जानता था कि अपने अन्दर मैंने एक बम दबा रखा है।

"औरत-वौरत इस मामले में कोई नहीं है।"

कर्नल मैक्एण्ड्र्यू और उनकी पत्नी ने अविश्वास के भाव प्रकट किये और उधर श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड विस्मय से उछल पड़ीं।

"आपका मतलब है आपने उसे कभी नहीं देखा ?"

"देखता तो तब जब कोई होती। वह वहाँ बिल्कुल अकेले हैं।"

"यह सब उपहासास्पद है," श्रीमती मैक्एण्ड्र्यू चीखीं।

" मैं न कहता था मुझे वहाँ खुद जाना चाहिए था," कर्नल बोले, "शर्तिया कहता हूँ मैं उसका चुटकियों में वारा-न्यारा कर देता।"

"काश आप वहाँ जाते," मैंने कुछ तीखेपन से उत्तर दिया, "आपको वहाँ जाकर मालूम होता कि आपका हरेक अनुमान ग़लत है। वह वहाँ किसी बढ़िया होटल में नहीं रहते। एक छोटे-से कमरे में बहुत ही गंदगी और फूहड़पन के साथ वह रहते हैं। उन्होंने घर इसलिए नहीं छोड़ा कि वह आनन्दमय जीवन बिताना चाहते थे। उनके पास तो रुपये-पैसे की भी तंगी ही है।"

"क्या आप समझते हैं उन्होंने जो कुछ किया है वह हम जानते नहीं हैं ? वह यह सब सफेद झूठ पुलिस से बचने की गरज़ से बोल रहे हैं।"

इस सुझाव ने उन सबके दिलों में आशा की एक किरण उत्पन्न कर दी। लेकिन मेरा उस सुझाव से कोई वास्ता नहीं था।

"यदि ऐसा ही था तो वह अपने साझीदार को अपना पता देने की हिमाक़त न करते," मैंने बड़ी कटुता से प्रत्युत्तर दिया। "कुछ भी हो एक बात पर मेरा अटल विश्वास है कि वह किसी के साथ नहीं गये। न ही वह किसी से प्रेम करते हैं। ऐसी बातें तो उनके मस्तिष्क में भी नहीं हैं।"

कुछ देर निस्तब्धता रही और फिर उन्होंने मेरी बात पर अपने उद्‌गार प्रकट किये।

"अच्छा साहब, अगर जो कुछ आपने कहा सच है," श्रीमती मैक्एण्ड्र्यू ने आखिरकार कहा, "तब तो स्थिति इतनी चिन्ताजनक नहीं है जितनी मैं समझती थी।"

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने उनकी ओर दृष्टिपात किया पर कहा कुछ नहीं। अब तो वह और भी पीली दिखाई दीं और उनकी सुन्दर भँवें गहरी तथा झुकी

हुई प्रतीत हुई। मैं उनके चेहरे के भाव न समझ सका। श्रीमती मैक्एण्ड्रयू ने कहना जारी रखा :

"यदि यह उनकी मन-मौज मात्र है तब तो वह जल्दी ही इससे छुटकारा पा जायेंगे"

"अमी, तुम खुद वहाँ क्यों नहीं चली जातीं?" कर्नल ने सुझाव दिया। "मैं नहीं समझता तुम पेरिस जाकर उनके साथ साल-दो साल क्यों नहीं रह आतीं। बच्चों को हम सम्हाल लेंगे। मेरा ख़याल है उनकी वह लगन अब शिथिल पड़ गई होगी और देर-सवेर वह लंदन वापस आने को तैयार हो जायेंगे और कोई नुक़सान भी नहीं होगा।"

"मैं तो वैसा करूँगी नहीं," श्रीमती मैक्एण्ड्रयू ने कहा। "मैं तो उन्हें जितनी ढील दरकार हो दूँगी। ताकि जब वह आयें तो उनके नकेल पड़ी हुई हो और आकर फिर आराम से रहने लगें।" श्रीमती मैक्एण्ड्रयू ने अपनी बहन की ओर बड़ी निराशा से देखा। "शायद तुमने कभी-कभी उनसे बुद्धिमत्ता-पूर्ण व्यवहार न किया होगा। मर्द बड़े विचित्र प्राणी होते हैं और उन्हें नियंत्रण में रखने के हथकण्डे सीखना चाहिए।"

श्रीमती मैक्एण्ड्रयू का अपनी अन्य हमजिन्सों की तरह यह विचार था कि यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी को, जो उसके प्रति अनुरक्त है, छोड़ देता है तो वह वहशी है। लेकिन उसकी इस प्रकार की हरकत के लिए पत्नी ही अपराधिन होती है। हृदय का अपना तर्क होता है जो तर्क स्वयं नहीं जानता।

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने हम सबकी ओर पारी-पारी से देखा।

"वह कभी वापस नहीं आवेंगे," उन्होंने कहा।

"नहीं चाँद, जो कुछ तुमने अभी सुना उसे याद रखो। वह सदैव एक ऐसे व्यक्ति के साथ रहे हैं जिसने उनकी देख-भाल की है। भला सोचो तो उस सड़ी-पड़ी होटल के उस सड़े-पड़े कमरे में वह कै दिन ठहर पायेंगे? इसके अलावा उनके पास पैसे भी नहीं हैं। आना तो उन्हें पड़ेगा ही।"

"जब तक मैं यह समझती रही कि वह किसी स्त्री के साथ भागे हैं तब तक तो इस बात की संभावना भी थी। क्योंकि मेरी नज़र में ऐसी चीज़ों

स्थायी नहीं हुआ करतीं। वह दो-तीन महीनों में ही उनसे ऊब जाते और भाग खड़े होते। लेकिन अगर वह किसी से प्रेम करके नहीं गये हैं तब तो कोई सवाल ही नहीं उठता उनके वापस आने का।"

"ओह हो तुमने तो हद करदी है। बाल की खाल निकाले जा रही हो।" कर्नल ने कहा और अपने शब्दों में घृणा कूट-कूट कर भर दी। "क्या तुम्हें इस पर विश्वास नहीं है। वह निश्चय ही वापस आयेंगे और जैसा कि डोरोथी ने कहा है उन्हें वहाँ के उस जीवन से भागना ही पड़ेगा, उन्हें वैसा रहने की आदत ही क्या ?"

"लेकिन मैं नहीं चाहती वह वापस आयें," उन्होंने कहा।

"अमी !"

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड क्रोधाभिभूत थीं और उनके चेहरे का पीलापन शांत तथा आकस्मिक क्रोध का पीलापन था। अब वह पहले से अधिक शीघ्रता से बोल रही थीं और बोलते समय उनकी साँस नहीं फूलती थी।

"यदि वह किसी के प्रेम-पाश में बँधकर उसके साथ चले जाते तो मैं उन्हें क्षमा कर देती। मैं समझ लेती कि वह सब स्वाभाविक ही है। मैं उन्हें जरा भी दोष न देती। मैं समझ लेती वह भटक गये हैं। पुरुष बेचारे होते भी कमजोर हैं और स्त्रियाँ बड़ी निर्दयी होती हैं। लेकिन यहाँ तो मामला ही कुछ और है। मुझे उनसे नफ़रत हो गई है अब मैं उन्हें कभी माफ़ नहीं करूँगी।"

कर्नल मैकएण्ड्रयू और उनकी पत्नी श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड से बातें करने लगे। वे विस्मित थे। उन्होंने उनसे कहा तुम पागल हो। वे उनकी दलील न समझ सके। अन्त में श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड घबराकर मेरी ओर मुड़ीं।

"आप देख रहे हैं ?" वह चीखकर बोलीं।

"मैं यक़ीन से नहीं कह सकता। आपका मतलब है आप उस सूरत में तो उन्हें माफ कह सकती हैं कि वह किसी औरत के ख़ातिर आपको छोड़ दें लेकिन अगर वह आपको किसी विचार-विशेष के लिए छोड़ें तो वह क्षम्य

नही हैं ? आप समझती हैं कि उनकी वह हरकत आप बर्दाश्त कर सकती है लेकिन दूसरी के लिए राजी होने में आप असमर्थ हैं ?"

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने मेरी ओर ऐसी नजरों से देखा जिनमें मुझे वह मैत्री न दिखाई दी। उन्होंने मेरे प्रश्न का उत्तर न दिया। शायद मेरी बात ने उनके मर्म पर आघात किया था। अब उन्होंने बड़े धीमे तथा काँपते हुए स्वर में कहा :

"मैं जानती ही न थी कि किसी व्यक्ति से इतनी घृणा भी की जा सकती है जितनी कि मैं उनसे करती हूँ। आप जानते हैं मैं अपने आप को यह दिलासा देती रही हूँ कि उनका यह सिलसिला कितना ही लम्बा क्यों न चले अंत में वह जरूर मेरे पास आयेंगे। मैं जानती थी कि जब मरणासन्न होंगे तो मुझे बुलायेंगे और मैं उनके पास जाने को तैयार हो जाऊँगी, मैं मा की तरह उनकी सुश्रुषा करूँगी और आखिर में उनसे कह दूँगी कि कोई हर्ज नहीं मैं हमेशा आपसे प्रेम करती रही हूँ और मैंने आपकी हर बात माफ करदी है।"

अपने प्रेमियों की मृत्यु-शैया पर स्त्रियाँ जिस खूबसूरती के साथ अपना अनुराग प्रदर्शित करती हैं उससे मुझे सदैव कुछ उलझन-सी महसूस होती रही है। कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे उन्हें अपने प्रेमियों की दीर्घायु से द्वेष हो क्योंकि उन्हें अपने करतब दिखाने का अवसर देर तक नहीं मिलता।

"लेकिन अब—अब सब कुछ खत्म होगया। अब मुझे उनसे उतनी ही दिलचस्पी रह गई है जितनी किसी अजनबी से होती। मेरी कामना है कि जब वह मरें तो उनकी हालतेज़ार पर रोने वाला न मिले, वह भूखों मरें। उनके पास न पैसा हो, न कोई उनका दोस्त हो। देख लेना वह किसी भयंकर बीमारी में फँसकर जायेंगे। और सड़-सड़ कर मरेंगे मैं तो उनसे भर पाई।"

मुझे फ़ौरन ही खयाल आया कि स्ट्रिकलैण्ड ने जो कुछ मुझसे कहा था वह भी मैं उन्हें बतादूँ।

"यदि आप उनसे तलाक़ लेना चाहें तो वह इसके लिए जो कुछ जरूरी होगा करने को तैयार हैं।"

"मैं उन्हें उनकी आज़ादी क्यों देदूँ ?"

"मैं नहीं समझता उन्हें इसकी ज़रूरत है। उनका तो यह खयाल इसलिए था कि शायद इससे आपको सुविधा हो।"

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने विह्वलता में अपने कंधे सिकोड़े। मैं समझता हूँ मुझे उनसे कुछ निराशा हुई। उस समय मैं आज की अपेक्षा लोगों को कमोवेश एक जैसा ही समझता था और मुझे ऐसे सुन्दरव आकर्षक प्राणी में इतनी प्रतिकार की भावना देखकर बड़ा दुःख हुआ। मैं न समझ पाया कि मानव कितनी विभिन्नताएँ लिये हुए है। अब मुझे भली प्रकार विदित हो चुका है कि निम्नता व महानता, द्वेष तथा दानशीलता, घृणा व प्रेम ये सब एक ही मनुष्य के मानस में पास-पास मौजूद हो सकते हैं।

मैं सोचने लगा कि ऐसी-कौन सी चीज़ है जो श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड की दीनता के कटु भाव को शांत कर सके। मैंने अंततः प्रयत्न करने की ठानी।

"आप जानती ही हैं कि इस बात का मुझे पक्का विश्वास नहीं है कि अपनी हरकतों के लिए आपके पति ही जिम्मेदार हैं। जी नहीं; वह अकेले ही इसके लिए दोषी नहीं हैं। मैं समझता हूँ वह किसी ऐसी शक्ति से पराभूत हो चुके हैं जो उनको अपने हितों के लिए इस्तेमाल कर रही है और उसके पंजे में वह उसी तरह बेबस हैं जिस तरह मकड़ी के जाले में कोई मक्खी। मानो उन पर किसी ने जादू कर दिया हो। मुझे वे विचित्र किस्से कहानियाँ याद आते हैं जिनमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति में प्रवेश करके पुराने को बाहर निकाल भगाता है। आत्मा शरीर में अस्थिर रूप से रहती है और उसके अंदर रहस्यमय परिवर्तन होजाते हैं। पुराने ज़माने में यदि यही घटना घटती तो लोग कह देते कि स्ट्रिकलैण्ड पर किसी भूत-प्रेत का असर है।"

श्रीमती मैक्एण्ड्रयू ने अपने गाउन पर हाथ फेरा और उनकी सोने की चूड़ियाँ कलाइयों पर सरक आईं।

"मुझे तो यह सब दूरस्थ मालूम होता है," उन्होंने कुछ तीव्रता से कहा। "मैं यह स्वीकार करती हूँ कि अमी को अपने पति पर कुछ अनावश्यक रूप से

गहरा विश्वास था। यदि वह अपने ही कामों में इतनी व्यस्त न रहती तो मैं समझती हूँ उन्हें संदेह करने का कोई मौक़ा ही न मिलता। मैं नहीं समझती कि मेरे मस्तिष्क में आए बिना अलैक साल-दो साल तक कोई बात करते रहें होंगे।"

कर्नल शून्य में तकने लगा और मैं अचरज करने लगा कि क्या कोई व्यक्ति इतना भोला और मासूम भी हो सकता है जितना कि वह लग रहा था।

"लेकिन इससे यह बात नहीं झुठलाई जा सकती कि चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड एक निर्मम पशु है।" वह मेरी ओर कठोरता से देखने लगीं। "मैं आपको बता सकती हूँ कि उन्होंने अपनी पत्नी को क्यों छोड़ दिया है।—इसका मात्र कारण है उनकी स्वार्थपरता और कुछ नहीं।"

"यह तो निश्चित ही सबसे आसान तरीक़ा है समझाने का," मैंने कहा। लेकिन मैंने अपने तईं सोचा कि उसकी बात से कोई मक़सद हल होता नहीं है। जब मैंनें कहा मैं थक गया हूँ और यह कहते हुए मैं उठकर चलने लगा तो श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे रोकने की कोई चेष्टा नहीं की।

१६

उसके बाद जो कुछ हुआ उससे ज़ाहिर होता है कि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड सच्चरित्रा थीं। उनके मानस में जो कुछ उद्वेलित होता, वह उसे छिपाती रहतीं। उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता से यह देख लिया कि संसारवासी दुर्भाग्य की रट से बहुत जल्द ऊब जाते हैं और इसीलिए दुःख या विपदा से सदा किनाराकशी करते रहते हैं। जब कभी भी वह बाहर निकलतीं उनके विफल साहसिक

कार्य के प्रति करुणा दिखाने के लिए उनके मित्र बड़ी उत्सुकता से उनकी आव-भगत करते। दूसरे उनका अपना आचार-व्यवहार भी प्रशंसनीय था। वह धैर्यवान तथा वीर थीं लेकिन अत्यधिक प्रकट रूप में नहीं; प्रफुल्ल थीं लेकिन भोंडेपन की हद तक नहीं। उन्हें दूसरों के दुख-दर्द सुनने की अधिक लालसा थी बजाय इसके कि वह अपना रोना दूसरों के आगे रोतीं। वह जब कभी भी अपने पति का ज़िक्र करतीं, दया के साथ। उनका अपने पति के प्रति जो रवैया था पहले तो उसने मुझे उलझन में डाल दिया। एक दिन वह मुझसे बोलीं :

"जानते हैं, मुझे दृढ़ विश्वास है कि चार्ल्स के अकेले रहने का आपका ख़याल ग़लत है। जो कुछ मैंने कुछ सूत्रों से कि मालूम किया है—कहाँ से, यह मैं आपको नहीं बताऊँगी—उनसे मुझे विश्वास हो गगा है कि वह इंग्लैण्ड से अकेले नहीं गये थे।"

"अगर यह बात है तो वह वास्तव में एक मेधावी हैं क्योंकि उन्होंने अपने रहस्य बड़ी खूबी से छिपाये हैं।"

उन्होंने मुझसे नज़रें बचाईं और उनके चेहरे का रंग बदल गया।

"मेरे कहने का मतलब यह है कि अगर कोई आपसे आकर यह कहे कि वह किसी लड़की के साथ भागे हैं तो आप उसकी बात का खण्डन न कीजिएगा।'

"नहीं साहब- मैं भला क्यों करने लगा।"

उन्होंने बातचीत का विषय बदल दिया मानो वह उसे कोई महत्त्व ही न देती हों। शीघ्र बाद ही मैंने यह मालूम कर लिया कि उनके मित्रों में एक विचित्र अफ़वाह फैली हुई है कि चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड एक फ्रांसीसी नर्तकी पर मोहित हो गया था जिसे उसने पहले-पहल एम्पायर में एक बैले में देखा और उसी के साथ वह पेरिस चला गया था। मैं यह न मालूम कर सका कि यह सब आख़िर हुआ कैसे लेकिन इस अफवाह से श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड के प्रति लोगों की अपार सहानुभूति पैदा हो गई, पर साथ ही उससे उनकी प्रतिष्ठा पर भी असर पड़ा। जो पेशा वह इख़्तियार करना चाहती थीं उसमें इस बात का भी कुछ महत्त्व था। कर्नल मैक्एण्ड्रयू के इस कथन में कोई अत्युक्ति न थी कि वह

बहुत जल्द पैसे-पैसे को मुहताज हो जायेंगी और इसलिए उनके लिए ज़रूरी था कि वह शीघ्रातिशीघ्र अपनी जीविका अर्जित करना आरम्भ कर दें। उन्होंने अपने मित्र-लेखकों के परिचय से लाभ उठाने का निश्चय किया और बिना समय नष्ट किये शॉर्ट हैण्ड व टाइपिंग सीखने लगीं। चूँकि वह सुशिक्षित थीं इसलिए ऐसा जान पड़ा कि साधारण टाइपिस्टों से वह अधिक सुयोग्य टाइपिस्ट बन सकेंगी। उधर उनके बारे में फैली हुई अफवाह के फलस्वरूप उनका यह अनुमान और भी सच लगने लगा। उनके मित्रों ने स्वयं उन्हें काम देने तथा दूसरों से सिफारिश करने का उनसे वादा किया।

मैकएण्ड्रयू-दम्पति ने जो निस्संतान थे और अच्छी स्थिति में थे, बच्चों की देखभाल अपने ज़िम्मे ले ली, चुनाँचे श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड को सिर्फ अपने लायक़ ही कमाना पड़ा। उन्होंने अपना फ्लैट किराये पर दे दिया और फर्नीचर बेच दिया। वेस्टमिन्स्टर में दो छोटे कमरे किराये पर लेकर वह रहने लगीं और वहीं उन्होंने अपना नया जीवन प्रारम्भ किया। वह इतनी सुयोग्य एवं कार्यसाधक थीं कि उनकी सफलता निश्चित हो गई।

१७

इस घटना के लग-भग पाँच वर्ष बाद मैंने कुछ दिन पेरिस में रहने का निश्चय किया। लंदन में पड़े-पड़े मैं निढाल होता जा रहा था। एक ही काम हर दिन करते रहने से मैं उकता गया था। मेरे मित्र अपने-अपने कामों में उसी नीरसता के साथ व्यस्त थे; उनके जीवन में कोई उतार-चढ़ाव न था, कोई नई

बात वे मुझे न सुना सकते थे और जब कभी मैं उनसे मिलता मुझे अच्छी तरह ज्ञात होता था वे क्या कहने वाले हैं। यहाँ तक कि उनके प्रेम-सम्बन्धी मामलों में भी वही उत्साहतपूर्ण नीरसता भरी हुई थी। हम उन ट्रामों के समान थे जो अपनी पटरी पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक चलती रहती हैं और कुछ हद तक यह भी अनुमान लगाया जा सकता था कि उनमें कितने यात्री समा सकते हैं। जीवन अत्यधिक सुखद रूप से व्यवस्थित था। मैं आतंकित हो उठा। मैंने अपना छोटा कमरा छोड़ दिया, थोड़ा-बहुत सामान बेच दिया और फिर से जिन्दगी शुरू करने का संकल्प कर लिया।

प्रस्थान से पूर्व मैं श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड से मिलने गया। काफी अर्से से मैं उनसे न मिला था और इसी वजह से मुझे उनमें कई परिवर्तन नजर आये न केवल वह बूढ़ी, दुबली तथा झुर्रियोंदार हो गई थीं बल्कि मैं समझता हूँ उनका स्वरूप ही बदल गया था। अपने व्यवसाय में उन्हें सफलता मिली थी और अब उन्होंने चाँसरी लेन में एक दफ्तर खोल लिया था। कुछ टाइपिंग का काम वह खुद करती थीं और अपना बाकी समय अन्य चार लड़कियों के काम में सुधार करने में लगाती थीं, जो उनके यहाँ काम करती थीं, उसका विचार था कि उनके यहाँ का काम ज़रा बढ़िया हो और विशेषता लिये हुए हो, यही वजह थी कि वह लाल व नीली स्याहियों का बहुत उपयोग करती थीं। कापी को एक साधारण से खुरदरे कागज में लपेटतीं जो कुछ वाटर्ड सिल्क जैसा लगता था और जिस पर रंग बिरंगे रंग होते थे। साथ ही सफाई और शुद्धि के लिए उनका काफी नाम हो गया था। अब वह खूब पैसे कमा रही थीं। लेकिन उन्हें यह भय सदैव सताता रहा कि स्त्री का अपनी जीविका आप कमाना कुछ असम्मानित-सा है और वह हमेशा आपको यह याद दिलाने पर तुली रहती कि वह एक कुलीन घराने की महिला हैं। जब कभी आप उनसे बात करें वह अपने कुछ परिचितों के नाम गिनाये बिना नहीं रह सकतीं ताकि आप यह समझें कि उनका सामाजिक स्तर कुछ गिरा हुआ नहीं है, अपने साहस तथा व्यावसायिक क्षमता पर वह लज्जित होती थीं लेकिन इस बात से उन्हें

अपार हर्ष होता था कि अगले दिन रात को वह किसी के० सी०[1] (किंग्स कौंसेल) के यहाँ खाना खाने वाली हैं जो दक्षिण के सिंगटन में रहता है। वह यह कहने में सुख अनुभव करती थीं कि उनका पुत्र केम्ब्रिज में पढ़ता है और वह ज़रा हँस कर यह भी कहा करती थीं कि उनकी पुत्री जो अभी-अभी केम्ब्रिज से निकली है अनेक नृत्यों में निमंत्रित की जाती है। मैं समझता हूँ मैंने उनसे बहुत ही मूर्खतापूर्ण बात कही।

"क्या वह भी आपके ही व्यवसाय में आने वाली है ?"

"अजी नहीं, मैं उसे यह काम हरगिज़ न करने दूँगी," श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने उत्तर दिया। "वह इतनी सुन्दर है। मुझे विश्वास है वह कहीं भली जगह विवाह करेगी।"

"मैं सोचता था कि वह इस व्यवसाय में आपकी मदद कर सकती है।"

"बहुत से लोगों ने तो सुझाव दिया कि वह रंगमंच पर अपने गुणों का प्रदर्शन करे लेकिन, मैं तो उसके लिए उसे अनुमति दे न सकी। मेरा सभी बड़े-बड़े नाटककारों से परिचय है और मैं कल उसे कोई अच्छी भूमिका दिलवा सकती हूँ लेकिन मैं नहीं चाहती वह हर क़िस्म के लोगों से मेल जोल बढ़ाये।"

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड के इस पृथकत्व को सुन कर मुझ में सिहरन पैदा हो गई।

"कभी आपके पति की खैर-खबर भी मिल जाती है आपको ?"

"जी नहीं; आज तक एक शब्द भी उनके बारे में नहीं सुना मैंने। भगवान जाने जिन्दा भी हैं या मर गये।"

"शायद कभी पेरिस में उनसे मुठभेड़ हो जाय; क्या मैं आपको लिखूँ उनके बारे में ?"

क्षण भर वह हिचकिचाईं।

"यदि वास्तव में वह विपदा में हों तो मैं उनकी कुछ मदद कर सकती हूँ। मैं कुछ रक़म आपको भेज दूँगी जिसमें से आप उनकी ज़रूरत की मुताबिक़ उन्हें थोड़ा-थोड़ा देते रहें।"

१—राजा का सलाह कार।

"यह आपकी योग्यता की बात है," मैंने कहा ।

लेकिन मैं जानता था कि वह किसी दयालुता के भाव से अभिभूत होकर ऐसा नहीं कर रहीं । यह सत्य नहीं है कि आत्म-पीड़न चरित्र को उन्नत करता है; हाँ सुख तो कभी-कभी ऐसा करता भी है लेकिन पीड़ा तो मनुष्य में अधिकतर ओछापन और बदले की भावना ही पैदा करती है ।

१८

असल में पेरिस आये मुझे अभी एक पक्ष भी न बीता था कि स्ट्रिकलैण्ड से मेरी मुलाक़ात हो गई ।

फौरन ही रू दे दाम में एक मकान में मुझे छोटा-सा कमरा मिल गया और दो-चार सौ फ्रांक खर्च करके मैंने एक कबाड़ी से आवश्यक फर्नीचर खरीदकर उस कमरे को रहने योग्य बना लिया । मैंने एक नौकरानी से यह तय कर लिया कि सुबह वह मेरे लिए कॉफी तैयार किया करे और कमरे को साफ-सुथरा रखे । फिर मैं अपने मित्र डर्क स्ट्रू से मिलने गया ।

डर्क स्ट्रू उन लोगों में से था जिसे आप अपने चरित्र के अनुसार बिना व्यंग्यपूर्ण हँसी या कंधे सिकोड़े कल्पना नहीं कर सकते । प्रकृति ने उसे मूर्ख बनाया था । वह चित्रकार था और बहुत बुरा चित्रकार । मैं उससे रोम में मिला था और मुझे उसके मित्र अब तक याद थे । सामान्यता के प्रति उसमें वास्तविक निष्ठा थी । कला-प्रेम से उसकी आत्मा भरी पड़ी थी, उसके बनाये हुए चित्र प्याजा दि स्पाना में बर्निनी के ज़ीने में टँगे हुए थे जिनमें उनकी विशिष्ट चित्रकारिता मूर्त थी । उसका स्टूडियो कैनवासों से भरा पड़ा था जिन

पर मूँछों वाले, बड़ी-बड़ी आँखों वाले, ऊँचे हैट पहने किसानों, चिथड़ों में लिपटे बच्चे-बच्चियों और चमकीले पेटीकोट पहने स्त्रियों के चित्र बने हुए थे। किसी चित्र में वे गिरजे की सीढ़ियों पर पड़े चित्रित किए गए हैं और कभी घन-शून्य आकाश के नीचे सर्व के वृक्षों के इर्द-गिर्द क्रीड़ा करते हुए दिखाये गये हैं। कभी किसी झरने के पास बैठे प्रणय कर रहे हैं और कभी वे किसी बैलगाड़ी के पास कैम्पाना में घूम रहे हैं। वे चित्र बड़ी सावधानी से खींचे और बनाये गये थे। फोटो भी इतना सही नहीं हो सकता था। विला मेदिसी का एक चित्रकार उसे चॉकलेट के डिब्बे वाला कहा करता था। उसके चित्रों को देखकर आप यह समझेंगे कि मोने, मैने तथा अन्य इम्प्रेशनिष्ट चित्रकार हुए ही न होंगे।

"मैं कोई महान् चित्रकार बनने का ढोंग नहीं रचता," वह बोला। "मैं कोई माइकल एंजिलो तो हूँ नहीं, लेकिन हाँ, मुझमें कुछ जरूर है। मेरे चित्र बिकते हैं। मैं सभी प्रकार के लोगों के परिवारों में रोमांस पहुँचाता हूँ। आप जानते हैं वे मेरे चित्र न केवल हालैण्ड में बल्कि नार्वे, स्वेडन और डेन्मार्क में भी खरीदते हैं? मुख्यतया व्यापारी और धनवान लोग ही खरीदते हैं उन्हें। आप तो कल्पना भी नहीं कर सकते कि उन देशों के जाड़ों के दिन कैसे होते हैं—बड़े लम्बे, अँधियारे और ठण्डे। वे समझते हैं कि इटली देश वैसा ही होगा जैसा मेरे चित्रों में चित्रित है। और यही वे आशा करते हैं कि मेरे चित्र अत्यन्त विश्वस्त हों। और मैं भी यहाँ आने के पहले इटली के बारे में ऐसी ही आशाएँ बाँधे हुए था।"

और मैं समझता हूँ कि वही, कल्पना सदैव उसके साथ रही जिसने उसकी आँखों को ऐसा चकाचौंध कर दिया कि वह सत्य को न देख पाया, और सत्य की क्रूरता के बावजूद वह इटली को उन्हीं रोमांटिक डाकुओं के तथा मनोरम भग्नावशेषों के नगर की दृष्टि से देखता रहा। चित्रकारी उसके लिए एक आदर्श थी, और वह दरिद्र, साधारण और भग्न वस्तुओं को चित्रित करता था लेकिन फिर भी वह उसके लिए एक आदर्श थी और उसी आदर्श ने उसके चरित्र को एक निश्चित आकर्षण प्रदान किया था।

यह इसलिए था क्योंकि मैं डर्क स्ट्रू को वैसा ही हास्यास्पद व्यक्ति नहीं समझता था जैसा कि दूसरे समझते थे। उसके साथी चित्रकार खुले आम उसके चित्रों के प्रति अपनी घृणा प्रकट करते थे किन्तु वह चित्रों द्वारा ही खूब पैसे बनाता था और वे बिना किसी सकुचाहट के उसकी कमाई अपने ऊपर खर्च करवाते थे। वह बड़ा उदार था और जरूरतमंद लोग उस पर हँसते थे क्योंकि वह उनकी तंगी और दुर्दशा के किस्सों पर फौरन विश्वास कर लेता था और बड़ी ढीठता और निर्लज्जता से उससे पैसे उधार ले लेते थे। वह बहुत भावुक था किन्तु फिर भी उसके विचार जिन्हें सहज ही उकसाया जा सकता था कुछ मूर्खत्व लिए हुए थे और फलस्वरूप आप उसकी दयालुता स्वीकार करने पर भी उसके प्रति कृतज्ञ अनुभव नहीं करते। उससे पैसे लेना ऐसा ही था जैसे किसी बच्चे से पैसे छीन लेना, फिर उससे लोगों को ग्लानि होती थी क्योंकि वह इतना मूर्ख था। मैं समझता हूँ कि एक जेबकतरा जिसे अपने हाथ की सफाई पर नाज़ है जब यह देखता है कि कोई लापरवाह स्त्री टैक्सी में अपना जवाहरात से भरा हुआ थैला छोड़ गई है तो उसे कुछ क्रोध-सा आ जाता है। प्रकृति ने उसे उपहासास्पद तो बनाया था किन्तु वह बिल्कुल नासमझ नहीं था। उसका जो मज़ाक उड़ाया जाता था चाहे वह हल्का-फुल्का हो अथवा सख्त वह उसमें भी आनन्द लेता था और फिर भी वह दूसरों को बराबर उसे उपहास का मौक़ा देना भी न बन्द करता था। वह निरन्तर व्यंग्य तथा उपहास के आघात सहता रहता था पर फिर भी उसका सुस्वभाव कुछ ऐसा था कि दिल में कोई मैल या द्वेष न आने देता था; चाहे साँप उसे डस लेता लेकिन अनुभव से वह कभी न सीखता था, और ज्योंही उसे एक बार की पीड़ा से चैन हुआ कि फौरन ही अपने को उसी तकलीफ़ के हवाले कर देता था। उसका जीवन ही एक ट्रैजिडी थी जो एक बहुत ज़ोरदार हास्य-प्रधान नाटक के रूप में लिखी गई थी। चूँकि मैं उसका उपहास नहीं करता था इसलिए वह मेरे प्रति कृतज्ञ रहता था और यही कारण था कि वह मेरे सामने अपनी सारी विपदाएँ सुनाया करता था। उनमें सर्वाधिक दुखद बात यह थी कि वे विपदाएँ भंयकर थीं और संयोगवश वे जितनी करुणाजनक होतीं उतनी

ही हँसी उन पर आती ।

लेकिन हालाँकि वह इतना बुरा चित्रकार था फिर भी कला के लिए उसमें बड़े कोमल भाव थे और उसके साथ किसी चित्रनिकेत को जाना अत्यन्त सुखद और आनन्ददायक अनुभव होता था । उसका उत्साह सच्चा और उसकी आलोचना अत्यन्त तीव्र होती थी । वह कैथोलिक था । वह न केवल प्राचीन उस्तादों का प्रशंसक था अपितु आधुनिक चित्रकला के पण्डितों के प्रति भी उसमें सहानुभूति थी । गुणवान चित्रकार को पहचानने में उसे जरा समय न लगता था और उनके प्रति व्यक्त की गई उसकी सराहना अपरिमित थी । मैं समझता हूँ ऐसा दूसरा व्यक्ति जिसका निर्णय इतना विश्वस्त हो मैंने कभी न देखा था । अन्य अनेक चित्रकारों की अपेक्षा वह कहीं अधिक शिक्षित था । अधिकांश चित्रकारों की नाईं वह अन्य समान कलाओं से अनभिज्ञ न था और संगीत तथा साहित्य में उसकी रुचि ने उसकी चित्रकारिता की समझदारी को काफी गहराई और वैविध्य प्रदान किया था । मुझ जैसे नवयुवक के लिए उसकी सलाह और निर्देशन अपरिमित महत्त्व के थे ।

जब मैं रोम से चला आया तो मैंने उससे पत्र-व्यवहार के द्वारा अपने सम्बन्ध बनाये रखे । दो महीनों में एकाध बार वह भी बड़े लम्बे-लम्बे पत्र अपनी विचित्र अंग्रेजी में मुझे लिखता जिन्हें पढ़कर मुझे अनुभव होता कि वह मेरे सामने अपने विशिष्ट ढंग से वार्तालाप कर रहा है । मेरे पेरिस जाने के कुछ समय पूर्व उसने एक अंग्रेज स्त्री से विवाह कर लिया और अब मौंटमार्च के स्टूडियो में रहने लगा । चार वर्ष तक मेरी उससे कोई मुलाकात न हुई और न ही मैं कभी उसकी पत्नी से मिल सका ।

१६

मैंने अपने आने की सूचना स्टू को नहीं दी थी और उसके स्टूडियो पहुँच कर जब मैंने दरवाजे की घण्टी बजाई तो एक बार तो वह मुझे खुद न पहचान सका। फिर वह सहसा मेरी आकस्मिक भेंट पर प्रफुल्लित हो चिल्लाया और उसने मुझे अन्दर खींच लिया। उसने जो मेरा इतनी उत्सुकता से स्वागत किया उससे मैं गद्गद् हो गया। उसकी पत्नी स्टोव के पास बैठी सी-पिरो रही थी और मेरे अन्दर दाखिल होते ही वह अभिवादनार्थ खड़ी हो गई। उसने मेरा परिचय अपनी पत्नी से कराया।

"याद है तुम्हें ?" उसने पत्नी से कहा; "मैं अक्सर तुमसे इनका जिक्र कर चुका हूँ।" और फिर मुझसे बोला, "लेकिन भई, तुमने अपने आने की सूचना मुझे क्यों नहीं दी ? कब आये हो ? कब तक रहोगे ? घण्टा भर पहले क्यों नहीं आये, हम सब साथ ही भोजन करते ?"

उसने प्रश्न रूपी बमों की मुझ पर वर्षा की। फिर उसने मुझे एक कुर्सी पर बैठाया और इस प्रकार मेरी पीठ थपथपाई जैसे मैं गद्दा हूँ और सिगार केक और शराब से मेरी खातिर की। वह मुझे अकेला तो छोड़ ही नहीं सकता था। उसे इस बात का सख्त मलाल था कि उसके यहाँ व्हिस्की न थी, चुनांचे वह मेरे लिए कॉफी तैयार करना चाहता था ; वह सोचने लगा मेरे लिए क्या करे, फिर वह हँसा, क़हक़हे लगाए और इतना उल्लासित दीख पड़ा कि बार-बार उसके पसीने छूट पड़े।

"तुम में कोई परिवर्तन नहीं आया," मैंने उसकी ओर देखा और मुस्कराकर कहा।

उसके चेहरे पर वही बेहूदगी बरस रही थी जो मैं पहले कभी देख चुका था। वह नाटे क़द का मोटा-सा आदमी था, छोटी-छोटी टाँगें थीं और उम्र में वह हालाँकि छोटा दिखाई पड़ता था पर होगा तीस के लगभग—लेकिन इतनी अल्पावस्था में ही वह गंजा हो गया था। उसका चेहरा बिल्कुल गोल-मटोल था, रंग उसका बड़ा साफ था ; सफेद त्वचा, लाल कपोल और लाल होंठ। उसकी आँखें नीली थीं और साथ ही गोल भी ; वह बड़ा, सुनहरी फ्रेम का चश्मा लगाए था और उसकी भँवें इतनी सुन्दर थीं कि आप देख न सकते थे। वह आपको उन मोटे, प्रफुल्ल व्यापारियों की याद दिलाता था जिनके रुबेन्स ने चित्र बनाए थे।

जब मैंने उसे बताया कि मैं पेरिस में कुछ दिन रहने के विचार से आया हूँ और मैंने एक कमरा ले लिया है तो उसने मुझे बहुत झिड़का कि मैंने यह सब उसे बताए बिना कैसे कर लिया। वह खुद ही मुझे एक कमरा दिला सकता था और अपना फर्नीचर दे सकता था—क्या वास्तव में मैंने उसे यह बता दिया था कि मैंने फर्नीचर खरीद लिया ?—और वह मुझे इधर-उधर जाने में भी मदद करता। उसने वास्तव में इसे अमैत्रीपूर्ण समझा कि मैंने उसे सहायता देने का अवसर तक प्रदान न किया। उधर श्रीमती स्ट्रू खामोशी से बैठी अपने मोज़े दुरुस्त करती रहीं, बोलीं कुछ नहीं और जो कुछ वह कहता रहा उसे वह मुस्कराहट के साथ सुनती रहीं।

"हाँ तो देखा तुमने अब मैंने शादी कर ली है," वह अचानक बोला, "मेरी पत्नी के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

वह उसकी ओर देखकर हँसा और उसने अपना चश्मा नाक के बासे पर सरका लिया। पसीने से वह निरन्तर नीचे की ओर सरकता रहा।

"आखिर मुझसे तुम क्या कहलवाना चाहते हो ?" मैंने हँसकर कहा।

"वास्तव में, डर्क," श्रीमती स्ट्रू मुस्कराकर बोलीं।

"क्यों, है नहीं वह अति सुन्दर ? मैं कहता हूँ, भैया मेरे जल्दी से शादी करके घर बसा लो, देर मत लगाओ इस नेक काम में। मैं संसार में सबसे अधिक सुखी व्यक्ति हूँ। देखो वहाँ बैठी हुई वह कैसी लग रही है, लगती है न

चित्र के लिए सुन्दर ? चार्डिन*, ऐं ? मैंने संसार की सभी सुन्दरियों को देखा है, लेकिन मदाम डर्क स्ट्रू से अधिक सुन्दर स्त्री मैंने आज तक नहीं देखी।"

"देखो डर्क अगर तुम चुप न हुए तो मैं उठकर चली जाऊँगी।"

"मेरी नन्हीं चुहिया," उसने कहा।

वह उसके स्वर की उत्तेजना को अनुभव करके किंचित झेंपी और सटपटा गई। उसके पत्रों से मुझे मालूम हुआ कि वह अपनी पत्नी से अपार प्रेम करता है और उस पर से नजरें हटाना भी उसके लिए मुश्किल है। वह उससे प्रेम करती थी या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। बेचारा मूढ़ तो था ही उससे भला कौन प्रेम करता किन्तु श्रीमती स्ट्रू की आँखों में स्नेहमयी मुस्कान विद्यमान थी और यह भी सम्भव था कि उसकी उदासीनता के पीछे कोई अत्यन्त गहरा विचार छिपा हुआ हो। वह कोई ऐसी असाधारण रूप से सुन्दर स्त्री तो थी नहीं जिस पर उसकी प्रेम-रोगी दृष्टि पड़ी थी बल्कि उसमें गंभीर आकर्षण अवश्य था। वह ज़रा ऊँची थी और उसकी भूरी पोशाक जो सादी पर बड़ी अच्छी सिली हुई थी यह बताती थी कि उसका शरीर बड़ी सजावट का और सुडौल है। उसके शरीर की सजावट किसी मूर्तिकार को अधिक आकृष्ट कर सकती थी अपेक्षाकृत किसी पोशाक बनाने वाले के। उसके बाल कत्थई और भरे-पूरे थे पर थे बहुत घने; उसका चेहरा बहुत पीला था और उसके चेहरे के नक्श अच्छे थे हाँ, वे सर्वथा विशिष्ट न थे। आँखें उसकी बिल्कुल सफेद थीं। उसके सुन्दर होने में ज़रा-सी कसर रह गई थी और उस कसर के कारण उसे खासी भी नहीं कहा जा सकता था। लेकिन जब स्ट्रू ने चार्डिन का जिक्र किया तो वह कुछ अप्रासंगिक न था। उसे देखकर मुझे वास्तव में उस सुखद गृहिणी का स्मरण हो आया और वह अपनी मॉबकैप और एप्रन पहने जिसे उस महान् चित्रकार ने अपनी तूलिका से अमर कर दिया है मेरे कल्पना-चक्षुओं के सम्मुख आ खड़ी हुई। मैं कल्पना कर सकता था कि किस प्रकार वह अपने बर्तन-भाँडों में व्यस्त है, किस तरह वह अपने गृहस्थ

*फ्रांस का सुप्रसिद्ध चित्रकार, १७वीं शताब्दी।

सम्बन्धी कार्यों को धार्मिक कर्त्तव्य समझकर पूरा कर रही है जिससे कि उन्हें एक नैतिक महत्त्व प्राप्त हो गया है। मैं उसे चालाक नहीं समझता था, न ही उससे यह आशा थी कि वह कभी दिलचस्प भी हो सकती है लेकिन उसकी गंभीर अभिलाषा से अवश्य आकृष्ट हुआ। उसकी उदासीनता के पीछे कोई रहस्य भी था। मुझे अचरज होता था कि आखिर उसने डर्क स्ट्रू से कैसे शादी कर ली। यद्यपि वह अंग्रेज थी तो भी मैं यह न समझ सका कि आखिर समाज में उसका क्या स्थान है, उसका पालन-पोषण किस प्रकार हुआ है या शादी से पहले वह किस प्रकार रही है। वह बहुत खामोशी पसंद थी लेकिन जब बोलती थी तो उसकी वाणी बड़ी मधुर लगती थीं और उसके आचरण भी स्वाभाविक थे।

मैंने स्ट्रू से पूछा कि तुम काम कर रहे हो या नहीं ?

"काम कर रहा हूँ ? मैं आजकल इतना पेण्ट कर रहा हूँ कि इससे पहले कभी न किया था।"

हम जाकर स्टूडियो में बैठे और उसने हाथ से एक अपूर्ण चित्र की ओर जो ईजल पर रखा हुआ था इशारा किया। मैं उसे देखते ही घबड़ा गया। वह इटली के किसानों के एक गिरोह का चित्र बना रहा था जो कैम्पेना पोशाक पहने एक रोमन गिरजे की सीढ़ियों पर टहल रहे थे।

"क्या तुम अब यही कर रहे हो ?" मैंने पूछा।

"हाँ। मुझे अपने चित्रों के लिए यहाँ और रोम दोनों स्थानों पर मॉडल मिल जाते हैं।"

"क्या खयाल है आपका, यह चित्र बहुत सुन्दर नहीं है ?" श्रीमती स्ट्रू ने कहा।

"यह मेरी मूर्ख पत्नी मुझे बहुत महान् चित्रकार समझती है," वह बोला।

उसकी क्षमापूर्ण हँसी उसके उस उल्लास को न छिपा सकी जो उसने अनुभव किया था। उसकी आँखें उसी चित्र पर लगी हुई थीं; अजीब बात थी

कि उसकी आलोचना जो दूसरों की कृतियों के बारे में इतनी सही और अरूढ़िगत होती थी अपने चित्रों के सम्बन्ध में वही बात उलट जाती थी और वह साधारणतम तथा घिसेपिटे चित्रों से ही संतुष्ट हो जाता था।

"इन्हें अपने कुछ और चित्र भी तो दिखाइए," वह बोली।

"दिखाऊँ क्या ?"

हालाँकि डर्क स्ट्रू का उसके मित्रों ने इतना उपहास किया था फिर भी वह प्रशंसा का भूखा था, आंतरिक रूप से आत्म-संतुष्ट था और अपने चित्रों के प्रदर्शन का लोभ संवरण न कर सकता था। वह दो इटैलियन बच्चों का जिनके घुँघराले बाल थे और जो कंकर खेल रहे थे चित्र निकाल कर लाया।

"हैं ना कैसे सुन्दर ?" श्रीमती स्ट्रू ने कहा।

फिर उसने मुझे और कई चित्र दिखलाए। अब मैंने नतीजा निकाल लिया कि पेरिस में भी वह वही पुरानी घिसी-पिटी चित्र-सदृश वस्तुएँ चित्रित करता रहा था जो वह रोम में बरसों चित्रित करता रहा था। वे सब झूठे, ग़लत और घटिया थे पर दूसरी ओर यह भी कहना पड़ेगा कि डर्क स्ट्रू के बराबर कोई अन्य इतना सच्चा, ईमानदार और स्पष्टवादी भी नहीं था। आखिर इस अंतर्विरोध का निश्चय कौन कर सकता था ?

न जाने किस कारण यह प्रश्न मेरे मस्तिष्क में उभर आया :

"क्यों भई, कभी तुम्हें चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड नामक चित्रकार से मिलने का तो मौक़ा नहीं मिला ?"

"क्या मतलब ? क्या तुम भी उसे जानते हो ?" स्ट्रू चिल्लाया।

"जानवर कहीं का," उसकी पत्नी ने कहा।

स्ट्रू हँस दिया।

'मेरी बीर बहूटी !" वह अपनी पत्नी के पास गया और जाकर उसके दोनों हाथों का उसने चुम्बन लिया। " यह उसे पसंद नहीं करतीं। बड़ी अजीब बात है कि तुम भी स्ट्रिकलैण्ड को जानते हो।"

"मुझे अशिष्ट व्यवहार पसंद नहीं," श्रीमती स्ट्रू ने कहा

डर्क हँसते हुए समझाने के लिए मेरी ओर मुड़ा।

"जानते हो, मैंने उससे कहा कि एक रोज़ आकर मेरे चित्रों को देख ले। वह आया और मैंने उसे अपने तमाम चित्र जो मैंने बना रखे थे, दिखाए।" फिर स्ट्रू एक क्षण के लिए घबराहट से हिचकिचाया। न मालूम उसने वह क़िस्सा छेड़ा ही क्यों था; क्योंकि क़िस्सा खत्म करते समय उसे कुछ भद्दा-सा महसूस हुआ। "उसने मेरे चित्र—मेरे चित्र देखे और कुछ भी नहीं बोला। मैं समझा वह अपनी राय आखिर तक छिपा रहा है। और अंततः मैंने कहा: 'ये लीजिए साहब, ये ही हैं वे चित्र!' उसने कहा: 'मैं तो तुमसे बीस फ्रांक उधार लेने आया था।"

"और डर्क ने वास्तव में उसे फ़ौरन दे भी दिये," उसकी पत्नी ने क्रोधित हो कहा।

"मैं इतना विस्मित हुआ कि इन्कार करना मैंने उचित न समझा। उसने पैसे जेब में डाले, सिर हिलाया, कहा 'धन्यवाद' और चल दिया।"

क़िस्सा सुना चुकने पर डर्क स्ट्रू के गोल-मटोल, मूर्खतापूर्ण चेहरे पर भावविहीन विस्मय की ऐसी भंगिमा दिखाई दी कि उसे देखकर न हँसना असंभव था।

"अगर वह कह देता कि मेरे सारे चित्र बुरे हैं तो मुझे ज़रा बुरा न महसूस होता पर उसने तो कुछ कहा ही नहीं।"

"और आप क़िस्सा सुनाकर ही रहेंगे स्ट्रू," उसकी पत्नी ने कहा।

यह वास्तव में दुःखद था कि उस डच (स्ट्रू) के हास्यास्पद चेहरे को देखकर लोग अधिक आनंदित होते थे बजाय उसके इस क्रोधित चेहरे से जो उसने स्ट्रिकलैण्ड के निर्दय व्यवहार से उत्तेजित हो बना लिया था।

"मुझे तो अब उससे भगवान न मिलाये," श्रीमती स्ट्रू ने कहा।

स्ट्रू ने मुस्कराकर कंधे सिकोड़े। वह अपने विनोदप्रिय स्वभाव को पुनर्प्राप्त कर चुका था।

"तथ्य तो यह है कि सब कुछ होने के बावजूद वह एक महान् कलाकार है, बहुत महान कलाकार।"

"स्ट्रिकलैण्ड?" मैंने चकित हो कहा। "तो फिर वह कोई और व्यक्ति होगा।"

"लम्बा,चौड़ा है, लाल दाढी है। वही है ना चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड। अंग्रेज़ है।"

"जब मैं उससे मिला था तब उसके दाढ़ी नहीं थी, पर अब अगर उसने बढ़ाली हो तो शायद लाल ही हो। जिस व्यक्ति के बारे में मैं सोच रहा हूँ उसने तो चित्रकारी अभी पाँच साल पहले ही शुरू की है।"

"यह बात है। वह एक महान् कलाकार है।"

"असम्भव।"

"इस मामले में क्या मैंने कभी भी ग़लती की है?" डर्क ने मुझसे पूछा। "मैं कहता हूँ उसमें मेधा है। मैं उसका कायल हूँ। सौ साल बाद यदि हम-तुम याद किए गए तो सिर्फ इस वजह से कि हम चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड से परिचित थे।"

मैं बड़ा विस्मित हुआ और साथ ही उत्तेजित भी। मुझे सहसा उससे अपनी आख़िरी मुलाक़ात स्मरण हो आई।

"भला हम उसके चित्र कहाँ देख सकते हैं?" मैंने उससे पूछा। "क्या उसे इस काम में कुछ सफलता मिल रही है? रहता कहाँ है वह?"

"नहीं; सफलता उसे बिल्कुल नहीं मिल रही। मैं नहीं समझता उसका कोई भी चित्र कभी बिका हो। जब कभी भी आप लोगों से उसके बारे में मालूम करें वे हँस-भर देते हैं। लेकिन मैं जानता हूँ वह एक महान् कलाकार है। आखिर लोग मैने पर भी तो हँसते ही थे। कोरो बेचारा कभी एक चित्र भी न बेच सका था। मुझे यह तो मालूम नहीं है कि वह रहता कहाँ है पर हाँ मैं तुम्हें उससे मिलवाने के लिए ले ज़रूर चल सकता हूँ। वह एवेन्यू द् क्लिशी में एक काफे में हर रोज़ शाम को सात बजे जाता है। यदि तुम चाहो तो हम कल वहाँ चल सकते हैं।"

"मैं यक़ीन से नहीं कह सकता कि वह हमसे मिलना भी चाहेगा या नहीं। क्योंकि मैं समझता हूँ कहीं मैं उसे वे दिन याद न दिला बैठूँ जिन्हें वह भूल जाना चाहता है। ख़ैर, मैं चलूँगा तो सही। क्या उसके चित्र देखने का भी कोई मौक़ा हमें मिल सकता है?"

"उससे नहीं। वह तो आपको एक चित्र भी नहीं दिखायेगा। वैसे मैं यहाँ के एक छोटे-से व्यापारी को जानता हूँ जिसके पास उसके दो-तीन चित्र

हैं। लेकिन तुम वहाँ अकेले न जाना; तुम्हारे पल्ले खाक न पड़ेगा। वे तो मुझे ही तुम्हें दिखाना और समझाना पड़ेंगे।

"डर्क, देखिए मुझे इतना परेशान न कीजिए," श्रीमती स्ट्रू बोलीं। "उसने तो तुम्हारे साथ ऐसा दुर्व्यवहार किया और तुम हो कि उसकी तारीफ़ों के पुल बाँधे जाते हो।" फिर वह मुझसे सम्बोधित हुई। "आप जानते हैं जब यहाँ कुछ डच लोग डर्क के चित्र खरीदने आये तो इन्होंने उन्हें स्ट्रिकलैण्ड के चित्र खरीदने के लिए उकसाया। बल्कि यहाँ तक ज़ोर दिया कि वह खुद चित्र यहाँ लाकर उन्हें दिखादेंगे।"

"आपका क्या खयाल था उनके बारे में ?" मैंने मुस्काकर उससे पूछा।

"भयंकर थे साहब वे सब।"

"अरे प्रियतमे ! तुम नहीं समझ सकतीं उन्हें।"

"अजी हाँ, आपके डच लोग मालूम है कितने बिगड़े थे आप पर ? वे समझे आप उनसे मज़ाक कर रहे हैं।"

डर्क स्ट्रू ने अपना चश्मा उतारकर उसे साफ किया। उसका उतमतमाया हुआ चेहरा उत्तेजना से दमक रहा था।

"तुम यह क्यों समझती हो कि सौंदर्य, जो संसार की सर्वाधिक बहुमूल्य वस्तु है, यों ही किनारे पर पड़ा रहता है ताकि कोई ऐरा-गैरा मुसाफ़िर उधर से गुज़रे और अनजानपन में उसे उठाले ? सौंदर्य तो बड़ी आश्चर्यजनक और अद्भुत वस्तु है जिसे कलाकर संसार के उपद्रव में से, जो उसकी आत्मा को संतप्त करता रहता है, निकालकार सजाता और जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत करता है। और जब वह उसे बना चुकता है तो हरेक के बस की बात नहीं कि उसकी कृति को समझ सके। उस सौन्दर्य-कृति को पहचानने के लिए तुम्हें उस कलाकर की अनुभूति को दुहराना पड़ेगा। वह एक प्रकार का मधुर राग होता है जो वह आपको सुनाता है और जिसे अपने हृदय में सुनने के लिए आपके अन्दर ज्ञान, अनुभूति और कल्पना शक्ति होनी चाहिए।"

"भला मैं आपके चित्रों को सर्वदा सुन्दर क्यों समझती रही हूँ डर्क ? पहले-पहल ही जब मैंने उन्हें देखा था मैं आपकी प्रशंसक क्यों हो गई थी ?"

स्ट्रू के होंठ किंचित काँपे ।

"अच्छा प्रिये ! अब जाकर सो जाओ । मैं कुछ दूर इन्हें छोड़ने जा रहा हूँ और अभी वापस आ जाऊँगा ।

२०

डर्क स्ट्रू ने वायदा किया कि वह मुझे अगले दिन आकर उस काफ़े में ले जायगा जहाँ स्ट्रिकलैण्ड के मिलने की अधिकतम संभावना थी । मुझे यह जानकर खुशी हुई कि यह वही काफ़े था जहाँ मैंने और स्ट्रिकलैण्ड ने बैठकर चिरायता पिया था जब मैं पहले उससे मिलने पेरिस आया था । यह जानकर कि उसमें कभी कोई परिवर्तन आया ही नहीं मुझे अनुभव हुआ कि वह आलसी है और उसका आलस्य एक स्वाभाविक प्रवृत्ति का रूप धारण कर गया है ।

ज्योंही हम काफ़े में पहुँचे स्ट्रू ने कहा, "वह बैठा है वह ।"

यद्यपि अक्टूबर का महीना था, शाम को वातावरण में गर्मी थी और फुटपाथ पर बिछी मेज़ों पर भीड़ लगी हुई थी । मैंने उन मेज़ों पर नज़रें दौड़ाईं, लेकिन स्ट्रिकलैण्ड मुझे कहीं न दीख पड़ा ।

"वह देखो वहाँ कोने में । वह शतरंज खेल रहा है ।"

मैंने एक आदमी देखा जो बिसात पर झुका हुआ था लेकिन मुझे सिर्फ़ एक फेल्ट हैट और लाल दाढ़ी ही दिखाई दी । हम उस भीड़ को चीरते हुए उसके समीप पहुँचे ।

"स्ट्रिकलैण्ड ।"

उसने नजरें ऊपर उठाईं ।

"हल्लो, मोटे ! क्या चाहिए ?"

"मैं एक पुराने दोस्त से तुम्हें मिलाने लाया हूँ ।"

स्ट्रिकलैण्ड ने मेरी ओर देखा तो पर वास्तव में वह मुझे पहचाना नहीं । वह फिर अपनी बिसात में तन्मय होगया ।

"बैठ जाओ और शोर न मचाओ," वह बोला ।

उसने एक मुहरा बढ़ाया और फौरन खेल में तल्लीन हो गया । बेचारे स्ट्रू ने दुखित भंगिमा लिए मेरी ओर देखा किन्तु मैं स्ट्रिकलैण्ड के उस दुर्व्यवहार से व्यथित न हुआ था । मैंने कुछ पीने की चीज़ का बैरे को आर्डर दिया और स्ट्रिकलैण्ड की बाज़ी के ख़त्म होने की प्रतीक्षा करता रहा । इस बात का मैंने स्वागत किया कि वह संतोषपूर्वक मुझे जाँच-परख ले । मैं तो निश्चित रूप से उसे न पहचान पाता—अव्वल तो उसकी लाल दाढ़ी ने जो छितरी और बे-बनी थी, उसका आधे से ज्यादा चेहरा छिपा रखा था । दूसरे उसके बाल बहुत लम्बे थे लेकिन सबसे अधिक अचरजपूर्ण बात तो उसका दुबलापन था जिसके कारण उसकी नाक और भी अधिक ढीठता के साथ उभड़ आई थी जिसका असर उसकी कपोल-फलकों पर पड़ा और उससे उसकी आँखें बड़ी-बड़ी दिखाई देने लगीं । उसकी कनपटियों के नीचे बड़े गहरे गढ़े पड़ गए थे । उसका शरीर मृतक का-सा पीला और अकड़ा हुआ था । वह वही सूट पहने हुए था जो मैंने पाँच वर्ष पूर्व उसे पहने देखा था । वह फट गया था और उस पर जगह-जगह धब्बे पड़े हुए थे । बिल्कुल चीथड़ा हो गया था वह और उसके शरीर पर यों ढीला-ढाला लटक रहा था जैसे वह उसका नहीं किसी और का है । मैंने उसके हाथ देखे जो बहुत गंदे थे और उँगलियों के नाखून बहुत बढ़े हुए थे । ऐसा लगता था जैसे वे अस्थि और स्नायुमात्र हैं पर इसके बावजूद वे बड़े और मजबूत थे । लेकिन मैं यह भूल ही गया था कि वे इतने सुडौल हैं । जब वह वहाँ बैठा हुआ था तो उसे देखकर मुझ पर कुछ असाधारण प्रभाव पड़ा—वह अपनी बाज़ी में ध्यान मग्न था । उसका वह प्रभाव उसकी

महान् शक्ति का परिचायक था। और मैं यह समझ ही न सका कि उसके पीलेपन ने उसकी शक्ति को इतना अधिक प्रमुख क्यों बना दिया था।

कुछ ही देर में चाल चलने के बाद वह पीछे को झुका और कुछ रोचक शून्यता के साथ उसने अपने विरोधी को देखा। यह एक मोटा-सा दाढ़ी वाला फ्रांसीसी था। फ्रांसीसी ने स्थिति का मूल्यांकन किया और फिर सहसा आनन्द-विभोर हो खिलखिला पड़ा तथा बेचैनी के इशारे से उसने मुहरे एकत्र किए और उन्हें डिब्बे में डाल दिया। उसने स्ट्रिकलैण्ड को खुल कर भला-बुरा कहा और फिर बैरे को बुलाकर पेय का बिल अदा किया और चल दिया। स्ट्रू ने अपनी कुर्सी उसकी मेज़ के करीब घसीटली।

"अब तो हम शायद बातचीत कर सकते हैं ना ?" उसने कहा।

स्ट्रिकलैण्ड की नज़रें उसी पर गड़ गईं। उन आँखों में निन्दापूर्ण भाव निहित थे। मैंने अनुभव किया कि वह किसी वाचाल की तलाश में था और जब उसे कोई न दिखाई दिया तो उसने खामोशी इख्तियार करली।

"मैं तुम्हारे एक पुराने दोस्त को तुमसे मिलाने के लिए लाया हूँ।" स्ट्रू ने आह्लादित हो अपनी बात दुहराई।

स्ट्रिकलैण्ड ने लगभग एक मिनट तक मुझे गौर से देखा। मैं कुछ नहीं बोला।

"मैंने तो इन्हें ज़िन्दगी में कभी नहीं देखा," उसने कहा।

न मालूम उसने ऐसा क्यों कहा क्योंकि मुझे विश्वास है कि उसकी आँखें इस बात की साक्षी थीं कि वह मुझे पहचान गया था। अब मैं उतनी आसानी से नहीं झेंपता था जितना कि कुछ वर्ष पहले।

"कुछ दिन हुए मैं आपकी पत्नी से मिला था," मैंने कहा। "मुझे यक़ीन था कि आप उनके बारे में ताज़े समाचार सुनने के इच्छुक होंगे।"

वह तनिक हँसा। उसकी आँखें झपकीं।

"ओह, हमने उस दिन शाम को खूब सैर-तफरीह की थी ना," वह बोला। "कितना अर्सा हुआ होगा उसे ?"

"पाँच वर्ष हुए होंगे।"

उसने एक पेग चिरायते का और आर्डर दिया। स्ट्रू ने जो बड़ा लबार था उसे समझाया कि हम दोनों एक-दूसरे से किस प्रकार मिले और किस प्रकार अचानक ही हम दोनों ने यह खोज की कि हम दोनों स्ट्रिकलैण्ड को जानते हैं। भगवान जाने स्ट्रिकलैण्ड ने उसकी बात सुनी भी या नहीं। उसने दो-एक बार मेरी ओर ग़ौर से देखा लेकिन अधिकतर वह अपने ही विचारों में लीन रहा और यह भी निश्चित ही है कि यदि स्ट्रू जैसा बड़बड़िया मेरे साथ न होता तो उससे तो बातचीत करना दूभर हो जाता। कोई आधा घण्टे बाद डच ने घड़ी देख कर अपने जाने की सूचना दी। उसने मुझसे भी पूछा कि आया मैं उसके साथ चल रहा हूँ या नहीं। मैंने सोचा मैं अकेला ही स्ट्रिकलैण्ड से कुछ उगलवा सकता हूँ, चुनांचे मैंने उससे कहा मैं यहीं ठहरूँगा।

जब वह मोटा व्यक्ति चला गया तो मैंने कहा :

"डर्क स्ट्रू तुम्हें एक महान् कलाकार समझता है।"

"तो मुझे इसकी क्या परवाह ?"

"आप मुझे अपने चित्र देखने देंगे ?"

"क्यों भला ?"

"सम्भव है मैं उनमें से एकाध ख़रीद लूं।"

"लेकिन सम्भव है मैं बेचूँ ही नहीं।"

"तो क्या आप अपना निर्वाह अच्छी तरह कर रहे हैं ?" मैंने मुस्कराते हुए पूछा।

वह हँस पड़ा।

"क्या ऐसा लगता है आप को ?"

"आप तो लगता है भूखों मर रहे हैं।"

"जी हाँ भूखों ही मरता हूँ।"

"तो आइए फिर थोड़ा खा-पी लें।"

"तो मुझसे क्यों कह रहे हैं आप ?"

"कोई भीख या दान नहीं दे रहा आपको," मैंने शान्त भाव से कहा। "मुझे इसकी जरा बराबर भी चिन्ता नहीं कि आप भूखों मरते हैं या नहीं।"

उसकी आँखें एक बार फिर चमकीं ।

"आइए तो फिर चलें," उसने उठते हुए कहा । " मैं ज़रा बढ़िया खाना खाऊँगा ।"

२१

मैं उसे उसके पसंदीदा रेस्तोराँ में ले गया लेकिन रास्ते में मैंने एक अखबार खरीद लिया । जब हमने डिनर का आर्डर दे दिया तो मैंने उसे सेंट गैल्मियर की बोतल के सहारे रखा और पढ़ने लगा । हम खामोशी के साथ खाते रहे । मैंने महसूस किया कि वह यदा-कदा मेरी ओर देख रहा है लेकिन मैंने उस पर ज़रा ध्यान न दिया । मैं चाहता था वह विवश हो स्वयं ही कोई बात छेड़े ।

जब हम खामोशी से खाना खा चुके तो उसने कहा, "कोई ख़ास बात है अख़बार में क्या ?"

मैंने अनुमान लगाया कि उसके स्वर में कुछ थोड़ी-सी उत्तेजना थी ।

"मैं नाटक पर लिखी गई टीका हमेशा पढ़ता हूँ," मैंने कहा ।

मैंने अख़बार तह किया और उसे अपने पास रख लिया ।

"आज का खाना मुझे बहुत पसन्द आया," उसने कहा ।

"क्या ख़याल है हम अपनी काफी भी यहीं न पीलें ?"

"हाँ हाँ, क्यों नहीं ।"

हमने अपने सिगार जलाये । मैं ख़ामोशी से सिगार पीता रहा । मैंने ग़ौर किया कि यदा-कदा उसकी आँखें मुझ पर जमीं और वह पुलकित हो मुस्कराता रहा । मैं बड़े इत्मेनान से इन्तज़ार करता रहा ।

"पिछली बार जब हम मिले थे उसके बाद से आप क्या कुछ करते रहे हैं ?" अन्ततः उसने पूछा।

मुझे कुछ अधिक नहीं कहना था। वह अर्सा कठिन परिश्रम और बिना किसी साहसिक कार्य के बीत गया था। मैंने उन दिनों यत्र-तत्र कुछ प्रयोग अवश्य किये थे और पुस्तकों तथा मनुष्यों का ज्ञान प्राप्त किया था। मैंने इस ओर बड़ी सावधानी से काम लिया कि स्ट्रिकलैण्ड से उसकी गतिविधि के बारे में कुछ न पूछा। मैंने उसमें अपनी जरा दिलचस्पी न दिखाई और फलस्वरूप मुझे उसका इनाम भी मिल ही गया। वह अपने बारे में मुझे बताने लगा। लेकिन चूँकि वाक्‌शक्ति से वह वंचित था इसलिए वह अपनी व्यस्तता और कार्य के संकेतमात्र मुझे बता सका शेष बातें मैंने अपनी कल्पना से सोचीं। एक ऐसे व्यक्ति के चरित्र के बारे में जिसमें मुझे अपार रुचि थी केवल संकेत ही मिलना बड़ा दुखद सिद्ध हुआ। ऐसा महसूस हुआ मानो किसी विकृत पाण्डुलिपि को पढ़ रहा हूँ। उसके जीवन का मुझ पर केवल यही असर पड़ा कि व हर प्रकार की कठिनाई और दुर्गमता के विरुद्ध एक घोर संघर्ष है। लेकिन साथ ही मैंने यह अन्दाजा भी लगाया कि वह सब कुछ जो अधिकांश लोगों को भयंकर प्रतीत होता है उस पर किंचित प्रभाव भी न डाल सका था। स्ट्रिकलैण्ड अन्य अंग्रेज़ों से इस बात में भिन्न था कि सुख-चैन से उसे जरा दिलचस्पी न थी; एक ही गंदे, भद्दे कमरे में पड़े रहने से उसे कोई तकलीफ़ न होती थी; न ही उसे सुन्दर वस्तुओं से घिरे रहने की कभी ज़रूरत महसूस होती थी। मेरे ख़याल से इस बात का शायद उसे कभी ध्यान ही न आया होगा कि उसके उस कमरे की दीवारों पर लगा कागज़ कितना गंदा हो गया है जिसमें मैं उससे पहली बार मिला था। उसे बैठने के लिए किसी आराम कुर्सी की आवश्यकता न थी; वह तो असल में अपनी रसोई की कुर्सी पर बैठ कर भी उतना ही आराम महसूस करता था। वद खूब खुल कर खाता था लेकिन क्या खाता था इसका उसे कभी भान ही न था; वह तो सिर्फ इतना जानता था कि भूख मिटाने के लिए वह खाना खा रहा है; और जब उसे खाने को कुछ न मिलता तो वह बग़ैर खाये ही भी गुज़ार देता था।

मुझे मालूम हुआ कि निरंतर छः महीने तक वह रोजाना डबल रोटी के टुकड़े और एक बोतल दूध पर जिंदा रहा। वह कामी व्यक्ति था लेकिन फिर भी विषयासक्त वस्तुओं के प्रति वह सर्वथा उदासीन था। कठिनाई को वह कभी दुस्साध्य न समझता था। जिस प्रकार पूर्णतया आत्मिक जीवन वह व्यतीत कर रहा था वह काफी प्रभावशाली जीवन था।

जब वह छोटी-सी रक़म जो वह लन्दन से लेकर आया था, ख़त्म हो गई तो उसे कोई चिन्ता न हुई। उसने अपना कोई चित्र नहीं बेचा; शायद उसने बेचने की कोशिश ही नहीं की। उसने थोड़ा-बहुत पैसा कमाने की युक्ति सोची। उसने मुझे बड़ी दुखद किन्तु विनोदपूर्ण भंगिमा लिये यह बताया कि ऐसी घड़ियाँ भी उस पर गुज़री हैं जब उसने बहुत-से लन्दनवासियों के गाइड की हैसियत से काम किया था जो पेरिस की रातों की जिन्दगी की झाँकी देखने के इच्छुक थे। यह एक ऐसा पेशा था जो उसके तिरस्कृत स्वभाव को अच्छा लगता था और यही कारण था कि वह किसी-न-किसी तरह पेरिस के अधिक कुख्यात इलाक़ों में जाना-पहचाना जाने लगा। उसने मुझे बताया कि वह घण्टों बुलिवार द् ला मादेलीं के चक्कर लगाया करता था ताकि कोई अंग्रेज विशेषतया ऐसा जो पियक्कड़ हो और ऐसी चीज़ें देखने का इच्छुक हो जो क़ानूनन ना-जायज़ हैं उसे मिल जाय। जब तक तक़दीर ने साथ दिया उसे कुछ पैसे मिलते रहे लेकिन उसके गंदे कपड़ों ने आखिरकार उन दर्शकों को भी भयभीत कर दिया और उसे ऐसे लोग न मिले जो उस पर विश्वास कर सकते। फिर उसे अचानक एक नौकरी मिल गई जहाँ उसे पेटेण्ट दवाओं के विज्ञापनों का, जो इंगलैण्ड के मेडिकल पेशे वालों के लिए प्रसारित किये जाते थे, अनुवाद करना पड़ता था। एक हड़ताल के दौरान में उसे एक घरेलू पेण्टर की हैसियत से नियुक्त कर लिया गया।

लेकिन इस दरम्याय में उसने अपनी कला-साधना न छोड़ी और जब वह स्टूडियों से उकता गया तो उसने खुद ही अपनी चित्रकारी जारी रखी। वह कभी इतना ग़रीब न रहा था कि चित्र बनाने के लिए कैनवास तक न ख़रीद सके।

असल में उसे किसी और चीज की जरूरत भी न थी। जहां तक मैं समझ सका उसे चित्र बनाने में बड़ी कठिनाई पेश आती थी। चूंकि वह किसी से भी मदद लेने के लिए तैयार न था। उसे अपनी उन टेक्निकल समस्याओं के हल ढूंढने में बहुत समय नष्ट करना पड़ता था जो उसकी पिछली पुश्तों ने पहले ही एक-एक करके हल कर ली थीं। वह किसी ऐसी वस्तु को लक्ष्य बनाये हुए था न मालूम वह कौन सी थी—और शायद वह खुद भी उसे न जानता हो; और इसी कारण मुझ पर एक बार फिर यही असर पड़ा कि वह शख्स किसी शक्ति के वश में है। वह पूरी तरह स्वस्थ भी न था। मुझे लगा कि व मुझे अपने चित्र नहीं बतायेगा क्यों कि वास्तव में उसे उनमें दिलचस्पी ही न थी। वह कल्पना-जगत में रहता था और यथार्थ से उसे कोई सरोकार न था। मैंने यह अनुभव किया कि वह कैनवास पर अपने भयंकर व्यक्तित्व की संपूर्ण शक्ति के साथ काम करता था और इसे इसकी तनिक चिन्ता न थी कि उसके कल्पना-चक्षु क्या देख रहे हैं। और जब वह पूरा करता—चित्र नहीं क्योंकि मैं समझता हूँ कि शायद ही उसने कभी कोई चित्र पूरा किया हो बल्कि उसकी अपनी उत्ते-जना जो उसे गर्माती और अनुप्रेरित करती थी—तो उस को बाद में देखना उसके बस की बात न थी। जो कुछ वह करता उससे उसकी संतुष्टि न होती थी; क्योंकि जब वह अपनी उस कृति की तुलना अपने मस्तिष्क में स्थापित काल्प-निक स्तर से करता तो उसे वह व्यर्थ प्रतीत होती।

"आप अपने चित्र कभी प्रदर्शनियों में क्यों नहीं भेजते ?" मैंने पूछा। "मैं समझा था आप अपनी कृतियों के बारे में लोगों की राय जानने के इच्छुक होंगे !"

"क्या आप हैं ?"

"मैं वर्णन नहीं कर सकता कि उसने अपने इस वाक्य में कितनी अपरि-मित घृणा भर दी थी।

"क्या आप ख्याति नहीं चाहते ? यह तो ऐसी चीज़ है जिसके प्रति शायद ही कोई कलाकार उदासीन हो।"

"बच्चे हो ! जब तुम व्यक्ति की राय को दो कौड़ी का महत्व नहीं देते तो भला समुदाय की राय की इतनी परवाह क्यों करते हो ?"

"आखिर हम सब समझ-बूझ वाले इन्सान तो हैं नहीं," मैंने हँसकर कहा।

"ख्याति कौन देते हैं ? आलोचक, लेखक, दल्लाल, औरतें।"

"क्या ऐसे लोगों की राय जानकर, जिन्हें न आप जानते हैं और न ही आपने देखा है कि आप के चित्र देखकर वे क्या भाव मस्तिष्क में बनाते हैं—संयमित या यों ही भावुकतापूर्ण—आप एक सुखद सिहरन महसूस न करेंगे ? हरेक कोई शक्ति चाहता है। मैं इससे अधिक अच्छी कसरत की कल्पना नहीं कर सकता जिसके द्वारा आप मनुष्यों की आत्माओं को करुणा या भय की ओर प्रवृत्त कर सकें।"

"वाह, क्या मेलोड्रामा है !"

"आप अच्छे या बुरे चित्र बनाकर सोचते क्यों हैं ?"

"मैं तो नहीं सोचता। मैं तो जो कुछ देखता हूँ उसे ही चित्रित करना चाहता हूँ।"

"मैं सोचता हूँ क्या मैं किसी उजाड़ द्वीप के बारे में इस निश्चय के साथ कुछ लिख सकता हूँ कि जो कुछ मैंने लिख दिया है वह केवल मेरी आँखें ही देख सकती थीं ?"

स्ट्रिकलैण्ड बहुत देर तक कुछ न बोला लेकिन उसकी आँखें इस विचित्रता के साथ चमकीं मानो उसने कोई ऐसी चीज़ देखी हो जिसने उसकी आत्मा को हर्षोन्माद से प्रज्वलित कर दिया हो।

"कभी-कभी मैंने ऐसे द्वीप के बारे में सोचा है जो एक असीम सागर में विलीन हो गया हो जहाँ मैं किसी गुप्त घाटी में, विचित्र वृक्षों के बीच शांति से रह सकूँ। वहाँ शायद मुझे वह चीज़ मिल जाए जो मैं चाहता हूँ।"

उसने ठीक इसी तरह अपने भाव व्यक्त नहीं किए। वह विशेषणों के स्थान पर संकेत मात्र इस्तेमाल करता और रुक जाता। मैंने अपने शब्दों में वही व्यक्त करने की चेष्टा की है जो वह कहना चाहता था।

"विगत पाँच वर्षों को देखते हुए क्या जो कुछ आपने किया है वह न्यायोचित

है ?" मैंने पूछा।

उसने मेरी ओर देखा और मैं ताड़ गया कि मेरी बात वह नहीं समझा। इसलिए मैंने उसे समझाया।

"आपने अपना इतना सुखदायक घर और औसत दर्जे की ज़िंदगी न जाने क्यों त्याग दी। वहाँ आप खूब फल-फूल रहे थे। पेरिस में तो आपका समय व्यर्थ ही नष्ट हुआ है। यदि आपको वही समय दुबारा मिल जाए तो क्या आप फिर भी वही काम करेंगे ?"

"जी हाँ, ख़याल तो यही है।"

"जानते हैं आपने अब तक अपनी पत्नी और बच्चों के बारे में कुछ भी मालूम नहीं किया है। क्या आपको कभी उनका ख़याल नहीं आता ?"

"जी नहीं।"

"काश आप ऐसे घृणित एकाक्षरी न होते। आपकी वजह से उन्हें जो दुख पहुँचा है क्या उसके लिए आपको कोई पश्चात्ताप नहीं ?"

उसके होंठों से मुस्कान फूट पड़ी और उसने अपना सिर हिलाया।

"मैं समझता हूँ कभी-कभी आपको अपने अतीत का ज़रूर ख़याल आता होगा। अतीत से मेरा मतलब पिछले सात-आठ वर्ष नहीं बल्कि उससे भी पिछले वर्ष जब आप पहले पहल अपनी पत्नी से मिले थे, उससे प्रेम किया था और उससे शादी की थी। क्या आपको वह आनन्द याद नहीं जब आपने सबसे पहले उसे अपने बाहुपाश में लिया था ?"

"जी नहीं, मैं अतीत की बात नहीं सोचा करता। सबसे महत्त्व की बात तो अक्षय वर्तमान ही है।"

इस उत्तर पर मैंने क्षण भर ग़ौर किया। वैसे तो वह सर्वथा व्यर्थ ही-सा था लेकिन मुझे अनुभव हुआ कि उसका मतलब मेरी समझ में कुछ-कुछ आ गया है।

"क्या आप सुखी हैं ?" मैंने पूछा।

"जी हाँ।"

मैं खामोश रहा। मैंने बग़ौर उसे देखा। उसने भी मुझे घूरा और फौरन

ही उसकी आँखों में एक घृणित चमक पैदा हुई।

"शायद आप मुझे पसंद नहीं करते ?"

"बकवास !" मैंने भी तुरन्त उत्तर दिया। "मैं सर्प की सिकुड़ने वाली पेशी को नापसंद नहीं करता बल्कि इसके विपरीत मैं तो उसकी मानसिक प्रक्रियाओं में दिलचस्पी रखता हूँ।"

"तो आपको मुझमें केवल पेशेवर दिलचस्पी ही है ?"

"जी हाँ।"

"यह अच्छा ही है कि तुम मुझे नापसंद नहीं करते। तुम्हारा चरित्र बड़ा घृणित है।"

"शायद यही कारण है कि आप मुझसे इतने बेतकल्लुफ हो जाते हैं," मैंने प्रत्युत्तर दिया।

वह रुक्षता से मुस्कराया लेकिन उसने कहा कुछ नहीं। काश मैं उसकी मुस्कान का वर्णन कर सकता ! मैं नहीं जानता कि वह आकर्षक थी या नहीं, लेकिन इतना जरूर कह सकता हूँ उस मुस्कान ने उसका चेहरा जगमगा दिया, उसकी साधारणतया मनहूस रहने वाली भंगिमा बदल गई और उसमें बुरे स्वभाव वाले द्वेष के भाव उभर आए। यह उसकी धीमी मुस्कान थी जो आँखों से शुरू होती थी और कभी-कभी आँखों ही में समाप्त हो जाती थी; वह बड़ी कामी थी, न क्रूर ही और न दयापूर्ण, बल्कि उससे वनदेवता का अमानुषिक आह्लाद प्रकट होता था। उसकी उस मुस्कान के ही कारण मुझे उससे पूछना पड़ा :

"क्या पेरिस आने के बाद आप किसी के प्रेम में तो नहीं फँसे ?"

"उस प्रकार की बकवास के लिए मेरे पास समय नहीं है। प्रेम और कला दोनों एक साथ चलाने के लिए हमारा जीवन काफी नहीं है।"

"आप चेहरे से कोई साधु-सन्त तो दिखाई देते नहीं हैं।"

"इस प्रकार की बातों से मुझे बड़ी उलझन होती है।"

"वैसे तो मानव स्वभाव ही बकवास है, है ना ?" मैंने कहा।

"भला तुम मेरा उपहास क्यों कर रहे हो ?"

"क्योंकि आप पर मुझे विश्वास नहीं है।"

"तो फिर निपट मूर्ख हैं।"

मैं कुछ रुका और मैंने ढूंढती निगाहों से उसकी ओर देखा।

"भला मुझे चकमा देने की आप कोशिश क्यों कर रहे हैं?" मैंने कहा।

"न मालूम आप क्या कह रहे हैं?"

मैं मुस्करा दिया।

"मैं आपको बता दूँ। मैं कल्पना करता हूँ कि महीनों वह बात आपके दिमाग में आती ही नहीं और इसीलिए आप अपने आपको यह विश्वास दिलाने लगते हैं कि आपने उस चीज़ से अपना पिण्ड छुड़ा लिया है। आप अपनी स्वतन्त्रता पर प्रसन्न होते हैं और समझते हैं कि आखिरकार आपकी आत्मा अब आपकी अपनी हो गई है। आप अपने मस्तिष्क की सहायता से तारों के साथ घूमते हैं। और फिर सहसा आपको मालूम होता है कि आप इस स्थिति को *अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकते और साथ ही यह भी कि आपके पैर अब तक* कीचड़ में चलते रहे हैं। फिर आप उसमें लोटना चाहते हैं। फिर सहसा आपकी नज़र किसी स्त्री पर पड़ती है जो भद्दी है, नीच जाति की है और चरित्रभ्रष्ट है, एक ऐसी पाशविक प्राणी है जिसमें वासना की सम्पूर्ण भयंकरता स्पष्टतया दिखाई देती है और फिर आप एक जंगली जानवर की तरह उस पर टूट पड़ते हैं और इतना आनन्द लेते हैं कि उसमें मस्त हो सब कुछ भूल जाते हैं।"

उसने बिना किंचित गति के मेरी ओर घूर कर देखा। मैंने भी उससे आँखें मिलाईं। फिर मैंने धीरे-धीरे कहा।

"मैं कहता हूँ कि यह क्यों अजब लगता है कि जब वह समाप्त हो जाता है तो आप अपने तईं असाधारण रूप से शुद्ध अनुभव करने लगते हैं। आप ऐसा महसूस करते हैं जैसे आपकी आत्मा शरीरविहीन और निरर्थक हो गई है और फिर आप अपने को इस योग्य अनुभव करने लगते हैं कि आप यदि सौंदर्य को छुएँ तो वह आपको एक ठोस और स्पर्शनीय वस्तु लगेगी। शीतल

वायु से आप अपना घनिष्ठ सम्बन्ध महसूस करेंगे, वृक्षों के टूटते हुए पत्तों और नदी की रंगारंगी के साथ साम्य अनुभव करेंगे। आप अपने को ईश्वर-तुल्य समझने लगेंगे। भला आप यह सब मुझे समझा सकते हैं ?"

'वह मेरी ओर टिकटिकी लगाए तब तक देखता रहा जब तक मैंने अपनी बात पूरी न कर ली और फिर उसने मुँह घुमा लिया। उसके चेहरे पर अजीब भाव थे और मैंने महसूस किया कि जब कोई आदमी यंत्रणा के बाद मरता है तो शायद उसके चेहरे पर ऐसे ही भाव उभरते हैं। वह खामोश रहा और मैं समझ गया कि हमारी बातचीत समाप्त हो गई है।

२२

मैं पेरिस में स्थायी रूप से रहने लगा और मैंने एक नाटक लिखना आरम्भ किया। मैं बहुत ही नियमित जीवन व्यतीत कर रहा था—सुबह और तीसरे पहर को लक्ज़ेम्बर्ग के बागीचे में घूमता या गलियों में मटर गश्ती करता था। मैं लॉर में जो मेरे लिए निकटतम मित्र और एकाग्रचित्तता के लिए सबसे अच्छा और सुभीते वाला चित्र-निकेत था, घण्टों चिंतन में बिताता था या घाटों पर पड़ा ऐंठता रहता था या कभी कबाड़ी की दूकान पर जाकर पुरानी किताबें छाँटता रहता था, हालाँकि खरीदता मैं एक भी किताब नहीं था। मैं उनके इधर-उधर से कुछ पन्ने देखता और ऐसे बहुत-से लेखकों से मेरा परिचय हो गया जिन्हें मैं यों ही यदा-कदा जानने से ही संतुष्ट हो जाता था। शाम को मैं अपने मित्रों से मिलने जाया करता था। मैं बहुधा स्ट्रू के यहाँ जाता था और

कभी-कभी उनका वाजबी किराया भी मैं बर्दाश्त करता था। इटैलियन खाने तथा पकवान पकाने की अपनी हुनरमंदी की डर्क स्ट्रू बड़ी डींग मारा करता था और मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि उसकी पकाई हुई स्पाघेटी वास्तव में उसके चित्रों से कहीं बेहतर है। ऐसा लगा जैसे वह डिनर राजा के लिए होगा क्योंकि वह एक बहुत बड़ी रकाबी जो टमाटरों के रस से भरपूर थी लेकर आया। हमने भी वह खाना घरेलू उम्दा डबल रोटी तथा लाल शराब के साथ खाया। ब्लांच स्ट्रू से मेरी घनिष्ठता और बढ़ गई और मेरा ख्याल है चूँकि मैं अंग्रेज था और वह अंग्रेजों को जानती न थी इस कारण भी वह मुझसे मिल कर खुश हुई थी। वह बड़ी सुखद और सादगीप्रिय थी लेकिन वह रहती सदैव खामोश थी और उसका न जाने मुझ पर क्यों यह असर हुआ कि वह हमसे कुछ छिपा रही है। लेकिन फिर मैंने गौर किया और समझा कि उसकी वह खामोशी और अल्पभाषण हो-न-हो उसके पति की वाचालता और स्पष्टवादिता के मुकाबिले में उसने धारण किया हो। डर्क कभी कोई चीज़ नहीं छिपाता था। आत्म-चेतन के पूर्ण अभाव के बावजूद वह बड़े-बड़े खानगी के मामलों पर बहस कर लिया करता था। कभी-कभी वह अपनी पत्नी को घबड़ा देता था और मैंने तो एक बार ही उसे झेंपते और मुँह बनाते हुए देखा है जब वह मुझ से यह कहने पर जोर दे रहा था कि उसने जुल्लाब लिया है और साथ ही उसके वास्तविक विवरण पर पहुँच गया। जिस परिपूर्ण गंभीरता से उसने अपने दुर्भाग्य की गाथा सुनाई उससे मैं अपनी हँसी न रोक सका और उससे श्रीमती स्ट्रू और भी क्रोधित हुईं।

"आप तो मालूम होता है बेवकूफ़ बनाना पसन्द करते हैं।" वह बोली।

स्ट्रू की गोल आँखें और भी गोल-मटोल हो गईं और उसकी भवें ऊपर को उठीं और यह देखकर कि उसकी पत्नी नाराज है, उसे अफसोस हुआ।

"प्रेमिके, क्या मैंने तुम्हें कोई कष्ट पहुँचाया है ? अब मैं कभी जुल्लाब नहीं लूँगा। वह तो मैंने इसलिए ले लिया था क्योंकि मुझे पित्त की शिकायत थी।

मैं एक ही स्थान पर बैठा घण्टों रहता हूँ, मुझे काफी व्यायाम करने का अवसर भी नहीं मिलता। गत तीन दिन से तो मुझे........।"

"भगवान् के लिए अपनी जबान रोकिए," पत्नी ने उसे काटा, उसकी आँखों में नाराजी के आँसू रवाँ थे।

घोर लज्जा से उसका सिर झुक गया और उसने अपने होंठ इस प्रकार फुलाए जैसे कि एक बच्चा जिसे डाँटा गया हो। उसने मेरी ओर ऐसी नजरों से देखा जैसे मुझ से आग्रह कर रहा हो कि मैं मामला सुलझा दूँ, लेकिन मैं अपने पर क़ाबू न पा सका और हँसकर लोट-पोट हो गया।

एक दिन हम उस चित्र विक्रेता के यहाँ गए जहाँ स्ट्रू मुझे स्ट्रिकलैण्ड के दो-तीन चित्र दिखाने वाला था लेकिन जब हम वहाँ पहुँचे तो हमें पता चला कि स्ट्रिकलैण्ड खुद उन्हें वापस ले गया है। क्यों, यह विक्रेता भी न जानता था।

"लेकिन कहीं आप इससे यह न समझ लीजिए कि मैं आपको या उन्हें नाराज़ करना चाहता हूँ। मैंने तो वे चित्र मोश्यो स्ट्रू के कहने पर रख लिए थे और सोचा था कि अगर वे बिक सकें तो मैं उन्हें बेच दूँगा, लेकिन दर असल—" उसने अपने कंधे सिकोड़े। "मैं तरुण चित्रकारों में दिलचस्पी रखता हूँ लेकिन आप खुद ही बताइए मोश्यो स्ट्रू क्या उनमें कोई गुण है भी ?"

"मैं आप से सच कहता हूँ कि आज उससे बढ़कर महान् चित्रकार मेरी दृष्टि में दूसरा कोई नहीं है। मुझ पर विश्वास कीजिए आप एक अच्छे, गुणी कलाकार को नहीं पहचान पा रहे हैं। एक दिन वह आएगा जब वे चित्र आपकी दूकान के सारे चित्रों से अधिक मूल्यवान सिद्ध होंगे। मोने याद है आपको ? कोई १०० फ्रांक के लिए भी उसका चित्र खरीदने को तैयार न होता था। और अब क्या कीमत है उनकी भला ?"

"सही है। लेकिन मोने के साथ ही सैंकड़ों अन्य चित्रकार भी थे जो अपने चित्र न बेच सके थे और आज तक उनके चित्रों को कोई नहीं पूछता। इसके बारे में भला कोई क्या कह सकता है ? क्या किसी चित्रकार की प्रतिभा या योग्यता ही उसकी सफलता की गारण्टी है ? मैं तो इस पर यक़ीन करता

नहीं। यक़ीन जानिए अभी यह बात साबित होना बाक़ी है कि आपके मित्र में योग्यता है। उसकी योग्ता मोश्यो स्ट्रू के अलावा और कोई तो मानता नहीं है।"

"तो फिर आपके पास किसी की योग्यता मापने का क्या दण्ड है?" डर्क ने पूछा, क्रोध से उसका मुँह लाल हो गया था।

"एक ही मापदण्ड है इसका—सफलता।"

"जाहिल कहीं के," डर्क चिल्लाया।

"लेकिन ज़रा अतीत के महान् चित्रकारों को देखिए—राफिल, माइकल एंजिलो, इंग्रेस, देलाक्राइ—वे सब अपनी कला में सफल रहे हैं।"

"आओ चलें," स्ट्रू ने मुझ से कहा, "वर्ना मैं इस आदमी को मार डालूँगा।"

२३

मैं अक्सर स्ट्रिकलैण्ड से मिलता रहा और कभी-कभी मैंने उसके साथ शतरंज भी खेली। वह अनिश्चित स्वभाव का व्यक्ति था। कभी-कभी वह खामोश और विचार शून्य बैठा रहता और किसी के आने पर तनिक ध्यान न देता और दूसरी ओर जब वह कुछ अच्छे मूड में होता तो उसी तरह रुक-रुक कर अपने लहजे में लोगों ने बातें करता। वह कोई चालाकी की बात नहीं करता था लेकिन उसमें निर्भय-व्यंग्य की एक प्रवृत्ति थी जो काफी प्रभावशाली थी और वह सदा ठीक वही बात कहता था जो वह अपने दिल में सोचता था। दूसरों के कोमल स्वभाव के प्रति वह सदा उदासीन रहता था और जब वह

उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाता था तो उसे खुशी होती थी। वह निरन्तर डर्क स्ट्रू पर हमले करता रहता था यहाँ तक कि स्ट्रू एक बार उससे फिर कभी न बोलने का प्रण करके चला गया था ; लेकिन स्ट्रिकलैण्ड में एक ऐसी ठोस शक्ति थी जिसने उस डच को उसकी इच्छा के विरुद्ध भी आकृष्ट किया और वह एक भद्दे कुत्ते की नाईं सिर झुकाए फिर वहाँ पहुँचा हालाँकि वह जानता था कि स्ट्रिकलैण्ड उसका स्वागत एक घूसे से ही करेगा जिसका उसे भय था।

मैं नहीं जानता स्ट्रिकलैण्ड ने मेरे साथ कैसे निबाह कर लिया। उसके और मेरे सम्बन्ध कुछ विचित्र-से थे। एक दिन उसने मुझ से ५० फ्रांक कर्ज़ माँगा।

"नहीं बाबा, मैं तो सपने भी न दूँ," मैंने उत्तर दिया।

"क्यों भला ?"

"क्योंकि मुझे उसमें आनन्द नहीं आएगा।"

"मैं बड़ी मुश्किल में हूँ, पैसा कोड़ी मेरे पास एक नहीं है समझे।"

"मेरी बला से।"

"यानी मैं भूखों मर रहा हूँ और तुम्हें मेरी ज़रा चिंता नहीं ?"

"मुझे क्यों होने लगी चिंता ?" मैंने उससे पूछा।

वह दो-तीन मिनट तक अपनी अस्त-व्यस्त दाढ़ी सहलाते हुए मेरी ओर देखता रहा। मैं भी उसकी ओर देख कर मुस्करा दिया।

"आखिर तुम्हें आनन्द किस बात में आता है ?" उसने कहा। उसकी आँखों में मुझे क्रोध की झलक दिखाई दी।

"ओहो, आप भी कितने सीधे हैं। आप किसी का एहसान नहीं मानते। न ही आपने किसी पर कोई एहसान किया है।"

"अगर मैं जा कर अपने गले में फाँसी लगा लूँ क्योंकि किराया अदा न कर सकने पर मुझे अपने कमरे से निकाल दिया गया है तो क्या तुम्हें अफसोस न होगा ?"

"रत्ती भर भी नहीं।"

वह हँस दिया।

"तुम तो बकवास करते हो। अगर वास्तव में मैं ऐसा ही कर बैठूँ तो सुनते ही तुम पर पहाड़ टूट पड़े।"

"तो फिर कर देखिए ऐसा। देखते हैं क्या होता है," मैंने उत्तर में कहा।

उसकी आँखों में मुस्कान झिलमिला उठी और उसने खामोशी से अपना चिरायता उठाया।

"आइए एकाध बाज़ी हो जाय," मैंने कहा।

"चलो, मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

हमने बिसात बिछाई और जब मुहरे जमा दिए गए तो उसने बिसात को बड़े इत्मेनान के साथ जाँचा। युद्ध के लिए तत्पर अपने समस्त सैनिकों को युद्ध शुरू होने से पहले ग़ौर से देखने में एक प्रकार की संतुष्टि का अनुभव होता है।

"क्या वास्तव में आप समझते थे मैं आपको पैसे कर्ज़ दे दूँगा?" मैंने पूछा।

"जाहिर है, भला न देने का कारण ही क्या था।"

"आप तो मुझे अचरज में डाल देते हैं।"

"क्यों?"

"यह जानकर बड़ी निराशा होती है कि आप दिल से इतने भावुक हैं। यदि आप उस निष्कपट ढंग से मेरी सहानुभूति न खींचते तो मुझे अधिक भाते।"

"अगर तुम मेरी निष्कपटता से द्रवित हो जाते तो मैं तुमसे नफ़रत करने लगता," उसने उत्तर दिया।

"यह भी आपने ठीक ही कहा," मैंने हँसकर कहा।

फिर हमने खेलना शुरू कर दिया। हम दोनों बाज़ी में तन्मय थे। जब बाज़ी खत्म हुई तो मैंने उससे कहा :

"देखिए, अगर आप वास्तव में कठिनाई में हैं तो मुझे अपने कुछ चित्र दिखाइए, अगर उनमें कुछ हुआ तो मैं एकाध ख़रीद लूँगा।"

"जहन्नुम में जाओ," उसने जवाब दिया।

वह उठा और जाने ही वाला था कि मैंने उसे रोका।

अपने चिरायते का बिल तो अदा करते जाओ," मैंने मुस्कराते हुए कहा।

उसने मुझे उलाहना दिया, पैसे फेंके और चल दिया।

उस दिन के बाद कई दिन तक मेरी उससे मुलाक़ात न हुई। एक दिन शाम को जब मैं काफे में बैठा हुआ अख़बार देख रहा था कि वह आकर मेरी बाज़ू में बैठ गया।

"तो आपने अपने गले में फाँसी नहीं लगाई अभी तक ?" मैंने व्यंग्य किया।

"नहीं। मुझे एक काम मिल गया है। एक रिटायर्ड नल आदि ठीक करने वाले का मैं २०० फ्रांक पर चित्र बना रहा हूँ ?"[1]

"मिल कैसे गया वह काम आपको ?"

"जिस स्त्री के यहाँ मैं खाना खाता हूँ उसने मेरी सिफारिश की थी। उस शख़्स ने उस स्त्री से कह रखा था कि वह किसी चित्रकार से अपना चित्र बनवाना चाहता है। मुझे उस स्त्री को बीस फ्रांक देना पड़ेंगे।"

"वह कैसी शक्ल-सूरत का है ?"

"बहुत ही भव्य मुखाकृति है उसकी। उसका यह बड़ा लाल चेहरा है जैसे बकरी के गोश्त की टाँग। और उसके दाहिने गाल पर एक बहुत बड़ा मसा है जिस पर बड़े-बड़े बाल उग रहे हैं।"

स्ट्रिकलैण्ड उस समय बहुत प्रफुल्ल था और जब स्ट्रू आकर हमारे पास बैठ गया तो उसने उसका बुरी तरह उपहास किया। वह यह जानने में निपुण

---

१. यह चित्र किसी जमाने में लिली के एक धनाढ्य व्यापारी के पास था जो जर्मनों के आक्रमण के शीघ्र बाद ही वहाँ से भाग गया था; अब यह स्टॉक होम की नेशनल गैलरी में टँगा हुआ है।

था कि उस दुखी डच की दुखती रगें कौन-कौनसी हैं और वास्तव में मुझे उसकी इस योग्यता पर बड़ा आश्चर्य हुआ। स्ट्रिकलैण्ड ने अपना प्रहार व्यंग्य की किसी छोटी-सी तलवार से नहीं बल्कि गालियों की लाठी से किया। और वह प्रहार ऐसा उत्तेजनाविहीन था कि स्ट्रू जिस पर सहसा हमला हुआ था अपना बचाव तक न कर सका। उसे देखकर वह भयभीत भेड़ याद आती थी जो ऊँट-पटाँग इधर-उधर भागती है। वह न केवल घबरा गया था बल्कि उसे महान् आश्चर्य हो रहा था उस अप्रत्याशित प्रहार पर! आख़िरकार उसकी आँखों में आँसू आ गए। और इस घटना का निकृष्टतम पहलू यह था कि यद्यपि आपको स्ट्रिकलैण्ड से नफरत हो और उस बात का प्रदर्शन भयंकर हो फिर भी आपका न हँसना असम्भव था। डर्क स्ट्रू उन अभागे व्यक्तियों में से एक था जिनकी सर्वाधिक सच्ची भावनाएँ भी हास्यास्पद होती हैं।

लेकिन जब कभी भी मैं उन जाड़ों का स्मरण करता हूँ जो मैंने पेरिस में विताए थे, तो उनमें मेरी सुखदतम स्मृति डर्क स्ट्रू की होती है। उसके उस छोटे-से घर में बहुत कुछ आकर्षण था। वह और उसकी पत्नी मालूम होता था दोनों एक चित्र हैं जिनका कल्पना ने अपना पुट देकर सृजन किया था। और उसे जो अपनी पत्नी के प्रतिप्रेम था उसमें एक निश्चित विनम्रता थी उसकी बेहूदगी बरक़रार रही लेकिन उसकी उत्कण्ठा की सत्यता लोगों की सहानुभूति आकृष्ट करती थी। मैं समझ सकता था कि उसकी पत्नी उसके बारे में क्या अनुभव करती होगी और उसका कोमल स्नेह देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई थी। यदि उसमें कोई विनोदप्रियता होती तो उसे यह देखकर प्रसन्नता होनी चाहिए थी कि वह उसे एक चौकी पर रखकर ऐसी ईमानदारीपूर्ण मूर्त्ति पूजा के साथ उसकी पूजा करता था। लेकिन जब वह हँसती थी तो लगता था कि वह द्रवित हुई है और आनन्दित भी। वह उससे निरन्तर प्रेम करता था और यद्यपि वह अब बूढ़ी हो चली थी और उसकी गोल रेखाएँ तथा सौंदर्य समाप्त हो चला था तब भी स्ट्रू के लिए उसमें कोई परिवर्तन न आया था। उसके लिए तो वह सर्वदा संसार की सुन्दरतम स्त्री बनी रहेगी। उन दोनों के जीवन की व्यवस्था में एक प्रकार की सुखद विनयशीलता विद्यमान

थी। उनके पास स्टूडियो, शयन-कक्ष और छोटी-सी रसोई के अतिरिक्त कुछ न था। घर का सारा काम श्रीमती स्ट्रू स्वयं ही करती थी; और जब डर्क बुरे चित्र बनाया करता था तो वह बाजार से सौदा-सलफ लेने जाती, भोजन तैयार करती, सीना-पिरोना करती और दिन-भर एक व्यस्त चींटी की तरह कोई-न-कोई काम करती ही रहती और शाम को स्टूडियो में बैठकर सीती रहती जबकि डर्क गाने-बजाने में मशगूल रहता और डर्क का संगीत, मुझे विश्वास है उसकी खाक समझ में न आता होगा। संगीत के बारे में उसकी अपनी पसंद थी लेकिन वह संगीत में कभी-कभी आवश्यकता से अधिक भावुकता भर देता था जो न्यायोचित न थी किन्तु तिस पर भी वह संगीत में अपनी समस्त प्रामाणिक भावुकतापूर्ण और भरपूर आत्मा समो देता था।

उनका जीवन अपने में ही एक प्रकार की सुन्दर कविता थी और उसकी सुन्दरता भी अनुपम थी। डर्क स्ट्रू से सम्बन्धित प्रत्येक वस्तु के साथ जो बेहूदगी नत्थी थी उसने उनकी ज़िन्दगी को उत्सुकता का पुट प्रदान किया था। जैसे कि कोई अनिर्णीत कलह; लेकिन साथ ही उसने उसे अधिक आधुनिक, अधिक मानवीय बना दिया था। जिस प्रकार कोई भोंडा-सा चुटकुला किसी गम्भीर स्थान पर सुना दिया जाय उसी प्रकार उस बेहूदगी ने उस जिन्दगी के तीखेपन को, जो समस्त सुन्दरता में होता है उन्नत कर दिया था।

२४

बड़े दिन के कुछ दिन पहले डर्क स्ट्रू मेरे पास आया और वह छुट्टी अपने साथ बिताने का उसने मुझे निमंत्रण दिया। उस त्यौहार के प्रति उसकी कुछ विशिष्ट भावना थी और वह चाहता था वह दिन दोस्तों के साथ कुछ समुचित रीतियों के साथ बिताया जाय। स्ट्रिकलैण्ड से हम दोनों में से कोई भी तीन हफ्तों से नहीं मिला था—क्योंकि मैं तो अपने कुछ ऐसे दोस्तों के साथ व्यस्त था जो पेरिस में कुछ दिन ठहरने के लिए आए हुए थे और स्ट्रू से चूँकि उसका हमेशा के विपरीत भयंकर झगड़ा हो गया था और उसने निश्चय कर लिया था कि वह अब उससे कोई सम्बन्ध न रखेगा। स्ट्रिकलैण्ड को सुधारना असम्भव था और स्ट्रू ने क़सम खाई थी कि वह उससे कभी न बोलेगा। लेकिन उस मौसम ने स्ट्रू को पिघला दिया और उसे इस विचार से सख्त घृणा हुई कि स्ट्रिकलैण्ड बड़ा दिन अकेला गुज़ारे जबकि हम इधर मौज करें। उसने झगड़े का दायित्व अपनी भावुकता पर रखा और वह इस बात को बर्दाश्त न कर सका कि ऐसे त्यौहार के दिन जबकि लोग हँसी-खुशी रहते और नेकी करते हैं वह एकाकी चित्रकार अपनी ही उदासी और विषाद में अकेला छोड़ दिया जाय। स्ट्रू ने अपने स्टूडियो में एक बड़े दिन का पेड़ लगाया था और मुझे संदेह था कि मैं और स्ट्रिकलैण्ड उस वृक्ष की शाखाओं में बेहूदा छोटे-छोटे उपहार लटके हुए देखेंगे; लेकिन स्ट्रिकलैण्ड से मिलने में उसे कुछ झेंप-सी महसूस हो रही थी; स्ट्रिकलैण्ड ने जिस भयानक रूप से उसका अपमान किया था उसे इतनी आसानी से क्षमा कर देने में उसकी अपनी हेटी होती थी इसलिए वह चाहता था कि पुनर्मिलन के समय मैं भी उसके साथ रहूँ।

हम अवेन्यू द् क्लिशी गये लेकिन स्ट्रिकलैण्ड काफे में मौजूद न था। बाहर बहुत कड़ी सर्दी थी इसलिए अन्दर जाकर चमड़े की बेंचों पर बैठ गए। अन्दर गर्मी और घुटन थी और हवा धुएँ से सफेद हो गई थी। स्ट्रिकलैण्ड तो नहीं आया लेकिन हमें वह फ्रांसीसी चित्रकार दीख पड़ा जो उसके साथ यदा-कदा शतरंज खेला करता था। मेरी उससे कुछ थोड़ी-बहुत जान-पहचान हो गई थी और वह आकर हमारी मेज पर बैठ गया। स्ट्रू ने उससे मालूम किया कि आया उसकी स्ट्रिकलैण्ड से मुलाक़ात हुई या नहीं ?

"वह बीमार हैं" वह बोला। "आपको मालूम नहीं था क्या ?"

"क्या सख्त बीमार हैं ?"

"मैंने तो सुना है बहुत सख्त बीमार हैं।"

स्ट्रू का चेहरा फ़क़ हो गया।

"उन्होंने मुझे क्यों नहीं लिख दिया ? मैं भी कैसा मूर्ख हूँ उनसे झगड़ा कर बैठा ! आओ, इसी दम उनसे मिलने चलते हैं। उनकी तो वहाँ देखभाल करने वाला भी कोई न होगा। वह रहते कहाँ हैं ?"

"मुझे नहीं मालूम," फ्रांसीसी सज्जन ने कहा।

हमने देख लिया कि हममें से कोई भी उसका मकान नहीं जानता है। अब तो स्ट्रू और भी परेशान होगया।

"वह मर भी जाएगा तो किसी को खबर न होगी। कैसी खौफ़नाक खबर है यह। मेरे लिए तो उसकी बीमारी की कल्पना मात्र ही असह्य है। आओ, जल्दी से उसे ढूंढें किसी तरह।"

मैंने स्ट्रू को समझाने की कोशिश की कि पेरिस में योंही बिना पते के भटकना मूर्खता है। बल्कि हमें चाहिए कोई नक्शा तैयार करलें कि किस तरह जायें।

"ठीक है, लेकिन क्या पता वह मर ही रहा हो और हम ऐसे वक्त पर पहुँचे कि कुछ करना भी संभव न रह सके।"

"चुपचाप बैठ जाओ और कोई तरकीब सोचो," मैंने तंग आकर कहा।

जो पता मैं जानता था वह था होटल द् बेल्जेस का लेकिन वह तो स्ट्रिक-

लैण्ड कभी का छोड़ चुका था, अब तो वे उसे याद भी न कर पायेंगे। उसके उस विचित्र सिद्धान्त से कि अपना पता गुप्त रखो यह संभव न था कि वह होटल छोड़ते समय किसी को बता गया हो कि कहाँ जा रहा है? दूसरे इस घटना को हो भी पाँच वर्ष गये थे। मुझे कुछ यक़ीनसा था कि वह अपनी पहली होटल से कुछ अधिक दूर न गया होगा। वह जब होटल में रहता था तब भी काफे में आता था और जब कहीं और रहने लगा तब भी आता रहा। इसलिए यह तो स्पष्ट ही था कि उसके लिए वह काफे नजदीक और सुविधा-जनक रहा होगा। सहसा मुझे याद आया कि उसे किसी के चित्र बनाने का काम मिला था जो उसको नानबाई की मार्फत मिला था और मुझे फौरन खयाल आया कि वहाँ कोई उसका पता बता सकता है। मैंने डायरेक्टरी मँगाई और नानबाइयों के नंबर देखने लगा। एक ही जगह पाँच नानबाई थे चुनाँचे सब से अच्छी बात थी खुद सब के यहाँ जाकर मालूम करना। स्ट्रू अनेच्छा से मेरे साथ गया। उसका अपना इरादा था कि अवेन्यूद क्लिशी की सड़क पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक प्रत्येक घर में जाकर पूछा जाय कि वहाँ स्ट्रिक-लैण्ड तो नहीं रहता। मेरी साधारण-सी तरकीब आखिरकार कारगर साबित हुई क्योंकि दूसरी ही दूकान पर बैठी एक औरत ने कहा कि वह स्ट्रिकलैण्ड को जानती थी। उसे ठीक से मालूम तो न था कि वह कहाँ रहता है पर हाँ सामने के तीन मकानों में से किसी में रहता था। हमारा सौभाग्य कि पहले ही मकान में नौकर ने हमसे कहा कि वह सब से ऊपरी मंज़िल पर रहते हैं।

"हम ने सुना है कि वह बीमार हैं," स्ट्रू ने कहा।

"हो सकता है हों," नौकर ने लापरवाही से उत्तर दिया।" मैंने तो उन्हें कई दिनों से नहीं देखा।"

स्ट्रू मेरे आगे-आगे सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ऊपर पहुँचा और जब मैं अटारी पर पहुँचा तो वह एक मजदूर से जो अपनी बण्डी पहने हुए था और जिसके दरवाज़े पर जाकर स्ट्रू ने दस्तक दी थी, बातें कर रहा था। उसने किसी और दरवाज़े की ओर संकेत किया। वह भली प्रकार जानता था कि वहाँ एक

चित्रकार रहता है। उसने भी उसे कोई एक हफ़्ते से नहीं देखा था। स्ट्रू ने जाहिर किया जैसे अभी दस्तक देने ही वाला है और फिर वह लाचारी का भंगिमा लिये मेरी ओर देखने लगा। मैं ताड़ गया कि वह आतंकित हो गया है।

"कहीं मर गया हो तो ?"

"अजी नहीं, वह उन में से नहीं है," मैंने कहा।

मैंने दरवाजा खटखटाया। कोई जवाब नहीं आया। मैंने कुण्डी घुमाई तो किवाड़ खुल गये। मैं अन्दर दाखिल हुआ और स्ट्रू मेरे पीछे-पीछे आया। कमरे में अँधेरा था। मुझे सिर्फ इतना महसूस हुआ कि वह अटारी है जिसकी छत ढलवाँ है और छत में किसी सूराख में से कुछ रोशनी आ रही थी।

"स्ट्रिकलैण्ड," मैंने पुकारा।

जवाब नदारद। कमरे का वातावरण वास्तव में रहस्यमय था और मुझे लगा जैसे मेरे पीछे खड़ा स्ट्रू काँप रहा है। क्षण भर तो मैं माचिस जलाने में झिझका। कुछ धुँधलाहट में मैंने देखा कि कोने में एक बिस्तर पड़ा हुआ है और मुझे भय हुआ कि कहीं बत्ती जलते ही यह मालूम न हो कि कोई मुर्दा पड़ा हुआ है।

"क्या माचिस नहीं है तुम्हारे पास मूर्ख ?"

यह स्ट्रिकलैण्ड की आवाज़ थी जो उस अँधेरे में सुनाई दी और मैं एकदम घबरा गया।

स्ट्रू की तो चीख निकल गई।

"हे भगवान, मैं तो समझा था तुम मर गये हो।"

मैंने माचिस जलाई और बत्ती तलाश करने लगा। उस सलाई की लौ के प्रकाश में मुझे एक छोटा-सा कमरा दिखाई दिया जो आधा कमरा था और आधा स्टूडियो जिसमें सिवाय एक बिस्तर, दीवार से लगी कैनवासों, स्टैण्ड, मेज और कुर्सी के कुछ न था। फर्श पर दरी तक नहीं बिछी थी। न ही कोई अँगीठी वहाँ रखी थी। मेज़ पर जो रंगों, पैलेट, छुरियों और सभी प्रकार के टुकड़ों आदि से भरी पड़ी थी मोमबत्ती का एक टुकड़ा पड़ा हुआ था। मैंने उसे जलाया। स्ट्रिकलैण्ड बिस्तर पर बेचैन पड़ा हुआ था क्योंकि वह उसके लिए

बहुत छोटा था और उसने गर्मी के लिए अपने सारे कपड़े अपने ऊपर लाद रखे थे। एक नज़र में ही यह स्पष्ट हो गया कि उसे सख्त बुखार है। स्ट्रू भावाभिभूत हो गया था, उसकी ज़बान लड़खड़ा रही थी और वह स्ट्रिकलैण्ड के पास गया।

"अरे मेरे प्यारे दोस्त, क्या हो गया तुम्हें ? मुझे तो तुम्हारी बीमारी का पता भी न चला। तुमने मुझे ख़बर क्यों न कर दी ? तुम्हें मालूम होना चाहिए मैं तुम्हारे लिए दुनिया की कोई चीज उठा न रखता। क्या तुम मेरी बातों का ख़याल करने लगे थे ? वे तो मैंने यों ही कह दी थीं। असल में मैं ही ग़लती पर था। मेरी मूर्खता कि मैं तुम्हारी बातों का बुरा मान गया।"

"जाओ, जहन्नुम में," स्ट्रिकलैण्ड बोला।

"अब ज़रा होश में आओ। चलो मैं तुम्हारे इलाज का कुछ प्रबन्ध कर दूँ। यहाँ तो तुम्हारी देख-भाल करने वाला कोई होगा नहीं ?"

उसने उस गंदी अटारी को दुखपूर्ण दृष्टि से देखा। फिर बिस्तर आदि जमाने की कोशिश की। स्ट्रिकलैण्ड बड़ी कठिनाई से साँस ले रहा था और उसके नेत्रों में वही क्रोध झलक रहा था। उसने मेरी ओर ग्लानिपूर्ण नज़रों से देखा। मैं भी चुपचाप उसे देखता रहा।

"अगर तुम मेरे लिए कुछ करना ही चाहते हो तो मुझे दूध लाकर दो," उसने आखिरकार कहा। "दो दिन से मैं बाहर भी नहीं जा सका हूँ।"

बिस्तर के बाज़ू में एक ख़ाली बोतल रखी थी जिसमें दूध आया होगा और अखबार के टुकड़े पर कुछ डबल रोटी के टुकड़े पड़े हुए थे।

"आप क्या खाते रहे हैं ?" मैंने पूछा।

"कुछ नहीं।"

"कब से ?" स्ट्रू ने घबराकर पूछा। "तुम्हारा मतलब है दो रोज़ से तुमने कुछ भी खाया-पिया नहीं ? यह तो बहुत बुरी बात है।"

"नहीं, मैं पानी पीता रहा हूँ।"

उसकी नज़रें क्षण-भर तक एक बड़े डिब्बे पर टिकी रहीं जो उससे हाथ-भर दूरी पर रखा हुआ था।

"मैं अभी जाता हूँ," स्ट्रू बोला। "क्या कोई चीज़ खाना पसंद करोगे ?"

मैंने सुझाया कि वह जाकर एक थर्मामीटर, कुछ अंगूर और थोड़ी डबल रोटी ले आए। स्ट्रू जिसे मित्र की सेवा करते हुए आनंद अनुभव हो रहा था फौरन सीढ़ियाँ उतरता हुआ बाहर चला गया।

"बेवकूफ कहीं का," स्ट्रिकलैण्ड बड़बड़ाया।

मैंने उसकी नब्ज़ देखी वह जल्दी-जल्दी और क्षीणता से चल रही थी। मैंने उससे दो-एक प्रश्न पूछे पर उसने उनका उत्तर न दिया और जब मैंने ज़ोर दिया तो उसने चिढ़कर अपना चेहरा दीवार की ओर फेर लिया। अब मेरे लिए सिवाय इसके कि शांतिपूर्वक स्ट्रू की प्रतीक्षा करूँ और कोई चाराकार न था। दस मिनट बाद स्ट्रू हाँपता-काँपता वापस आया। जो कुछ मैंने मँगाया था उसके अतिरिक्त वह मोमबत्तियाँ, गोश्त का शोरबा और एक स्प्रिट लैम्प भी ले आया। वह बहुत ही व्यावहारिक प्राणी था और आकर वह बिना देर किए दूध और रोटी तैयार करने लगा। मैंने स्ट्रिकलैण्ड का बुखार देखा। टैम्परेचर १०४ डिग्री था। ज़ाहिर था कि वह बहुत सख्त बीमार है।

२५

शीघ्र बाद ही हम वहाँ से चले आए। डर्क खाना खाने घर जाने लगा और मैंने किसी डाक्टर को ढूँढकर स्ट्रिकलैण्ड को उसे दिखलाने का निश्चय किया; लेकिन जब हम उस दम-घोंट अटारी से उतरकर नीचे खुली हवा में आए तो उस डच ने मुझसे अपने स्टूडियो चलने की प्रार्थना की। न जाने उसके दिमाग़ में क्या बात थी जो वह मुझे नहीं बता रहा था लेकिन उसने

पुनः आग्रह किया कि मेरा उसके साथ जाना अत्यावश्यक है। और मैंने भी सोचा कि कोई डाक्टर आकर एकदम छूमंत्र तो कर नहीं देगा। जो कुछ संभव था हम खुद ही कर आए हैं, लिहाजा मैं राजी हो गया। जब हम उसके घर पहुँचे तो ब्लांचे स्ट्रू शाम का खाना मेज पर सजा रही थी। डर्क उसके पास गया और उसने उसके दोनों हाथ थाम लिए।

"प्रिये, तुम मेरा एक काम कर दोगी ?" उसने कहा।

उसने गंभीर आह्लाद के साथ देखा जो उसके आकर्षणों में एक था। उसका लाल चेहरा पसीने से चमक रहा था और वह हास्यास्पद खिचाव लिए हुए था; किन्तु साथ ही उसकी गोल-मटोल, विस्मित आँखों में उत्सुकता की झलक भी थी।

"स्ट्रिकलैण्ड सख्त बीमार है। अजब नहीं वह चल बसे। वहाँ एक गंदी-सी अटारी में वह अकेला पड़ा है और कोई उसका वहाँ पुरसाने हाल नहीं। मैं चाहता हूँ तुम मुझे उसे यहाँ ले आने की अनुमति दे दो।"

उसने फुर्ती से अपने हाथ खींच लिए—मैंने उसे पहले कभी इतनी फुर्तीली नहीं देखा था—और उसके गाल सुर्ख हो गए।

"अरे नहीं, नहीं।"

"अरे प्रियतमे, इन्कार न करो। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि वह वहीं पड़ा रहे। मुझे तो उसके मारे नींद भी नहीं आएगी।"

"आप उसकी सुश्रुषा करिए, मुझे उसमें कोई आपत्ति नहीं है।"

उसकी आवाज में रुक्षता तथा उदासीनता थी।

"लेकिन वह वहाँ मर जाएगा।"

"मरने दीजिए।"

स्ट्रू हाँप गया, उसने अपना चेहरा पोंछा। वह मेरी ओर सहायतार्थ मुड़ा लेकिन मैं न जानता था क्या कहूँ।

"वह एक महान् कलाकार है।"

"तो मैं क्या करूँ, होंगे ? मुझे उनसे नफरत है।"

"अरे मेरी प्यारी, मेरी चहीती, ऐसा न कहो। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ

कि तुम मुझे उसे यहाँ लाने दो। यहाँ वह आराम से रहेगा। शायद यहाँ रहकर वह बच जाए। तुम्हें उससे कोई कष्ट नहीं पहुँचेगा। सब कुछ मैं खुद कर लूँगा। हम स्टूडियो में उसका बिस्तर बिछा देंगे। हम उसे कुत्ते की मौत नहीं मरने दे सकते। ऐसा करना अमानुषिक होगा।"

"वह किसी अस्पताल में क्यों नहीं चले जाते?"

"अस्पताल! अरे भई उसे तो प्रेमपूर्ण हाथों की सुश्रुषा चाहिए। बड़ी युक्ति के साथ उससे व्यवहार किया जाय तब कहीं वह ठीक हो सकता है।"

मुझे यह देखकर अजरज हुआ कि वह यह सब कुछ सुनकर बहुत द्रवित हुई। वह मेज़ पर खाना सजाती रही लेकिन उसके हाथ लरज़ते रहे।

"आपने तो मेरा नाक में दम कर दिया। अगर आप बीमार होते तो क्या आप समझते हैं वह आपकी सुश्रुषा करते?"

"लेकिन उससे क्या फ़र्क पड़ता है? मेरी देखभाल करने के लिए तो तुम मौजूद हो। मेरे लिए यह ज़रूरी न होगा। और इसके अलावा मेरी बात ही और है। मेरा महत्त्व ही क्या है?"

"आप किसी दोगले कुत्ते से कुछ कम नहीं हैं। आप तो ज़मीन पर लेटकर लोगों से ख़ुद कहते हैं कि कुचलो मुझे।"

स्ट्रू हँस दिया। उसने यह प्रकट किया कि वह उसकी पत्नी के रवैये का कारण समझता है।

"अरे मेरी प्यारी, शायद तुम उस दिन का ख़याल कर रही हो जब वह यहाँ मेरे चित्र देखने के लिए आया था। क्या हुआ यदि उसे उनमें कोई चित्र भी पसंद न आया? दरअसल मेरी ही मूर्खता थी जो मैंने वे उसे दिखाए। और शायद वे अच्छे हैं भी नहीं।"

उसने उदास हो अपने स्टूडियो पर नज़र डाली। स्टैण्ड पर एक अपूर्ण चित्र रखा हुआ था जिसमें एक मुस्कराता हुआ इटैलियन किसान एक गहरी आँखों वाली लड़की के सिर पर अंगूरों का गुच्छा लिए हुए खड़ा था।

"अगर उन्हें चित्र पसन्द भी न आए थे तो कम-से-कम उन्हें सभ्यता का व्यवहार तो करना चाहिए था। आपका अपमान करने की उन्हें क्या ज़रूरत

थी ? उन्होंने तो यह प्रकट किया कि वह आपसे नफ़रत करते हैं और आप हैं कि उनके तलुए चाटने को तुले हुए हैं। मुझे तो उस शख्स से सख्त नफ़रत है।"

"अरे मेरे चाँद, उसमें मेधा है। तुम यह न समझो कि वह मेधा मेरे अन्दर भी है। काश मैं भी मेधावी होता। लेकिन जब मैं किसी में वह खूबी देखता हूँ तो पहचान लेता हूँ और अपने पूरे दिल से मैं उसका सम्मान करता हूँ। मेधा संसार की सबसे अधिक मूल्यवान और आश्चर्यजनक वस्तु है। और जिनमें यह होती है उनके लिए वह एक महान् बोझ बन जाती है। हमें उनके प्रति सहिष्णु तथा संतोषी अनुभव करना चाहिए।"

मैं एक ओर खड़ा रहा; मैं उस घरेलू कलह को देखकर असमंजस में पड़ गया और सोचने लगा कि आखिर स्ट्रू ने मुझे साथ लेने पर क्यों जिद की थी ? मैंने देखा कि उसकी बीबी रुआँसी होगई थी।

"लेकिन मैं सिर्फ इसलिए ही उसे यहाँ लाने देने की इजाज़त नहीं माँग रहा क्योंकि वह मेधावी है बल्कि इसलिए कि वह एक इंसान है, बीमार है और ग़रीब है।"

"मैं उन्हें कभी अपने घर में न आने दूँगी, कभी नहीं !"

स्ट्रू मेरी ओर मुड़ा।

"इसको समझाओ कि यह जिन्दगी और मौत का सवाल है। उसे उस गंदे बिल में छोड़ देना असंभव है।"

"जाहिर है उसका यहाँ लाकर अधिक आसानी से इलाज किया जा सकता है," मैंने कहा।

"लेकिन यह भी निश्चित ही है कि उससे आप दोनों को काफी उलझन हो जायगी। मैं समझता हूँ कि एक-न-एक आदमी को चौबीस घण्टे उसके पास रहना पड़ेगा।"

"मेरी बीर बहूटी, तुम तो थोड़ी-बहुत तकलीफ़ बर्दाश्त करने से नहीं कतरातीं।"

"अगर वह यहाँ आए तो मैं चली जाऊँगी," श्रीमती स्ट्रू ने प्रचण्ड

स्वर में कहा ।

"मैं तो तुम्हें पहचान नहीं पा रहा । तुम तो इतनी अच्छी और दयालु हो ।"

"ओहो, भगवान के लिए मुझे छोड़ दीजिए । आपने तो मुझे परेशान कर दिया ।"

और फिर आख़िरकार उसके आँसू आगये । वह एक कुर्सी पर गिर पड़ी और उसने अपना चेहरा हाथों से ढँक लिया । उसके कंधे आंतरिक वेदना से हिलने लगे । पल-भर ही में डर्क उसके बाजू में जाकर झुक गया, उसने अपनी बाँहें उसकी गर्दन में डाल दीं और उसे चूमता रहा, उसे बड़े प्यारे-प्यारे नामों से पुकारता रहा और वे सहज आँसू उसी के गालों पर ढुलक आये । फौरन ब्लांचे ने अपने को उससे अलग किया और आँसू पोंछे ।

"मुझे अपने हाल पर छोड़ दीजिए," उसने विनम्र स्वर में कहा; और फिर मुस्कराने की चेष्टा करते हुए मुझसे मुख़ातिब हुई : "आप भी मेरे बारे में न जाने क्या समझ रहे होंगे ?"

स्ट्रू भौंचक्का हो उसकी ओर देख रहा था पर बोलने में वह कुछ झिझका उसका माथा सिकुड़ा हुआ था और उसका लाल मुँह फूल गया था । उसे देखकर मुझे भाड़े के टट्टू का स्मरण हो आया ।

"तो तुम्हारी राय नहीं है, प्रिये ?" अंततः उसने कहा ।

उसने थकावट का-सा भाव प्रकट किया । वह असल में बहुत थक चुकी थी ।

"यह स्टूडियो आपका है । यहाँ की हरेक चीज़ आपकी अपनी है । अगर आप उन्हें यहाँ लाना ही चाहते हैं तो मैं कौन हूँ आपको रोकने वाली ?"

स्ट्रू के गोल-मटोल चेहरे पर सहसा मुस्कान दौड़ गई ।

"तो क्या तुम राज़ी हो ? मैं जानता था तुम मेरी मानोगी । अरे मेरी सोने की डल्ली !"

सहसा वह उठ खड़ी हुई । उसने कमज़ोर निगाहों से उसकी ओर देखा । फिर उसने अपने हाथ दिल पर रख लिए मानो उसकी धड़कन उसके लिए असह्य हो गई हो ।

"ओह डर्क, जबसे हम मिले हैं मैंने आपसे कभी कोई चीज़ नहीं करवाई है।"

"तुम तो जानती हो इस दुनिया में ऐसी कोई चीज नहीं है जो मैं तुम्हारे लिए न कर सकूँ।"

"मैं आपके हाथ जोड़ती हूँ आप स्ट्रिकलैण्ड को यहाँ न आने दीजिए। और चाहे किसी को भी ले आइए—चोर, शराबी, उचक्का, भगोड़ा कोई भी आप ले आइए और मैं वादा करती हूँ कि मैं उनके लिए सब कुछ खुशी-खुशी करूँगी। लेकिन मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि स्ट्रिकलैण्ड को यहाँ न लाइए।"

लेकिन क्यों ?"

"मुझे उससे डर लगता हैं। न मालूम क्यों पर उनमें कुछ ऐसी बात ज़रूर है जो मुझे भयभीत करती है। वह हमें बहुत भारी नुक़सान पहुँचायेंगे। मैं खूब जानती हूँ। मैं इसे अनुभव करती हूँ। यदि आप उन्हें यहाँ ले आए तो उसका परिणाम सिवाय बुराई के कुछ नहीं हो सकता।"

"लेकिन कैसी बेतुकी बातें करती हो तुम !"

"नहीं, नहीं। मैं जानती हूँ मैं सही कह रही हूँ। कोई अनहोनी हमारे साथ हो जायेगी।"

"इसलिए कि हम भलाई कर रहे हैं ?"

वह अब हाँप रही थी और उसके चेहरे पर ऐसा आतंक छाया हुआ था जो वर्णनातीत है। मुझे नहीं मालूम वह क्या सोच रही थी। मेरा अनुमान है कि किसी निराकार आतंक ने उसे आ दबोचा था और उसका आत्म-नियंत्रण उससे छीन लिया था। साधारणतया तो वह बहुत शांत और गंभीर रहती थी लेकिन इस समय उसकी घबड़ाहट विस्मित किये दे रही थी। स्ट्रू ने कुछ देर तक विस्मय और भयमिश्रित दृष्टि से उसे देखा।

"तुम मेरी पत्नी हो; तुम मेरे लिए संसार की किसी भी वस्तु से अधिक प्रिय हो। जब तक तुम्हारी पूरी मर्ज़ी न होगी यहाँ कोई नहीं आयेगा।"

श्रीमती स्ट्रू ने क्षण भर के लिए अपनी आँखें बंद कीं और मैं समझा कि वह अचेत हुई। मुझे उसे देखकर बेचैनी हो रही थी। मुझे यह सन्देह न था कि वह ऐसी पागल स्त्री है। फिर मुझे स्ट्रू की आवाज़ सुनाई पड़ी। मौन भंग बड़े भद्दे अंदाज़ में हुआ।

"एक बार जब तुम्हें एक सहायक दिया गया था तो तुम्हें सख्त कोफ्त नहीं हुई थी क्या? जानती हो उसका क्या असर पड़ा? और अब जबकि तुम्हें मौक़ा मिल रहा है तो क्या तुम किसी के साथ भलाई नहीं कर सकतीं?"

स्ट्रू के शब्द अत्यन्त साधारण थे और मुझे तो उनमें कुछ ऐसा प्रोत्साहन दिखाई दिया कि मैं बरबस मुस्करा दिया। लेकिन उन शब्दों का जो असर ब्लांच स्ट्रू पर पड़ा उसे देखकर मुझे महान् आश्चर्य हुआ। वह कुछ घबराई और फिर देर तक अपने पति को तकती रही। स्ट्रू की नजरें फर्श पर गड़ी हुई थीं। मैं न जान सका वह क्यों असमंजस में पड़ा है। ब्लाँच के गालों पर एक धुँधला-सा रंग आया और फिर उसका चेहरा बिल्कुल सफेद हो गया—बल्कि सफेद से भी बढ़कर भयंकर, आपको ऐसा महसूस होता जैसे रक्त उसके समस्त शरीर से निचोड़ लिया गया है। यहाँ तक कि उसके भी हाथ पीले हो गए। वह एड़ी से चोटी तक काँप गई। स्टूडियो की निस्तब्धता उसके शरीर को एकत्र करती हुई प्रतीत हुई ताकि वह मात्र स्पर्शनीय उपस्थिति रह जाए। मैं उलझन में पड़ गया।

"डर्क, स्ट्रिकलैण्ड को ले आइये यहाँ। मैं उनकी भरसक सेवा करूँगी।"

"अरे मेरी गुड़िया," वह मुस्करा दिया।

वह उसे अपनी बाँहों में लेना चाहता था किन्तु उसने उससे बचना चाहा।

"अजनबियों के सामने तो अपना प्यार न जताया कीजिए, डर्क," वह

कहने लगी। "मुझे इतना मूर्खतापूर्ण लगता है यह सब।"

वह फिर अपनी साधारण बातचीत पर आ गई थी और अब कोई यह न कह सकता था कि कुछ ही देर पहले वह ऐसी महान् भावना से अभिभूत होकर हाय-तोबा मचा रही होगी।

२६

अगले दिन हमने स्ट्रिकलैण्ड को स्ट्रू के स्टूडियो पहुँचा दिया। उसे वहाँ लाने के लिए बड़ी दृढ़ता और उससे भी अधिक संतोष की आवश्यकता पड़ी। असल में तो वह स्ट्रू के आग्रहों और मेरे निश्चय का प्रतिकार करने योग्य भी न था। हमने उसे कपड़े पहनाए और वह हमें दबे स्वर में कोसता रहा; फिर हम उसे नीचे लाये, टैक्सी में बैठाया और अन्त में स्ट्रू के स्टूडियो ले आये। जब हम उसे लेकर पहुँचे तो वह इतना थक चुका था कि हमारे उसे बिस्तर पर लिटा देने तक वह एक शब्द भी न बोला। वह छः सप्ताह से बीमार था। कभी-कभी तो लगता जैसे वह घड़ी-दो-घड़ी का ही मेहमान है और मुझे दृढ़ विश्वास है कि यह उस डच आदमी की धुन और मेहनत ही थी जिसने उसे मौत के मुँह में से निकाल लिया। मैंने उससे अधिक पेचीदा और बिगड़ा हुआ रोगी कभी न देखा था। केवल यही नहीं कि वह अनुचित माँग करता था या झगड़ालू था बल्कि इसके विपरीत उसने तो कभी शिकायत ही न की; न उसने कोई वस्तु ही माँगी, वह तो पूर्णतया मौन था। लेकिन उसकी जो सेवा-सुश्रुषा हो रही थी उससे शायद उसे घृणा थी। उसके विचारों और उसकी आवश्यकता

के बारे में पूछे गये प्रश्नों पर वह हँसी-ठट्ठे, तिरस्कार या शपथ के भाव प्रकट करता। मैंने नतीजा निकाल लिया कि वह घृणित है और ज्योंही वह खतरे से बचा कि मैंने उसके मुँह पर कह दिया।

"जाओ जहन्नुम में," उसने संक्षेप में उत्तर दिया।

डर्क स्ट्रू ने अपना सारा काम-धन्धा छोड़कर बड़ी कोमलता और सहानुभूति से स्ट्रिकलैण्ड की सेवा की। उसे आराम देने के लिए उसने नई-नई युक्तियाँ सोचीं और उसे डाक्टर द्वारा दी गई दवाएँ पिलाने में ऐसी चालाकी का सबूत दिया जिसकी मुझे उससे आशा न थी। वह किसी प्रकार के कष्ट से न घबराता था। यद्यपि उसकी आमदनी उसके और उसकी पत्नी के खर्च के लिए काफी थी और वह फिजूलखर्ची नहीं कर सकता था फिर भी स्ट्रिकलैण्ड को संतुष्ट करने और उसकी भूख बढ़ाने के लिए उसने सम्भव-असम्भव हर चीज़ मुहैया की। जिस युक्तिपूर्ण ढंग से उसने स्ट्रिकलैण्ड को खिलाया-पिलाया वह मैं कभी न भूल सकूँगा। स्ट्रिकलैण्ड की उजड्डता का उस पर कभी बुरा असर न पड़ा; यदि कभी उसने चिड़चिड़ापन दिखाया तो उसने उसे सुना-अनसुना कर दिया और यदि उसकी कोई बात असह्य भी लगी तो उसने हँसकर टाल दी। जब स्ट्रिकलैण्ड चंगा हो गया और हँसी-खुशी उसका मज़ाक करने लगा तो स्ट्रू ने जानकर ऐसी हास्यास्पद बातें कीं जिनसे स्ट्रिकलैण्ड उसका और अधिक मजाक़ बना सके। फिर वह मेरी ओर सुखी भाव-भंगिमा लिए देखता ताकि मैं अनुमान लगा सकूँ कि रोगी कितना अच्छा हो गया है। स्ट्रू वास्तव में महान् था।

लेकिन ब्लाँच ने मुझे सर्वाधिक विस्मित किया। उसने अपने आपको न केवल एक सुयोग्य बल्कि कर्त्तव्य-परायण नर्स सिद्ध कर दिया। अब उसके व्यवहार में कहीं ऐसी चीज का चिन्ह तक न था जो आपको यह स्मरण दिलाता कि उसी स्त्री ने किसी दिन उसके पति के स्ट्रिकलैण्ड को स्टूडियो में लाने की इच्छा के विरुद्ध घोर संघर्ष किया था। मरीज़ के लिए किये जाने वाले कार्यों में वह अपना हिस्सा पूरा करने पर सदा जिद करती रहती थी। वह उसका बिस्तर इस प्रकार बिछाया करती थी कि उसकी चादर रोगी को कष्ट दिये

बिना ही आसानी से बदली जा सके। वही उसके हाथ-मुँह धुलवाती थी। जब मैंने उसकी कार्यसाधकता की प्रशंसा की तो उसने अपनी उसी सुखद मुस्कान के साथ मुझे बताया कि वह कुछ दिनों अस्पताल में काम कर चुकी है। अब तो उसकी किसी बात से भी यह जाहिर न होता था कि वह स्ट्रिकलैण्ड से ऐसी घोर घृणा करती है। वह उससे अधिक बोला तो नहीं करती थी लेकिन उसकी आवश्यकता-पूर्ति के लिए सदैव तत्पर रहती थी। लगभग एक पक्ष के लिए तो यह आवश्यक हो गया कि कोई रात भर उसके पास बैठा रहा और उसने, और उसके पति ने बारी-बारी से यह काम भी अंजाम दिया। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि उन लम्बी रातों में जब वह स्ट्रिकलैण्ड के बिस्तर के पास बैठी रहती थी तो क्या सोचती होगी। स्ट्रिकलैण्ड वहाँ लेटा हुआ अजीब पतला-दुबला लग रहा था। उसकी लाल अस्त व्यस्त-दाढ़ी और उसका शून्य में तकना भी बड़ा भयानक मालूम होता था। बीमारी ने उसकी आँखों को बड़ा कर दिया है ऐसा प्रतीत होता था और उनमें एक अप्राकृतिक चमक दिखाई दे रही थी।

"क्या वह कभी रात को आपसे बातचीत करते हैं ?" मैंने एक बार ब्लाँच से पूछा।

"जी कभी नहीं।"

"क्या अब भी आप उन्हें उतना ही नापसन्द करती हैं जितना पहले करती थीं ?"

"पहले से कहीं अधिक।"

उसने अपने शांत, श्वेत नेत्रों से मेरी ओर देखा। उसके चेहरे का भाव इतना गंभीर था कि यह विश्वास करना कठिन था कि वह उस प्रकार का प्रचण्ड भाव व्यक्त करने योग्य है भी कि नहीं जो मैं स्वयं देख चुका था।

"आप उनके लिए जो कुछ कर रही हैं, उसके लिए कभी उन्होंने आपको धन्यवाद भी दिया ?"

"जी नहीं," उसने मुस्कराकर कहा।

"तब तो वह इन्सान नहीं हैं।"

"जी हाँ बहुत ही घृणित हैं वह।"

स्ट्रू तो ज़ाहिर है उससे बहुत प्रसन्न था। उसने जो बोझ लाकर उस पर लाद दिया था उसे जिस दिलचस्पी और मेहनत से उसने सम्हाला और पूरा किया था उस सबके लिए वह अपना आभार प्रकट न कर सकता था। लेकिन ब्लांच और स्ट्रिकलैण्ड के परस्पर व्यवहार से वह कुछ उलझन में पड़ गया था।

"जानते हो मैंने उन दोनों को घण्टों पास-पास मौन बैठे देखा है।"

एक बार जब स्ट्रिकलैण्ड अच्छा हो गया और एक दो दिन में बिस्तर छोड़ने ही वाला था कि मैं उन सबके साथ स्टूडियो में बैठा था। मैं और डर्क बातें कर रहे थे। श्रीमती स्ट्रू बैठी क़मीस में रफ़ू कर रही थी और मैं पहचान गया कि वह क़मीस स्ट्रिकलैण्ड की थी। वह सीधा लेटा हुआ था—बिल्कुल खामोश। एक बार मैंने देखा कि उसकी आँखें ब्लांच स्ट्रू पर टिकी हुई हैं और उनमें एक विचित्र विडम्बना झलक रही थी। उसकी टिकटिकी अनुभव करते हुए उसने भी अपनी आँखें उठाईं और क्षण भर वे एक-दूसरे को तकते रहे। मैं उसके चेहरे का भाव बिल्कुल न समझ सका। उसकी आँखों में एक विचित्र गूढ़ता थी और शायद—लेकिन क्यों ?—भय भी। क्षण भर में स्ट्रिकलैण्ड ने अपनी नज़रें हटाईं और छत को देखने लगा, लेकिन वह उसे अब भी घूरती रही और अब उसकी नज़रें बहुत ही गूढ़ और अबोध्य हो गई थीं।

कुछ ही दिनों में स्ट्रिकलैण्ड उठने लगा। अब उसमें चर्म और हड्डियों के अतिरिक्त कुछ न बचा था। उसके कपड़े उसके शरीर पर ऐसे लटक रहे थे जैसे हौवे पर चिथड़े। उसकी अस्त-व्यस्त दाढ़ी और लम्बे बाल, उसके नाक-नक्श जो सदैव औसत से अधिक बड़े थे और बीमारी के कारण जिनमें अधिक प्रमुखता आगई थी, वह कुछ असाधारण-सा लगने लगा था लेकिन इतने अटपटे नक्श होने पर भी वह कुरूप नहीं था। उसके फूहड़पन और भद्दे पन में भी कुछ स्मरणीयता थी। मैं नहीं जानता उसके मुझ पर पड़े प्रभाव को मैं ठीक किस प्रकार व्यक्त करूँ। वह केवल आध्यात्मिकता ही न थी जो स्पष्ट दृष्टिगोचर

होती थी —यद्यपि मांस की ऊपरी परत पारदर्शी थी क्योंकि उसके चेहरे पर भयंकर कामुकता विद्यमान थी। लेकिन हाँलाकि बात बिल्कुल बेहूदा-सी है पर ऐसा लगता था जसे उसकी विषयासक्ति बहुत ही आध्यात्मिक हो। उसके अंदर कुछ चीजें ठेठ आदिम थीं। ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसके अंदर प्रकृति की उन अनजानी शक्तियों का हिस्सा आ गया है जिन्हें यूनानियों ने अर्ध-मानव तथा अर्ध-पशु यानी वन देवता तथा फॉन के रूप में जान डाल कर खड़ा किया था। मुझे मर्स्यास का स्मरण हो आया जिसकी भगवान ने इसलिए खाल खिंचवाई थी क्योंकि उसने गीत में उसे परास्त करने का साहस किया था। स्ट्रिकलैण्ड के हृदय में विचित्र एकरूपताएँ और अनुभवविहीन वस्तुएँ घर कर रही थीं और मैंने अनुमान लगा लिया था कि उसका अंत कठोर यातना और भारी दुख में होकर रहेगा। मुझे फिर यह अनुभव हुआ कि उस पर कोई अदृष्ट शक्ति हावी हो गई है लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि वह शक्ति कोई पाप की शक्ति थी क्योंकि वह तो एक आदिम शक्ति थी जिसका अस्तित्व तबसे था जब पाप और पुण्य का जन्म भी नहीं हुआ था।

अभी वह चित्र बनाने के योग्य न हुआ था और वह स्टूडियो में बैठा शांत हो या न मालूम कौन से सपनों में लीन रहता या पढ़ता रहता था। उसकी पसंद की किताबें भी अजीब हुआ करती थीं। कभी तो मैं देखता कि वह मालार्मे की कविताओं पर झुका हुआ है और वह पढ़ता भी ऐसे था जैसे कोई बच्चा पढ़ता है—अपने होंठों द्वारा शब्द बना-बना कर। और मुझे आश्चर्य होता था कि खुदा जाने उन स्वरों और अप्रसिद्ध मुहावरों से उसे न जाने कैसी विचित्र अनुभूति मिलती होगी। और कभी क्या देखता हूँ कि वह गैबोरियाव के जासूसी उपन्यासों में गुँथा हुआ है, मैं यही समझकर खुश हो गया कि अपनी किताबों की पसंद में भी वह अपने मूर्खतापूर्ण स्वभाव की अभिन्न प्रवृत्तियाँ ही दर्शाता है। यह बात भी अपनी जगह पर महत्त्व रखती है कि वैसे दुर्बल शरीर को भी वह आराम देना आवश्यक नहीं समझता था। स्ट्रू को उसकी लापरवाही भाती थी और उसके स्टूडियो में दो-तीन गद्देदार आराम कुर्सियाँ और एक बड़ा

दीवान पड़ा हुआ था । स्ट्रिकलैण्ड कभी उनके पास तक न जाता था कोई आत्म संयम के आडम्बर के कारण नहीं क्योंकि एक बार जब मैं गया तो वह स्टूडियो में अकेला तिपाई पर बैठा हुआ था—बल्कि इसलिए कि वे उसे पसंद न थीं । और एक बेहत्थे वाली रसोई की कुर्सी उसे काफी पसंद थी जिस पर वह बैठा करता था । बहुधा उसे देख-देखकर मुझे बड़ा क्रोध आया है । मैंने पहले कभी ऐसा व्यक्ति न देखा था जो अपने वातावरण के प्रति इतना लापरवाह हो ।

२७

दो-तीन सप्ताह बीत गये । एक दिन सुबह जब मुझे अपने काम से अवकाश मिला तो मैंने यह सोचकर कि आज की छुट्टी ही मनाओ लूव्र चला गया । मैं अपने जाने-पहचाने चित्रों को देखता फिरा और मैंने अपनी कल्पना को खुला छोड़कर देखना चाहा कि आखिर उन चित्रों को देखकर वह क्या कहती है । मैं धीरे-धीरे उस लम्बी गैलरी में घूम रहा था कि सहसा मुझे स्ट्रू दिखाई दिया । मैं मुस्करा दिया क्योंकि उसका चेहरा जो इतना गोल-मटोल और साथ ही घबराया-सा था कि उसे देखकर सहज ही मुस्करा पड़ना कोई नई बात न थी । और जब मैं उसके क़रीब आया तो मैंने महसूस किया कि वह कुछ असाधारण रूप से दुखी है । वह संतप्त दिखाई दे रहा था लेकिन साथ ही उपहासास्पद भी; उस व्यक्ति की तरह जो अपने सारे कपड़ों समेत पानी में गिर पड़ा हो और जो मृत्यु से बचाया जा रहा हो लेकिन फिर भी भयभीत हो यह सोचे कि वह बेवकूफ ही लग रहा है । पीछे घूमकर उसने मुझे देखा लेकिन मैं समझ

गया कि उसने मुझे पहचाना नहीं है। उसकी गोल, नीली आँखें जिन पर ऐनक लगी हुई थी कुछ परेशान-सी दीख पड़ीं।

"स्ट्रू," मैंने कहा।

वह कुछ घबराया पर फिर मुस्करा दिया। लेकिन उसकी मुस्कान दुख-भरी थी।

"तुम यह बेहूदा-से हुलिये में यहाँ क्यों घूम रहे हो?" मैंने विनोद करते हुए कहा।

"बड़े दिनों के बाद यहाँ आया हूँ। सोचा चलकर देखूँ शायद इनके यहाँ अब कुछ नई चीज नजर आजाये।"

"लेकिन तुम तो कहते थे तुम्हें इसी हफ्ते में एक चित्र पूरा करके देना है।"

"स्ट्रिकलैण्ड मेरे स्टूडियों में चित्र बना रहा है।"

"क्यों भला?"

"मैंने खुद ही उसे सुझाया था। अभी वह अपने पुराने स्थान वापस जाने के क़ाबिल नहीं हुआ है। मैंने सोचा हम दोनों साथ-साथ चित्र बना सकेंगे। क्वार्टर में बहुत-से लोग एक ही स्टूडियो में काम करते हैं मैंने कहा चलो अच्छा-खासा मजाक रहेगा। मेरा हमेशा यह ख़याल रहा है कि जब आदमी काम करते-करते थक जाये तो यदि उसके पास बातें करने के लिए कोई व्यक्ति हो तो अच्छा रहता है।"

उसने यह सब बड़े आहिस्ता-आहिस्ता कहा और बीच-बीच में चुप होकर उसने एक बात दूसरी से अलग करके कही और उसके दयालु, मूर्खतापूर्ण नेत्र मुझ पर गड़े रहे। वे सजल थे।

"मैं तुम्हारी बात नहीं समझा," मैंने कहा।

"स्ट्रिकलैण्ड स्टूडियो में किसी दूसरे के साथ काम नहीं कर सकता।"

"गोली मारो उसको, स्टूडियो तो तुम्हारा है। वह अपनी खुद भुगते तुम काहे को नुक्सान उठाते हो?"

उसने दयाभरी निगाहों से मुझे देखा। उसके होंठ काँप रहे थे।

"क्या हुआ ?" मैंने कुछ तीखेपन से उससे पूछा।

वह सकुचाया और उसका चेहरा लाल हो गया। दीवार पर लगे चित्र पर उसने दुखपूर्ण दृष्टि डाली।

"वह मुझे चित्र बनाने ही नहीं देता, उसने तो मुझे बाहर निकाल दिया।"

"लेकिन तुमने उसे क्यों नहीं निकाल बाहर किया ?"

"उसने मुझे बाहर कर दिया। मैं उससे ठीक तरह लड़ भी तो नहीं सकता था। उसने मुझे धकेलकर मेरा हैट मेरे पीछे फेंका और ताला लगा दिया।"

मुझे स्ट्रिकलैण्ड पर बड़ा ताव आया साथ ही मुझे अपने ऊपर भी अपार क्रोध आया क्योंकि डर्क स्ट्रू ने ऐसा बेहूदा चेहरा बनाया था कि मेरी हँसी निकली पड़ रही थी।

"लेकिन तुम्हारी पत्नी ने क्या कहा ?"

"वह सौदा-सलफ़ लेने बाज़ार गई थी।"

"वह उसे भी घुसने देगा या नहीं ?"

"भगवान जाने।"

में उलझन में पड़ गया और स्ट्रू को घूरने लगा। वह इस प्रकार खड़ा हुआ था जैसे स्कूल का कोई लड़का अपने अध्यापक के सामने, जो उसे उसकी ग़लतियों पर डाँट रहा हो, खड़ा हो।

"तो क्या मैं तुम्हारा स्ट्रिकलैड से पीछा छुड़ा दूँ ?" मैंने पूछा।

वह फिर घबरा गया और उसका चमकता हुआ चेहरा लाल हो गया।

"नहीं, नहीं। तुम भगवान के लिए कुछ न करो।"

उसने मेरी ओर देखकर सिर हिलाया और चल दिया। यह तो स्पष्ट था ही कि किसी कारणवश वह मुझसे उस मसले पर बातचीत नहीं करना चाहता था। मैं कुछ न समझ पाया।

उस बात का विवरण एक सप्ताह बाद मुझे मिला। रात के दस बजे थे मैं एक होटल में अकेला खाना खाकर अपने छोटे-से कमरे को वापस आ गया था और बैठक में बैठा पढ़ रहा था। इतने में मैंने घण्टी की टन-टन सुनी, मैंने बरामदे में जाकर किवाड़ खोले। स्ट्रू मेरे सामने खड़ा था।

"क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?" उसने पूछा।

जीने में अँधेरा था जिससे मैं उसे ठीक से न देख सका लेकिन उसकी आवाज में कुछ ऐसी विशेषता थी जिसने मुझे चकित कर दिया। मैं जानता था कि वह संयमी व्यक्ति है वरना मैं यही समझ लेता कि वह शराब पिये हुए होगा। मैं उसे अपनी बैठक में लाया और उसे बैठने के लिए कहा।

"शुक्र है खुदा का तुम मुझे मिल गये," उसने कहा।

"आखिर बात क्या है ?" मैंने उसकी प्रचण्डता देखकर विस्मित स्वर में कहा।

अब मैं उसे भली भाँति देख सकता था सिद्धान्ततः वह साफ-सुथरा और खुशपोशाक शख्स था लेकिन इस समय उसकी भूषा अस्त-व्यस्त थी। ऐसा लगता था कि वह सहसा पानी में भीग गया हो। अब उसे देखकर मुझे विश्वास हो गया कि वह पीने लगा है और मैं मुस्करा दिया। मैं उसकी दशा पर उसकी खिल्ली उड़ाने ही वाला था।

"मेरी समझ ही में न आया कहाँ जाऊँ," वह सहसा बोल पड़ा। "मैं यहाँ कुछ देर पहले भी आया था लेकिन तुम यहाँ थे ही नहीं।"

"आज मैंने खाना कुछ देर से खाया," मैंने कहा।

मैंने अपना विचार बदल दिया : यह ज़ाहिर होगया कि उसकी इस दुःखद स्थिति का कारण शराब नहीं है। उसका चेहरा जो आमतौर पर ऐसा गुलाबी रहता था अब धब्बेदार हो गया था। उसके हाथ काँप रहे थे।

"क्या कोई खास बात हो गई ?" मैंने पूछा।

"मेरी पत्नी मुझे छोड़ गई है।"

बड़ी कठिनाई से वह कण्ठ से शब्द निकाल रहा था। उसकी घिघ्घी बँध गई और आँसू उसके गोल-मटोल गालों पर लुढ़कने लगे। मैं किंकर्त्तव्य विमूढ़ था। पहले तो मुझे खयाल आया कि शायद वह उसके स्ट्रिकलैण्ड के प्रति अपार लगाव को सहन करते-करते थक गई होगी और स्ट्रिकलैण्ड के नकचढ़े स्वभाव से ऊबकर उसने हठ की होगी कि उसे निकाल दिया जाना चाहिए। मैं उसके क्रोध से परिचित था जो उसके शांत स्वभाव का ही एक अभिन्न अंग था। उसके बार-बार आग्रह करने पर भी जब स्ट्रू न माना होगा तो वह आवेश में स्टूडियो से बाहर चली गई होगी और जाते समय क़सम खाकर कह गई होगी कि अब कभी न लौटूँगी। लेकिन उस समय वह छोटा-सा आदमी इतना व्यथित था कि मैं मुस्करा भी न सका।

"अरे भाई मेरे अपना दिल थोड़ा थोड़ा न करो। वह वापस आजायेगी। जब स्त्रियाँ भावावेश में कुछ कहती हैं तो तुम्हें उस पर ध्यान नहीं देना चाहिए।"

"तुम नहीं समझते। वह स्ट्रिकलैण्ड से प्रेम करती है।"

"क्या कहा ?" मैं एक दम सक्ते में आगया। लेकिन ज्योंही मेरे मस्तिष्क में वह विचार आया मैंने सोचा यह सब बकवास है। "कैसी मूर्खों की-सी बातें करते हो ? कहीं तुम स्ट्रिकलैण्ड से जलते तो नहीं हो ?" मैं हँसने ही वाला था। "तुम तो अच्छी तरह जानते ही हो कि वह उसकी सूरत भी नहीं देख सकती।"

"तुम कुछ नहीं समझते," उसने फफकते हुए कहा।

"तुम तो निरे गधे हो," मैंने कुछ व्यग्रता से कहा। "लाओ तुम्हें थोड़ी

व्हिस्की और सोडा देता हूँ, अभी ठीक हो जाओगे।

मैंने अनुमान लगाया कि किसी-न-किसी कारणवश—और भगवान जाने किस पटुता के साथ लोग अपने आपको कष्ट देते हैं—डर्क के दिमाग में यह बात घुस गई थी कि उसकी पत्नी को स्ट्रिकलैण्ड से लगाव है और ग़लत अंदाज़े लगाने में तो वह शाह है ही इसलिए उसने उसे नाराज कर दिया होगा और शायद उसे भड़काने की खातिर उसकी पत्नी ने कोई ऐसी हरकत की होगी जिससे उसका सन्देह पक्का हो जाय।

"सुनो, आओ हम दोनों तुम्हारे स्टूडियो चलते हैं," मैंने कहा। "अगर तुमने खुद ही बेवकूफी की बात की है तो तुम्हें पछताना पड़ेगा। तुम्हारी बीवी मुझे ऐसी नहीं लगती कि वह किसी के विरुद्ध द्वेष रखे।"

"मैं भला स्टूडियो वापस कैसे जा सकता हूँ?" उसने थके हुए स्वर में कहा। "वे दोनों वहीं हैं। मैं स्टूडियो उन्हीं को सौंप आया हूँ।

"तो फिर तुम्हारी पत्नी ने तुम्हें नहीं छोड़ा बल्कि तुम्हीं ने अपनी पत्नी को छोड़ दिया है।"

"खुदा के लिए मुझसे ऐसी बातें न करो।"

फिर भी मैं उसकी बातों को महत्त्व न दे सका। उसने जो कुछ मुझसे कहा मुझे उस पर तनिक विश्वास न हुआ। लेकिन उसकी व्याकुलता वास्तविक थी।

"आखिर तुम यहाँ इस मामले पर ही तो मुझसे बातें करने आये हो। इसलिए बेहतर यह है कि तुम मुझे पूरा क़िस्सा सुना दो।

"आज तीसरे पहर तो मुझसे वह बिल्कुल बर्दाश्त न हो सका। मैंने स्ट्रिकलैण्ड के पास जाकर उससे साफ-साफ कह दिया कि तुम अब बिल्कुल चंगे होगए हो और अपने मकान को जा सकते हो। क्योंकि मुझे खुद स्टूडियो की ज़रूरत थी।"

"जाहिर है उस शख्स को तो कहने की ज़रूरत होती ही," मैंने कहा, "तो फिर क्या जवाब दिया उसने?"

"वह जरा हँस दिया ; जानते हो उसकी हँसी कैसी होती है यह जताते हुए कि वह खुश हुआ है बल्कि यह जाहिर करते हुए कि तुम उल्लू के पट्ठे हो। और कहा कि मैं फौरन चला जाऊँगा। उसने अपना सामान जमा करना शुरू कर दिया। तुम्हें तो याद होगा कि उसके लिए जो कुछ जरूरी था वह मैंने लाकर दिया था और उसने ब्लांच से कहा कि मुझे पार्सल बाँधने के लिए एक कागज़ का टुकड़ा और सुतली दो।"

स्ट्रू एकदम हाँपने लगा और मैं समझा कि उसे ग़श आजायगा। मुझे उससे इस क़िस्से की आशा न थी।

"उसका खून सूखा जा रहा था पर वह कागज और सुतली लेकर आई। स्ट्रिकलैण्ड ने कुछ न कहा। उसने पार्सल बाँधा और सीटी बजाई। उसने हम दोनों में से किसी पर भी ध्यान न दिया। उसकी आँखों में व्यंग्यपूर्ण मुस्कान थी। मेरा हृदय सीसे के समान था। मुझे भय था कि कुछ अनहोनी होने वाली है और इसलिए मैंने मौन धारण कर लिया। उसने अपना हैट इधर-उधर तलाश किया। फिर वह कहने लगी :

"डर्क, मैं स्ट्रिकलैण्ड के साथ जा रही हूँ," वह बोली। 'अब मैं आपके साथ अधिक दिन नहीं रह सकती।'

"मैंने बोलना चाहा लेकिन शब्द कण्ठ में ठँसकर रह गए। स्ट्रिकलैण्ड ने कुछ नहीं कहा। वह निरंतर सीटी बजाता रहा जैसे उसे उस बात से सरोकार ही न हो।"

स्ट्रू फिर कहते-कहते रुक गया और उसने अपना चेहरा पोंछा। मैं बिल्कुल निःशब्द रहा। अब मुझे उस पर विश्वास होने लगा और मैं स्तंभित रह गया। लेकिन सब कुछ के बावजूद मैं मामला पूरी तरह न समझ सका।

फिर उसने काँपती हुई आवाज़ में और रोते हुए मुझे बताया कि किस प्रकार वह उसके समीप जाकर उसका आलिंगन करना चाहता था पर वह वहाँ से हट गई और कहा कि खुदा के वास्ते मुझे मत छूइए। स्ट्रू ने उससे इल्तेजा की कि तुम मुझे छोड़कर न जाओ। उसने उसे बताया कि मैं किस प्रकार जी-

जान से तुमसे प्रेम करता हूँ और फिर उसने अपना वह प्रेम और स्नेह उसे स्मरण कराया जो उसने अपरिसीम मात्रा में उस पर उँडेला था। उसने उसे अपने जीवन के सुख की याद दिलाई। उसे उस पर तनिक क्रोध भी न था, न ही उसने उसे भला-बुरा कहा।

"कृपा करके मुझे शांतिपूर्वक यहाँ से जाने दीजिए डर्क," उसने अंततः कहा।

"क्या आप यह नहीं समझते कि मुझे स्ट्रिकलैण्ड से प्रेम है ? अब तो जहाँ वह जायेंगे वहीं मैं भी जाऊँगी।"

"लेकिन तुम यह नहीं जानतीं कि वह तुम्हें कभी सुखी न रख सकेगा। तुम अपना ही खयाल करो और न जाओ। तुम नहीं जानतीं तुम्हारे साथ क्या बीतने वाली है।"

"यह तो आप ही का दोष है। आप ही ने तो उन्हें यहाँ लाने पर ज़िद की थी।"

फिर वह स्ट्रिकलैण्ड की ओर मुड़ा।

"इस पर तरस खाओ," उसने स्ट्रिकलैण्ड से प्रार्थना की। "भला पागलों की-सी बातें तुम उससे क्यों करवा रहे हो ?"

"वह जो चाहे उसे करने का अधिकार है," स्ट्रिकलैण्ड ने कहा। "मैं उसे अपने साथ ले जाने के लिए बाध्य तो नहीं कर रहा।"

"और मैंने अपनी चाह प्रकट करदी है," वह मंद स्वर में बोली।

स्ट्रिकलैण्ड के कष्टप्रद मौन ने स्ट्रू का बचा-खुचा आत्म-नियंत्रण भी छीन लिया। क्रोध में वह अंधा हो गया और यह जाने बिना ही कि वह क्या कर रहा है वह स्ट्रिकलैण्ड पर जा गिरा। स्ट्रिकलैण्ड विस्मित तो हुआ और कुछ लड़खड़ाया भी लेकिन बीमारी से उठने के बावजूद वह बहुत बलशाली था। उसने पल-भर में ही न जाने क्या किया कि स्ट्रू ज़मीन पर जा गिरा।

"अरे हँसोड़ नाटे," स्ट्रिकलैण्ड ने कहा।

स्ट्रू किसी तरह उठा। उसने देखा कि उसकी पत्नी सर्वथा निश्चल रही

थी और यह सोचकर कि उसका उसके सामने उपहास होगया वह और भी अपमानित अनुभव करने लगा। उस झड़प में उसकी ऐनक गिर पड़ी थी और उसे फौरन ही वह दिखाई न दी थी। ब्लांच ने उसे उठाया और शांतिपूर्वक उसे थमा दिया। सहसा उसे ख़याल आया कि इस घटना से उसे अपार दुख पहुँचेगा और यद्यपि वह जानता था कि वह स्वयं को मूर्ख बनता रहा है, वह रोने-पीटने लगा। उसने अपना चेहरा हाथों से छिपाया। वे दोनों शांति से उसे देखते रहे और जहाँ खड़े थे वहाँ से तिल-भर भी न हिले।

"अरे मेरी प्यारी," आखिरकार उसने बिलखते हुए कहा, "तुम इतनी क्रूर कैसे बन गई ?"

"मैं मजबूर हूँ डर्क," उसने उत्तर दिया।

"मैंने तुम्हारी इस तरह पूजा की है कि आज तक किसी स्त्री की न हुई होगी। यदि मैंने कोई बात ऐसी की थी जिससे तुम नाराज़ होगई तो तुमने मुझे बताया क्यों नहीं, मैं फौरन अपनी हरकत छोड़ देता। मैंने तो अपने तईं हर वह चीज़ तुम्हारे लिए की जो मैं कर सकता था।"

उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसका चेहरा सर्वथा निस्पंद था और स्ट्रू समझ गया कि वह उसकी बातों से उक्ता रही है। उसने अपना कोट पहना और हैट लगाया। वह दरवाजे की ओर बढ़ी और वह समझ गया कि क्षण-भर में वह वहाँ से चली जायेगी। वह फुर्ती से उसके पास गया और उसके सामने घुटने टेककर बैठ गया और उसके हाथ पकड़ लिये : इस प्रकार उसने अपने तमाम आत्म-सम्मान को तिलांजलि देदी।

"ओह, मत जाओ मेरी प्यारी। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता; मैं आत्मघात कर लूँगा। अगर मैंने तुम्हें कभी नाराज़ किया हो तो मुझे क्षमा कर दो। मुझे एक मौक़ा और दो। मैं तुम्हें सुखी रखने की भरसक चेष्टा करूँगा।"

"उठ बैठो डर्क। तुम तो निरे बेवकूफ बने जा रहे हो।"

वह लड़खड़ा गया लेकिन फिर भी उसने उसे जाने न दिया।

"तुम कहाँ जा रही हो ?" उसने जल्दी में कहा। "तुम्हें नहीं मालूम

स्ट्रिकलैण्ड का मकान कैसा है। तुम वहाँ नहीं रह पाओगी। बड़ा भयंकर जीवन होगा वहाँ तुम्हारा।"

"जब मुझे ही उसकी चिंता नहीं तो आपको भला क्यों होने लगी ?"

"ज़रा एक मिनट और रुक जाओ। मैं तुमसे बातें करना चाहता हूँ। आखिर तुम्हें मुझसे ऐसी अदावत तो नहीं है।"

"फायदा क्या उसका ? मैंने निश्चय कर लिया है। अब तुम चाहे कुछ ही क्यों न कहो मैं अपना विचार नहीं बदल सकती।"

उसने शब्द निगले और अपने दिल की दुखप्रद धकड़नें धीमी करने के लिए अपना हाथ दिल पर रखा।

"मैं तुमसे अपना विचार बदलने के लिए नहीं कह रहा हूँ, मैं तो सिर्फ यह चाहता हूँ कि तुम एक मिनट मेरी सुन लो। बस मैं आखरी बार तुमसे यह भीख माँगता हूँ। कृपया इन्कार न करो।"

वह रुकी और अपनी उन्हीं विचारपूर्ण आँखों से उसे देखने लगी जो अब उसके प्रति इतनी उदासीन थीं। वह स्टूडियो वापस आई और मेज़ के सहारे झुक गई।

"हाँ, क्या कहना चाहते हैं ?"

स्ट्रू ने अपने आपको सम्हालने का भरसक यत्न किया।

"तुम्हें कुछ समझ-बूझ से काम लेना चाहिए। आखिर तुम हवा पर तो जी नहीं सकतीं। स्ट्रिकलैण्ड पर तो फूटी कौड़ी भी नहीं है।"

"मैं जानती हूँ।"

"तुम्हें बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ेंगी उसके साथ। जानती हो उसे अच्छा होने में इतने दिन क्यों लगे ? इसलिए कि वह महीनों आधा भूखा रहा था।"

"मैं उनके लिए पैसे कमा सकती हूँ।"

"किस तरह ?"

"वह मैं नहीं जानती। मैं कोई-न-कोई तरीक़ा ढूँढ निकालूँगी।"

डच के मस्तिष्क में एक भयंकर विचार दौड़ गया और वह काँपने लगा।

"मैं समझता हूँ तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। न मालूम तुम्हें क्या हो गया है ?"

उसने अपने कंधे सिकोड़े।

"क्या अब मैं जा सकती हूँ ?"

"एक सेकण्ड और ठहरो।"

उसने थकान-भरी नजरें अपने स्टूडियो पर डालीं ; उसे उस स्टूडियो से लगाव था क्योंकि ब्लांच की मौजूदगी ने उसे सुखमय तथा घर के सदृश बना दिया था। उसने क्षण भर के लिए अपनी आँखें बन्द की ; फिर उसने बड़ी देर तक उसकी ओर देखा मानो अपने मस्तिष्क में उसके चेहरे का चित्र बनाना चाहता है। वह उठा और उसने अपना हैट उठाया।

"नहीं ; मैं चला जाऊँगा।"

"आप ?"

वह स्तंभित रह गई। उसका मंतव्य वह न समझ पाई।

"मैं इसकी कल्पना-मात्र भी सहन नहीं कर सकता कि तुम उस भयंकर गंदी अटारी में रहो। आखिर इस मकान पर जितना मेरा हक़ है उतना ही तुम्हारा भी है। यहाँ तुम आराम से रहोगी। कम-से-कम उन मुसीबतों से तो बच जाओगी।"

वह अपनी मेज़ के दराज़ तक गया जहाँ वह पैसे रखा करता था और उसमें से उसने बहुत से नोट निकाले।

"जितने ये हैं उनमें से आधे मैं तुम्हें देना चाहता हूँ।"

उसने उन्हें मेज़ पर रख दिया। न स्ट्रिकलैण्ड कुछ बोला और न ही उसकी पत्नी ने कुछ कहा।

फिर उसे कुछ और याद आया।

"क्या तुम मेरे कपड़े बाँधकर नौकरानी को दे दोगी ? मैं कल आकर उससे ले जाऊँगा।" उसने मुस्कराने की चेष्टा की। "विदा मेरी प्यारी। अतीत में

जो सुख तुमने मुझे पहुँचाया है उसके लिए मैं तुम्हारा आभारी हूँ।"

वह बाहर आया और किवाड़ बंद कर दिये। अपने मस्तिष्क के नेत्रों से मैंने देखा कि स्ट्रू के जाते ही स्ट्रिकलैण्ड ने अपना हैट फेंका और बैठकर सिगरेट पीने लगा।

२६

मैं कुछ क्षण मौन रहा और स्ट्रू ने जो कुछ कहा था उस पर विचार करने लगा। मैं उसकी कमज़ोरी के प्रति सहानुभूति न प्रकट कर सका और उसने भी भली प्रकार समझ लिया कि मैं उसकी इस हरकत से खुश नहीं हूँ।

"स्ट्रिकलैण्ड किस प्रकार का जीवन बिता रहा था यह मैं और तुम दोनों खूब जानते हैं," उसने लरज़ते हुए कहा। "मैं उसे (ब्लांच को) उन असह्य परिस्थितियों में नहीं रहने देना चाहता था—दे ही नहीं सकता था।"

"खैर, यह तो तुम्हारा मामला है," मैंने जवाब दिया।"

"तुम मेरी जगह होते तो क्या करते ?" उसने पूछा।

"वह होश-हवास में और आँखें खोल कर गई थी अगर उसे कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता तो यह उसके देखने की बात थी।"

"ठीक है ; लेकिन देखो ना तुम्हें उससे प्रेम नहीं है ना।"

"क्या तुम्हें उससे अब भी प्रेम है ?"

"ओह हमेशा से भी बढ़ कर। स्ट्रिकलैण्ड जैसे व्यक्ति के बस की बात नहीं

है किसी स्त्री को सुखी रखना। उन दोनों का यह आकस्मिक प्रेम अधिक न टिकेगा। मैं उसे यह बता देना चाहता हूँ कि मैं उसे कभी हानि न पहुँचाऊँगा।"

"क्या इसका मतलब है कि तुम उसे फिर से अपनाने को तैयार हो ?"

"मुझे इसमें ज़रा संकोच नहीं। फिर तो उसे मेरी पहले की अपेक्षा कहीं अधिक ज़रूरत महसूस होगी। जब वह अकेली अपमानजनक जीवन बिता रही होगी और व्यथित-हृदय होगी उस समय जब उसका कहीं ठिकाना न होगा तो कितना भयंकर होगा !"

ऐसा लगा जैसे उसे ब्लांच से कोई घृणा नहीं। मैं समझता हूँ कि मुझ में यह एक बड़ी साधारण-सी वृत्ति है कि उसकी उत्साहहीनता पर मुझे कुछ क्रोध-सा आ गया। शायद उसने मेरे मन की बात ताड़ ली क्योंकि उसने कहा :

"जितना प्यार मैंने उससे किया है उतने ही प्रेम की मुझे उससे आशा नहीं है। मैं असल में मूर्ख हूँ। मैं उस क़िस्म का आदमी नहीं हूँ जिनसे स्त्रियाँ प्रेम करती हैं और यह सदैव समझता आया हूँ। यदि उसे स्ट्रिकलैण्ड से प्रेम हो गया है तो मैं उसे दोषी नहीं ठहरा सकता।"

"तुममें तो निश्चय ही इतना कम अहंकार है कि मैंने आज तक किसी में नहीं देखा," मैंने कहा।

"वह जितना प्रेम मुझसे करती होगी मैं उससे कहीं अधिक प्रेम करता हूँ। मुझे महसूस होता है कि जब प्रेम में अहंकार आ जाता है तो वह इसीलिए कि आप खुद से अधिक प्रेम करने लगते हैं। आखिर यह हमेशा होता ही है कि जब एक आदमी विवाहित होता है तो वह किसी पर स्त्री से प्रेम करने लगता है और जब उसका वह प्रेम समाप्त हो जाता है तो अपनी पत्नी के पास वापस आ जाता है और वह उसे पुनः स्वीकार कर लेती है और हरेक आदमी इस कार्यकलाप को बहुत ही स्वाभाविक समझता है। तो फिर स्त्रियों के साथ ऐसा क्यों नहीं हो सकता ?"

"शायद तुम्हारा कहना तर्कपूर्ण है," मैं मुस्करा दिया, "लेकिन अधिकतर

लोग भिन्न प्रकृति के होते हैं और वे ऐसा नहीं करते।"

लेकिन जब मैं स्ट्रू से बातें कर रहा था तो इस सारे मामले की आकस्मिकता पर मेरा मस्तिष्क बुरी तरह उलझ रहा था। मैं कल्पना न कर सका कि उस बेचारे को किसी प्रकार की पूर्व सूचना भी न दी गई होगी। मुझे ब्लांच स्ट्रू की आँखों की वह विचित्र झलक स्मरण हो आई। शायद इसका कारण यह हो कि वह शनैः शनैः इस विचार के प्रति सजग होती जा रही थी जो उसके हृदय में उमड़ रहा था और उसे विस्मित तथा भयभीत किये दे रहा था।

"क्या आज के पहले तुम्हें उनके सम्बन्धों पर कभी सन्देह न हुआ था ?" मैंने पूछा।

कुछ देर तक तो वह बोला ही नहीं। मेज़ पर एक पेंसिल पड़ी थी और अनजाने में उसने ब्लॉटिंग पेपर पर एक सिर बना दिया।

"यदि तुम्हें मेरे सवाल पूछने से नफरत है तो तुम मुझे साफ-साफ बता दो," मैंने कहा।

"बातें करने से मेरा दिल हल्का होता है। काश तुम मेरे हृदय की दशा समझ सकते !" उसने पेंसिल नीचे फेंक दी। "हाँ, मैं पिछले एक पक्ष से तुम्हारे हृदय की स्थिति जानता हूँ। मैं तो उसकी इस हरकत के पहले भी इस मामले से परिचित था।"

"तो तुमने स्ट्रिकलण्ड को पहले से ही क्यों न भेज दिया ?"

"मुझे उस पर विश्वास ही न हुआ। मुझे तो वह बात बहुत ही असम्भव जान पड़ी। वह तो उसकी सूरत से नफरत करती थी इसलिए इसके सम्भव होने का प्रश्न ही नहीं उठता था ; बात बिल्कुल अविश्वसनीय थी। मैंने सोचा कि यह शायद मेरी डाह-मात्र है। जानते हो मैं स्ट्रिकलैण्ड से सदैव द्वेष रखता आया हूँ लेकिन मैंने अपने को इस योग्य बना लिया था कि उस द्वेष को प्रकट न करूँ। मुझे हर उस व्यक्ति से द्वेष रहा है जिसे वह जानती थी। यहाँ तक कि मुझे तुमसे भी द्वेष था। मैं जानता था कि जितना प्रेम मैंने उससे किया है उतना उसने मुझसे नहीं किया। और यह भी बिल्कुल स्वाभाविक ही था, है

ना ? लेकिन उसने मुझे अपने से प्रेम करने की अनुमति दे दी थी और बस वही मुझे सुखी रखने के लिए क़ाफी था। मैं अपने ऊपर जब्र करके उन दोनों को घण्टों अकेला छोड़ कर बाहर चला जाता था। मेरे दिल में उनके प्रति जो संदेह उत्पन्न होते थे उनके लिए मैं ख़ुद को दण्ड देता था क्योंकि मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए था; और जब मैं वापस पहुँचा तो वे मुझे नहीं चाहते थे—स्ट्रिकलैण्ड नहीं, उसे तो परवाह ही न थी मेरे वहाँ रहने न रहने की, बल्कि ब्लांच मुझे नहीं चाहती थी। जब मैं उसे चूमने के लिए बढ़ा तो वह काँपने लगी। जब अंततः मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया और मैंने यह समझा कि यदि मैंने कुछ कहा-सुना तो वे मुझ पर हँसेंगे। मैंने निश्चय किया यदि मैं ख़ामोश रहूँ और यह बहाना बनाऊँ कि मैं कुछ समझा नहीं तो शायद सब कुछ ठीक हो जाये चुनाँचे मैंने उसे बिना किसी झगड़े-टण्टे के वहाँ से भेज देना चाहा। काश, तुम समझ सकते कि मुझ पर क्या-क्या गुज़री है !"

फिर उसने दुबारा मुझे स्ट्रिकलैण्ड को भेजने का क़िस्सा सुनाया। उसने वैसे समय बड़ा अच्छा चुना था और साथ ही उसकी स्ट्रिकलैण्ड को भेजने की प्रार्थना भी बहुत ही समयोचित थी किन्तु वह अपनी काँपती हुई आवाज़ पर नियंत्रण न रख सका। और जिन शब्दों को वह मैत्रीपूर्ण तथा सुखद बनाना चाहता था उनमें कुछ कटुता तथा द्वेष-भाव आ गया। उसे स्ट्रिकलैण्ड से आशा न थी कि वह सुनते ही तैयारी में लग जायगा और न ही उसे अपनी पत्नी से कभी यह अपेक्षा हो सकती थी कि वह स्ट्रिकलैण्ड के साथ जाने का निश्चय कर लेगी। अब मैंने देखा कि वह वास्तव में, दिल से चाहता था कि शांत रहे। वह द्वेष-भाव सहन कर सकता था किन्तु अलग्योझे का भाव उसके लिए भयंकर रूप से असह्य था।

"मैं स्ट्रिकलैण्ड को मार डालना चाहता था और बजाय उसके मैं ख़ुद मूर्ख बन गया।"

वह बड़ी देर तक शांत रहा, फिर उसने वह सब कुछ कहा जो मैं जानता था उसके मस्तिष्क में भरा हुआ है।

"काश मैं, कुछ और प्रतीक्षा कर लेता तो यह सब कुछ ठीक हो जाता।

मुझे इतनी बेसब्री न जाने क्यों हुई ? हाय हाय, मैंन उस बेचारी का क्या कर दिया ?"

मैंने अपने कंधे सिकोड़े लेकिन कहा कुछ नहीं। ब्लांच स्ट्रू से मुझे बिल्कुल हमदर्दी नहीं थी लेकिन मैं जानता था कि यदि मैं ब्लांच के बारे में अपनी सच्ची राय प्रकट करूँगा तो बेचारे डर्क की भावनाओं को ठेस पहुँचेगी।

वह थकावट की उस मंज़िल को पहुँच गया था जब उससे बिना बोले न रहा गया। उसने घटना का फिर से एक-एक शब्द दोहराया। अभी उसे वह बात याद आई जो उसने पहले मुझ से नहीं कही थी और फौरन बाद ही वह उस बात पर बहस करने लगा जो उसे नहीं कहनी चाहिए थी बल्कि कुछ और कहना चाहिए था। फिर कुछ देर में वह अपने अंधेपन पर पश्चाताप करने लगता। वह एक बात पर अपना खेद प्रकट करता कि उसने ऐसा किया और फिर जो कुछ नहीं किया उस पर वह अपने को दोष देता। यही क़िस्सा चलता रहा और आखिरकार हम दोनों बुरी तरह थककर चूर हो गये।

"तो आखिर अब तुम क्या करना चाहते हो ?" मैंने अन्त में कहा।

"क्या करूँ मैं ? देखता हूँ वह मुझे कब बुला भेजती है।"

"कुछ देर के लिए तुम खुद क्यों नहीं चले जाते ?"

"नहीं, नहीं। मैं तो उससे क़रीब रहना चाहता हूँ ताकि वह जब चाहे मुझे बुला ले।"

उस क्षण तो वह बिल्कुल खोया-खोया-सा था। उसके मस्तिष्क में कोई योजना न थी। जब मैंने उसे सोने का सुझाव दिया तो उसने कहा मुझे नींद नहीं आयेगी। वह बाहर जाकर सड़कों पर घूम कर रात गुज़ार देना चाहता था। अकेला मैं उसे छोड़ नहीं सकता था क्योंकि उसकी ऐसी स्थिति न थी। मैंने उसे रात अपने यहाँ ही बिताने पर राज़ी किया और अपने बिस्तर में सुला दिया। मेरे कमरे में एक दीवान था और मैं खुद उस पर सो सकता था। अब वह इतना थक चुका था कि मेरी ज़िद को टालने की उसमें शक्ति न रही थी। मैंने उसे सुलाने की दवा की एक खुराक दी ताकि वह घण्टों तक सो सके। और उसके लिए मैं सबसे बड़ी सेवा वही कर सकता था।

३०

लेकिन मैंने अपने लिए जो बिस्तर बनाया था वह बहुत असुविधाजनक सिद्ध हुआ और फलस्वरूप मुझे सारी रात जाग कर काटनी पड़ी और मैं बिस्तर पर लेटे-लेटे उस अभागे डच की बातों पर विचार करता रहा। मुझे ब्लांच स्ट्रू के व्यवहार से इतनी उलझन न हुई क्योंकि मैं जानता था कि वह उसकी शारीरिक वासना का परिणाम-मात्र था। मैं यह कभी न समझा था कि उसे अपने पति से लगाव या प्रेम है और जिस चीज़ को मैंने प्रेम की संज्ञा दी थी वह उसके पति के चुम्बन-आलिंगन तथा उसे प्राप्त सुख का उत्तर-मात्र था जिसे साधारणतया स्त्रियों का प्रेम समझ लिया जाता है। वह एक निष्क्रिय विचार होता है जो किसी भी वस्तु के प्रति उकसाया जा सकता है जैसे कि अंगूर की बेल किसी भी वृक्ष के सहारे बढ़ जाती है। और संसार के बुद्धिमान लोग उसकी शक्ति को तब स्वीकार करते हैं जब वे किसी कन्या से विवाह के लिए आग्रह करते हैं और आश्वस्त हो जाते हैं कि प्रेम अवश्यंभावी रूप से उसके साथ आ जायगा। यह एक ऐसी भावना होती है जिसमें जीवन की सुरक्षा, सम्पत्ति का गर्व, दूसरे व्यक्ति द्वारा चाहे जाने का सुख, घर बसाने का आनंद आदि वस्तुओं की परितुष्टि सम्मिलित होती हैं और इस सम्बंध को स्त्रियाँ आध्यात्मिक मूल्य प्रदान करती हैं पर उसमें उनकी वह प्रेमपूर्ण अहमन्यता भी विद्यमान रहती है। यह एक ऐसी भावना है जो उत्तेजना के सम्मुख निश्शस्त्र है। मैं समझता हूँ कि ब्लांच स्ट्रू की स्ट्रिकलैण्ड के प्रति घोर घृणा में आरंभ से ही कामाकर्षण का कुछ अस्पष्ट तत्त्व भी रहा होगा। सेक्स की रहस्यमय पेचीदगियों को खोलने वाला भला मैं कौन हूँ?

शायद स्ट्रू की उत्कण्ठा उस स्त्री की प्रकृति के उस पहलू को संतुष्ट करने में असफल रही होगी और वह स्ट्रिकलैण्ड से इसलिए घृणा करती होगी क्योंकि उसमें उसे वह शक्ति दृष्टिगत हुई होगी जिसकी उसे आवश्यकता थी। मेरा ख़याल है जब उसने अपने पति के स्ट्रिकलैण्ड को स्टूडियो में लाने के आग्रह का विरोध किया था तो वह सच्चाई से ऐसा कर रही थी। मैं समझता हूँ वह स्ट्रिकलैण्ड से आतंकित थी—क्यों, यह शायद वह न जानती थी और मुझे यह भी याद है कि उसने इस दुर्घटना का अनुमान लगा लिया था। मेरे विचार में स्ट्रिकलैण्ड का उसे जो भय महसूस होता था वह उसके अपने भय का प्रेषण मात्र था जो वह उसके विचित्र व्यवहार और कष्ट से अनुभव करती थी। उसका हुलिया और शक्ल-सूरत बड़ी भयानक और भोंडी थी; उसकी आँखों में एकाकीपन तथा मुँह में कामुकता थी; वह लम्बा-चौड़ा तथा बलशाली था उसे देखकर अनियंत्रित उत्तेजना का आभास होता था और कदाचित ब्लांच को उसमें वह पापपूर्ण तत्त्व भी महसूस हुआ होगा जिसने मुझे संसार के आदिम इतिहास के, जब भौतिक पदार्थों का पृथ्वी से सम्बन्ध बाक़ी था लेकिन फिर भी उनके अंदर अपनी स्वतः की आत्मा मौजूद थी, असभ्य मनुष्यों के बारे में सोचने पर विवश कर दिया। जब उसने किसी तरह ब्लांच को प्रभावित कर ही लिया था तो यह अवश्यम्भावी था कि वह उससे प्रेम अथवा घृणा करती। और वह उससे घृणा करती थी।

और फिर मेरा विचार है कि रोगी के प्रति दैनिक निकटता ने भी उस पर कुछ विचित्र प्रभाव डाला। वह उसे खाना खिलाने के लिए उसका सिर ऊपर को उठाती थी और वह उसे अपने हाथों में भारी लगता था; जब वह उसे खाना खिलाती थी तो उसका कामुक मुख तथा लाल दाढ़ी पोंछा करती थी। वह उसके अंग धोती थी; उन पर घने बाल उगे हुए थे और जब वह उसके हाथ सुखाती थी तो उस निर्बलता की स्थिति में भी वे उसे भारी और स्नायु-पूर्ण लगते थे। उसकी उँगलियाँ लम्बी थीं; ठीक वैसी ही जैसी एक कलाकार के सृजन के लिए दरकार होती हैं और भगवान जाने वे उँगलियाँ उसके मस्तिष्क में कौन से दुःखद विचार उत्पन्न करती थीं। वह बड़ी शांति के साथ बिना हिले-

डुले सोया करता था और ऐसा लगता था जैसे मरा पड़ा हो। और वह जंगल का कोई हिंस्र पशु नज़र आता था जो शिकार के पीछे देर तक दौड़ने के बाद अब विश्राम कर रहा हो और ब्लांच सोचा करती थी कि वह स्वप्न में न जाने अपनी कौन-कौन सी उमंगें पूरी होते देखता होगा। क्या वह उस अप्सरा का सपना देख रहा है जो यूनान के जंगलों में भागी जारही है और वन देवता बड़ी तीव्रता से उसका पीछा कर रहे हैं ? वह भागती गई तेज़, तेज़तर और घबराई हुई लेकिन वन देवता भी उसका पीछा करते रहे यहाँ तक कि उनकी गर्म साँस उसे अपने गालों पर महसूस होने लगी लेकिन तिस पर भी वह शांति के साथ भागती रही और वह भी शांति के साथ उसका पीछा करते रहे और अंत में जब उन्होंने उसे जा पकड़ा तो उसका हृदय थरथरा उठा—लेकिन किससे ? भय से अथवा हर्षोन्माद से ?

ब्लांच स्ट्रू भूख के क्रूर पंजों में फँस गई थी। शायद वह अब तक स्ट्रिक-लैण्ड से घृणा करती हो, किन्तु वह तो उस पर जान देती थी और अब तक उसने जीवन में जो कुछ किया था वह उसके प्रति सर्वथा उदासीन थी। अब वह पेचीदा, दयालु और ढीठ, समझदार और विचारशून्य स्त्री न रही थी ; अब वह मीनाड* होगई थी। उसका अस्तित्व वासना की साक्षात् मूर्ति बन गया था।

लेकिन हो सकता है मैंने जो कुछ कहा मेरी कल्पना-मात्र ही हो; और संभव है कि वह अपने पति से ऊब गई हो और यों ही उत्सुकतावश स्ट्रिकलैण्ड के साथ चली गई हो। हो सकता है उसके दिल में स्ट्रिकलैण्ड के प्रति कोई विशेष विचार न हो बल्कि उसकी निकटता या आलस्य से प्रभावित होगई हो और अपने ही जाल में फँसकर अपने को उससे बाहर निकलने योग्य न समझती हो। मैं क्या जानूँ उस गंभीर भँव और उन शीत, श्वेत नेत्रों के पीछे कौन विचार और अनुभूतियाँ छिपी हुई थीं ?

यदि मनुष्य जैसे पेचीदा और अबोध्य प्राणियों के बारे में किसी व्यक्ति को

---

* सुरा तथा विषय वासना के प्रति आसक्त अप्सरा अथवा स्त्री।

किसी भी विषय में किसी प्रकार का विश्वास न होता तो ब्लांच स्ट्रू के व्यवहार को न्यायोचित ठहराने के कई तर्क थे जो हर समय समीचीन और विश्वसनीय थे। पर उसके विपरीत स्ट्रिकलैण्ड का स्वभाव मेरी समझ में बिल्कुल न आया। मैंने दिमाग़ पर बहुत ज़ोर दिया लेकिन उसके इस व्यवहार के लिए, जो मेरी उसके प्रति बनाई गई धारणा के सर्वथा प्रतिकूल था, मैं कोई दलील न तलाश कर सका। उसने अपने मित्र के साथ जिस निर्दयता से विश्वासघात किया था या उसने दूसरे की भावना का विचार किये बिना अपनी सनक पूरी की थी ये बातें कुछ विचित्र न थीं। यह तो उसके अपने चरित्र का एक अंश-मात्र था। कृतज्ञता की उस मनुष्य के लिए कल्पना ही न थी। दया या करुणा उसमें नाम को न थी। हम साधारण व्यक्तियों में जो आम भाव होते हैं वे उसमें बिल्कुल न थे और उन्हें अनुभव न करने के लिए उसे दोष देना मूर्खता थी ठीक उसी प्रकार जैसे चीते को उसकी भयंकरता तथा क्रूरता के लिए दोषी ठहराना। लेकिन उसकी वह सनक मैं बिल्कुल न समझ सका।

यह विश्वास करना कि स्ट्रिकलैण्ड को ब्लांच स्ट्रू से प्रेम हो गया है मेरे लिए कठिन था। मेरा विश्वास था कि उसमें प्रेम करने की क्षमता है ही नहीं। प्रेम तो एक ऐसी भावना है जिसकी कोमलता एक आवश्यक अंग है और स्ट्रिकलैण्ड में न अपने लिए कोमलता थी न किसी और के लिए; प्रेम में एक प्रकार की निर्बलता होती है, रक्षा करने की इच्छा होती है, भलाई करने और आनन्द प्रदान करने की अभिलाषा होती है—यदि निस्स्वार्थता नहीं तो कम-से-कम स्वार्थपरता ही होती है जो अपने को बड़ी सुन्दरता से छिपाये रखती है; उसमें एक विशेष संशय, एक लज्जा का भाव निहित होता है और इन लक्षणों का स्ट्रिकलैण्ड में सर्वथा अभाव था। प्रेम तो ग्राह्य होता है वह प्रेमी में से उसका प्रेम-भाग निकालकर बाहर ले आता है चाहे प्रेमी कितना ही स्पष्ट-दर्शी क्यों न हो, चाहे वह जानता भी हो फिर भी यह बात वह अनुभव नहीं कर सकता कि यह प्रेम समाप्त हो जायगा; वह शरीर को भ्रम के सुपुर्द कर देता है और यह जानते हुए कि वह भ्रम के अतिरिक्त कुछ नहीं है उससे यथार्थ

से भी बढ़ कर प्रेम करता है। प्रेम मनुष्य को जितना वह है। उससे कुछ बढ़ा देता है पर साथ ही घटा भी देता है। वह अपना स्वत्व खो बैठता है। अब वह एक व्यक्ति ही नहीं रहता बल्कि एक वस्तु, एक साधन बन जाता है जो किसी ऐसे उद्देश्य के लिए काम आता है जो उसकी आत्म-श्लाघा के लिए एक सर्वथा विपरीत वस्तु है। प्रेम कभी भी भावुकता से रहित नहीं हुआ करता और स्ट्रिकलैण्ड तो शायद ऐसा व्यक्ति था जिसे वह कमज़ोरी छू तक नहीं गई थी। मैं विश्वास नहीं कर सकता था कि उसे कभी प्रेम नामक वस्तु भी घेर सकती है, किसी ऐसी बात को जो उसके स्वभाव के प्रतिकूल हो वह कभी स्वीकार नहीं कर सकता था। मैं यह मानता हूँ कि उसके व्यक्तित्व और उसकी अनुप्रेरित तथा अनुप्राणित करने वाली अदृश्य शक्ति के बीच आने वाली किसी भी वस्तु को वह अपने हृदय से बाहर करने की क्षमता रखता था, चाहे फिर वह पिट कर टुकड़े-टुकड़े और लहू-लुहान ही क्यों न हो जाता। यदि मैं स्ट्रिकलैण्ड के मुझ पर पड़े पेचीदा प्रभाव को किसी सीमा तक भी व्यक्त कर सका हूँ तो यह कहना अत्युक्ति न होगा कि प्रेम के विषय में वह अत्यधिक महान् तथा साथ ही अत्यधिक निकृष्ट था।

लेकिन मैं समझता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति की उत्तेजना या उत्साह की कल्पना उसके अपने देह-स्वभाव पर आधृत होती है और प्रत्येक विभिन्न व्यक्ति के साथ वह विभिन्न होती है। स्ट्रिकलैण्ड जैसा व्यक्ति किसी ऐसे ढंग से प्रेम करेगा जो उसके अपने लिए भी विचित्र है? उसकी भावनाओं का विश्लेषण करना व्यर्थ था।

३१

●●●

अगले दिन हालाँकि मैंने स्ट्रू से आग्रह किया कि वह मेरे साथ ही ठहरे पर वह चला गया। मैंने उससे कहा कि मैं तुम्हारी चीजें स्टूडियो से ले आता हूँ पर उसने हठ की कि नहीं मैं खुद ही जाऊँगा मेरे ख़याल से उसे यह आशा थी कि अभी उन दोनों ने साथ-साथ रहने का निश्चय न किया होगा और वह अपनी पत्नी को एक बार फिर देख सकेगा और मुमकिन है उसे वापस आने के लिए भी उसकी मिन्नत-समाजत करे। लेकिन वहाँ पहुँचने पर उसने देखा कि उसके जाल पोर्टर के कमरे में पड़े हुए हैं और वहाँ नौकर ने उसे बताया कि ब्लांच बाहर गई हुई है। मैं नहीं समझता कि उसने ब्लांच को अपनी तकलीफें सुनाने का लोभ-संवरण न किया होगा, क्योंकि मैंने देखा वह अपनी दुख-गाथा हर जान-पहचान वाले को सुना रहा था; वह उनसे सहानुभूति की आशा करता था पर उसे मिलता था उपहास।

वह बड़े अनुचित ढंग से जीवन-यापन कर रहा था। वह जानता था कि उसकी पत्नी किस समय बाज़ार में सौदा-सलफ लेने जाती है और जब वह उसे देखे बिना अधिक न रह सका तो एक दिन उसने उसे सड़क पर पकड़ लिया। वह उससे नहीं बोली पर वह ज़िद करता रहा कि वह उससे बातचीत करे। वह जल्दी-जल्दी कहे जा रहा था कि यदि मैंने तुम्हारे साथ कोई ज़्यादती या अन्याय किया हो तो मुझे क्षमा कर दो, मैं तुम्हें दिल व जान से चाहता हूँ और तुमसे वापस आने की प्रार्थना करता हूँ। उसने कोई उत्तर नहीं दिया; पराङ-मुख, वह शीघ्रता से चली गई। मैंने कल्पना की कि वह भी अपनी मोटी, छोटी

टाँगों से उसके पीछे-पीछे चला होगा। जल्दी-जल्दी चलते हुए वह हांपने लगा और उसने ब्लाँच को अपनी करुणाजनक स्थिति बताई। उसने उसकी खुशामद की कि तुम मुझ पर तरस खाओ; उसने उसे वचन दिया कि यदि तुम मुझे क्षमा कर दोगी तो मैं तुम्हारे लिए जो चाहोगी करूँगा। उसने उसे कहीं बाहर भ्रमण के लिए ले चलने का भी प्रस्ताव रखा। उसने उससे यह भी कहा कि स्ट्रिकलैण्ड जल्द ही तुमसे ऊब जायगा। जब उसने वह छोटा-सा दुःखद दृश्य पुनः दोहराया तो मैं झल्ला गया। उसने न कोई बुद्धि और न ही किसी सम्मान का प्रदर्शन किया। उसने ऐसी कोई बात न उठा रखी जिससे उसकी पत्नी उससे घृणा करना छोड़ देती। इससे बढ़कर क्रूरता संसार में क्या हो सकती है कि एक पुरुष किसी स्त्री से हार्दिक प्रेम करे और बदले में वह उससे बिल्कुल प्रेम न करे! उस स्थिति में उसमें न तो दयालुता होती है, न सहिष्णुता ही बल्कि एक अस्वस्थ चित्त का चिड़चिड़ापन-मात्र उसमें विद्यमान रहता है। ब्लांच स्ट्रू सहसा रुक गई और यथाशक्ति उसने एक जोर का तमाँचा अपने पति के मुँह पर मारा। स्ट्रू असमंजस में पड़ गया और उससे लाभ उठाते हुए वह स्टूडियो की सीढ़ियाँ चढ़ती हुई अदृश्य हो गई। उसके मुँह से कोई शब्द न निकला।

जब स्ट्रू ने मुझे यह सुनाया तो अपने गाल पर हाथ रख लिया मानो अब तक उस तमाँचे का दर्द उसे महसूस हो रहा हो, उसकी आँखों में हृदय विदारक पीड़ा और एक विशेष आश्चर्य दृष्टिगत हो रहा था जो हास्यास्पद भी था। वह एक स्कूल का लड़का लग रहा था जिसे बहुत दंड दिया गया हो और यद्यपि मुझे उससे हमदर्दी थी मैं उसे देखकर अपनी हँसी न रोक सका।

फिर उसने उस सड़क पर जाना शुरू कर दिया जिसे पार करके वह दूकानों पर जाती थी और जब वह गुज़रती थी तो वह सड़क के दूसरे छोर पर खड़ा होकर उसे देखा करता था। उससे दुबारा कुछ कहने का तो उसे दुस्साहस न हुआ लेकिन उसने अपने हृदय की वह अभिलाषा निकालकर उन गोल-मटोल आँखों में रख ली। मैं समझता हूँ उसका यह खयाल होगा कि उसकी शोचनीय

दशा देखकर शायद उसका हृदय द्रवित हो उठे। लेकिन उसने यह किसी प्रकार ज़ाहिर होने ही न दिया कि मैंने तुम्हें देखा है। उसने अपने काम-काज का समय भी नहीं बदला और न ही बाज़ार जाने का कोई और रास्ता चुना। मेरा यह विचार है कि उसकी इस लापरवाही या उसके प्रति उदासीनता में कुछ निर्ममता निहित थी। शायद अपने पति को कष्ट पहुँचाकर वह किसी प्रकार का आनन्द अनुभव करती होगी। मैं समझ नहीं पा रहा था कि उसे स्ट्रू से इस क़दर नफ़रत क्यों हो गई थी।

मैंने स्ट्रू से आग्रह किया कि वह ज़रा बुद्धिमानी से काम ले। उसमें धैर्य का अभाव मुझे बड़ा खलता था।

"इस प्रकार वहाँ जाकर खड़े रहने से तुम्हें किसी प्रकार का कोई लाभ न होगा," मैंने कहा। "मैं तो समझता हूँ तुम्हारी बुद्धिमत्ता तब प्रकट होती जब तुम छड़ी से उसके सिर पर प्रहार करते। तब वह तुमसे इतनी घृणा न करती जितनी अब करती है।"

मैंने उसे सुझाव दिया कि तुम कुछ दिन के लिए घर चले जाओ। उसने बहुधा अपने उस शांत क़स्बे का ज़िक्र किया था जो हॉलैण्ड के उत्तर में कहीं स्थित था जहाँ उसके माता-पिता अब तक रहते थे। वे बहुत ग़रीब थे। उसका पिता बढ़ई था और वे एक गंदी नहर के किनारे स्थित लाल ईंटों से बने एक साफ-सुथरे मकान में रहते थे। क़स्बे की सड़कें चौड़ी और खाली थीं; दो शताब्दी से उस स्थान का निरन्तर ह्रास होता रहा था किन्तु वहाँ के मकानों में अपने समय का वैभव अब भी क़ायम था। धनी व्यापारी जो अपनी वस्तुएँ दूरस्थ देशों को भेजते थे, बड़ा शांत तथा समृद्ध जीवन व्यतीत करते थे और उनकी वैभवशाली सड़ाँद में भी उनके भव्य अतीत की सुगन्ध बरक़रार थी। यदि आप नहर के किनारे-किनारे चले जायें तो आप विशाल हरे-भरे खेतों में पहुँच जायेंगे जिनमें यत्र-तत्र पवन चक्कियाँ हैं जहाँ सफेद और काले मवेशी बड़े आलस्य के साथ घास चर रहे हैं। मैंने सोचा कि उस वातावरण में डर्क स्ट्रू अपना लड़कपन याद करके इस दुःख को भूल जायगा। लेकिन वह जाने के लिए

राज़ी न हुआ।

"जब उसे मेरी जरूरत पड़ेगी तो मुझे यहीं मौजूद होना चाहिए," उसने अपनी पुरानी बात दोहराई। "यदि मैं उसके समीप न हुआ और कोई अनहोनी हो गई तो बड़ी भयंकर बात होगी।"

"आख़िर होने क्या वाला है तुम्हारे ख़याल में ?" मैंने पूछा।

"मुझे पता नहीं लेकिन मुझे संदेह अवश्य है।"

मैंने अपने कंधे सिकोड़े।

इतनी तकलीफों के बावजूद डर्क स्ट्रू वही उपहासास्पद व्यक्ति बना रहा। यदि वह उस सदमे और उसकी व्यथा से दुर्बल और निढाल हो जाता तो शायद लोग उससे सहानुभूति दर्शाने लगते लेकिन उसने इस प्रकार की कोई बात नहीं की। वह वैसा ही मोटा बना रहा और उसके गोल-मटोल, लाल गाल पके सेबों की नाईं चमकते रहे। उसका शरीर सर्वदा साफ़-सुथरा रहता था और वह अब भी अपना वही साफ़-सुथरा काला कोट और लम्बा हैट स्वच्छता और दिखावट के साथ पहनता रहा जो सदैव उसके लिए छोटा ही लगता था। उसकी अब तोंद निकल आई थी और दुःख ने उस पर कोई प्रभाव नहीं डाला था। वह अब पहले से कहीं अधिक एक समृद्ध व्यवसायी यात्री लगने लगा था। यह बड़ी विकट बात है कि एक व्यक्ति की बाह्यावस्था उसकी आत्मा से कभी-कभी इतनी भिन्न हो। डर्क स्ट्रू में सर टोबी बेल्च*का शरीर था और रोमियो का अबाध प्रेम। उसका बड़ा मधुर और उदार स्वभाव था किन्तु फिर भी वह सदैव ग़लतियाँ करता रहता था; सौंदर्य के प्रति उसमें वास्तविक अनुभूति थी पर क्षमता केवल साधारण सृजन की ही; भावना की उसमें एक विचित्र सुकुमारता थी पर उसका आचरण बड़ा अशिष्ट था। दूसरों के मामलों में वह कुटिलता बरत सकता था पर अपने मामलों में कुछ करना उसके बस की बात न थी। कितना क्रूर मज़ाक़ किया होगा प्रकृति ने जब उसने इतने बहुत से परस्पर विरोधी तत्त्व एक ही व्यक्ति में जमा कर दिये और उसे ब्रह्माण्ड की पेचीदा

*शेक्सपियर लिखित 'ट्वेल्फ्थ नाइट' नाटक का एक पात्र।

उदासीनता का सामना करने के लिए निस्सहाय छोड़ दिया।

३२

कई सप्ताह तक मेरी स्ट्रिकलैण्ड से मुलाक़ात नहीं हुई। मुझे उससे घृणा हो गई थी और यदि मुझे उससे मिलने का सुअवसर प्राप्त होता तो मैं प्रसन्नता से उसे यह बता भी देता लेकिन साथ ही इस उद्देश्य के लिए उसे ढूँढने में भी कोई फायदा नहीं था। किसी भी प्रकार का नैतिक क्रोध प्रकट करने में मैं कुछ झेंपता था। उसमें सदैव आत्म-संतुष्टि का एक तत्त्व निहित रहता है जो यदि किसी विनोदप्रिय व्यक्ति के सम्मुख प्रकट किया जाय तो हास्यास्पद मालूम होने लगता है। मुझे अपना उपहास सहन करने की क्षमता प्रदान करने के लिए एक जीवन्त उत्साह की आवश्यकता है। स्ट्रिकलैण्ड में एक कृत्रिम सच्चाई थी जिसने मुझे हर उस चीज़ के प्रति सहज ग्राह्य बना दिया था जिसमें मुझे किंचित बनावट का आभास होता।

लेकिन एक दिन शाम को जब मैं एवेन्यू द् क्लिशी के उस काफे के सामने से गुज़र रहा था जहाँ स्ट्रिकलैण्ड रोज़ाना आता था पर मैं जाना पसंद न करता था, कि मेरी एकदम उससे मुठभेड़ हो गई। ब्लांच स्ट्रू उसके साथ थी और वे दोनों अपने पसंदीदा कोने में बैठने के लिए जा रहे थे।

"इतने दिनों कहाँ रहे तुम भई?" उसने कहा। "मैं तो समझा तुम कहीं बाहर चले गये।"

उसकी वह विनम्रता इस बात का प्रमाण थी कि मुझे उससे बोलने की

क़तई इच्छा न थी। वह ऐसा शख्स नहीं था जिसके साथ अपनी विनम्रता नष्ट की जाती।

"जी नहीं," मैंने कहा, "मैं कहीं नहीं गया था।"

"तो यहाँ क्यों नहीं आये तुम ?"

"पेरिस में एक नहीं अनेक काफ़े हैं जहाँ आदमी अपना बेकार समय गुज़ार सकता है।"

फिर ब्लाँच ने अपना हाथ बढा कर मुझे अभिवादन किया। न जाने क्यों मैं समझता था कि उसमें अब कुछ परिवर्तन आ गया होगा। वह वही सफ़ेद पोशाक पहने हुए थी जो वह अक्सर पहना करती थी—साफ-सुथरी और सजने वाली, उसकी भवें उतनी ही स्पष्ट, उसकी आँख उतनी ही पीड़ा-शून्य थीं जैसी कि मैं उसे उस समय देखा करता था जब मैं उसके यहाँ जाता था और वह अपने स्टुडियो में घरेलू कामों में व्यस्त रहती थी।

"आओ एकाध बाज़ी शतरंज की हो जाय," स्ट्रिकलैण्ड बोला।

न मालूम उस क्षण मुझे कोई बहाना क्यों न सूझा। मैं बड़ी उद्विग्नता के साथ उनके पीछे उस मेज़ की ओर चला जहाँ स्ट्रिकलैण्ड बहुधा बैठा करता था। उसने बिसात और मोहरे मंगवाये। वे दोनों इस तरह बेतकल्लुफी से पेश आये कि मुझे किसी प्रकार का कृत्रिम व्यवहार करते हुए कुछ अटपटा-सा लगा। श्रीमती स्ट्रू दुर्बोध मुखाकृति लिये खेल देख रही थी। वह खामोश थी लेकिन खामोश तो वह हमेशा ही रहती थी। मैंने उसके मुख की ओर देखा ताकि उसके विचारों का कुछ अनुमान लगा सकूं। मैंने उसकी आँखें देखीं कि कहीं कोई गुप्त बात उनमें प्रकट हो जाय, किसी दुःख या कटुता का कोई आभास मिल जाय ; उसकी भँवों को मैंने जाँचा कि कहीं कोई लक्षण दिखाई दे जाय जो उसके स्थिर भाव प्रकट कर दे। उसका चेहरा एक प्रकार की झिल्ली था जिसने कुछ प्रकट न किया। उसके हाथ उसके सीने पर स्थिर एक-दूसरे में बँधे रखे थे। लोगों की ज़बानी मैंने सुना था कि वह प्रचण्ड उत्तेजना वाली स्त्री

है ; और उसने डर्क पर, जिसने उससे ऐसा अबाध प्रेम किया था, जो घातक प्रहार किया था उसे स्मरण करते ही उसका आकस्मिक क्रोध और भयंकर क्रूरता मेरे सामने आ गई। उसने अपने पति की सुरक्षित शरण और एक स्थायी जीवन के सुख व सुविधाएँ त्याग दी थीं क्योंकि वह इन चीज़ों को छोड़ते समय आने वाली जोखिम का अनुमान न कर सकी थी। उसके इस आचरण से ज़ाहिर होता था कि जोखिम लेने की उसमें अभिलाषा थी, रोज कुआँ खोदकर पानी पीने के लिए वह तत्पर थी और उसकी घर-गृहस्थी के कामों की दक्षता, तथा उसमें उसकी रुचि आदि ने उसके इस आचरण पर कोई विशेष प्रभाव न डाला था। वह अवश्य ही पेचीदा चरित्र की स्त्री थी और उसके विनीत चेहरे के मुक़ाबले में उसका वह चरित्र बड़ा नाटकीय था।

उसके उस आचरण से मैं उत्तेजित हो गया और मैं उसी उधेड़-बुन में व्यस्त हो गया, इधर मैं अपनी बाज़ी में भी संलग्न था। मैंने स्ट्रिकलैण्ड को हराने का भरसक यत्न किया क्योंकि वह एक ऐसा खिलाड़ी था जो हारे हुए विरोधी से घृणा करता था और उसका विजयोल्लास सहन करने योग्य न होता था। और इसके विपरीत यदि वह हार जाता तो अपनी पराजय से बड़ा प्रसन्न होता था। वह अच्छा पराजेता तथा बुरा विजेता था। जिन लोगों का यह विचार है कि किसी भी व्यक्ति का चरित्र सर्वाधिक स्पष्टतया उस समय प्रकट होता है जब वह किसी खेल में व्यस्त हो उनके लिए स्ट्रिकलैण्ड एक उत्तम उदाहरण था।

जब हम खेल चुके तो मैंने वेटर को बिल लाने के लिए बुलाया और पैसे अदा करके उन्हें वहीं छोड़कर चला आया। हमारी मुलाक़ात घटना-विहीन थी। वहाँ एक शब्द भी ऐसा न कहा गया जिसे सुनकर मैं सोचने लग जाता और मैंने अनुमान किया कि मेरे अनुमान सर्वथा निरर्थक थे। असल में मैं फँस गया था। मैं नहीं कह सकता था कि वे किस प्रकार जीवनयापन कर रहे हैं। मैं चाहता था कि उन्हें स्टूडियो में एकांत जीवन बिताते हुए देखूँ और उनकी बातें सुनूँ क्योंकि कोई ऐसी छोटी-से-छोटी बात भी मेरे सामने न हुई थी जिसको आधार बनाकर मैं शेष बातों की कल्पना कर सकता।

दो-तीन दिन बाद डर्क स्ट्रू मेरे घर आया।

"मैंने सुना है तुम ब्लांच से मिले थे," उसने कहा।

"भला तुम्हें कैसे पता चल गया?"

"एक साहब ने जिन्होंने तुम्हें उन दोनों के साथ बैठे देखा था मुझे बताया। तुमने मुझसे क्यों नहीं कहा?"

"मैंने सोचा तुम्हें उससे तकलीफ ही होगी।"

"तो उससे क्या होता है? तुम्हें मालूम होना चाहिए कि उसकी ज़रा-सी बात भी मैं सुनना चाहता हूँ।"

मैं कुछ देर ठहरा कि वह मुझसे सवाल करे।

"अब कैसी दिखाई देती है?" वह बोला।

"बिल्कुल वैसी ही जैसी थी।"

"क्या वह सुखी दिखाई देती है?"

मैंने अपने कंधे सिकोड़े।

"मैं कैसे कह सकता हूँ? हम एक काफे में बैठे शतरंज खेल रहे थे उससे बोलने का मुझे कोई मौका ही न मिला।"

"अरे, लेकिन क्या उसकी सूरत से तुम्हें कुछ अंदाजा न लगा?"

मैंने अपना सिर हिला दिया। मैं तो उससे यही दोहरा सकता था कि उसके किसी शब्द, किसी संकेत या हावभाव से मैं उसके विचारों का अनुमान न कर सका। और उसमें आत्म-नियंत्रण की कितनी महान् शक्ति थी इसके बारे में तो वह मुझसे बेहतर जानता था। उसने भावाभिभूत हो अपनी मुट्ठियाँ भींचीं।

"ओह, मुझे तो बड़ा डर लग रहा है। मैं जानता था कुछ होने वाला है, कुछ भयंकर बात होने वाली है लेकिन उसे रोकने के लिए मैं कुछ नहीं कर सकता।"

"आखिर होने क्या वाला है?" मैंने पूछा।

"मुझे नहीं मालूम ना," उसने सिसकते हुए कहा और अपना सिर हाथों में जकड़ लिया। "मुझे लगता है कोई भयानक विपत्ति आने वाली है।"

स्ट्रू सदा ही उत्तेजित हो जाता था लेकिन आज तो वह अपने आपे ही में न था। उससे तर्क-वितर्क भी नहीं किया जा सकता था। मैंने यह बात मुमकिन समझी कि ब्लांच स्ट्रू स्ट्रिकलैण्ड के साथ को हमेशा ही सहन नहीं कर सकेगी; लेकिन एक सबसे बड़ी झूठी कहावत है कि तुम्हें उसी बिस्तर में सोना पड़ेगा जो तुमने बिछाया है। जीवन का अनुभव यह बताता है कि लोग निरन्तर ऐसे काम कर रहे हैं जिनका अंत विनाश होना चाहिए लेकिन फिर भी किसी-न-किसी तरह वे अपनी मूर्खता के परिणाम से दामन बचा लेते हैं। जब ब्लांच स्ट्रिकलैण्ड से झगड़ी उसे केवल स्ट्रिकलैण्ड को छोड़ देना पड़ा और उधर उसका पति बड़ी दीनता से उसे क्षमा कर देने तथा सब कुछ भूल जाने के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। मैं उससे किसी प्रकार की सहानुभूति दर्शाने के लिए तैयार न था।

"तुम्हें उससे कोई प्रेम नहीं है क्यों?" स्ट्रू बोला।

"आखिर यह तो साबित किया नहीं जा सकता कि वह दुःखी है। क्योंकि, जो कुछ जाहिर है उससे तो यही अंदाजा लगाया जा सकता है कि वे दोनों अब घरेलू पति-पत्नी की तरह जीवन में रस-बस गये होंगे।"

स्ट्रू अपनी व्यथित नज़रों से मेरी ओर तकने लगा।

"हाँ, तुम्हारे लिए तो उसका कोई महत्त्व नहीं लेकिन मेरे लिए तो यह मामला बड़ा गंभीर है, बहुत ही गंभीर।"

मुझे दुःख है यदि मैंने बेसब्री दिखाई हो या अविनीत हुआ हूँ।

"क्या तुम मेरे लिए एक काम करोगे?" स्ट्रू ने पूछा।

"बड़ी राजी-खुशी।"

"मेरी ओर से ब्लांच को एक खत लिख दोगे ?"

"तुम खुद क्यों नहीं लिख लेते ?"

"मैं तो अनेक बार उसे लिख चुका हूँ। मुझे उससे उत्तर की आशा न थी। मैं समझता हूँ वह मेरे पत्र पढ़ती ही न होगी।"

"तुम स्त्रियों की उत्सुकता के बारे में कुछ नहीं जानते हो। तुम समझते हो वह तुम्हारा पत्र पढ़ने का लोभ संवरण कर सकती थी ?"

"हाँ, मेरे पत्र वह पढ़ना नहीं पसंद करती।"

मैंने फ़ौरन उसकी ओर देखा। उसने अपनी आँखें नीची कर लीं। उसका उत्तर कुछ विचित्र दीनता लिये हुए था। वह भली प्रकार समझता था कि ब्लांच उसके प्रति उदासीनता बरतती है और उसके पत्र का लेखन आदि कुछ भी उस पर प्रभाव न डाल सकता था।

"क्या वास्तव में तुम्हें यह विश्वास है कि वह वापस तुम्हारे पास आ जायेगी ?" मैंने पूछा।

"मैं उसे यह बता देना चाहता हूँ कि बुरी-से-बुरी ही क्यों न आन पड़े मैं उसका हूँ और वह मुझ पर विश्वास कर सकती है। हाँ, बस यही बात तुम उस पत्र में लिख दो।"

मैंने एक काग़ज़ निकाला।

"आख़िर ठीक-ठीक बताओ क्या लिख दूँ ?"

और फिर मैंने उसे लिखा :

"प्रिय श्रीमती स्ट्रू !

डर्क ने मुझे आपको यह पत्र लिखने के लिए कहा था। कहते हैं यदि किसी भी समय आपको उनकी ज़रूरत हो तो आपकी सेवा का सुअवसर प्राप्त करके वह अपने को धन्य समझेंगे। जो कुछ हुआ है उसके कारण उनके हृदय में आपके विरुद्ध कोई दुर्विचार नहीं है। उनका आपके लिए प्रेम अपरिवर्तित है। निम्नलिखित पते पर वह आपको हमेशा मिल सकते हैं।"

३४

यद्यपि मैं और स्ट्रू यह समझ रहे थे कि स्ट्रिकलैण्ड और ब्लांच के सम्बन्ध अंततः किसी दुःखपूर्ण परिणाम में ही समाप्त होंगे लेकिन यह कोई न समझता था कि वह मामला इतना दुःखद हो जायगा। गर्मियों का मौसम आया। दमघोंट और सड़ी गर्मी पड़ने लगी। यहाँ तक कि रात को भी थके-हारे शरीरों को सुस्ताने के लिए ठण्ड न मिली। दिन भर सूर्य की गर्मी से तपी हुई सड़कें रात को अपने भभके छोड़ती थीं और यात्री थके-माँदे घिसटते हुए उन पर चले जाते थे। स्ट्रिकलैण्ड से हफ्ते बीत गये मेरी मुलाक़ात नहीं हुई थी। अपने ही कामों में व्यस्त मैंने उस पर और उसके मामले पर सोचना बंद कर दिया था। डर्क अपनी ही निराशा और दुःख में डूबा आ-आकर मुझे बोर करने लगा था और मैं उसकी संगति से बचने लगा था। उसका सिलसिला कुछ इतना दुःखपूर्ण बन चुका था कि मैं उसमें पड़कर अपने आपको कष्ट देने के लिए तैयार न था।

एक दिन सुबह के वक्त मैं बैठा काम कर रहा था। पाजामा पहने हुए था। मेरे विचार कल्पनाकाश में विचरण कर रहे थे और मैं ब्रिटेनी के उन धूपदार समुद्र तटों तथा समुद्र की ताज़गी का विचार कर रहा था। मेरी बाज़ू में एक खाली प्याला रखा था जिसमें मेरी नौकरानी दूध डली काफी लेकर आई थी पास के कमरे में मैंने नौकरानी को स्नानागार खाली करते हुए सुना। मेरी घण्टी में कुछ टनटन हुई और मैंने उसे दरवाज़ा खोलने के लिए कहा। क्षण भर में मुझे स्ट्रू की आवाज सुनाई दी जो नौकरानी से मेरे बारे में पूछ रहा था

कि मैं अन्दर हूँ या नहीं। बिना हिले-डुले मैंने जोर से उसे पुकारा और अन्दर आने को कहा। वह फुर्ती से कमरे में दाखिल हुआ और जिस मेज़ पर मैं बैठा था वहाँ आया।

"ब्लाँचि ने आत्म हत्या कर ली है," उसने गला फाड़ कर कहा।

"क्या कह रहे हो ?" मैंने घबराकर पूछा।

उसने अपने होंठ इस प्रकार हिलाये जैसे कुछ बोल रहा हो लेकिन उनमें से कोई आवाज़ न निकली। वह मूर्खों की भाँति बड़बड़ाता रहा। मेरा हृदय जोर-ज़ोर से धड़कने लगा और न मालूम क्यों मैं सहसा क्रोधित हो उठा।

"भगवान के लिए धीरज रखो, यार," मैंने कहा। "आखिर तुम कहना क्या चाहते हो ?"

उसने हाथों से फिर वही निराशापूर्ण भाव-भंगिमा प्रकट की किन्तु मुँह से अब भी कोई शब्द न निकाला। शायद उस अनहोनी के सदमे से वह गूंगा हो गया था। मैं स्वयं न जानता था मुझे क्या हुआ, मैंने उठकर उसके कंधे पकड़े और उसे जोर से झिझोड़ा। अब जो मैं अपनी उस अनायास प्रतिक्रिया पर ग़ौर करता हूँ तो अपनी मूर्खता का मुझे एहसास होता है। मेरा ख़याल है कि पिछली बेचैन रातों ने मुझे इतना निढाल और निरुत्साह कर दिया था कि मैं स्वयं न जान सका।

"मुझे बैठ जाने दो," उसने अंततः रूँधे कण्ठ से कहा।

मैंने सेण्ट गैल्मियर से एक ग्लास भरा और उसे पीने के लिए दिया। मैंने ग्लास उसके मुँह से लगाया और उसे पिलाने की चेष्टा की मानो वह बच्चा हो। उसने एक बड़ा-सा घूँट पिया और बाक़ी उसकी क़मीस के अगले हिस्से पर बिखर गया।

"किसने कर ली आत्म हत्या ?"

न जाने मैंने यह प्रश्न क्यों पूछा, क्योंकि मैं जानता था उसका मतलब किससे है। उसने धैर्य एकत्र करने की कोशिश की।

"रात उन दोनों में झगड़ा हुआ। वह वहाँ से चला गया।"

"क्या वह मर गई ?"

"नहीं; वे उसे अस्पताल ले गये हैं।"

"तो फिर तुम क्या कह रहे हो ?" मैं बेसब्रीसे चिल्लाया। "तुमने यह कैसे कहा कि उसने आत्मवध कर लिया है ?"

"देखो तुम चिडचिड़ेपन से बात न करो। यदि ऐसी बातें करोगे तो मैं तुम्हें कुछ भी नहीं बता सकता।"

मैंने अपने क्रोध पर क़ाबू पाने के लिए अपने हाथ भींचे और कुछ मुस्कराने के लिए सचेष्ट हुआ।

"माफ करना। तुम इत्मेनान से बताओ। जल्दी नहीं है।"

चश्मे के पीछे उसकी गोल-मटोल नीली आँखें भयातुर व आतंकित दिखाई दे रही थीं। वह जो आतशी शीशे लगाये हुए था उन्होंने तो उसकी आँखों को और भी बिगाड़ कर रख दिया था।

"आज सवेरे जब नौकरानी पत्र ले कर उसके पास गई और उसने घण्टी बजाई तो उसे कोई उत्तर न मिला। उसे किसी के कराहने की आवाज आई। किवाड़ों में ताला नहीं लगा था इसलिए वह उन्हें खोल कर अन्दर चली गई। ब्लाँच बिस्तर में लेटी थी। वह भयंकर रूप से बीमार थी मेज पर एक जहरीले तेजाब की बोतल पड़ी हुई थी।"

स्ट्रू ने अपने हाथों ने अपना चेहरा छिपाया और आगे-पीछे हो सिसकियाँ लेता रहा।

"क्या वह होश में थी ?"

"हाँ हाँ। अरे, काश तुम समझ सकते कि उस पर कैसी-कैसी गुजरी है। मैं तो उसका वर्णन भी सह नहीं सकता, मुझमें वह सहन-शक्ति ही नहीं।"

उसकी आवाज अब चीखों का रूप धारण करने लगी थी।

"अरे लानत भेजो उस सब पर, तुम्हें उसे सहने की जरूरत ही कौन सी है।" मै बेसब्री से चिल्लाया।"सहन तो यह सब उसे करना है।"

"इतनी क्रूरता क्यों दिखा रहे हो तुम ?"

"तुमने क्या किया है ?"

"उन लोगों ने डाक्टर को बुलाया, मुझे भी बुलाया और पुलिस को सूचना कर दी। मैं नौकरानी को बीस फ्रांक दे आया था कि जब कभी भी कुछ हो जाय वह मुझे बुला भेजे।"

वह एक क्षण रुका और मैंने देखा कि जो कुछ वह मुझसे कहना चाहता है उसके हलक़ में अटक रहा है।

"जब मैं वहाँ पहुँचा तो वह मुझसे बोली तक नहीं। उसने उनसे कहा कि इसे बाहर निकाल दो। मैंने क़सम खाकर कहा कि मैंने उसकी हर बात माफ करदी है पर वह कहाँ सुनती है। उसने दीवार से अपना सर फोड़ना चाहा। डाक्टर ने मुझसे कहा कि तुम इसके पास न रहो। और वह कहती गई, 'इसे निकाल दो!' मैं वहाँ से आगया और स्टूडियो में प्रतीक्षा करने लगा। और जब एम्बुलेंस आई और वे उसे स्ट्रेचर पर रखने लगे तो उन्होंने मुझे रसोई में भेज दिया ताकि उसे मालूम न हो सके कि मैं वहीं था।"

जब मैं कपड़े पहन चुका—क्योंकि स्ट्रू ने कहा था कि मैं फौरन तैयार होकर उसके साथ अस्पताल चलूं—तो उसने मुझे बताया कि उसने ब्लांच के लिए एक अलग कमरे का प्रबंध कर लिया है ताकि उसे वार्ड की भीड़ और ऐरे-गैरे रोगियों के दुःखपूर्ण साथ से बचाया जा सके। रास्ते में उसने मुझे समझाया कि वह मुझे साथ लेजाना क्यों चाहता था। यदि वह अब भी उससे मिलना नहीं चाहेगी तो कम-से-कम मुझसे तो वह जरूर बातें कर सकेगी। उसने मेरी मिन्नत की कि मैं उससे उसकी वही बात दोहरादूं कि वह अब भी तुमसे प्रेम करता है; वह तुम्हें किसी बात के लिए उलाहना न देगा बल्कि वह तो सिर्फ तुम्हारी सहायता करना चाहता है। उसे तुम पर कोई दावा नहीं करना है और जब वह चंगी हो जायेगी तो वह तुम्हें अपने यहाँ आने पर बाध्य नहीं करेगा बल्कि तुम पूरी तरह आजाद रहोगी।

लेकिन जब हम अस्पताल पहुँचे तो एक क्षीण, निराशापूर्ण इमारत दिखाई दी जिसे देखकर ही आदमी बीमार हो जाता है। और इस अधिकारी से उस

अधिकारी तक और यहाँ से वहाँ जाकर, सीढ़ियाँ चढ़कर लम्बे-लम्बे बरामदे पार करके आखिरकार जब हम उस डाक्टर के पास तक पहुँचे जिसके अधीन वह रोगिणी थी तो उसने हमें बताया कि मरीज़ा इतनी कमजोर है कि आज कोई उससे मुलाक़ात नहीं कर सकता। डाक्टर एक नाटे क़द का दाढ़ीवाला आदमी था जो बहुत ही अशिष्ट था। वह हर रोगी को तो रोगी समझता था लेकिन उसके चिंतित संबन्धियों को बेकार और कष्टप्रद प्राणी समझता था जिनके साथ वह बड़ी दृढ़ता और अशिष्टता के साथ पेश आता था। इसके अलावा ब्लांच का मामला उसके लिए साधारण-सा था; एक वातोन्मादी स्त्री थी जिसका अपने पति से झगड़ा होगया और उसने ज़हर खा लिया था; और यह बात एक आम थी। पहले तो उसने समझा कि डर्क ही उस दुर्घटना का कारण था और उसने उसे खूब आड़े हाथों लिया। लेकिन जब मैंने उसे समझाया कि वह उस रोगिणी का पति है और उसे क्षमा कर देने को तैयार है तो उसने सहसा उसकी ओर उत्सुक और प्रश्न-सूचक नेत्रों से देखा। मुझे उसकी आँखों में मखौल की झलक दिखाई दी। वास्तव में स्ट्रू का सिर एक ऐसे ही पति का-सा था जिसे धोखा दिया गया हो। डाक्टर ने हल्के से अपने कंधे सिकोड़े।

हमारे प्रश्नों के उत्तर में उसने कहा, "ऐसी ख़तरे की कोई बात नहीं है।"

"यह तो किसी को मालूम न हो सका कि उसने कितनी मात्रा में ज़हर लिया है। हो सकता है कि सिर्फ डराने के लिए उसने ऐसा किया हो। स्त्रियाँ आजकल आमतौर पर प्रेम के कारण विष खा लेती हैं लेकिन इस बात का ख़याल रखती हैं कि वे उसमें सफल न हो जाएँ। आमतौर पर ज़हर खाना अपने प्रेमियों में दया या भय उत्पन्न करने के लिए स्त्रियों का एक हथकण्डा है।"

उसके लहजे में एक स्नेहरहित घृणा थी। उसके नजदीक ब्लांच स्ट्रू महज़ एक इकाई थी जो उस वर्ष पेरिस नगर में आत्महत्या करने वालों की सूची में जोड़ी जा सकती थी। वह कार्य व्यस्त था इसलिए हम पर अपना अधिक समय नष्ट नहीं कर सकता था। उसने हमसे कहा कि यदि आप लोग कल किसी समय

आयें और यदि तब तक ब्लांच ठीक हो जाए तो वह अपने पति से मिल सकती है।

३५

मैं नहीं जानता हमने वह दिन किस तरह गुजारा। स्ट्रू अकेला रह नहीं सकता था इसलिए उसका दिल बहलाने में मैंने अपना समय और शक्ति व्यय की और फलस्वरूप मैं थक गया। मैं उसे लूर लेगया जहाँ उसने चित्र देखने का बहाना किया लेकिन मैं समझ गया कि वह निरंतर अपनी पत्नी के बारे में सोच रहा है। मैंने उसे खाना खाने के लिए ज़ोर दिया और दोपहर के भोजन के बाद उसे लेट जाने के लिए कहा लेकिन वह सो न सका। मैंने उसे कुछ दिनों अपने कमरे में रहने के लिए निमंत्रित किया तो उस पर वह राजी होगया। मैंने उसे पढ़ने के लिए किताबें दीं लेकिन एकाध पृष्ठ पढ़ने के बाद ही वह, किताब नीचे रख देता और शून्य में तकने लगता था। शाम के समय पिके (ताश का एक खेल) की हमने कई बाजियाँ खेलीं और वह काफी दिलचस्पी के साथ खेलता रहा। अंत में मैंने उसे एक बूंद पिलाई और वह निद्रा में डूब गया।

जब हम अगली बार अस्पताल गए तो हमारी मुलाकात एक नर्स से हुई। उसने हमें बताया कि ब्लांच अब कुछ बेहतर है और फिर उससे यह पूछने के लिए कि वह अपने पति से मिलने को राजी है या नहीं वह अंदर गई। हमने उस कमरे में से जहाँ ब्लांच लेटी हुई थी आवाजें आती हुई सुनीं और उसी समय नर्स ने बाहर आकर कहा कि रोगिणी किसी से मिलना नहीं चाहती। हमने

नर्स से कहा कि आप अंदर जाकर एक बार और मालूम कीजिए कि यदि वह डर्क से नहीं मिलना चाहती तो मुझसे तो मिल लेगी या नहीं। लेकिन उसने मेरे लिए भी इन्कार कर दिया। डर्क के होंठ में थरथरी पैदा हो गई।

"माफ कीजिए मैं उन पर दबाव डालने का साहस नहीं कर सकती।" नर्स ने कहा। "उनकी तबियत बहुत ज़्यादा नाज़ुक है। मुमकिन है एक-दो दिन के अंदर वह अपना ख़याल बदल दें।"

"क्या किसी और व्यक्ति से मिलना चाहती है वह ?" डर्क ने इतने आहिस्ता से पूछा जैसे कानाफूसी कर रहा हो।

"वह कहती हैं मुझे अकेला छोड़ दो।"

डर्क के हाथ कुछ विचित्रता के साथ हिले जैसे कि शरीर से उनका कोई सम्बन्ध ही नहीं और उनका हिलना भी कुछ ऐसा ही था।

"क्या आप उनसे यह कह देंगी कि वह जिस किसी से भी मिलना चाहे मैं उसे ले आऊँगा ? मैं तो उसे सुखी देखना चाहता हूँ, और मेरा कोई मक्सद नहीं है।"

नर्स ने अपनी शांत, स्नेहपूर्ण नजरों से जिन्होंने संसार का सारा आतंक व कष्ट देखा था और तब भी ऐसे संसार की कल्पना से युक्त थीं जो पापरहित है उसकी ओर देखा पर खामोश रही।

"जब वह जरा और शांत हो जायेंगी तो मैं उनसे कह दूंगी।"

डर्क करुणा से भरा हुआ था और उसने नर्स से प्रार्थना की कि वह उसी समय वह संदेश जाकर देदे।

"मुमकिन है इसी से वह अच्छी हो जाय। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप उससे पूछ आइए।"

नर्स मुस्कराती हुई—उसकी उस मंद मुस्कान में दया झलक रही थी—कमरे में वापस गई। हमने उसकी धीमी आवाज सुनी और फिर ऐसी आवाज में जिसे मैं पहचान न सका मैंने सुना :

"नहीं। नहीं। नहीं।"

नर्स दुबारा बाहर आई और उसने सर हिला दिया।

"क्या यह वही बोल रही थीं उस समय ?" मैंने पूछा। "उनकी आवाज़ बड़ी विचित्र लगी।"

"ऐसा लगता है जैसे उसके कण्ठ की वे नसें जिनसे इन्सान बोलता है तेज़ाब से जल गई हैं।"

डर्क की परेशानी से हल्की-सी चीख निकल गई। मैंने उससे कहा कि तुम बाहर जाकर फाटक पर मेरा इन्तज़ार करो क्योंकि मैं नर्स से कुछ कहना चाहता था। उसने मुझसे कुछ पूछा नहीं और चुपचाप बाहर चला गया। अब उसकी अपनी सोचने-समझने की सारी शक्ति समाप्त हो चुकी थी ; अब तो वह एक आज्ञाकारी बालक-मात्र रह गया था।

"क्या उसने आपको बताया कि उसने ऐसा क्यों किया ?" मैंने पूछा।

"जी नहीं। वह तो बोलती ही नहीं। बस चुपचाप, गुमसुम लेटी रहती है। कभी-कभी तो वह घण्टों हिलती ही नहीं। लेकिन हर वक्त रोती ज़रूर रहती है। उसका सारा तकिया भीगा हुआ है। वह इतनी कमज़ोर है कि रुमाल भी इस्तेमाल नहीं कर सकती और आँसू उसके चेहरे पर ढुलकते रहते हैं।

यह सुनते ही, मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरे दिल की रगें खिच रही हैं। मैं स्ट्रिकलैण्ड को उसी समय मार डालता और मैं जानता था कि जब मैंने नर्स से विदा ली तो मेरी आवाज़ काँप रही थी।

जब मैं लौटा तो डर्क ज़ीने पर मेरा इंतेज़ार कर रहा था। वह कुछ भी नहीं देख रहा था और न ही उसे मेरे आने की खबर हुई। अंत में मैंने उसके कंधे पर हाथ रखा। हम खामोशी से चलते रहे। मैं यह कल्पना करने का यत्न कर रहा था कि आखिर वह स्त्री किस कारणवश वह भयंकर कदम उठाने पर बाध्य हुई थी। मैंने अनुमान लगाया कि स्ट्रिकलैण्ड सब कुछ जानता होगा क्योंकि पुलिस का कोई आदमी ज़रूर उससे मिलने गया होगा। और उसने पुलिस के सामने अपना बयान भी दिया होगा। मुझे उसके वास-स्थान का भी पता न था। फिर मैंने सोचा शायद वह लौट कर अपनी उसी गंदी अटारी पर चला गया हो जो उसके स्टूडियो के काम आती थी। यह बात

अपनी जगह पर बड़ी अजीब थी कि ब्लांच उससे भी मिलना नहीं चाहती थी। शायद उसने उसे बुला भेजने के लिए मना कर दिया हो क्योंकि वह जानती थी कि उसके बुलाने पर भी स्ट्रिकलैण्ड आयेगा नहीं। मैं खयाल करने लगा कि न जाने क्रूरता की किस खोह में वह झाँकी थी कि उससे आतंकित हो उसने अपना जीवन समाप्त कर लेने की ठान ली थी।

३६

अगला सप्ताह तो और भी भयानक सिद्ध हुआ। स्ट्रू दिन में दो बार अपनी पत्नी के बारे में पूछने अस्पताल जाया करता लेकिन वह उससे मिलने को तैयार न हुई। पहले तो वह बड़ा खुश और आशाजनक भंगिमा लिए लौटा क्योंकि उसे बताया गया था कि उसकी हालत सुधर रही है पर साथ ही वह निराश भी था क्योंकि जिस पेचीदगी का डॉक्टर को अंदेशा था वह जारी रही थी और इसलिए उसका अच्छा होना असंभव हो गया था। नर्स ने उसकी विपदा पर बड़ा तरस खाया लेकिन उसे सांत्वना देने के लिए वह कुछ न कह सकी वह बेचारी स्त्री निश्चल पड़ी हुई थी, बोलने के लिए वह तैयार न थी, उसकी आँखें इस तरह स्थिर थीं जैसे मृत्यु के आगमन की प्रतीक्षा कर रही हो। अब वह अधिकाधिक दो-एक दिन की मेहमान थी; और जब वह एक दिन शाम को मेरे यहाँ आया तो मैं फौरन ताड़ गया कि वह उसकी मौत की खबर देने आया होगा। वह बुरी तरह थक गया था। उसकी वाचालता ने आखिर-

कार उसे छोड़ दिया था और थकावट से चूर वह मेरे सोफे पर लुढ़क गया। मैंने महसूस किया कि मेरी सांत्वना का उस पर कोई असर न होगा और इसलिए मैंने उसे वहीं शांत लेटे रहने दिया। मुझे अंदेशा था कि अगर मैं पढ़ने लग गया तो वह समझेगा कि यह मेरी कठोरहृदयता है इसलिए मैं खिड़की में बैठा पाइप पीता रहा कि वह बोलने के योग्य हो जाय तो उससे मुख़ातिब होऊँ।

"तुमने मेरे साथ बड़ी दयालुता का व्यवहार किया है," अंततः वह बोला। "हरेक मुझ पर दया करता आया है।"

"बकवास है," मैंने कुछ भौचक्का हो कहा।

"अस्पताल में उन लोगों ने मुझसे प्रतीक्षा करने को कहा। उन्होंने मुझे एक कुर्सी दी और मैं दरवाज़े के बाहर बैठ गया। जब वह अचेत हो गई तो उन्होंने मुझे जाने की इजाज़त दी। उसका मुँह और ठोढ़ी तेज़ाब से बिल्कुल जल गई थी। उसके उस सुन्दर चर्म को घायल और जला हुआ देख कर मुझे अपार दुःख हुआ। वह बड़ी शांति से मरी क्योंकि मुझे तब तक मालूम न हुआ वह मर गई है जब तक सिस्टर ने न बता दिया।"

वह इतना थक गया था कि रो भी नहीं सकता था। वह एक अपंगु की उसी नाई लेटा हुआ था जैसे उसके सारे अवयवों की शक्ति समाप्त हो चुकी है। और तरह लेटे-लेटे कुछ ही देर में उसकी आँख लग गई। पिछले हफ्ते से यह पहली बार स्वाभाविक नींद उसे आई थी। प्रकृति जो कभी इतनी क्रूर और निर्मम होती है कभी उतनी,ही दयालु भी हो जाती है। मैंने उसे ढँक दिया और बत्ती बुझा दी। सुबह जब मैं उठा तो वह तब तक सोया हुआ था। वह हिला भी नहीं था। उसकी सुनहरी फ्रेम की ऐनक अब भी उसकी नाक पर रखी हुई थी।

३७

जिन परिस्थितियों में ब्लांच स्ट्रू की मृत्यु हुई थी उनके कारण वे सब भयंकर औपचारिकताएँ हमें सहना पड़ीं जो एक आत्म-हत्या से मरने वाले के बाद आम तौर पर लोगों को पेश आती हैं। लेकिन आख़िरकार हमें उसे दफ़नाने की इजाज़त मिल गई। डर्क और मैं ही टिकठी के साथ क़ब्रिस्तान तक गये। जाते समत तो हम धीमी गति से गये थे लेकिन वापसी में बड़ी फुर्ती से आये। जब हम लौट रहे थे तो टिकठी हाँकने वाले ने जिस अंदाज़ से घोड़े को चाबुक से मारकर हाँका वह मुझे बड़ा भयंकर लगा। उसने मुझे ऐसा महसूस करने पर बाध्य किया जैसे हमने मुर्दे को योंही लापरवाही से दफ़ना दिया है। यदा-कदा मैंने अपने आगे झूमती हुई टिकठी को निहारा और हमारे ड्रायवर ने अपने घोड़ों की जोड़ी को इस प्रकार चलाया कि हम दोनों पीछे न रह जायें। मैंने भी अपने दिल में विचार किया कि जो कुछ मेरे अंदर भरा हुआ है उसे बाहर निकाल कर रख दूँ। मैं एक ऐसी दुःखद घटना से उकताने लगा था जिसका मुझसे बिल्कुल वास्ता न था। और मैंने खुद से यह बहाना बनाते हुए कि मैं स्ट्रू का दिल बहलाने के लिए बोल रहा हूँ संतोषपूर्वक अन्य विषयों की ओर रुख किया।

"क्या तुम्हारा ख़याल कुछ दिनों के लिए बाहर चले जाने का नहीं है?" मैंने कहा। "पेरिस में तुम्हारे रहने से अब कौनसा मक्सद हल हो सकता है?"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया लेकिन मैं भी निर्दयता से कहता ही गया :

"क्या निकट भविष्य के लिए तुमने कोई योजना बनाई है?"

"नहीं।"

"अब तुम ऐसा करो कि जो कुछ काम अधूरा पड़ा हुआ है उसे पूरा कर लो। तुम इटली जाकर वहाँ अपना काम शुरू क्यों नहीं कर देते ?"

अब भी उसने कोई जवाब न दिया, लेकिन गाड़ी के ड्रायवर ने मेरी सहायता की। अपनी गाड़ी की रफ्तार कुछ मंद करते हुए वह ज़रा पीछे को झुककर बोला। उसका कहा मैं न सुन सका इसलिए मैंने अपना सिर खिड़की के बाहर निकाला। वह जानना चाहता था कि हम कहाँ उतरेंगे। मैंने उसे क्षण भर ठहरने के लिए कहा।

"तुम मेरे साथ ही खाना खाओ अब," मैंने डर्क से कहा। मैं उससे प्लेस पिगाल में हमें उतारने के लिए कहे देता हूँ।"

"नहीं, मैं अपने स्टूडियो जाना चाहता हूँ।"

मैं एक क्षण के लिए सकुचाया।

"तो क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ ?" मैंने उससे पूछा।

"नहीं, मैं अकेला रहना चाहता हूँ।"

"अच्छा, ठीक है।"

मैंने ड्रायवर को ज़रूरी हिदायत दी और फिर खामोशी से चलने लगे।

जिस मनहूस दिन ब्लांच को वे अस्पताल ले गये थे उसी दिन से डर्क अपने स्टूडियो नहीं गया था। मुझे खुशी हुई कि वह मुझे साथ नहीं ले जाना चाहता था और इसलिए जब मैंने उसे दरवाजे पर छोड़ा तो मैंने संतोष की साँस ली और चल दिया। उस दिन पेरिस की सड़कों पर चल कर मुझे एक नया आनन्द प्राप्त हुआ और मैंने मुस्कराहट भरी नजरों से उन लोगों को देखा जो जल्दी-जल्दी इधर से उधर आ-जा रहे थे। दिन बड़ा सुखद और धूपदार था और मैंने उस दिन जीवन का एक अद्‌भुत सुख अनुभव किया। मैं स्वयं विवश था और मैंने स्ट्रू और उसके दुखों को अपने मस्तिष्क से निकाल दिया। अब मैं मौज करना चाहता था।

फिर एक सप्ताह तक मैं उससे न मिल सका। फिर एक दिन शाम को ७ बजे के बाद ही वह आ गया और मुझे खाना खिलाने ले गया। वह मातमी पोशाक पहने था यहाँ तक कि उसके ऊँचे हैट पर एक चौड़ी-सी काली पट्टी भी लगी हुई थी। उसने अपने रूमाल में भी एक काली गोट लगवा ली थी। उसका शोकप्रद वेश यह जाहिर करता था जैसे संसार से उसके सारे सम्बन्धी एक ही विपत्ति का शिकार हो चल बसे हों। उसका मोटापा और उसके लाल, मोटे-मोटे गाल भी उसकी शोकग्रस्त आकृति के अनुकूल ही दिखाई दे रहे थे। यह बड़ी दुःखप्रद बात थी कि उसके उस अथाह दुःख में भी मूर्खता का अंश जाहिर हो रहा था।

उसने मुझे बताया कि मैंने बाहर जाने का निश्चय कर लिया है—इटली को नहीं जिसके लिए मैंने उसे सुझाव दिया था बल्कि हॉलैण्ड को।

"मैं कल ही रवाना हो रहा हूँ। शायद यह हमारी आखरी मुलाक़ात है।"

मैंने भी उसे ऐसा ही समुचित उत्तर दिया और वह भी रूखेपन से मुस्करा दिया।

"मैं पिछले पाँच साल से घर नहीं गया हूँ। मेरा ख़याल है वहाँ जाकर मैं यह सब भूल जाऊँगा। मैं अपने पिता के घर से इतनी दूर चला आया था कि वापस जाने में मुझे शर्म आती थी; लेकिन अब मुझे महसूस होता है कि मेरे लिए वही ऐसी जगह है जहाँ जाकर मैं शरण ले सकता हूँ।"

वह ज़ख्मी और नुचा-खसोटा-सा था इसलिए अब उसके विचार उसे अपनी मा के कोमल स्नेह की याद दिला रहे थे। जिस उपहास को वह वर्षों से

सहता आया था उसने उसे अब पूरी तरह परास्त कर दिया था और ब्लांच भी गद्दारी ने जो वज्र प्रहार उस पर किया था उसने तो उसकी सारी लचक जिसके बल पर सब कुछ हँसते-हँसते झेलता आया था, नष्ट कर दी थी। अब वह उन लोगों के साथ नहीं हँस सकता था जो उस पर हँसा करते थे । वह जाति बहिष्कृत था। उसने उन ईंटों के सुगढ़ मकान में बीते अपने बचपन के क़िस्से मुझे सुनाये थे और बताया था कि उसकी मा किस प्रकार उस मकान को स्वच्छ और व्यवस्थित रखती थी। उसकी रसोई स्वच्छता का चमत्कार थी। प्रत्येक वस्तु सदैव अपने स्थान पर रहती थी और मकान के किसी भाग में कभी धूल का जरा-सा कण भी न दिखाई दे सकता था। स्वच्छता उसके लिए एक उन्माद थी। मैंने अपने कल्पना-चक्षुओं से एक साफ-सुथरी छोटी-सी बुढ़िया को देखा जिसके गाल सेब के से सुर्ख थे। और वर्षों अपने घर को साफ-सुथरा और व्यवस्थित रखने के लिए वह सुबह से लेकर शाम तक परिश्रम करती थी। उसका पिता एक दुबला-पतला बूढ़ा आदमी था जिसके हाथ-पैर जिन्दगी भर काम करके थक गये थे और उनमें झुर्रियाँ पड़ गई थीं, वह सर्वदा शांत तथा नेकदिल रहा था। शाम के समय वह बैठ कर ज़ोर-ज़ोर से अख़बार पढ़ता था और उसकी पत्नी तथा पुत्री (जो अब मछलियों का शिकार करने वाली नावों के कप्तान से ब्याह दी गई थी) अपना एक क्षण भी नष्ट किये बिना सीने-पिरोने में लीन रहती थीं। उस छोटे-से गाँव में जो सभ्यता की दौड़ में बहुत पीछे रह गया था कभी कोई दुर्घटना न घटी। साल-पर-साल गुज़रते जाते उन परिश्रमी लोगों को विश्राम देने के लिए मृत्यु एक मित्र की भाँति आती और उन्हें लेकर चली जाती।

"मेरे पिता चाहते थे कि मैं भी उन्हीं की तरह बढ़ई बनूँ। पिछली पाँच पुश्तों से हम यही धंधा चलाये जा रहे हैं। बाप का पेशा बेटा इख्तियार करता है और बेटे का पेशा उसका बेटा अपनाता है। शायद जीवन-यापन की यही बुद्धिमत्ता है कि बाप के नक्शेक़दम पर चला जाय और न दायीं ओर नजर की जाय न बाईं ओर। जब मैं छोटा-सा बच्चा था तो मैं एक घोड़े जोतने वाले की लड़की

से शादी करना चाहता था। वह एक नन्हीं-सी लड़की थी-नीली-नीली आँखों वाली और भूरे-भूरे बालों वाली। वह अगर मेरी पत्नी बन जाती तो घर को ऐसा साफ-सुथरा रखती कि बस। और फिर उससे जो मेरा बच्चा होता वह मेरा धंधा आगे चलाता।"

स्ट्रू ने एक ठण्डी आह भरी और चुप हो गया। अब उसके मस्तिष्क में उस जीवन के चित्र आने लगे जो उसे व्यतीत करना पड़ता यदि वह अपने पिता पेशा अपना लेता। और उस जीवन में जो बहुत सुरक्षित था किन्तु जिसे अपनाने से उसने इन्कार कर दिया था अब वही जीवनाकाँक्षा उराके विचारों को झकझोर रही थी।

"यह दुनिया बड़ी क्रूर और निर्मम है। हम यहाँ क्यों हैं कोई नहीं जानता और यहाँ से कहाँ जायेंगे इसका भी किसी को ज्ञान नहीं। हमें बहुत विनम्र होना चाहिए। हमें स्तब्धता के सौंदर्य को देखना चाहिए। हम जीवन में इतनी साधारणता से चलते हैं कि भाग्य हमारी ओर ध्यान ही नहीं देता। और हमें चाहिए कि हम सीधे-सादे और अज्ञान लोगों से प्रेम करें। उनका अज्ञान हमारे सम्पूर्ण ज्ञान से बेहतर है। हमें चाहिए कि हम खामोश रहें, अपने ही छोटे-से कोने में संतोष से रहें और उन्हीं की तरह विनीत और नेक बनें। और यही जिन्दगी की अक्लमन्दी है।"

मैंने महसूस किया कि उसकी निराश और दुःखी आत्मा की वह अभि-व्यक्ति-मात्र थी और इसलिए मैं उसके त्याग का घोर विरोधी था। लेकिन मैंने अपनी राय उसे न बताई।

"आखिर तुम्हें चित्रकार बनने के लिए किसने प्रेरित किया?" मैंने पूछा।

उसने अपने कंधे सिकोड़े।

"हुआ दर असल यह कि मुझे ड्राइंग से स्वाभाविक रुचि थी। स्कूल में मुझे ड्राइंग के लिए इनाम मिलते थे। मेरी मा बेचारी मेरे इस गुण पर बहुत गर्व करती थीं और उन्होंने मुझे खुश हो कर वाटर-कलर का एक बक्स उपहार-स्वरूप दिया था। उन्होंने मेरे चित्र पादरी डाक्टर, और जज को दिखाये।

उन्होंने मुझे एक छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए एम्सटरडम भेजा और मुझे वह मिल गई। मेरी मा बेचारी मुझ पर कितना गर्व करती थीं और हालाँकि मेरे उनसे बिछुड़ने के विचार ने उनका दिल तोड़ दिया था फिर भी उन्होंने अपना दुःख मुझ पर प्रकट न होने दिया। यह सोच कर कि उनका बेटा एक चित्रकार बनेगा वह बहुत प्रसन्न हुई थीं। उन्होंने अपना पेट काट कर पैसे जमा किये ताकि मैं ज़रा बेहतर तरीक़े से जिन्दगी बसर कर सकूँ। और जब मेरा पहला चित्र प्रदर्शनी में रखा गया तो वे सब—मेरे पिता मा और बहन उसे देखने के लिए एम्सटरडम आये। और जब मेरी मा ने वह देखा तो वह रो पड़ीं। उनकी भोली-सी आँखें नम हो गईं। और अब वहाँ हर पुराने घर की एक-एक दीवार पर मेरे चित्र सोने की फ्रेमों में लगे हुए हैं।"

गर्व से वह फूला न समाया। मैंने उसके उन नीरस चित्रों के बारे में सोचा जिनमें वे सजीव किसान तथा सर्व और जैतून के वृक्ष बने हुए थे। वे ही चित्र उन सुहानी चौखटों में किसानों के घरों की दीवारों पर बड़े विचित्र लगते होंगे।

"मेरी मा बेचारी ने जब मुझे चित्रकार बनाया था तो सोचा होगा कि वह कोई बहुत बढ़िया काम कर रही हैं लेकिन मैं समझता हूँ कि अगर मेरे पिता की चलती तो बेहतर होता और मैं अब एक ईमानदार सुतार होता।"

"और अब जब तुम देख चुके हो कि कला ने तुम्हें क्या दिया तो क्या अब जिन्दगी का मक़सद बदलना चाहते हो? क्या जो कुछ आनन्द तुम्हें कला ने दिया है उसकी सुतार बन कर कभी याद करते?"

"कला संसार की महानतम वस्तु है," उसने कुछ देर के बाद कहा।

उसने कुछ सोचते हुए मेरी ओर देखा; कुछ देर वह सकुचाया, फिर बोला:

"जानते हो मैं स्ट्रिकलैण्ड से मिलने गया था?"

"तुम?"

मैं स्तंभित हो गया। मैं तो समझता था वह स्ट्रिकलैण्ड की सूरत देखना

भी गवारा न करेगा। स्ट्रू के चेहरे पर धुँधली-सी मुस्कान नजर आई।

"तुम तो पहले से ही जानते हो कि मुझमें आत्म-सम्मान है ही नहीं।"

"क्या मतलब है तुम्हारा ?"

और उसने मुझे अजीब क़िस्सा सुनाया।

३६

ब्लांच को दफ़नाने के बाद जब मैंने स्ट्रू को विदा किया तो वह बड़ी निराशा और दुःख के साथ अपने घर में गया था। किसी चीज ने आत्म-यंत्रणा की किसी अदृष्ट इच्छा ने उसे स्टूडियो जाने के लिए उकसाया था और फिर भी वह ने वाले दुष्परिणामों से डर रहा था। वह बड़ी कठिनाई से सीढ़ियाँ चढ़ रहा था जैसे उसके पैर उसे ऊपर ले जाने के लिए तैयार न हों। और दरवाजे के बाहर वह बड़ी देर तक टहलता रहा ताकि अंदर जाने के लिए साहस बटोर सके। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी भयंकर रोग ने उसे दबोच लिया हो। उसे एकदम खयाल आया कि जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ उतर कर मेरे पीछे दौड़े और मुझसे अपने साथ चलने के लिए प्रार्थना करे। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे स्टूडियो के अंदर कोई है। उसे वे दिन याद आये जब वह ज़ीना चढ़ कर ऊपर जाता था और बरामदे में खड़ा होकर दम लेने लगता था और उसकी कितनी मूर्खतापूर्ण बात थी कि वहाँ खड़े-खड़े ब्लांच को देखने की बेचैनी फिर उसका साँस फुला देती थी। उसे देखने में ऐसा आनन्द प्राप्त होता था जो

कभी कम न होता था। और वह हालाँकि घण्टे भर से ज्यादा के लिए कभी बाहर न जाता था लेकिन फिर भी उसे ऐसा महसूस होता था जैसे एक-दूसरे से अलग हुए उन्हें महीना बीत गया। उसे एकदम विश्वास न हुआ कि वह मर चुकी है। जो कुछ हुआ था वह स्वप्न मात्र था, एक भयानक स्वप्न। और जब वह चाबी घुमायेगा और दरवाज़ा खोलेगा तो वह उसे उसी प्रकार मेज़ पर झुकी हुई अपने काम में व्यस्त दिखाई देगी जैसी कि चार्डिन की 'बेनेडिक्टि' की औरत जो उसे सर्वदा बड़ी सुन्दर लगती थी। फुर्ती के साथ उसने चाबी जेब से निकाली, किवाड़ खोले और अन्दर दाखिल हो गया।

कमरे में ऐसी कोई चीज़ न थी जिससे किसी के चले जाने का आभास होता। अपनी पत्नी की सुघड़ता और सफाई से वह बहुत प्रसन्न होता था: चूँकि उसका अपना पालन-पोषण स्वच्छ तथा व्यवस्थित वातावरण में हुआ था इसलिए व्यवस्था और स्वच्छता में उसे अपार आनन्द आता था। और जब उसने अपनी पत्नी की यह स्वाभाविक रुचि देखी कि वह प्रत्येक वस्तु को उसकी निश्चित जगह पर रखती थी तो उसके हृदय में एक विशेष उत्साह पैदा हुआ। शयनागार ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह अभी वहाँ से उठकर गई हो; ब्रश सिंगार मेज पर बड़ी सफ़ाई के साथ कंघे के दोनों ओर रखे हुए थे। स्टूडियो में जिस बिस्तर पर उसने अपनी अंतिम रात बिताई थी उसे किसी ने झाड़ दिया था और उसकी रात की पोशाक तकिये पर रखे एक बक्स में रखी हुई थी। यह विश्वास करना असम्भव था कि अब वह उस कमरे में कभी नहीं आयेगी।

लेकिन उसे प्यास लग रही थी और वह पानी पीने के लिए रसोई में गया वहाँ भी प्रत्येक वस्तु सुव्यवस्थित थी। दीवारगीरी पर वे रकाबियाँ रखी हुई थीं जिन्हें उसने उस रात खाने पर इस्तेमाल किया था जिस रात उसका स्ट्रिकलैण्ड से झगड़ा हुआ था; वे सब बड़ी सावधानी से धोकर साफ की गई थीं। छुरी-काँटे भी एक दराज़ में रख दिये गये थे। एक कागज में लिपटा हुआ कुछ पनीर और एक टीन में डबल रोटी का स्लाइस रखा हुआ था। वह हर

रोज़ बाज़ार जाकर सिर्फ उतनी ही ज़रूरत की चीज़ें खरीदती थी कि उनमें से कोई चीज़ अगले दिन के लिए न बचे। पुलिस में स्ट्रिकलैण्ड ने जो बयान दिया था उससे स्ट्रू को पता चला कि स्ट्रिकलैण्ड रात के खाने के फौरन बाद घर से चला गया था और यह सोचकर कि उसके जाने के बाद भी ब्लांच ने खाने के बर्तन हमेशा की भाँति साफ किये थे स्ट्रू के दिल में भय की सिहरन दौड़ गई। उसकी व्यवस्था और रीति ने उसकी आत्म-हत्या को और भी निश्चित तथा स्थायी बना दिया था। उसका आत्म-नियंत्रण भयावह था। सहसा उसे भूख ने दबोच लिया और उसके घुटने ऐसे बेजान मालूम हुए जैसे कि अभी वह गिर पड़ेगा। वह लौट कर शयनागार में आया और बिस्तर पर लुढ़क गया। और उसका नाम लेकर उसे पुकारने लगा :

"ब्लांच ! ब्लांच !"

उसकी पीड़ा का विचार मात्र ही असह्य था। सहसा उसने अपने कल्पना-चक्षुओं से देखा कि वह रसोई में खड़ी हुई--रसोई अलमारी से कुछ बड़ी होगी--रकाबियाँ, ग्लास, काँटे और चम्मच धो रही है; छुरी के बोर्ड पर फुर्ती से पालिश कर रही है और फिर हरेक चीज़ अलग रख रही है, शिलफची को पोंछ रही है और दस्तरी सुखाने के लिए फैला रही है—वह सफेद फटा हुआ चिथड़ा अब भी वहाँ मौजूद था। और फिर इधर-उधर देख रही है कि प्रत्येक वस्तु साफ और अच्छी हो गई या नहीं। उसने उसे अपनी आस्तीनें मोड़ते हुए और एप्रन उतारते हुए देखा—एप्रन दरवाजे के पीछे एक खूँटी पर टंगा रहता था—और ज़हरीले तेज़ाब की बोतल लेकर शयनागार में गई।

उस कल्पना से वह इतना पीड़ित हुआ कि बिस्तर पर से उठा और कमरे के बाहर हो गया। वह स्टूडियो में गया। वहाँ घोर अंधेरा था क्योंकि बड़ी खिड़की पर पर्दा पड़ा हुआ था, उसने फौरन पर्दा हटा दिया लेकिन जिस स्थान पर वह इतना सुखी और आनन्दित रहता था उस पर एक सरसरी नज़र डालते ही वह सिसकने लगा। यहाँ भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। स्ट्रिकलैण्ड के लिए वातावरण का कोई महत्त्व न था और वह दूसरे के स्टूडियो में भी बिना

किसी चीज़ के बदले हुए काम कर सकता था। स्टूडियो की सजावट निश्चित रूप से कलापूर्ण थी। वह स्ट्रू के उस विचार का प्रतिनिधित्व करती थी कि कलाकार के लिए विशेष वातावरण की आवश्यकता होती है। दीवारों पर पुराने किमखाब के टुकड़े लगे हुए थे, और पियानो रेशमी कपड़े के एक टुकड़े से ढँका हुआ रखा था जो बड़ा सुन्दर और दाग़दार था; एक कोने में मिलो के बनाये हुए चित्र 'वीनस' की प्रति थी और दूसरे में मेदिसी के 'वीनस' की। कहीं चमकदार मिट्टी के इटैलियन सन्दूक रखे थे और कहीं कम उभड़ी हुई खुदाई के सन्दूक पड़े हुए थे। एक सुन्दर सोने की फ्रेम में वेलास्क्वे की 'भोली-ग्र' की प्रति जड़ी हुई थी जिसे स्ट्रू ने रोम में बनाया था और सुन्दर सजावट के उद्देश्य से उसने अपने कुछ चित्र जो सब कड़ी सुन्दर फ्रेमों में जड़े हुए थे उस चित्र के आस-पास लगा दिये थे। स्ट्रू को अपनी रुचि पर बड़ा गर्व था। स्टूडियो के रोमांटिक वातावरण को वह सदैव सराहता था और यद्यपि उस समय स्टूडियो उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके सीने में छुरा भोंक रहा हो फिर भी उसने यह सोचे बिना ही कि वह क्या कर रहा है लुई १५वें की मेज़ की स्थिति जो उसके बहुमूल्य खज़ानों में एक थी, कुछ बदल दी। सहसा उसकी नज़र एक कैनवास पर पड़ी जिसका सीधा हिस्सा दीवार की ओर था। वह कैनवास उनसे जो वह अक्सर इस्तेमाल किया करता था, कहीं बड़ा था और उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि आखिर वह वहाँ क्यों पड़ा हुआ है। वह उस कैनवास तक गया और उस पर बने चित्र को देखने के लिए उसने उसे झुकाया। चित्र किसी नंगे व्यक्ति का था। उसने फौरन अनुमान लगा लिया कि वह चित्र स्ट्रिकलैण्ड का ही बनाया हुआ होगा और उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। उसने क्रोधातुर हो उसे दीवार पर दे मारा—आखिर स्ट्रिकलैण्ड इसे यहाँ क्यों छोड़ गया?—लेकिन उसकी जुंबिश ने उसे दीवार से टकराकर नीचे गिरा दिया और उसका सीधा भाग ऊपर हो गया। चित्र चाहे कैसा ही क्यों न होता वह उसे धूल में नहीं पड़ा रहने दे सकता था; उसने उसे उठा लिया लेकिन साथ ही अब उसे उस चित्र के बारे में जिज्ञासा पैदा हुई। उसने उसे ग़ौर से

देखने का विचार किया, इसलिए उसने उसे लाकर ईज़ल पर रखा। और फिर उसे संतोष के साथ देखने के लिए वह पीछे हटकर खड़ा हो गया।

वह स्तंभित रह गया। वह चित्र किसी स्त्री का था जो सोफ़े पर लेटी हुई थी, उसकी एक बाँह सिर के नीचे थी और दूसरी उसके शरीर पर, उसका एक घुटना उठा हुआ था और दूसरा सीधा खिंचा हुआ था। पोज़ अतिशय सुन्दर था। स्ट्रू का सिर घूम गया। वह ब्लाँच थी। दुख, डाह और क्रोध ने उसे दबोच लिया और वह बड़ी कर्कशता से चिंघाड़ा, उसकी आवाज़ अस्पष्ट थी; उसने अपनी मुट्ठियाँ बाँधी और उन्हें किसी अदृष्ट शत्रु की ओर धमकाते हुए उठाया। वह बड़े ज़ोर-ज़ोर से रोया। उस समय वह अपने आपे में न था। वह विचार उसके लिए असह्य था। यह वास्तव में अतिशयोक्ति थी। उसने आसपास कोई औज़ार तलाश किया ताकि उससे उस चित्र के टुकड़े-टुकड़े कर दे। उसका उस स्टूडियो में एक क्षण भी मौजूद रहना उसे गवारा न था। उसे कोई चीज दीखी ही नहीं जो उसका काम चला सकती; उसने अपनी पेंटिंग की चीज़ों को खोजा लेकिन उसे कोई चीज़ न मिली; वह क्रोध में पागल हो गया। आखिरकार उसे वह चीज़ मिल ही गई—एक बड़ा-सा खुरचने का औज़ार—और वह विजयोल्लास से चीखकर उस पर झपटा। उसने झपटकर उसे ऐसे थामा जैसे वह छुरा हो। और उसे लेकर चित्र के पास गया।

जब स्ट्रू ने मुझे यह सारा किस्सा सुनाया तो वह उतना ही उत्तेजित और उन्मत्त था जितना उस घटना के समय होगा और उसी उन्माद व उत्तेजना में उसने मेज़ पर पड़ी हुई खाने की छुरी उठाई और उसे लहराया। उसने अपनी बाँह इस प्रकार उठाई जैसे प्रहार करने वाला ही हो और फिर हाथ खोलकर उसे झन्न से ज़मीन पर गिरा दिया। उसने मेरी ओर देखा तो उसके होंठों पर एक हल्की-सी मुस्कान थी। वह बोला कुछ नहीं।

"कहे जाओ।" मैंने कहा।

"न जाने मुझे क्या हो गया था। मैं चित्र में एक बड़ा-सा सूराख़ करने वाला ही था, मेरी बाँह प्रहार के लिए बिल्कुल तैयार थी कि सहसा मैं उसे

देखने लगा।"

"क्या देखने लगे ?"

"चित्र। वह एक अनुपम कला-कृति थी। मैं उसे छू भी नहीं सका, मुझे ऐसा करते हुए डर लगा।"

स्ट्रू फिर चुप हो गया और वह अपना मुँह फाड़े मेरी ओर तकने लगा। उसकी गोल, नीली आँखें बाहर को निकली पड़ रही थीं।

"वह बड़ा महान्, बड़ा आश्चर्यजनक चित्र था। मैं आतंकित हो उठा। मुझे एकदम महसूस हुआ कि मैं एक भयंकर पाप करने जा रहा था। मैं उसे और बारीकी से देखने के लिए ज्योंही आगे बढ़ा कि मेरा पैर खुरचने के औज़ार से टकराया और मैं काँप गया।"

उसे जिस भावना ने अभिभूत किया था मैंने उसका कुछ-कुछ अनुभव स्वयं किया और मुझ पर उसका एक विचित्र प्रभाव पड़ा। मुझे ऐसा लगा मानो सहसा मैं उस संसार में पहुँच गया हूँ जहाँ जीवन के मूल्य बदले हुए हैं। मैं वहाँ एक अजनबी की तरह किंकर्त्तव्यविमूढ़ बना खड़ा रहा। वह जगह ऐसी थी जहाँ इन्सान की परिचित वस्तुओं के प्रति प्रतिक्रिया उन चीज़ों की प्रतिक्रिया से सर्वथा भिन्न थी जिन्हें वे नहीं जानते थे। स्ट्रू मुझे चित्र के बारे में बताने का यत्न करने लगा लेकिन उसकी बातें असम्बद्ध थीं और उसका असल मक्सद जानने के लिए मुझे अनुमान से काम लेना पड़ा। स्ट्रिकलैण्ड ने वे सारी मर्यादाएँ तोड़ दीं थीं जो उसे अब तक रोके हुए थीं। और उसने अब अपने को ही नहीं पा लिया था बल्कि उसे एक नई आत्मा—निसंदिग्ध शक्तियों वाली आत्मा—मिल गई थी। यह न केवल ड्राइंग का निर्भीक सुगमकरण था जो इतना समृद्ध और ऐसे अपूर्व व्यक्तित्व को व्यक्त करता था; यह वह पेंटिंग भी न था (यद्यपि उसमें माँस बड़ी उत्तेजना और कामुकता के साथ चित्रित किया गया था) जो अपने आप में एक चमत्कारपूर्ण गुण था, यह न केवल वह ठोसपन था जिससे आप शरीर का वज़न असाधारण रूप से अनुभव कर सकें बल्कि उसमें वह आध्यात्मिकता भी थी जो नये लोगों को खटकती थी, जो कल्पना को

निसंदिग्ध मार्ग पर चलाती थी और जिसमें वे धुँधले, खाली स्थान छोड़े जाते थे जो निस्सीम तारों की जगमगाहट से प्रकाशित होते थे और जहाँ नवीन रहस्यों के खोज से भयभीत पूर्णरूपेण नग्न आत्मा भी बाहर आने का साहस करती थी।

यदि उसके चित्रों की विशेषता वर्णित करते समय मैं आलंकारिक हो गया हूँ तो वह स्ट्रू के कारण क्योंकि उसने स्वयं वे अलंकार प्रयुक्त किये थे। (क्या हम यह नहीं जानते कि जब कोई व्यक्ति अतिशय भावुक होता है तो वह उपन्यास की भाषा में अपने को बड़े स्वाभाविक ढंग से व्यक्त करता है ?) स्ट्रू एक ऐसा भाव व्यक्त करने की चेष्टा कर रहा था जो पहले उसने कभी न समझा था और न वह यही जानता था कि उस भाव को साधारण शब्दों में कैसे प्रकट करे। यह कुछ वैसा ही था जैसै कोई सूफी किसी अकथनीय बात को वर्णन करने का प्रयत्न करे। लेकिन एक तथ्य उसने स्पष्ट रूप में मुझे समझा दिया : लोग सौंदर्य के बारे में योंही चपलता से बातें कर बैठते हैं और शब्दों का महत्त्व अनुभव किये बिना ही वे सौंदर्य को ऐसे हल्के शब्दों में और असावधानी से व्यक्त करते हैं कि उसका वास्तविक बल शून्य हो जाता है। और जिस विशिष्ट वस्तु के लिए उसका प्रयोग होता है जिसमें सैकड़ों अन्य अमहत्त्वपूर्ण चीजें भी शामिल हैं, उसका यथार्थ महत्त्व समाप्त हो जाता है। वस्त्र, कुत्ते और उपदेश जैसी चीज़ों को वे सुन्दर कह कर पुकारते हैं और जब उनका साक्षात्कार सुन्दरता से ही हो जाता है तो वे उसे पहचान नहीं पाते। अपने निरर्थक विचारों को जिस बल से वे सजाते हैं वही उनके ग्राहकत्व को कुण्ठित कर देता है। और उस मिथ्या चिकित्सक की नाईं जो कभी अनुभव किये हुए आध्यात्मिक बल का प्रतिकार करता है, वे अपनी उस शक्ति को जिसका उन्होंने दुरुपयोग किया था, खो बैठते हैं। लेकिन स्ट्रू जो एक अविजेय मूर्ख था, सौंदर्य के प्रति प्रेम रखता था और उसकी उसे उतनी ही सच्ची और वास्तविक समझ थी जितनी सच्ची और वास्तविक उसकी अपनी आत्मा। वह उसके लिए उतना ही महत्त्व रखता था जितना एक ईश्वरवादी के लिए

ईश्वर रखता है। और जब वह उसे समझ गया तो उसे भय महसूस होने लगा।

"जब तुम स्ट्रिकलैण्ड से मिले तो तुमने उससे क्या कहा ?"

"मैंने उसे मेरे साथ हॉलैण्ड चलने के लिए कहा।"

मैं स्तंभित हो गया। मैं तो स्ट्रू की ओर मूर्खतापूर्ण आश्चर्य से देखने लगा।

"हम दोनों ब्लांच से प्रेम करते थे। मेरी मा के घर में उसके लिए जरूर जगह होगी। मैंने सोचा उन सीधे-सादे, ग़रीब लोगों के साथ रह कर उसमें काफी सुधार हो सकता है। मैं समझता हूँ वह उनसे वे बातें सीख सकता है जो उसके लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होंगी।"

"तो क्या जवाब दिया उसने ?"

"वह किंचित मुस्कराया। शायद उसने मेरा सुझाव मूर्खतापूर्ण समझा। वह कहने लगा मुझे दूसरे काम करने हैं।"

मैं यह सोचने लगा कि अगर स्ट्रिकलैण्ड इन्कार करते समय कुछ और शब्द इस्तेमाल करता तो अच्छा होता।

"उसने मुझे ब्लांच का एक चित्र दिया।"

मैं सोचने लगा कि आखिर स्ट्रिकलैण्ड ने ऐसा क्यों किया होगा। लेकिन मैंने कुछ न कहा और कुछ देर तक हम दोनों चुप बैठे रहे।

"तुमने अपने सामान का क्या किया ?" आखिरकार मैंने कहा।

"एक यहूदी मुझे मिल गया जिसने सारे सामान की एक मोटी-सी रक़म मुझे दे दी। मैं अपने चित्र तो अपने साथ घर ले जा रहा हूँ। एक कपड़ों के सन्दूक और चंद किताबों के अलावा मेरे पास अब दुनिया की कोई चीज नहीं है।"

"मुझे खुशी है कि तुम घर जा रहे हो," मैंने कहा।

मैंने महसूस किया कि अब उसे वह अवसर मिल गया है जब वह अपने सम्पूर्ण अतीत को भूल जायगा। मैंने आशा की कि वह भयावह दुःख जो अब

तक असह्य प्रतीत होता था समय बीतते-बीतते नर्म पड़ता जायगा और विस्मृति अपनी दयालुता के साथ जीवन भार उठाने में उसे सहायता करेगी। वह अभी जवान था और कुछ ही वर्षों के बाद वह अपनी बीती हुई जिन्दगी पर अफसोस करेगा क्योंकि उसे उसमें कोई बात भी आनन्दप्रद नहीं दिखाई देगी। कुछ दिन बाद वह हॉलैण्ड में किसी सीधी-सच्ची लड़की से शादी कर लेगा और मुझे विश्वास है वे सुखी रहेंगे। यह सोचकर कि मृत्यु से पहले वह अनेक बुरे चित्र बनायेगा, मैं मुस्करा दिया।

अगले दिन जब वह एम्सटरडम जा रहा था तो मैं उसे विदा करने गया।

४०

अगले महीने भर मैं अपने ही कार्यों में व्यस्त रहा और उस दुखद घटना से सम्बन्धित किसी भी व्यक्ति से मेरी मुलाक़ात नहीं हुई और यहाँ तक कि उन के विचार भी मेरे मस्तिष्क में आना बन्द हो गये। लेकिन एक दिन मैं जब किसी काम से कहीं चला जा रहा था कि मेरी स्ट्रिकलैण्ड से मुठभेड़ हो गई। उसे देखते ही वह सारा भयावह दृश्य मेरी आँखों में घूम गया जिसे मैं बिल्कुल भुला देना चाहता था और उसके कारण का ध्यान आते ही मेरा हृदय सहसा ग्लानि से भर गया। सिर हिलाकर क्योंकि उससे किनाराकशी करना मूर्खता होती, मैं फुर्ती से आगे बढ़ गया; लेकिन एक ही मिनट में मुझे लगा किसी का हाथ

मेरे कंधे पर है।

"तुम बहुत जल्दी में हो क्या ?" उसने बड़ी विनम्रता से कहा।

यह उसकी एक विशिष्ट प्रवृत्ति थी कि जो कोई भी उससे मिलने में अनेच्छा प्रकट करता 'वह उसके साथ बड़े मिठास और शिष्टता से पेश आता था और मेरा उसे टाल कर आगे बढ़ जाना इस बात का प्रमाण था।

"जी हाँ," मैंने संक्षेप में उत्तर दिया।

"चलो तो मैं तुम्हारे साथ ही चलता हूं," वह बोला।

"क्यों ?" मैंने पूछा।

"तुम्हारे साथ का आनन्द उठाने के लिए।"

मैंने उसे कोई उत्तर न दिया और वह खामोशी से मेरे साथ-साथ चलता रहा। लगभग दो फर्लांग तक हम उसी तरह चलते रहे। मुझे उस प्रकार चलते रहना कुछ उपहासास्पद-सा लगा। आखिरकार हम एक स्टेशनरी की दुकान के सामने से गुज़रे और मुझे एकदम याद आया कि यहाँ से कुछ कागज़ ही खरीद लिया जाय। शायद योंही उससे छुटकारा मिल जाय।

"मैं जरा दूकान में जा रहा हूँ," मैंने कहा, "नमस्ते।"

"मैं यहाँ तुम्हारी प्रतीक्षा करता हूँ।"

मैंने अपने कंधे सिकोड़े और दूकान के अन्दर गया। मैंने दूकानदार से कहा कि फ्रांसीसी कागज़ खराब है और उससे मेरा काम बिगड़ जाता है। मैं कोई कागज़ खरीदना तो चाहता नहीं था क्योंकि मुझे उसकी जरूरत न थी इसलिए योंही बहाने बना रहा था। फिर मैंने एक ऐसी चीज उससे माँगी जो मैं जानता था वह मुझे नहीं दे सकेगा और एक मिनट में ही मैं बाहर सड़क पर आ गया।

"मिल गया जो तुम खरीदना चाहते थे ?" उसने पूछा।

"नहीं।"

हम फिर चुपचाप चलने लगे। और फिर ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ कई सड़कें आकर मिलती थीं। चौराहे पर पहुँचकर मैं रुक गया।

"आप किस तरफ जायेंगे ?" मैंने उससे पूछा।

"जिस तरफ तुम जाओगे।" वह मुस्करा दिया।

"मैं तो घर जा रहा हूँ।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा और ज़रा पाइप पीऊँगा।"

"तो उसके लिए आपको मेरे निमंत्रण की प्रतीक्षा करनी चाहिए," मैंने बड़े रूखेपन से जवाब दिया।

"ज़रूर, लेकिन तभी तो जब निमंत्रण की कोई आशा हो।"

"सामने वह दीवार दिखाई देती है आपको ?" मैंने इंगित करते हुए कहा।

"हाँ।"

"तो इसका मतलब है आप यह भी देख सकते हैं कि मैं आपको साथ ले जाना नहीं चाहता।"

"हाँ, कुछ शक तो मुझे हुआ था, मैं स्वीकार करता हूँ।"

अब मैं अपनी हँसी न रोक सका। यह मेरे चरित्र की एक कमज़ोरी है कि उस शख्स से जो मुझे हँसा दे मैं बिल्कुल घृणा नहीं कर सकता।"

"मैं आपको एक घृणित व्यक्ति समझता हूँ। आप शायद सबसे ज्यादा घृणित पशु हैं जिनसे मिलने का मुझे दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है। भला जो आपसे घृणा करता हो और आपको नीची नजरों से देखता हो उसका साथ आप क्यों चाहते हैं ?"

"लेकिन मेरे मित्र, तुम जानते हो ना कि तुम मुझे क्या समझते हो इसकी मुझे ज़र्रा भर भी परवाह नहीं हैं।"

"लानत भेजिए जी इस सब पर," मैंने कुछ अधिक कठोरता से कहा क्योंकि मुझे आभास हुआ कि मेरा उद्देश्य कुछ अधिक प्रशंसनीय नहीं है।

"मैं आपको जानना नहीं चाहता।"

"क्या तुम डरते हो कि मैं कहीं तुम्हें दूषित न कर दूँ ?"

उसके स्वर से मुझे महसूस हुआ कि मेरी बात हास्यास्पद थी। मैं जानता

था कि वह कनग्रँखियों से मेरी ओर तिरस्कार के साथ देख रहा था।

"मेरे ख्याल से आप तंगदस्त हैं," मैंने धृष्ठता से कह दिया।

"तुमसे पैसे उधार मिलने की अगर मैं आशा करता तो अव्वल दर्जे का बेवकूफ़ होता।"

"अगर आप खुशामद सीख लें तो दुनिया में आपको बड़ी आसानी हो जाय।"

वह हँस दिया।

"जब तक मैं तुम्हें कभी-कभी एकाध अच्छी चीज़ हासिल करने का अवसर देता रहूँगा तुम मुझे कभी भी नापसंद न करोगे।"

मुझे हँसी आई लेकिन उसे रोकने के लिए मैंने अपने होंठ काटे। उसने जो कुछ कहा था वह घृणापूर्ण ही सही लेकिन उसमें सच्चाई थी और मेरे चरित्र का दूसरा दोष यह भी है कि मैं उन लोगों का साथ चाहे वे कितने ही भ्रष्ट क्यों न हों पसंद करता हूँ जो मुझ पर जँचता हुआ व्यंग्य कर सकें। मैं यह महसूस करने लगा कि मेरी स्ट्रिकलैण्ड के प्रति घृणा मुझमें तभी क़ायम रह सकती है जब मैं उसके लिए सचेष्ट रहूँ। मुझे अपनी नैतिक कमज़ोरी का एहसास हुआ कि मेरे तिरस्कार में कुछ कृत्रिमता है, और मैं जानता था कि यदि मैंने उसे महसूस किया तो वह भी उसे समझ जायगा। वह निश्चित रूप से मुझ पर छिप कर हँस रहा था। मैंने उससे अंतिम शब्द कहा और कंधे सिकोड़ने और शांत रहने में ही अपनी मोक्ष समझी।

हम उस मकान पर पहुँचे जहाँ मैं रहता था। मैंने उससे अपने साथ आने के लिए नहीं कहा बल्कि बिना कुछ कहे सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। वह मेरे पीछे-पीछे आया और मेरे साथ ही कमरे में दाखिल हुआ। वह पहले वहाँ कभी नहीं आया था लेकिन फिर भी उसने उस कमरे पर सरसरी नज़र भी नहीं डाली जिसे दर्शनीय और सुन्दर बनाने में मैंने काफ़ी परिश्रम किया था। मेज पर तम्बाकू का एक डिब्बा रखा हुआ था और जेब से अपना पाइप निकालकर उसने उसे भर लिया। वह वहाँ पर पड़ी हुई बिना बाँह की एक-मात्र कुर्सी पर बैठ गया और उसके पीछे के पैरों पर ही टेका लेकर झुक गया।

"यदि आप बेतकल्लुफी से ही बैठना चाहते हैं तो आराम कुर्सी पर क्यों नहीं बैठ जाते ?" मैंने चिढ़कर उससे पूछा।

"मेरे आराम की तुम्हें क्यों चिंता होने लगी ?"

"चिंता नहीं," मैंने प्रत्युत्तर दिया। "मैं तो अपने ही आराम के कारण कह रहा हूँ। जब कोई किसी असुविधाजनक कुर्सी पर बैठता है तो उसे देखकर मुझे असुविधा और उलझन होती है।"

वह हँस दिया लेकिन वहाँ से उठा नहीं। वह मेरी ओर ध्यान दिये बिना ही शांति से पाइप पीता रहा और ऐसा लगा जैसे विचार-मग्न हो। मैं अब तक इसी सोच में पड़ा था कि वह यहाँ आया क्यों है।

जब तक स्वभाव चैतन्य को कुण्ठित न करदे लेखक की स्वाभाविक प्रवृत्ति को कोई चीज चिंतित किये रहती है और उसे मानव-स्वभाव की उन एकात्मक

विशेषताओं में रुचि लेने के लिए उत्प्रेरित करती है जो इतनी ग्राह्य होती है कि लेखक की नैतिक समझ उसके विरुद्ध शक्तिहीन सिद्ध होती है। पाप के चिंतन में वह अपने अंदर एक कलात्मक संतुष्टि स्वीकार करता है जो उसे ज़रा घबरा देती है। लेकिन वह सच्चाई यह स्वीकार करने पर बाध्य करती है कि जिन व्यवहारों के लिए वह अस्वीकृति देता है वे वास्तव में उनको करने की उत्सुकता से अधिक शक्तिशाली नहीं हैं। किसी भी बदमाश का चरित्र जो बड़ा तर्कपूर्ण और पूर्ण हो अपने स्रष्टा के लिए एक आकर्षण रखता है जो कि क़ानून और व्यवस्था का घोर उल्लंघन है। मैं समझता हूँ कि शेक्सपियर ने इयागो का चरित्र एक ऐसे जोश-ख़रोश से खोजा था जो वह स्वयं न जानता था और फिर अपनी कल्पना-शक्ति से चाँद की किरणें गूँथकर उसने डेस डेमना का चरित्र सृजन किया था। शायद ऐसा होता हो कि लेखक बदमाशों का चरित्र-चित्रण करते समय अपने अंदर गहरी जमी हुई प्रवृत्तियों की भड़ास शांत करने का प्रयत्न करता हो जिन्हें सभ्य संसार के रिवाज तथा शिष्टाचार ने उसके उपचेतन के किसी गुप्त कोने में फेंक दिया है। अपने सृजन किये हुए पात्र को मांस व हड्डियाँ प्रदान करते समय वह अपने जीवन के उस भाग को सजीव करता है जो अन्यत्र व्यक्त नहीं किया जा सकता है। उसकी संतुष्टि मुक्ति का-सा आभास लिए हुए होती है।

लेखक को तो जानने की अधिक चिंता होती है अपेक्षाकृत देखकर जाँचने की।

मेरी आत्मा के अंदर स्ट्रिकलैण्ड का एक पूर्णरूप से वास्तविक आतंक छाया हुआ था और साथ-ही-साथ उसके उद्देश्य जानने की एक नीरस उत्सुकता भी कहीं दबी हुई थी। उसने मुझे उलझन में डाल दिया था और मैं यह देखने के लिए उत्सुक था कि उस ट्रैजिडी के प्रति जो उसने उन लोगों के जीवन में पैदा की थी, जो उससे बड़ी दयालुता का व्यवहार करते थे, उसका क्या रवैया है। मैंने बड़ी निर्भीकता से अपना नश्तर चलाया।

"स्ट्रू मुझसे कह रहा था कि आपने उसकी पत्नी का जो चित्र बनाया है,

वह शायद आपका एक महानतम सृजन है।"

स्ट्रिकलैण्ड ने मुँह से पाइप हटाया और एक मुस्कान उसकी आँखों में जगमगा उठी।

"उसे बनाने में मुझे बड़ा आनन्द आया।"

"वह आपने उसे क्यों दे दिया ?"

"वह मैंने पूरा बना लिया था इसलिए मेरे लिए बेकार था।"

"आपको मालूम है कि स्ट्रू ने उसे क़रीब-क़रीब नष्ट ही कर दिया था ?"

"हाँ वह पूरी तरह संतोषजनक भी नहीं था।"

वह दो-तीन क्षण के लिए फिर खामोश रहा और फिर पाइप मुँह से निकालकर हँसने लगा।

"जानते हो वह नाटा आदमी मुझसे मिलने आया था ?"

"जो कुछ उसने आपसे कहा उससे आपका हृदय द्रवित नहीं हुआ ?"

"नहीं ; मैंने उसे मूर्खतापूर्ण और भावुक सुझाव समझ कर टाल दिया।"

"शायद यह आप भूल ही गये कि आपने उसकी ज़िन्दगी तबाह कर दी थी ?" मैंने कहा।

उसने अपनी दाढ़ी-भरी ठोड़ी खुजाते हुए कुछ सोचा।

"वह बहुत भद्दा चित्रकार है।"

"लेकिन आदमी अच्छा है।"

"और बावरची भी बहुत बढ़िया है," स्ट्रिकलैण्ड ने उपहास करते हुए कहा।

उसकी लापरवाही अमानुषिक थी और मुझे उस पर ऐसा क्रोध आ रहा था कि मैं अपने को न रोक सका।

"यों ही उत्सुकतावश मैं आपसे मालूम करना चाहता हूँ कि क्या ब्लांच स्ट्रू की मृत्यु का आपको ज़रा भी दुःख हुआ ?"

मैंने उसके चेहरे की ओर देखा कि शायद उसकी भंगिमा बदले लेकिन वह स्थिर रहा।

"मुझे दुख भला क्यों होता ?" उसने पूछा।

"तो लीजिए मैं उसके कारण आपको बताता हूँ। जब आप मर रहे थे तो डर्क स्ट्रू आपको अपने घर ले गया। मा की तरह उसने आपकी सेवा-सुश्रुषा की। आपके लिए उसने अपना समय, सुख और रुपया खर्च किया और आपको मौत के जबड़ों में से बाहर निकाला।"

स्ट्रिकलैण्ड ने अपने कंधे सिकोड़े।

"वह बेहूदा नाटा दूसरों की सेवा करने में ही सुख अनुभव करता है। यही उसकी ज़िन्दगी है।"

"मैंने माना कि आप पर उसका कोई एहसान न था लेकिन क्या आपका भी यही कर्त्तव्य था कि आप उसकी पत्नी को उससे अलग करने की कोशिश करते ? जब आप उनके यहाँ गये थे तो वे दोनों बहुत सुखी थे। तो फिर आपने उन्हें अकेला क्यों नहीं छोड़ दिया ?"

"यह तुमने कैसे समझ लिया कि वे सुखी थे ?"

"यह तो साफ जाहिर था।"

"तुम बड़े दूरदर्शी हो। तुम्हारा ख़याल है उसने जो कुछ उसके साथ किया था क्या वह उसे उसके लिए कभी माफ़ कर सकती थी ?"

"क्या ततलब है आपका ?"

"क्या तुम्हें नहीं मालूम उसने उससे विवाह क्यों किया था ?"

मैंने सिर हिला दिया।

"किसी रोमन राजा के परिवार में वह अध्यापिका थी और राजा के लड़के ने उसका सतीत्व भ्रष्ट कर दिया। वह यह समझी कि वह मुझसे शादी कर लेगा। उन्होंने उसे निकाल बाहर कर दिया। वह गर्भिणी थी। और आत्म-हत्या करने की कोशिश कर रही थी। स्ट्रू से उसकी मुठभेड़ होगई और उसने उससे शादी कर ली।"

"यह तो वास्तव में उसका महान् गुण था। मैंने इतना दयालु हृदयी और कोई नहीं देखा।"

मैं अक्सर सोचा करता था कि उस अनमेल जोड़े ने आखिर क्यों शादी की होगी ? लेकिन ठीक यह बात मेरे दिमाग में कभी न आई। शायद डर्क के अपनी पत्नी से उस प्रकार के प्रेम का यही कारण होगा। उस प्रेम में मुझे उत्तेजना से अधिक कुछ दिखाई दिया। मुझे अपना वह विचार भी याद आया कि वह कुछ अपने दिल में छिपाए हुए थी जिसका मुझे कभी पता न चल सका था और अब मैं समझा कि वह यही लज्जास्पद रहस्य अपने अंदर छिपाये हुए थी। उसकी गंभीरता उस द्वीप की मलिन निस्तब्धता की भाँति थी जिसका तूफान ने सफ़ाया कर दिया हो। उसकी प्रफुल्लता निराशा की प्रफुल्लता थी। स्ट्रिकलैण्ड ने सहसा अपनी बात से मेरे चिंतन को भंग कर दिया और उसके नकचढ़ेपन को देखकर मैं चौंक गया।

"स्त्री किसी भी पुरुष द्वारा दिये गये कष्ट के लिए तो उसे क्षमा कर सकती है," उसने कहा, "किन्तु उसके अपने लिए किये गये बलिदानों के लिए उसे कभी क्षमा नहीं कर सकती।"

"तो शायद यह जानकर आपको अपनी बात और भी आश्वस्त दिखाई देगी कि आप किसी भी स्त्री को जिससे आपका सम्बन्ध हो जाता है कभी अपने से घृणा करने का मौका नहीं देते," मैंने प्रत्युत्तर दिया।

उसके होंठों पर एक हल्की-सी मुस्कान फैल गई।

"तुम तो व्यंग्य के लिए सर्वदा अपने सिद्धांतों की बलि देने को तैयार रहते हो," उसने उत्तर दिया।

"बच्चे का क्या हुआ ?"

"उनकी शादी के तीन-चार महीने बाद वह पैदा हुआ लेकिन मरा हुआ।"

फिर मैंने वह प्रश्न छेड़ा जो मुझे बहुत उलझा हुआ लग रहा था।

"क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आपने ब्लांच स्ट्रू से अपना संबन्ध आखिर क्यों स्थापित किया था ?"

वह बड़ी देर तक चुप रहा और मुझे वही प्रश्न दोहराना पड़ा।

"मुझे क्या मालूम ?" उसने आखिरकार कहा। "वह मेरी सूरत देखना

तक गवारा न कर सकती थी और मुझे उसमें आनन्द आता था।

"अच्छा यह बात थी।"

वह एकदम भड़क उठा।

"बन्द करो यह बकवास ! मुझे उसकी आवश्यकता थी।"

लेकिन शीघ्र ही उसकी क्रोधाग्नि शांत हो गई और वह मेरी ओर देखकर मुस्कराने लगा।

"पहले तो वह बड़ी भयभीत हुई।"

"क्या आपने उससे कहा था ?"

"उसकी जरूरत ही न थी। वह जानती थी। मैंने तो कभी एक शब्द भी नहीं कहा। वह घबरा गई। और अंतत: मैंने उसे प्राप्त कर लिया।"

मैं नहीं जानता कि उसने जो कुछ कहा उसमें क्या था जो असाधारण रूप से उसकी इच्छा की प्रचण्डता को प्रकट कर रहा था। वह सुनकर मुझे बड़ी पीड़ा हुई क्योंकि वह सब बड़ा भयंकर था। भौतिक पदार्थों से उसके जीवन के कोई सरोकार न था और ऐसा लगता था जैसे कभी-कभी उसका शरीर उसकी आत्मा से बदला ले रहा हो। उसकी कामांधता ने उसे पराभूत कर दिया था और वह उस प्रवृत्ति के पंजों में जिनमें प्रकृति की तमाम आदिम शक्तियों का बल था, निष्प्राण हो गया था। वह एक ऐसी पूर्ण प्रेतबाधा थी जिसमें बुद्धि या आभार का कोई स्थान न था।

"लेकिन आप उसे अपने साथ ले जाना क्यों चाहते थे ?" मैंने पूछा।

"मैं तो नहीं चाहता था," उसने त्योरी चढ़ाकर कहा। "जब उसने कहा कि मैं भी चलती हूँ तो मुझे भी उतना ही आश्चर्य हुआ जितना स्ट्रू को। मैंने उससे कह दिया था कि जब मैं तुमसे उकता जाऊँगा तो तुम्हें मेरा साथ छोड़ना पड़ेगा और उसने इस शर्त को मान लिया था।" वह कुछ देर रुका। "वह एक अतिशय सुन्दर शरीर की मालिक थी और मैं उसका एक नग्न चित्र बनाना चाहता था। जब मैंने वह चित्र पूरा कर लिया तो मेरे लिए उसमें कोई दिलचस्पी बाक़ी न रही।"

"और वह दिलोजान से आप पर मरती थी।"

वह उठ खड़ा हुआ और उस छोटे-से कमरे में इधर से उधर टहलने लगा।

"मुझे प्रेम-व्रेम नहीं चाहिए। उसके लिए मेरे पास समय नहीं है। यह एक कमज़ोरी है। मै मर्द हूँ और मुझे कभी-कभी औरत की ज़रूरत पड़ती है। और जब मैं अपनी भूख मिटा चुकता हूँ तो दूसरे कामों की ओर प्रवृत्त हो जाता हूँ। मैं अपनी इच्छा पर नियंत्रण तो नहीं रख सकता लेकिन मुझे उससे नफ़रत है; वह मेरी आत्मा को बंदी बना देती है। मैं उस दिन की प्रतीक्षा में हूँ जब मैं संसार की तमाम इच्छाओं से मुक्त होकर, अबाध रूप से अपने कार्य में लीन हो सकूंगा। चूंकि औरतें सिवाय प्रेम के और कुछ नहीं कर सकतीं इसलिए उन्होंने उसे एक हास्यास्पद महत्त्व दे रखा है। वे हमें यह समझाना चाहती है कि प्रेम ही जीवन है। वह तो जीवन का एक महत्त्व-हीन भाग है। मैं विषय-सुख की इच्छा को जानता हूँ। वह एक सामान्य और स्वास्थ्यप्रद बात है। प्रेम एक रोग है। स्त्रियाँ हैं। मेरे आनन्द का साधन हैं। और उन्हें संगिनी, साथिन या अर्द्धांगिनी मानने का मैं क़ायल नहीं हूँ।"

मैंने स्ट्रिकलैण्ड को एक साथ इतना बोलते हुए कभी न सुना था। वह बड़े उत्साह और आवेश के साथ बोलता था। लेकिन न यहाँ और न कहीं और मैं उसके ठीक शब्द नहीं बता रहा हूँ क्योंकि उसका शब्द-भण्डार थोड़ा था और वाक्य बनाने का उसे कोई सलीक़ा न था; इसलिए श्रोता को उसके आश्चर्यसूचक शब्दों, चेहरे के भावों, भंगिमाओं और घिसे-पीटे मुहावरों से उसकी बातों का मक़सद समझना पड़ता था।

"आपको तो उस युग में पैदा होना चाहिए था जब नारी संपत्ति समझी जाती थी और पुरुष दासों के स्वामी होते थे," मैंने कहा।

"लेकिन बात यह है कि मैं पूरी तरह से एक सामान्य मनुष्य हूँ।"

उसकी इस गंभीर उक्ति पर मैं हँसे बिना न रह सका। लेकिन वह कमरे में एक क़ैद किए हुए जानवर की तरह टहलता रहा और जो कुछ उसे महसूस हो रहा था उसे व्यक्त करने की कोशिश करने लगा लेकिन अपने

विचारों को स्पष्टतया व्यक्त करने में उसे कठिनाई महसूस हो रही थी ।

"जब कोई स्त्री तुमसे प्रेम करती है तो जब तक तुम्हारी आत्मा उसे न मिल जाए वह संतुष्ट नहीं होती । क्योंकि वह कमज़ोर होती है इसलिए पुरुष पर हावी होने की उसमें एक उत्कण्ठा होती है और वह उससे कम पर किसी सूरत संतुष्ट नहीं होती । उसका ज़रा-सा दिमाग़ होता है और जिस आदर्श को प्राप्त करने में वह असमर्थ होती है उससे घृणा करने लगती है । वह भौतिक वस्तुओं में व्यस्त रहती है और आदर्श से वह द्वेष रखती है । मनुष्य की आत्मा संसार के ऊँचे-ऊँचे प्रदेशों में विचरण करती है और वह उसे अपनी हिसाब की किताब के दायरे में कैद करना चाहती है । मेरी पत्नी तुम्हें याद है ? मैंने देखा ब्लांच भी धीरे-धीरे वे ही चालें चल रही थी । उसने बड़े इत्मेनान से मुझे फाँसने और बन्द कर देने की तैयारी करली थी । वह मुझे अपनी सतह तक झुकाना चाहती थी, मेरी उसे रत्ती-भर परवाह न थी । वह तो सिर्फ यह चाहती थी कि मैं उसी का होकर रहूँ । वह मेरे लिए संसार की प्रत्येक बात कर सकती थी सिवाय उस बात के जो मैं चाहता था : मुझे अकेला छोड़ दे ।"

मैं कुछ देर चुप रहा ।

"जब आपने उसे छोड़ दिया तो आप उससे क्या आशा करते थे ?"

"वह फिर स्ट्रू के पास जा सकती थी," उसने चिढ़कर कहा । "वह उसे क़बूल करने के लिए तैयार था ।"

"आप इन्सान नहीं दरिंदे हैं," मैंने जवाब दिया । "आपसे इस विषय पर बातें करना भैंस के आगे बीन बजाना है ।"

वह टहलते-टहलते मेरी कुर्सी के सामने रुक गया और खड़े होकर ऐसे हाव-भाव से मुझे देखने लगा जिसमें मुझे एक तिरस्कृत विस्मय की झलक दिखाई दी ।

"ब्लांच स्ट्रू ज़िंदा है या मर गई क्या तुम्हें उसकी ज़रा बराबर भी चिंता है ?"

मैंने उसके प्रश्न पर विचार किया क्योंकि मैं पूरी सच्चाई और आत्मिकता के साथ उसका उत्तर देना चाहता था।

"अगर मुझे उसके जीवन या मृत्यु से कोई दिलचस्पी नहीं है तो यह मेरी सहृदयनुभूति की कमी है। उसे ज़िन्दगी में बहुत कुछ करना बाक़ी था। मेरे लिए तो उसका इस प्रकार उन तमाम सुखों से वंचित हो जाना एक भयंकर बात है और मुझे इस बात पर लज्जा आती है कि मुझे उससे कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"तुममें अपनी धारणाओं को व्यक्त करने का साहस भी नहीं है। जीवन का कोई मूल्य नहीं होता। ब्लांच स्ट्रू ने इसलिए आत्म-हत्या नहीं की क्योंकि मैंने उसे त्याग दिया था बल्कि इसलिए कि वह मूर्ख थी और उसका मस्तिष्क असंतुलित था। लेकिन हमने उसके बारे में बहुत बातें करलीं। वह वास्तव में बहुत महत्त्वपूर्ण स्त्री थी। चलो मैं तुम्हें अपने चित्र दिखाऊँ।"

उसने यह इस प्रकार कहा जैसे मैं बच्चा हूँ और वह मुझे बहला रहा हो। मुझे बड़ा क्रोध आ रहा था, उस पर कम बल्कि अपने ऊपर अधिक। मैंने उस सुखी दम्पत्ति—स्ट्रू और उसकी पत्नी के मॉण्टमार्च में स्थित स्टूडियो के सुखमय जीवन का स्मरण किया—वे कितने सादगी-पसंद, दयालु और आतिथ्यपरायण थे। मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि उनका वह सुखमय जीवन एक निर्मम थपेड़े से चूर-चूर हो गया लेकिन सबसे अधिक क्रूर और निर्मम बात तो यह थी कि उनके जीवन और मृत्यु में किसी को कोई दिलचस्पी नहीं थी। दुनिया का कारोबार उसी प्रकार चलता रहा और उस दुर्घटना का किसी पर कोई कुप्रभाव न पड़ा। मेरा खयाल था कि डर्क जो अत्यंत भावुक था पर जिसके विचारों में गहराई न थी, शीघ्र ही यह दुःख भूल जायगा और समझ लेगा कि ब्लांच का जीवन जो कौन जाने किन उज्ज्वल आशाओं और किन सुखद सपनों को लेकर आरम्भ हुआ था शायद कभी उसके सामने बीता ही न था। अब वह सब निरर्थक और मूर्खतापूर्ण था।

स्ट्रिकलैण्ड ने अपना हैट उठाया और खड़ा हुआ मुझे देखने लगा।

"क्या तुम चल रहे हो ?"

"आप मेरा साथ क्यों चाहते हैं ?" मैंने उससे पूछा। "आपको तो मालूम है मैं आपसे घृणा करता हूँ और आपकी सूरत तक देखना पसन्द नहीं करता।"

वह प्रमुदित हो खिलाखिला पड़ा।

"तुमसे मेरा झगड़ा सिर्फ इस बात पर है कि तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो इसकी मैं रत्ती भर परवाह नहीं करता।"

मुझे महसूस हुआ कि मेरे गाल ग़ुस्से से सहसा लाल हो गये हैं। उसे यह समझाना असंभव था कि कोई व्यक्ति तुम्हारी परले दर्जे की स्वार्थपरता से भी तो क्रुद्ध हो सकता है। मेरी अभिलाषा थी कि मैं उसकी घोर लापरवाही के कवच को किसी प्रकार बेध दूँ। मैं यह भी जानता था कि अंत में उसने जो कुछ कहा था वह सच है। शायद अनजाने ही हम उन लोगों से प्रेम करते हैं जो हमारी उनके बारे में व्यक्त राय का आदर करते हैं और उन लोगों से घृणा करते हैं जिन पर हमारा कोई प्रभाव नहीं होता। मेरे विचार में यही मनुष्य के गर्व को सबसे भारी घाव पहुँचाना है। लेकिन मैं उसे यह नहीं प्रकट करना चाहता था कि मैं विचलित हो गया हूँ।

"क्या किसी व्यक्ति के लिए यह संभव है कि वह दूसरों का बिल्कुल सम्मान न करे ?" मैंने कहा और इस तरह जैसे उससे कम और खुद ही से अधिक कह रहा हूँ। "दुनिया की हर जरूरी चीज के लिए आप दूसरों पर निर्भर रहते हैं। सिर्फ स्वयं जीना और अपने लिए ही जीना बहुत हास्यास्पद बात है। आज नहीं तो कल आप बीमार हो जायेंगे, थक जायेंगे और बुढ़ापा आपको आ घेरेगा और तब आप खुद ही रेंगते-सरकते जन-समूह में आ मिलेंगे। जब आप दिल में सुख और सहानुभूति की आकांक्षा अनुभव करेंगे तो क्या आपको लज्जा नहीं आयेगी ? आप एक असंभव और दुःसाध्य बात करने की चेष्टा कर रहे हैं। देर सवेरे ही आपके अंदर वर्तमान मानव इन्सानियत की सामान्य मर्यादाओं की आकांक्षा करेगा।"

"चलो मेरे चित्र देखो।"

"आपने कभी मौत के बारे में भी सोचा है ?"

"क्या ज़रूरत है ? उससे फ़र्क़ ही क्या पड़ता ?"

मैंने उसकी ओर घूर कर देखा। वह मेरे सम्मुख निश्चल खड़ा था और उसकी आँखों की मुस्कान मेरा उपहास कर रही थी और उस सब के बावजूद क्षण भर के लिए मुझे एक सबल किन्तु उत्पीड़ित आत्मा का आभास हुआ जो मानव की कल्पना से भी महानतर कुछ प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थी। मुझे उस आत्मा की हल्की-सी झलक दिखाई दी जो किसी अकथनीय उपलब्धि के लिए सचेष्ट थी। मैंने अपने सामने खड़े व्यक्ति की ओर देखा जो भद्दे-से वस्त्र पहने हुए था, उसकी बड़ी नाक, चमकदार आँखें, लाल दाढ़ी और बिखरे हुए बाल सब कुछ देखकर मुझे एक विचित्र अनुभव हुआ कि मेरे सामने केवल आवरण खड़ा है और उसके अंदर की आत्मा समाप्त हो चुकी हो।

"चलिए आपके चित्र भी देख लें," मैंने कहा।

४२

मैं न समझ सका कि आख़िर इस प्रकार स्ट्रिकलैण्ड सहसा मुझे अपने चित्र बताने के लिए क्यों तैयार हो गया। मैंने उस सुअवसर का स्वागत किया। मनुष्य का कार्य ही उसकी प्रवृत्तियों का द्योतक होता है। सामाजिक सम्पर्क में तो वह आपको केवल अपनी ऊपरी सतह ही प्रदान करता है जिसे संसार देख सके और यदि आप उसके बारे में असल बातें जानना चाहते हैं तो वे तभी जान

सकते हैं जब उसकी उन छोटी-छोटी बातों से अनुमान लगायें जो वह अनजाने कर बैठता है और उसके चेहरे के उन सरसरी हावभावों को देखें जिनका उसे ज्ञान नहीं होता। कुछ लोग अपने बाह्य दर्शन को या कृत्रिम झिल्ली को जो वह अपने ऊपर लगा लेते हैं इतनी परिपूर्ण बना लेते हैं कि उनकी बाहरी और अंदरी वृत्ति में कोई अंतर नहीं रहता और वे जैसे दिखाई देते हैं वैसा ही अपने को अंदर से भी बना लेते हैं। लेकिन उसकी पुस्तक या चित्र में वही व्यक्ति अपने वास्तविक रूप में हमारे सामने आ जाता है। उसका आडम्बर तब केवल अपना खोखलापन ही प्रकट करता है। तख्ते की पट्टी को यदि पेण्ट करके लोहे की-सी बना दी जाय तो वह लगेगी तख्ते की पट्टी ही। वैचित्र्य का कोई आडम्बर आम दिमाग़ को नहीं छिपा सकता। लेकिन सूक्ष्म पर्यवेक्षक के सम्मुख कोई भी व्यक्ति अपनी सामान्यतम कृति अपनी आत्मा के सबसे भीतर के रहस्यों को उसमें व्यक्त किए बिना नहीं प्रस्तुत कर सकता।

जब मैं स्ट्रिकलैण्ड के मकान के लम्बे जीने पर चढ़ने लगा तो मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं किंचित उत्तेजित हो गया। मुझे अनुभव हुआ जैसे मैं किसी आश्चर्य-जनक साहसिक कार्य की देहलीज़ पर खड़ा हूँ। मैंने बड़ी उत्सुकता से कमरे को देखा। वह पहले वाले से कहीं छोटा और खाली था। मैं सोचने लगा कि मेरे दोस्त जो बड़े लम्बे-चौड़े स्टूडियो माँगते हैं और कहते हैं कि जब तक उनकी मन-पसंद स्थितियाँ न हों। वे काम नहीं कर सकते, यदि इस स्टूडियो को देखें तो क्या कहें।

"तुम वहाँ खड़े रहो," उसने एक स्थान की ओर संकेत करते हुए कहा जिससे मैंने अनुमान लगाया कि शायद वह चाहता था यदि मैं उस स्थान पर खड़े होकर उसके चित्र देखूँगा तो ठीक से उन्हें समझ पाऊँगा।

"आप मुझे बोलने भी देंगे या नहीं ?" मैंने कहा।

"नहीं, मैं चाहता हूँ तुम बिल्कुल ख़ामोश रहो।"

उसने एक चित्र ईजल पर रखा और दो-तीन मिनट तक मुझे दिखाया

फिर उसे उतार लिया और दूसरा चित्र वहाँ रख दिया। मैं समझता हूँ उसने मुझे लगभग तीस कैनवास दिखाए। वह सब उसके छः वर्ष के परिश्रम का फल था। कोई चित्र उसने बेचा नहीं था। कैनवास सब विविध साइज़ के थे। छोटे-छोटे कैनवासों पर बर्तन, फल आदि बने हुए थे और बड़ों पर प्राकृतिक दृश्य बने हुए थे। कोई आधा दर्जन चित्रों में मनुष्यों के चेहरे बने हुए थे।

"बस यही सब कुछ है," उसने अंततः कहा।

काश मैं उससे यह कह सकता कि मैंने चित्रों की सुन्दरता और उनकी महान् मौलिकता स्वीकार करली है। अब चूंकि मैंने उनमें से बहुत-से देख लिये हैं और बाकी जो दुबारा बनाये गये हैं वे मुझे याद हैं तो मुझे आश्चर्य होता है कि मैं पहले उन्हें देखकर बुरी तरह निराश हुआ था। कला-कृतियाँ देखकर आदमी आमतौर पर असाधारणतया उत्तेजित हो जाते हैं लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ स्ट्रिकलैण्ड के चित्रों के प्रभाव ने मुझे उलझन में डाल दिया था और मुझे आज तक इस बात का मलाल है कि मैंने उसका एक चित्र भी खरीदने का विचार नहीं किया। मैंने वास्तव में एक महान् अवसर हाथ से गँवा दिया। उन में से अधिकाँश चित्र तो अजायब घरों में पहुँच गये हैं और बाक़ी धनवान कला-प्रेमियों के घरों की सजावट बने हुए हैं। अब मैं अपनी उस कोताही के लिए बहाने तलाश करने की कोशिश करता हूँ। मैं समझता हूँ मेरी रुचि अच्छी है लेकिन इस बात का भी एहसास है कि मेरी रुचि में कोई मौलिकता नहीं है। चित्रकारी के बारे में मुझे बहुत कम ज्ञान है और मैं तो दूसरों के छोड़े हुए पद-चिन्हों पर चलता हूँ। उस ज़माने में मैं इम्प्रेशनिस्टों का बड़ा प्रशंसक था। मेरी हार्दिक अभिलाषा थी कि मेरे यहाँ सिसली और देगा का कोई चित्र होता और माने*की तो मैं पूजा करता था। उसका चित्र ओलिम्पिया मेरी नजर में आधुनिक युग का महानतम चित्र था और ग्रास-आशन ने मुझ पर महान् प्रभाव डाला था। वे कृतियाँ मुझे चित्र-कला में अंतिम शब्द लगती थीं।

*फ्रांसीसी चित्रकार।

मैं उन चित्रों के बारे में कुछ नहीं कहूँगा जो स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे दिखाये थे। चित्रों का वर्णन सर्वदा नीरस होता है और वे लोग जो ऐसी चीजों में दिलचस्पी लेते है इन बातों को बखूबी जानते हैं। लेकिन अब चूँकि आधुनिक चित्रकला पर उसका बहुत गहरा प्रभाव है और अब चूँकि दूसरे लोग भी उस देश को महत्व देने लगे हैं जिसे उसी ने सर्वप्रथम खोजा था तो उसके चित्रों को पहली बार देखकर लोग चौंकेंगे नहीं लेकिन मुझे याद है कि मैंने ऐसी कोई चीज महसूस नहीं की थी। सब से पहले तो मैं उसकी शैली के भद्देपन को देखकर चकित हुआ था। चूँकि मुझे प्राचीन गुरुओं के ड्राइँग की आदत थी और मैं समझता था कि ईंग्रे आधुनिक युग का महानतम ड्राफ्ट्समैन था इसलिए मैं स्ट्रिकलैण्ड के ड्राइंग को बुरा समझता था। वह जिस सुगमकला की ओर प्रवृत्त था उसका मुझे कोई ज्ञान न था। मुझे उसका एक स्टिललाइफ (फलादिका चित्र) याद है जिसमें एक प्लेट पर नारंगियाँ रखी हुई थीं और मुझे उलझन हुई क्योंकि वह प्लेट गोल न थी और नारंगिया एक ओर को अधिक झुकी हुई थीं। पोर्ट्रेट (चेहरे का चित्र) मनुष्य की साइज से कुछ बड़े थे इसलिए कुछ भद्दे लगते थे। मेरी आँखों को तो वे चेहरे व्यंग्य चित्र जैसे लगे। क्योंकि वे ऐसी शैली में बनाये गये थे जो हमारे लिए सर्वथा नई थी। और प्राकृतिक दृश्यों ने तो मुझे और अधिक उलझन में डाल दिया था। दो चित्र तो फौंटन ब्लू के जंगलों के थे और कई पेरिस की सड़कों के : उन्हें देखकर मुझे महसूस हुआ था कि उन्हें किसी मद्यप टैक्सी ड्राइवर ने बनाया होगा। मैं तो उन्हें देख कर बिल्कुल घबड़ा गया। रंग मुझे असाधारण रूप से भद्दे लगे। मेरे दिमाग में यह बात जम गई कि उसके सारे चित्र अद्भुत और अबोध तमाशा थे। अब जब मैं पुराने दिन याद करता हूँ तो मुझ पर स्ट्रू की सूक्ष्मता बहुत अधिक प्रभावक नजर आती है। उसने ही पहले-पहल यह कहा था कि स्ट्रिकलैण्ड ने चित्रकला में क्रांति पैदा कर दी है और उसने उसकी मेधा को जिसे संसार ने अब स्वीकार किया है उसके आरम्भ में ही स्वीकार कर लिया था।

लेकिन हालाँकि मैं उलझन में भी पड़ा और घबराया भी फिर भी उससे प्रभावित हुए बिना कभी न रहा। और मैं अपने महान् अज्ञान के बावजूद यह अनुभव किये बिना नहीं रह सका कि उसमें अपनी कला-अभिव्यक्ति की वास्तविक शक्ति मौजूद थी। मैं उससे उत्तेजित भी हुआ और वह रोचक भी लगा। मैंने महसूस किया कि ये चित्र मुझे कोई ऐसी बात बताना चाहते हैं जो मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है लेकिन मैं यह नहीं कह सकता था कि वह क्या थीं। वे मुझे बड़े भद्दे और कुरूप लगते थे लेकिन उनसे किसी महान् महत्त्व का आभास नहीं मिलता था। वे विचित्र रूप से तरसाने वाले दीखते थे। उन्हें देखकर मुझे जो भाव पैदा होता था मैं उसका विश्लेषण नहीं कर सकता था। वे कुछ ऐसी बात व्यक्त करते थे जिसे शब्दों द्वारा दोहराना असंभव था। मैंने कल्पना की कि स्ट्रिकलैण्ड ने भौतिक वस्तुओं में भी कुछ अस्पष्ट तथा आध्यात्मिक अर्थ निकाला था जो इतना विचित्र था कि वह उसका आभास केवल स्थूल प्रतीकों के ज़रिये ही करा सकता था। ऐसा लगता था जैसे उसने संसार की अव्यवस्था में कोई नया आकार देखा हो और अपनी आत्मा की कसक के साथ वह फूहड़पन से उसे चित्रित कर रहा हो। मैंने एक संतप्त आत्मा का अनुभव किया जो चित्रण और अभिव्यक्ति के लिए लालायित थी।

मैं उससे मुख़ातिब हुआ।

"कहीं आपने अपने माध्यम में ग़लती तो नहीं की ?" मैंने कहा।

"क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"मैं समझता हूँ आप जो कुछ कहना चाहते हैं; क्या कहना चाहते हैं यह मैं नहीं जानता लेकिन यह जरूर कह सकता हूँ कि उसे कहने के लिए चित्रकारी ही श्रेष्ट माध्यम नहीं है।"

जब मैंने यह कल्पना की थी कि मुझे उसके चित्र देख कर उसके विचित्र चरित्रको समझने में सहायता मिलेगी तो वह मेरी ग़लती थी। उन्होंने तो दर असल मेरा विस्मय और भी बढ़ा दिया। मैं पहले से भी उलझन में पड़ गया। जो

चीज मुझे स्पष्ट लगती थी—और शायद वह भी काल्पनिक ही थी—वह यह थी कि वह किसी ऐसी शक्ति से मुक्त होने के लिए यत्नशील था जिसने उसे दबोच रखा था। लेकिन वह शक्ति कौन सी थी और मुक्ति पाकर वह किस ओर प्रवृत्त होगा यह सब अज्ञात था। हम में से प्रत्येक व्यक्ति संसार में अकेला है। वह पीतल के एक क़िले में बन्द है और अपने साथियों से केवल संकेतों द्वारा वार्तालाप कर सकता है और उन संकेतों का कोई सामान्य मूल्य नहीं इसलिए उनका तात्पर्य अस्पष्ट और अनिश्चित है। हम तो दूसरों की दयालुता के सम्मुख अपने हृदय के भण्डार प्रस्तुत करना चाहते हैं लेकिन उनमें उन्हें स्वीकार करने की शक्ति नहीं है इसलिए हम अकेले चलते हैं; वे हमारे आस-पास तो होते हैं लेकिन साथ नहीं क्योंकि न अपने भाइयों को वे जानते हैं और न उन्हें उनके भाई पहचानते हैं। हम उन लोगों की तरह हैं जो जैसे देश में रहे हैं जिसकी भाषा का उन्हें इतना कम ज्ञान है कि यद्यपि उन्हें चीजों के कहने का बड़ा सुन्दर ढंग मालूम है लेकिन फिर भी वे निम्नतम श्रेणी के वार्तालाप पर विवश हो जाते हैं। उनके मस्तिष्क में विचारों की बहुलता है लेकिन वे आपसे सिर्फ यही कह सकते हैं कि मालिक की चाची की छतरी मकान के अंदर रखी है।

मुझ पर उसके चित्रों का जो अन्तिम प्रभाव पड़ा वह यह था कि वह अंतर आत्मा की स्थिति अभिव्यक्त करने के लिए भरसक यत्न कर रहा है और उसी अभिव्यक्ति में मैंने सोचा कि मैं अपनी उलझन का समाधान तलाश करूँ। यह स्पष्ट था कि स्ट्रिकलैण्ड रंगों और रूपों को महत्त्व देता था और उसके लिए वे विचित्र थे। वह एक असह्य आवश्यकता के अधीन था जो उसे उसकी अनु-भूतियों को दूसरों तक पहुँचाने के लिए बाध्य करती थी और वह उन्हें इसी मात्र उद्देश्य से चित्रित करता था। और जिस अज्ञात चीज़की प्राप्ति के लिए वह प्रयत्न करता था उस तक पहुँचने में यदि उसे उसके विकृत करने या सुगमतर करने की आवश्यकता पड़ती तो वह वैसा करने में ज़रा न झिझकता था।

तथ्यों का उसके लिए कोई महत्त्व न था क्योंकि अप्रासंगिक घटनाओं के नीचे दबी चीज़ों के ढेर में से भी वह अपने लिए महत्त्वपूर्ण चीज निकाल लेता था। ऐसा लगता था जैसे वह संसार की आत्मा से परिचित है और उसे व्यक्त करने के लिए विवश कर दिया गया है। यद्यपि इन चित्रों ने मुझे उलझन में और गड़बड़ में डाल दिया था फिर भी उनमें वर्तमान भावना से मैं प्रभावित हुए बिना न रह सका। और न जाने क्यों मैंने अपने दिल में ऐसा विचार किया जिसकी मुझे स्ट्रिकलैण्ड के बारे में सोचने की आशा न थी। मैं असीम करुणा से अभिभूत हो गया।

"मेरे खयाल से अब मैं समझ गया कि आपने ब्लांच स्ट्रू के सम्मुख क्यों समर्पण कर दिया था ?" मैंने उससे कहा।

"क्यों ?"

"मैं समझता हूँ आपकी हिम्मत टूट गई। आपके शरीर की निर्बलता आपकी आत्मा तक पहुँच गई। मैं नहीं जानता आपकी क्या निःसीम आकांक्षाएं हैं जिन्होंने आपको किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एक खतरनाक, एकाकी तलाश पर बाध्य कर दिया जहाँ पहुँचकर आप अपनी उस शक्ति की क़ैद से छूटने की आशा रखते हैं जो आपको प्रताड़ित किये हुए है। मैं समझता हूँ आप एक चिरंतन तीर्थयात्री हैं जो उस तीर्थ की तलाश में हैं जिसका शायद कहीं अस्तित्व ही नहीं है। न जाने आप किस अगाध निर्वाण के लिए यत्नशील हैं। क्या आप स्वयं भी जानते हैं ? शायद सत्य और मुक्ति की आप खोज कर रहे हैं और कुछ क्षण के लिए आप यह समझ बैठे थे कि संभव है प्रेम ही में आप को मुक्ति मिल जाय। मेरे ख्याल में आपकी शांत आत्मा किसी स्त्री की बाहों में जाकर विश्राम करना चाहती थी और जब वहाँ आपको कोई आराम न मिल सका तो आप उससे घृणा करने लगे। आपके हृदय में उसके लिए कोई दया नहीं थी क्योंकि आपमें अपने लिए भी कोई दया नहीं है। और आपने भय के कारण उसे मार डाला क्योंकि जिस भय से आप बाल-बाल बच गये थे उसका विचार आप में अब भी कँप-कँपी पैदा कर रहा था।"

वह रूखेपन से मुस्कराया और अपनी दाढ़ी खींचने लगा।

"अरे मेरे दोस्त, तुम बड़े भयंकर भावुक व्यक्ति हो।"

एक सप्ताह बाद मैंने सहसा सुना कि स्ट्रिकलैण्ड मार्सेय चला गया है। और उसके बाद मैं कभी उससे नहीं मिला।

४३

पीछे की ओर जब मैं देखता हूँ तो मुझे एहसास होता है कि मैंने स्ट्रिकलैण्ड के बारे में जो कुछ लिखा है वह असंतोषजनक प्रतीत होगा। मैंने उन घटनाओं का उल्लेख कर दिया है जिन्हें मैं जानता था लेकिन वे अब भी दुर्बोध ही हैं क्योंकि मुझे उनके कारणों का ज्ञान नहीं है। स्ट्रिकलैण्ड का चित्रकार बनने का संकल्प भी एक विचित्रतम बात थी जो उसकी स्वेच्छा पर आधारित थी; और यद्यपि उसके जीवन की परिस्थितियाँ उस संकल्प का कारण होंगी लेकिन मैं उनके बारे में कुछ नहीं जानता। उसके वार्तालाप से मैं कोई अनुमान न लगा सका। यदि मैं इन तथ्यों के वर्णन की बजाय इस विचित्र और रोचक व्यक्ति के बारे में कोई उपन्यास लिखता तो मैं उसके हृदय--परिवर्तन के लिए काफी दलीलें और कारण खोज लेता। मैं समझता हूँ मैं यह प्रकट करता कि लड़कपन में उसकी इस ओर अभिरुचि थी जिसे उसके पिता की वसीयत ने दबा दिया था या जीविकोपार्जन की आवश्यकता ने उसे अपनी रुचि की बलि करने पर विवश कर दिया था; मैं उसे जीवन के निषेधों के प्रति

असंतुष्ट चित्रित करता और कला के लिए उसकी उत्कण्ठा तथा गृहस्थी के कर्त्तव्यों के बीच उसका संघर्ष दिखाकर मैं उसके प्रति सहानुभूति उत्पन्न कर सकता था। और इस प्रकार मैं उसे अधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व प्रदान करता। शायद उसके व्यक्तित्व में एक नये प्रामेथ्यूज़ को देखना संभव था। यहाँ शायद उस हीरो के आधुनिक संस्करण का अवसर था जिसने मानवता की भलाई के लिए कष्ट भोगे और अपनी बलि दी थी। यह सर्वदा एक मार्मिक विषय होता है।

बल्कि इस सबके विपरीत मैं उसके उन लक्ष्यों का कारण उसके विवाहित सम्बन्ध के उस पर पड़े प्रभाव में तलाश करता। और ऐसा करने के बीसियों तरीक़े हैं। जिन लेखकों और चित्रकारों की संगति में उसकी पत्नी रहती थी और जिनसे उसका परिचय होता था उससे भी उसकी प्रवृत्ति, जो सुप्तावस्था में थी, जाग सकती थी; या गृहस्थी की अभिन्नता उसे उस ओर प्रवृत्त कर सकती थी। मैं उसके हृदय में एक ऐसी अग्नि को सुलगाता जिसे कोई प्रेम-व्यवहार भड़का सकता था। तो उस सूरत में मैं समझता हूँ मैं श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड का चरित्र भी और ही तरह चित्रित करता। मैं तथ्यों को छोड़ देता और उसे एक कष्टकर, थका देने वाली स्त्री या कोई धार्मिक रूप से कट्टर स्त्री बना देता जिसे शक्ति के लिए कोई सहानुभूति न होती। मैं स्ट्रिकलैण्ड के विवाहित जीवन को ऐसा कष्टकर चित्रित करता कि उसके लिए पलायन के अतिरिक्त कोई चाराकार न होता। मैं इस पर बल देता कि वह अपनी अनमेल संगिनी को सहन करता है, साथ ही उसकी दया जाहिर करता जिसने उसे अपने जुए को उतार फेंकने से, जिसने उसे पीड़ित कर रखा था, रोक दिया था।

एक प्रभावक कहानी इस प्रकार भी बनाई जा सकती थी कि उसे एक बूढ़े चित्रकार के सम्पर्क में लाया जाता जिसने व्यापारिक सफलता की आवश्यकता अथवा इच्छा के दबाव के कारण अपने यौवन की मेधा को नष्ट कर लिया था और जो स्ट्रिकलैण्ड में वे संभावनाएँ देखकर, जो उसने स्वयं नष्ट कर दी थीं

उसे प्रभावित करता और सर्वस्व त्याग कर कला की देवी कठोरता सहन करने के लिए उत्प्रेरित करता। तो मैं समझता हूँ कि उस सफल, सम्मानित तथा धनवान वृद्ध व्यक्ति का चित्रण कुछ व्यंग्यात्मक हो जाता जो दूसरे का जीवन जो उसे अधिक अच्छा लगता जीना तो चाहता था लेकिन उसे अपनाने की उसमें शक्ति न थी।

लेकिन जो तथ्य मैंने प्रस्तुत किये हैं वे कहीं अधिक नीरस हैं। स्ट्रिकलैण्ड स्कूल की शिक्षा समाप्त करके जब दल्लाली के कार्य में लगा तो उसे वह नापसंद न था। विवाह के पहले तक वह अपने साथियों की-सी साधारण ज़िन्दगी बसर करता रहा, एक्सचेंज पर जाकर वह थोड़ा-बहुत सट्टा खेलता और डर्बी, ऑक्सफोर्ड तथा केम्ब्रिज की घुड़ दौड़ों में दो-तीन पौण्ड तक लगा देता था। मैं समझता हूँ वह अपने अवकाश के समय में भी बहुत कम आमोद-प्रमोद करता था। उसकी चिमनीपीस पर श्रीमती लैंग्ट्री और मेरी एण्डरसन के चित्र लगे हुए थे। वह पञ्च और **स्पोर्टिंग टाइम्स** पढ़ा करता था। और हैम्पस्टेड में होने वाले नृत्यों में भी जाया करता था।

इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि मैंने काफ़ी अर्से तक उसे नज़रअंदाज़ किया। वे वर्ष जिनके दौरान में वह एक दुर्गम कला में प्रवीणता हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहा था बड़े उक्ताहटपूर्ण थे और मैं नहीं जानता कि जीविकोपार्जन के लिए उसे जो स्थान बदलने पड़े थे उनमें क्या महत्त्व था। उन स्थान-परिवर्तनों का वृत्तांत उन चीज़ों का वृत्तांत होगा जो उसने दूसरे लोगों पर घटित होते हुए देखी थीं। मैं नहीं समझता उनका उसके चरित्र पर कोई भी प्रभाव पड़ा होगा। उसे ऐसे अनुभव प्राप्त हुए होंगे जिनसे आधुनिक पेरिस के गुण्डों और बदमाशों पर यदि उपन्यास लिखा जाय तो काफ़ी सामग्री प्राप्त हो सकती है। लेकिन वह इन सबसे पृथक रहा था और उसकी बातचीत से यह मालूम होता था कि उन वर्षों में कोई ऐसी बात न हुई थी जिसका उस पर कोई विशेष प्रभाव पड़ता। शायद जब वह पेरिस गया था तो वहाँ के वातावरण की मनोहरता के प्रति मोहित होना उसकी जैसी अवस्था वाले के

लिए सम्भव न था। है यह भी अजीब ही लेकिन मानना पड़ता है कि मुझे वह हमेशा बड़ा व्यावहारिक और समझ-बूझ वाला व्यक्ति लगा। मेरा खयाल है कि उस समय के दौरान में उसका जीवन बड़ा रोमांटिक था लेकिन उसे उसमें कोई रोमांस न दिखाई दिया। शायद इसका यह कारण हो कि अपने अन्दर रोमांस का अनुभव करने के लिए आपके अन्दर अभिनेता के गुण होना आवश्यक है। और अपने से अलग होकर आपमें यह क्षमता होनी चाहिए कि आप अपने कार्यकलापों को एक साथ उनमें मिलकर और अलग होकर जाँच सकें। लेकिन स्ट्रिकलैण्ड से अधिक एकचित्त शायद ही कोई और व्यक्ति हो। न ही मैंने कोई और व्यक्ति ऐसा देखा है जो उससे कम आत्म-ज्ञानी हो। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि मैं उसकी उन दुष्कर अवस्थाओं का वर्णन नहीं कर सकता जिन्होंने उसे कला में निपुणता प्रदान की थी जो उसने अपने उद्यम द्वारा अर्जित की ; क्योंकि यदि मैं उसे ऐसा व्यक्ति चित्रित करता जो असफलता से निरुत्साह नहीं होता था, नितांत साहसी था और निराशा को अपने समीप न फटकने देता था; आत्म-संदेह जो कलाकार का घोर शत्रु होता है, के विरुद्ध भी वह निर्भीक हो अपने काम में तल्लीन रहता था तो मैं लोगों के हृदय में एक ऐसे व्यक्ति के लिए सहानुभूति उत्पन्न कर लेता जिसमें बजाहिर कोई आकर्षण न होता। लेकिन मेरे पास ऐसा करने के लिए कोई सामग्री ही नहीं। मैंने तो कभी एक बार भी स्ट्रिकलैण्ड को काम करते हुए न देखा और न ही मैं समझता हूँ किसी और ने देखा था। अपने संघर्षों का रहस्य उसने अपने तक ही सीमित रखा। यदि एकान्त में वह अपने स्टूडियो में भगवान के किसी देवता से द्वन्द्व करता था तो भी किसी व्यक्ति को उसके भावों का अनुमान लगाने का अवसर न देता था।

जब मैं उसके और ब्लांच स्ट्रू के सम्बन्धों पर आता हूँ तो मुझे उन तथ्यों के विछिन्न अंशों को देखकर पीड़ा होती है जो मेरे पास हैं। अपनी कहानी में सम्बद्धता लाने के लिए मुझे उनके दुःखद सहवास का वर्णन करना चाहिए लेकिन जिन तीन महीनों तक वे साथ रहे थे उनका मुझे कोई ज्ञान नहीं। न

मालूम वे किस प्रकार रहे और उन्होंने क्या बातें कीं। आखिर दिन भर में चौबीस घण्टे होते हैं और भावनाओं का चरमोत्कर्ष कहीं-कहीं ही हुआ करता है। मैं तो वे बाक़ी अवकाश किस प्रकार बिताते होंगे इसकी कल्पना-मात्र ही कर सकता हूँ। मेरा विचार है कि जब तक सूर्य का प्रकाश रहता था और ब्लांच की शक्ति साथ दे सकती थी, स्ट्रिकलैण्ड पेण्ट करता रहता होगा और जब वह उसे निरन्तर अपने कार्य में संलग्न देखती रहती होगी तो उसे बड़ी चिढ़ होती होगी और वह क्रोधित हो जाती होगी। उस समय वह उसे घर की स्वामिन के रूप में नहीं बल्कि मॉडेल के रूप में ही देखा करता था और उसके अलावा वे घण्टों साथ-साथ ख़ामोश रहते होंगे। ऐसा व्यवहार देखकर वह भयभीत होती होगी। जब स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे बताया कि ब्लॉच का मेरे सम्मुख समर्पण डर्क स्ट्रू पर उसकी विजय का आभास लिये हुए था क्योंकि उसने ब्लांच की कठिनाई में उसकी सहायता की थी तो मुझे इधर-उधर के अनेक अनुमान लगाने का अवसर मिल गया। मैं समझता हूँ उसने जो कुछ कहा था वह सत्य न होगा बल्कि मुझे तो वह बड़ा भयंकर प्रतीत हुआ। लेकिन मानव हृदय की सूक्ष्मता भला कौन नाप सकता है ? निश्चय ही वे लोग तो ऐसा कर ही नहीं सकते जो उससे केवल दिखावे की भावनाओं और सामान्य अनुभूतियों की अपेक्षा करते हैं। जब ब्लांच ने देखा होगा कि स्ट्रिकलैण्ड अपने उत्तेजना के क्षणों में भी उससे अलग-अलग ही रहता है तो उसे बड़ी निराशा और पीड़ा हुई होगी और उन क्षणों में भी मैं समझता हूँ कि वह यह अनुभव करती होगी कि वह एक व्यक्ति नहीं बल्कि उसके विलास की साधन मात्र है; वह अब भी उसके लिए अजनबी था और वह उसे अपनी करुणापूर्ण कलाओं से अपने प्रति आकृष्ट करना तथा उसे बाँध लेना चाहती थी। वह उसे आराम पहुँचाकर फँसाना चाहती थी और उसे इस बात का भान ही न था कि स्ट्रिकलैण्ड आराम को निरर्थक समझता है। वह तकलीफ़ उठाती और उसे उसके पसंदीदा खाने खिलाती लेकिन उसे यह पता ही न चला कि वह खाने के प्रति उदासीन रहता है। वह उसे अकेला छोड़ने में डरती थी। वह बड़ी सावधानी के साथ उसके

पीछे लगी रहती थी और जब उसकी वासना सुप्त हो जाती तो वह उसे जागृत करती थी क्योंकि उसे यह भ्रम था कि सम्भव है वैसी ही स्थिति में वह उसे अपने अधीन कर सके। शायद वह यह जानती थी कि जो बेड़ियाँ वह उसके लिए बिछा रही है वे स्ट्रिकलैण्ड की नाश की प्रवृत्ति को भड़काएँगी।

लेकिन उसका दिल जिसमें दिमाग़ का कोई दखल न था उसी मार्ग पर चलता रहा जो वह जानती थी कि नाशकारी है। वह शायद बहुत ही दुखी रही होगी। लेकिन प्रेम के अंधेपन ने उसे यह विश्वास करने पर बाध्य कर दिया था कि जो कुछ वह चाहती है वह सच है और उसका प्रेम इतना निस्सीम एवं महान् था कि उसे यह असम्भव प्रतीत हुआ कि उसका प्रेम बदले में समान प्रेम न प्राप्त कर लेगा।

लेकिन मैंने स्ट्रिकलैण्ड के चरित्र का जो अध्ययन किया है वह मेरे उन तथ्यों के अज्ञान से भी अधिक दोषपूर्ण है। चूँकि स्त्रियों से उसके सम्बन्ध स्पष्ट और प्रमुख थे इसलिए मैंने उनका उल्लेख कर दिया लेकिन फिर भी वे उसके जीवन का एक महत्त्वहीन भाग थे। यह एक विडम्बना है कि उसके उन सम्बन्धों ने दूसरों पर इतना दुःखदाई प्रभाव डाला। उसका वास्तविक जीवन तो सपनों एवं घोर उद्यमी कार्य से भरपूर था।

और यही कथा-साहित्य की अवास्तविकता है। क्योंकि यह नियम है कि मनुष्यों मे प्रेम उनके दैनंदिन कार्यों में एक घटना-मात्र का महत्त्व रखता है और उपन्यासों में उसको जो महत्त्व और बल दिया जाता है वह जीवन का सत्य नहीं है। ऐसे विरले ही होंगे जिनके लिए प्रेम संसार की सर्वाधिक महत्त्व की वस्तु है और वे बहुत अधिक रोचक नहीं हैं। यहाँ तक कि वे स्त्रियाँ भी जिनके लिए प्रेम ही सर्वोच्च रुचि का विषय है ऐसे पुरुषों से घृणा करती हैं। वे उनकी खुशामद और उत्तेजना के आगे घुटने तो जरूर टेक देती हैं लेकिन दिल में उनके यही विचार रहता है कि वे मनुष्य बड़े दयनीय हैं। लेकिन मनुष्य प्रेम आदि से निवृत्त हो अवकाश के समय अन्य काम भी करते हैं ताकि उनका मस्तिष्क कुछ बँटा रहे; जिन व्यापारों से उनकी जीविका चलती है

वे भी उन्हें व्यस्त रखते हैं। वे खेल-कूद में लीन हो जाते हैं या कलाओं में रुचि लेने लगते हैं। अधिकतर वे विभिन्न विषयों के लिए विभिन्न समय निश्चित करते हैं और वे नियमित रूप से एक-दूसरे को पूरा भी कर सकते हैं। उनमें एकाग्रचित्तता होती है जो उन्हें एक नियत कार्य में लगाये रखती है और यदि उनके कार्य में गड़बड़ या अव्यवस्था हो जाती है तो उन्हें कष्ट होता है। पुरुष और स्त्री प्रेमियों में केवल यह अन्तर होता है कि स्त्रियाँ दिन भर प्रेम कर सकती हैं किन्तु पुरुष केवल कभी-कभी।

स्ट्रिकलैण्ड के लिए विषय-वासना की भूख का बहुत ही कम महत्व था। बल्कि वह उसे महत्व देता ही न था। वह उसे कष्ट देती थी, उसकी आत्मा किसी और ही चीज़ के लिए लालायित थी। उसके अन्दर भयंकर वासना थी और कभी-कभी वह इच्छा से ऐसा परास्त हो जाता था कि विषय-सुख की खिड़की की ओर चला जाता था लेकिन उसे उन वृत्तियों से घृणा थी जो उसे अपने आत्म-संयम से वंचित कर देती थीं। मेरे ख़याल से तो वह अपने व्यभिचार में आवश्यक साथिन से भी घृणा करता था। जब वह अपने नियंत्रण को पुर्न-प्राप्त कर लेता तो जिस स्त्री से वह संभोग कर चुका होता उसे देखते ही काँपने लगता था। उस समय उसके विचार प्रसन्न हो स्वर्ग में विचरण करने लगते और वह उसे देखकर उसी प्रकार की घृणा अनुभव करता जिस प्रकार रंग-बिरंगी तितली फूलों के इर्द-गिर्द चक्कर काटती हुई उस अवस्था को देख कर जिसमें उसके पर नहीं थे, घृणा अनुभव करती है। मेरा विचार है कि कला वासना सम्बन्धी वृत्ति का प्रदर्शन-मात्र होती है। वह वही भावना होती है जो किसी सुन्दर स्त्री को देखकर मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होती है, या पीले चन्द्रमा की चाँदनी में नेपल्स की खाड़ी देखकर होती है या टिटियन की क़ब्र देखकर होती है। यह सम्भव है कि स्ट्रिकलैण्ड को वासना की सामान्य तुष्टि से इसलिए घृणा थी क्योंकि कलापूर्ण सृजन की संतुष्टि की तुलना में वह कार्य उसे बड़ा पाश्विक लगता था। एक ऐसे व्यक्ति को जिसे मैंने क्रूर, स्वार्थी, पाश्विक और कामी चित्रित किया है। यदि मैं आदर्शवादी की संज्ञा दूँ तो

मुझे स्वयं बड़ा विचित्र महसूस होता है। लेकिन तथ्य तथ्य ही है।

वह तो एक राज-मजदूर से भी अधिक दरिद्र था। वह उससे अधिक परिश्रमी भी था। उन वस्तुओं की जो अधिकांश लोगों के विचार में जीवन को अधिक सुन्दर और आकर्षक बनाती हैं वह जरा परवाह न करता था। धन से उसे कोई दिलचस्पी न थी। ख्याति के प्रति वह उदासीन था। आप उसकी प्रशंसा नहीं करेंगे क्योंकि उसने ऐसे किसी लालच या लोभ से समझौता नहीं किया था जिसके सामने हममें से अधिकांश घुटने टेक देते हैं। उसे ऐसा कोई लालच न था। उसके मस्तिष्क में यह बात आई ही न थी कि उनसे समझौता सम्भव है। थेबिस के रेगिस्तान में रहने वाले सन्यासी से भी अधिक दरिद्रता में वह पेरिस में रहता था। वह अपने साथियों से यदि कुछ माँगता था तो यह कि वे उसे अकेला छोड़ दें। वह अपने लक्ष्य में एकचित्त था और उसे प्राप्त करने के लिए वह न केवल अपने को—यह तो अनेक कर सकते हैं—बल्कि दूसरों को भी बलिदान करने के लिए तैयार था। उसकी एक विशेष कल्पना थी।

स्ट्रिकलैण्ड एक घिनौना व्यक्ति था लेकिन मैं अब भी समझता हूँ कि वह बहुत महान् था।

४४

चित्रकारों की कला-सम्बन्धी विचारधाराएँ भी अपना विशेष महत्त्व रखती हैं और यही स्वाभाविक प्रकरण है जहाँ मैं स्ट्रिकलैण्ड की अतीत के महान्

कलाकारों के प्रति क्या राय थी यह बता सकता हूँ। मुझे अंदेशा है कि मैं इस सिलसिले में जो कुछ जानता हूँ उसमें महत्त्वपूर्ण बातें बहुत कम हैं। स्ट्रिकलैण्ड अच्छा बोलने वाला न था और उसे जो कुछ कहना होता था उसे किसी विशिष्ट शब्द या मुहाविरे में व्यक्त करना जिसे श्रोता याद रखे वह नहीं जानता था। उसमें विनोदप्रियता नाम को न थी। उसका विनोद जैसा कि आपने देखा होगा यदि मैं उसके बातचीत के ढंग को सही तौर पर दोहराने में सफल हुआ हूँ तो कहना चाहिए कि वह तिरस्कारपूर्ण था। उसका व्यंग्य बड़ा अशिष्ट होता था। कभी-कभी वह सच बोलकर भी लोगों को हँसा देता था लेकिन यह ऐसा विनोद है जो अनायास ही फूट निकलता है; यदि उसे आमतौर पर इस्तेमाल किया जाय तो उसका हँसाने या मनोरंजन करने का पहलू समाप्त हो जाता है।

मैं कहता हूँ स्ट्रिकलैण्ड कोई असाधारण बुद्धिमत्ता न रखता था और चित्रकला पर उसके विचार भी साधारण ही-से थे। मैने उसे कभी उन चित्र-कारों का ज़िक्र करते नहीं सुना जिनकी कृतियों में साम्य पाया जाता है मसलन सेज़ान या वाँग गॉघ; और मुझे तो शक है कि उसने कभी उनके चित्र भी देखे होंगे या नहीं। इम्प्रेशनिस्टों में उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी। उनकी शैली ने तो उसे प्रभावित किया लेकिन शायद उनका दृष्टिकोण उसे मामूली जान पड़ा। जब स्ट्रू मोने की श्रेष्ठता पर लम्बा-सा भाषण दे रहा था तो उसने कहा: "मैं तो विटंरहाल्टर को तरजीह देता हूँ।" लेकिन मेरे खयाल से वह ऐसा स्ट्रू को क्रोध दिलाने के लिए कहता था और यदि वास्तव में वह इसी उद्देश्य से कहता था तो वह उसमें सफल भी हो जाता था।

मुझे निराशा होती है कि प्राचीन गुरुओं के लिए उसकी रायों की अतिशयता का मैं यहाँ वर्णन नहीं कर सकता। उसके चरित्र में इतनी कुछ विचित्रता है कि मैं महसूस करता हूँ कि अगर उसके विचार विछृंखल होते तो उसका चित्र पूरा हो जाता। मैं महसूस करता हूँ कि उसके पूर्ववर्त्ती चित्रकारों के बारे में हास्यास्पद सिद्धान्तों से वह प्रभावित था और यह मेरे

लिए कुछ भ्रमनिवारक बात है कि मुझे यह स्वीकार करना पड़ता है कि वह उनके बारे में वैसे ही सोचता था जैसा कि अन्य सभी लोग सोचते हैं। मुझे विश्वास है कि वह एलग्रेसो से परिचित नहीं था। वह वेलास्क्वे की बड़ी बेसब्री से प्रशंसा करता था। चार्डिन के चित्रों में उसे आनन्द आता था और रेम्ब्राँ तो उसे आह्लाद से भर देता था। रेम्ब्राँ का जो उस पर प्रभाव पड़ा था उसे उसने मेरे सामने ऐसे भद्दे अंदाज में बताया था कि मैं उसे यहाँ दोहरा नहीं सकता। जिस चित्रकार में उसे अप्रत्याशित रूप से महान् रुचि थी वह था बड़ा ब्रुघेल। मैं उस समय उसके बारे में बहुत कम जानता था और इस्ट्रिकलैण्ड में तनी शक्ति न थी कि मुझे उसकी चित्रकला समझा सकता। उसने उसके बारे में मुझे जो कुछ बताया था वह मुझे याद है क्योंकि वह मेरे लिए बहुत असंतोषजनक था।

"वह बिल्कुल ठीक है," स्ट्रिकलैण्ड ने कहा, "मैं शर्तिया कहता हूँ कि उसे पेण्ट करने में बड़ी मुसीबतें झेलना पड़ती थीं।"

बाद में जब वियाना में मैंने पीटर ब्रुघेल के कई चित्र देखे तब मेरी समझ में यह आया कि स्ट्रिकलैण्ड उसकी ओर क्यों आकृष्ट हुआ था। वह भी ऐसा ही व्यक्ति था जिसकी संसार के बारे में कल्पना बड़ी विचित्र थी। मैंने उसके बारे में बहुत-से नोट लिखे क्योंकि उस समय मैं उस पर लेख लिखना चाहता था, लेकिन वे सब खो गये हैं और मेरे मस्तिष्क में बस अब उन भावनाओं की स्मृति-मात्र रह गई है। वह मनुष्यों को एक अद्‌भुत ढंग से देखा करता था और उन पर उसे इसलिए क्रोध आता था क्योंकि वे उसे अद्‌भुत दिखाई देते थे। जीवन हास्यास्पद तथा दुःखदायी घटनाओं का मिश्रण था जो कि हँसी के लिए एक समुचित विषय होता है लेकिन फिर भी वह हँसकर दुःखी होता था। ब्रुघेल का मुझ पर यही असर पड़ा कि वह अपनी अनुभूतियों को एक ही माध्यम से अभिव्यक्त करने का यत्न करता था यद्यपि वे दूसरे माध्यम में ही व्यक्त होने के लिए उपयुक्त थे और हो सकता है कि इसी बात के अस्पष्ट ज्ञान ने स्ट्रिकलैण्ड की सहानुभूति को उत्तेजित किया था। शायद दोनों वे विचार चित्रों द्वारा

व्यक्त कर रहे थे जो साहित्य के लिए अधिक उपयुक्त थे ।

उस समय स्ट्रिकलैण्ड की अवस्था लगभग ४७ वर्ष की होगी ।

४५

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि यदि मैं संयोगवश टाहिटी न जाता तो निश्चय ही यह पुस्तक कभी न लिखता । यही वह स्थान था जहाँ चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड अनेक जगहों पर घूमता-भटकता आया था और यहीं उसने वे चित्र सृजन किये जिन पर मुख्यतया उसकी ख्याति आधारित है । मैं समझता हूँ कि कोई भी कलाकार अपने स्वप्न को जो उसे अनुप्राणित तथा अनुप्रेरित करता है पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर सकता ; और स्ट्रिकलैण्ड जो अबाध रूप से अपनी शैली से संघर्ष करता रहा था, अपनी उस कल्पना को जिसे उसने अपने मानसिक-नेत्रों से देखा था, दूसरों से कुछ कम ही सही अभिव्यक्त करने में सफल हुआ था ; लेकिन टाहिटी में परिस्थितियाँ उसके अनुकूल थीं ; वहाँ के वातावरण में उसे दुर्घटनाएँ पेश आईं जिन्होंने उसे प्रोत्साहन दिया और उसकी कला अधिक प्रभावक बनी तथा उसके बाद के चित्रों से कम-से-कम उस चीज़ का आभास मिला जिसकी प्राप्ति के लिए वह प्रयत्नशील था । उन्हें देखकर कल्पना को कुछ नवीन तथा विचित्र विचार प्राप्त होते हैं । ऐसा लगता है कि इस दूरस्थ देश में उसकी आत्मा को जो अब तक शरीरविहीन, किसी आश्रय की तलाश में भटकती रही थी, अंततः उसका आवरण—मांस—मिल

गया था। और घिसे-पिटे मुहाविरे में यों कहना चाहिए कि यहाँ उसे सत्य प्राप्त हो गया था।

यह स्वाभाविक ही प्रतीत होता है कि मेरी इस दूरस्थ द्वीप की यात्रा के पश्चात् स्ट्रिकलैण्ड में मेरी दिलचस्पी पुनर्जीवित हो जानी चाहिए थी लेकिन जिस कार्यवश मैं वहाँ गया था उसमें मेरा समय और ध्यान इतना व्यय हुआ कि मैं उससे मिल ही न सका। बल्कि वहाँ कई दिन रह चुकने के बाद मुझे यह ख्याल आया कि स्ट्रिकलैण्ड भी यहीं रहा था। आखिर पन्द्रह वर्ष मुझे उसे मिले हुए होगये थे और जब मैं टाहिटी पहुँचा तो उसे दिवंगत हुए भी नौ वर्ष व्यतीत हो चुके थे। लेकिन मेरी टाहिटी यात्रा कुछ ऐसी आपाधापी की थी कि अत्यंत महत्त्व की बातें भी शायद मेरे दिमाग से निकल जातीं क्योंकि एक सप्ताह वहाँ रहने के बाद भी मैं अपना काम ठीक से नहीं कर पाया था। मुझे याद है कि वहाँ पहुँचने के बाद अगले दिन सवेरे मैं जल्दी ही उठ बैठा था और जब मैं होटल की छत पर पहुँचा था तो तब तक सभी निन्द्रा-मग्न थे। मैंने रसोईघर का चक्कर लगाया तो वहाँ ताला पड़ा हुआ था और उसके बाहर पड़ी एक बेंच पर वहीं का कोई लड़का सो रहा था। जब वहाँ नाश्ते की मुझे कोई संभावना प्रतीत न हुई तो मैं टहलता-टहलता झील की ओर निकल गया। चीनी अपनी दुकानों में पहले से व्यस्त थे। आकाश में अभी-भी उषाकाल का पीलापन बाक़ी था और झील पर भयानक सन्नाटा छाया हुआ था। झील से दस मील दूर स्थित मुरिया द्वीप पवित्र प्याले के गहरे रंग की तरह उसके रहस्य की रक्षा कर रहा था।

मैं तो अपनी आँखों पर बिल्कुल विश्वास न कर सका। वेलिंग्टन छोड़ने के बाद से जो दिन मैंने बिताये थे वे मुझे बड़े असाधारण और अनोखे महसूस हुए। वेलिंग्टन शहर बड़ा सुन्दर, स्वच्छ और अंग्रेजी वातावरण लिये हुए था। उसे देखकर दक्षिणी समुद्र तट के किसी बंदरगाह-नुमा नगर की याद आ जाती थी। और बाद में तीन दिन तक निरंतर समुद्र में तूफ़ान उठता रहा। आकाश में श्वेत बादल एक दूसरे के पीछे दौड़ते रहे। और फिर बारिश हुई

और आकाश शांत व नीले रंग का होगया । प्रशांत महासागर अन्य समुद्रों की अपेक्षा अधिक सुनसान व निर्जन है। इसके फासले कहीं अधिक विस्तृत हैं और उसमें यात्रा करते समय ऐसा महसूस होता है जैसे कोई साहसिक कार्य कर रहे हैं। वहाँ की हवा ऐसा अमृत है जिसे पीकर आप अनहोनी के लिए तैयार हो सकते हैं। टाहिटी के समीप ही दृष्टि दौड़ाने पर भव्य चट्टानों पर बसा हुआ एक छोटा द्वीप मुरिया भी है जो उस एकांत सागर में बड़े रहस्यमय ढंग से ऊपर उठा हुआ दिखाई देता है जैसे कि जादूई लकड़ी पर लगी हुई कृत्रिम मुठिया। इसकी जो आड़ी-तिरछी रूपरेखा है उसे देख कर प्रशांत महासागर के मौंट सेराट का आभास होता है और वहाँ आपको यह विचार होगा कि शायद पोलिनेशियन सरदार उन रहस्यों की चौकीदारी करते हैं जो मनुष्य के लिए अपवित्र है। जब आप उसके समीप आते-जाते हैं और आपको वहाँ के सुन्दर पर्वत शिखर स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं—तभी उस द्वीप की सुन्दरता का आपको अनुभव होता है। लेकिन इसके सौंदर्य के रहस्य पोशीदा रहते हैं क्योंकि उन पर अप्रवेश्य पथरीले प्रदेश का आवरण है। आपको आश्चर्य नहीं होगा यदि आप किसी चट्टान को देखकर उसके खुले मुँह को देखने के लिए उसके निकट जायेंगे और वह सहसा अदृश्य हो जायगी और आपको प्रशांत सागर की नीली निर्जनता के अतिरिक्त कुछ नज़र न आयेगा।

टाहिटी एक ऊँचा हरे रंग का द्वीप है जिसमें गहरे हरे रंग के परत हैं और आप अनुमान करेंगे कि शांत घाटियाँ होंगी ; उनकी उन मलिन गहराइयों में भी कुछ रहस्य है जिनके नीचे ठण्डे सोतों का पानी कलकल करता रहता है और आप महसूस करेंगे कि उन ढँके-छिपे या रहस्यमय स्थानों में लोग अति प्राचीन काल से अति प्राचीन ढंगों का जीवन व्यतीत करते आये हैं ; यहाँ भी कुछ उदासी और भयंकरता का अनुभव होता है। लेकिन उसका प्रभाव क्षणिक होता है और वह उस क्षण के आनन्द को केवल कुछ अधिक प्रबल बना देता है। यह उसी प्रकार की उदासी होती है जो आपको एक विदूषक की आँखों में उस समय दिखाई देती है जब वह अपनी बातों से आपको हँसाता है। उसके होंठ

मुस्कराते हैं और उसके लतीफ़े आनन्दप्रद होते हैं क्योंकि हँसी के सम्पर्क में वह अपने को असह्य रूप से अकेला महसूस करता है। और टाहिटी भी ऐसा द्वीप है जो आनन्ददायक है और उससे किसी को भी लगाव हो सकता है; वह एक ऐसी सुन्दरी की भाँति है जो अपने आकर्षण और सौंदर्य का अनाप-शनाप व्यय करती है और इससे अधिक मैत्रीपूर्ण और सांत्वनादायक बात और कुछ नहीं हो सकती जितनी पापीट के बन्दरगाह पर प्रवेश करते समय होती है। घाट पर लगे हुए जहाज़ सुगढ़ और स्वच्छ हैं और खाड़ी के किनारे स्थित छोटा क़स्बा सफेद और शिष्ट लोगों से आबाद है। वहाँ के निवासी ऐसे प्रचण्ड कामी पुरुष हैं कि उन्हें देखकर आप दाँतों तले उँगली दबालेंगे। और जब स्टीमर किनारे के समीप पहुँचता है तो घाट पर जमा होने वाले लोग बड़े प्रफुल्ल और विनीत दिखाई देते हैं; उनकी भीड़ शोर मचाती हुई, खुशी में नाचती हुई, वहाँ जमा हो जाती है। ऐसा मालूम होता है जैसे कत्थई रंग के चेहरों का समुद्र उमड़ पड़ा हो। और उन्हें चलते-फिरते देखकर आपको गहरे नीले रंग के आकाश के विरुद्ध कत्थई रंग का प्रभाव मालूम हो सकता है। वहाँ का हर काम मसलन सामान उतारना, चुँगी लेना वग़ैरह सब बड़े कोलाहाल से होता है और प्रत्येक व्यक्ति ऐसा लगता है जैसे आपको देखकर मुस्करा रहा हो। वहाँ गर्मी बहुत पड़ती है। वहाँ का रंग आँखें चौंधिया देता है।

४६

●●●

टाहिटी में रहते हुए अभी मुझे अधिक समय न हुआ था कि मेरी मुलाक़ात कैप्टन निकोल्स से हो गई। एक दिन सुबह जब मैं अपनी होटल की छत पर बैठा हुआ नाश्ता कर रहा था कि वह आया और उसने अपना परिचय मुझसे कराया। उसने सुन रखा था कि मुझे स्ट्रिकलैण्ड में दिलचस्पी है और वह उसी के बारे में बातें करने के लिए मेरे पास आया था। टाहिटी के लोग भी इंग्लैण्ड के देहातियों की तरह बड़े गप्पबाज होते हैं। अभी मैंने उससे स्ट्रिकलैण्ड के चित्रों के बारे में दो-तीन प्रश्न ही पूछे थे कि उसने उन्हें फौरन फैला दिया। फिर मैंने उस अजनबी से पूछा कि आप नाश्ता कर आये हैं।

"जी हाँ, मैं कॉफ़ी तो सवेरे ही पी चुका हूँ," उसने उत्तर दिया, "लेकिन अगर आप मुझे व्हिस्की की एक-आध बूँद दें तो मुझे कोई आपत्ति न होगी।"

मैंने चीनी लड़के को पुकारा।

"क्या खयाल है आपका, अभी सवेरा तो नहीं है न व्हिस्की पीने के लिए ?' कैप्टन ने कहा।

"यह तो आप और आपका जिगर जाने," मैंने जवाब में कहा।

"मैं तो कमोबेश पीता ही नहीं," उसने कहा और कोई आधा मग कनैडियन शराब से भर लिया।

जब वह मुस्कराया तो उसके टूटे-फूटे, बदरंग दाँत दिखाई दिये। वह बहुत

दुबला-पतला आदमी था, औसत दर्जे का क़द था, सफेद बाल थे और छोटी-सी ठूँठदार सफ़ेद मूँछें थीं। दो-चार दिन से उसने दाढ़ी भी न बनाई थी। उसके चेहरे पर गहरी झाइयाँ पड़ गई थीं और निरन्तर धूप लगने से वह जलकर कत्थई रंग का हो गया था। और उसकी छोटी-छोटी नीली आँखें आश्चर्यजनक रूप से कपटी थीं। मेरे छोटे-छोटे हाव-भाव पर भी वे बड़ी फुर्ती से हिलती थीं और उनके कारण उसका चेहरा एक भयानक बदमाश का-सा लगता था। लेकिन उस समय तो वह बड़ा खुश और नेकदिल बना हुआ था। वह बड़े गंदे खाकी सूट में मलबूस था और उसके हाथ भी सफाई के मोहताज थे।

उसने कुर्सी पर पीछे की ओर झुकते हुए और मेरे पेश किये हुए सिगार को सुलगाते हुए कहा, "मैं स्ट्रिकलैण्ड से भली प्रकार परिचित था। और मेरे ही ज़रिये वह इन द्वीपों में आया था।"

"आप उससे कहाँ मिले थे?" मैंने पूछा।

"मार्सेय में।"

"वहाँ आप क्या करते थे?"

वह मेरी ओर देखकर मुस्करा दिया।

"मेरे ख़याल से मैं वहाँ समुद्र तट पर था।"

मेरे मित्र की मुखाकृति से यह प्रकट हो गया कि वह भी अब उसी स्थिति में है और मैंने उससे अच्छी-खासी जान-पहचान करने की ठानी। तट पर रहने वालों की संगति से यदि कोई आनन्द-लाभ करना चाहे तो उसे कुछ कष्ट भी भोगना पड़ता है। वे लोग बड़ी आसानी से दोस्त बनाये जा सकते हैं और उन लोगों की बातचीत बड़ी मधुर होती है। वे कभी छटे-छमासे ही अकड़ दिखा बैठते हैं और यदि उन्हें कोई शराब पिला दे तब तो वे बस उसी के हो जाते हैं। उनसे घनिष्ठता पैदा करने के लिए आपको कोई लम्बे-चौड़े प्रयत्न नहीं करने पड़ते; और आप यदि उनकी बातों को ध्यान से सुन लें तो न केवल उन्हें आप पर विश्वास हो जायगा बल्कि वे आपके आभारी भी हो जायेंगे। वार्तालाप को वे जीवन का सबसे बड़ा सुख समझते हैं और उसी के द्वारा अपनी सभ्यता

की श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते हैं। और वैसे अधिकतर वे बड़ी दिलचस्प बातें करते हैं। उनके अनुभव की सीमा उनकी कल्पना-शक्ति की उर्वरता से सुखद रूप से संतुलित रहती है। यह तो नहीं कहा जा सकता है कि वे सर्वथा कपट-विहीन हैं लेकिन क़ानून का—जब क़ानून के पीछे शक्ति होती है—वे आदर करते हैं। उनसे पोकर (ताश का एक खेल) खेलना खतरे की बात है लेकिन उनकी इस खेल में दक्षता संसार के सर्वोत्कृष्ट खेल में भी एक विचित्र उत्तेजना उत्पन्न कर देती है। टाहिटी छोड़ने के पहले ही मैं कैप्टन निकोल्स को खूब अच्छी तरह जान गया था और उसके परिचितों में काफी धनवान था। मैं नहीं समझता कि जो व्हिस्की और सिगार उसने मुझसे पिये थे (वह 'काक्टेल' में भाग लेने से सदैव इन्कार कर देता था क्योंकि वह शराब से सर्वथा बचता था) और कुछ डॉलर जो इस असैनिक भाव से मुझसे उधार लिये थे जैसे मुझ पर कोई मेहरबानी कर रहा हो, उसके द्वारा किये गये मनोरंजन के बराबर थे। मैं उस का ऋणी ही रहा। मुझे खेद है कि जो कार्य मेरे सम्मुख है उससे दबकर मुझे उसके बारे में केवल दो-चार पँक्तियाँ लिखकर ही संतुष्ट होना पड़ रहा है।

मैं नहीं जानता कैप्टन निकोल्स ने सबसे पहले इंगलैण्ड क्यों छोड़ा था। यह ऐसा विषय था जिस पर वह खामोश रहता था। और उसके जैसे व्यक्ति से सीधा प्रश्न करना बुद्धिमानी नहीं थी। उसने अपने दुर्भाग्य की ओर संकेत किया था और निसंदेह वह अपने को अन्याय का शिकार समझता था। जब उसने मुझे बताया कि उसके देश में अधिकारी वर्ग बहुत कठोरता से टेकनिकल बातों का पालन करता था तो मेरे हृदय में उसके प्रति अपार सहानुभूति उमड़ आई लेकिन यह देखकर मुझे प्रसन्नता हुई कि उस दुःख और पीड़ा के बावजूद जिसका वह शिकार था, उसकी प्रचण्ड देशभक्ति किसी प्रकार कम न हुई थी। उसने कई बार यह कहा था कि इंगलैण्ड संसार का श्रेष्ठतम देश है और अमरीकनों, उपनिवेशवासियों, डागों, डचों और कनाकों से हम कहीं श्रेष्ठतर हैं।

लेकिन मैं नहीं समझता कि वह सुखी मनुष्य था। वह अजीर्ण का रोगी

था और आप उसे अक्सर पेप्सिन की गोली चूसते हुए देख सकते थे ; सुबह के समय उसको भूख बहुत कम लगती थी लेकिन उसकी इस तकलीफ़ ने भी उसकी हिम्मत नहीं तोड़ी थी। उसे जीवन से असंतोष था लेकिन इस कारण से नहीं बल्कि किसी और कारणवश। आठ वर्ष पूर्व यों ही आवल-धावल में उसने एक स्त्री से विवाह कर लिया था। कुछ ऐसे मनुष्य संसार में हैं। जिनके भाग्य में दयानिधान परमेश्वर ने एकाकी जीवन ही लिख दिया है। लेकिन वे अपनी उत्कण्ठा से दबकर या अजेय परिस्थितियों के कारण उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं। किसी विवाहित ब्रह्मचारी से अधिक दयनीय और कोई विषय नहीं होता। और उन्हीं में कैप्टन निकोल्स भी एक था। मैं उसकी पत्नी से मिला था। वह मेरे अनुमान में कोई अट्ठाइस वर्ष की होगी लेकिन थी उन्हीं स्त्रियों जैसी जिनकी अवस्था सर्वदा संदिग्ध होती है। इसलिए कि जब वह बीस वर्ष की थी तो भी वैसे ही होगी और जब चालीस वर्ष की हो गई होगी तब भी बूढ़ी न लगेगी। उसे देखकर मुझे महसूस हुआ जैसे वह असाधारणतया कसी हुई हो। उसका सपाट चेहरा और संकुचित होंठ कसे हुए थे, उसका चर्म हड्डियों पर कसा हुसा था, उसके बाल भी खिंचे हुए थे, कपड़े तंग थे और वह सफेद जीन जो पहने हुए थी काली बोम्बेज़िन-सी लगती थी। मैं यह कल्पना न कर सका कि कैप्टन निकोल्स ने उससे विवाह क्यों किया था और अगर कर भी लिया था तो उसे छोड़ क्यों नहीं दिया था। शायद उसने अक्सर ऐसा करने का विचार किया था और चूँकि वह उसमें सफल नहीं हो सका था इसीलिए प्रायः उदास और दुःखी रहता था। चाहे कितनी ही दूर वह क्यों न गया हो, और चाहे कैसे ही गुप्त स्थान में क्यों न छिपा हो भाग्य की नाईं निष्ठुर और अंतःकरण की नाईं पश्चाताप-विहीन श्रीमती निकोल्स फौरन उसके पास जा पहुँचती थी। वह उससे उतना ही कम बच सकता था जितना कारण प्रभाव से बच सकता है।

बदमाश कलाकार और शायद शिष्ट पुरुष की भाँति किसी विशेष वर्ग से सम्बन्ध नहीं रखता। न तो वह गुण्डों की निर्दयता से घबराता है और न ही

राजकुमारों का शिष्टाचार से झेंपता है। लेकिन श्रीमती निकोल्स एक सुस्पष्ट वर्ग से सम्बन्ध रखती थीं जिसका आजकल बहुत प्रचलन है और जो निम्न मध्य वर्ग कहलाता है। उसका बाप वास्तव में एक पुलिस का एक सिपाही था। मुझे विश्वास है कि वह बड़ा कार्यसाधक सिपाही होगा। मैं नहीं कह सकता कि उस स्त्री का कैप्टन पर क्या दबाव था लेकिन निश्चय ही उनमें प्रेम के कारण यह सम्बन्ध नहीं हुआ था। मैंने उसे कभी बोलते हुए नहीं सुना था लेकिन हो सकता है कि वह अपनी ख़ानगी बातचीत में खूब बेधड़क बोला करती हो। कुछ भी हो कैप्टन निकोल्स उसे देखकर सहम जाता था। कभी-कभी होटल की छत पर मेरे साथ बैठे-बैठे उसे सहसा अनुभव होता कि वह बाहर सड़क पर चली जा रही है। वह उसे पुकारती न थी और न ही ऐसा कोई संकेत करती कि उसे कैप्टन की मौजूदगी का पता है वह तो सिर्फ इधर-उधर संतोषपूर्वक टहलती रहती थी। फिर कैप्टन सहसा व्याकुल हो उठता; वह घड़ी देखता और ठंडी सांस लेता।

"अच्छा, मुझे अब चलना चाहिए।" वह बोला।

उस समय न तो मजाक और न ही व्हिस्की उसे रोक सकती थी। लेकिन इस सबके बावजूद वह ऐसा आदमी था जिसने बड़े-बड़े तूफानों और भयंकर आँधियों का मुक़ाबला किया था और यदि उसके पास एक पिस्तौल होती तो एक दर्जन निहत्थे हब्शियों से लड़ने में भी न झिझकता था। कभी-कभी श्रीमती निकोल्स अपनी सात वर्षीय बालिका को जो पीली और घृणित चेहरे की थी होटल भेज दिया करती थी।

"अम्मा आपको बुलाती हैं," उसने फफकने के-से स्वर में कहा।

"बहुत अच्छा, बेटी," कैप्टन निकोल्स ने कहा।

वह फौरन उठ खड़ा हुआ और अपनी पुत्री के साथ सड़क पर चल दिया। मेरे ख़्याल में भौतिकता पर आत्मा की विजय का यह सर्व सुन्दर उदाहरण था इसलिए मेरी इस अप्रस्तुत बात से कम-से-कम एक शिक्षा तो मिलती है।

४७

कैप्टन निकोल्स ने स्ट्रिकलैण्ड के बारे में जो विभिन्न बातें मुझे बताई थीं उनमें मैंने कुछ सम्बद्धता क़ायम करने की चेष्टा की है और उन्हें मैं यहाँ जितने भी अच्छे ढंग व क्रम से रख सकता हूँ, रख रहा हूँ। पेरिस में मेरी स्ट्रिकलैण्ड से जो अन्तिम मुलाक़ात जाड़ों में हुई थी उसके बाद ही जाड़ों के अन्त में उन दोनों का परिचय हुआ था। बीच के महीने उसने किस प्रकार गुज़ारे यह मैं नहीं जानता लेकिन यह निश्चित है कि उसकी ज़िन्दगी बड़ी कठिन गुज़री होगी क्योंकि कैप्टन निकोल्स ने सबसे पहले उसे एल दि नू में देखा था। मार्सेय में उन दिनों हड़ताल हो रही थी और जब स्ट्रिकलैण्ड के रोज़ी कमाने के सारे साधन समाप्त हो गये तो जीने के लिए ज़रा-सी रक़म कमाना भी उसके लिए असंभव हो गया।

एल दि नू पत्थर की विशाल इमारत है जहाँ भिखारियों और आवारा लोगों को यदि उनके काग़ज़ात सही हों और वे वहाँ के सन्यासियों को यह विश्वास दिला दें कि वे मज़दूर लोग हैं तो एक सप्ताह तक रहने का प्रबन्ध हो सकता था। भीड़ में जो लोग फाटक के खुलने की प्रतीक्षा कर रहे थे उन्हीं में स्ट्रिक-लैण्ड भी था। चूँकि वह बहुत भीमकाय और विचित्र हुलिये का था इसलिए कैप्टन निकोल्स की फ़ौरन उस पर नज़र पड़ी। वे बड़ी लापरवाही से इंतेज़ार कर रहे थे, कुछ इधर-उधर टहल रहे थे और कुछ दीवार के सहारे झुके हुए खड़े थे, कुछ मेंड़ पर गटर में पाँव लटकाये बैठे थे; जब वे दफ्तर में दाखिल हुए तो उसने देखा कि सन्यासी उसके काग़ज़ात पढ़कर उससे अंग्रेजी भाषा में

सम्बोधित हुआ। लेकिन उसे उससे बात करने का मौक़ा न मिला क्योंकि ज्योंही वह सामान्य कक्ष में प्रविष्ट हुआ एक संन्यासी बड़ी-सी बाइबिल अपने हाथ में लेकर आया, मंच पर चढ़ा जो कमरे के आखिर में बना हुआ था। और उसने नमाज़ शुरू कर दी जो उन दयनीय बदमाशों और लफंगों को भी पढ़ना पड़ी क्योंकि उन्हें मुफ्त में रहने को स्थान दिया गया था। स्ट्रिकलैण्ड को और कैप्टन को अलग-अलग कमरों में रखा गया था और जब ५ बजे सुबह एक विशालकाय सन्यासी ने आकर उसे झँझोड़ा तो उसने उठकर अपना बिस्तर तह किया और मुँह धोया पर स्ट्रिकलैण्ड उसके पहले ही ग़ायब हो चुका था। कैप्टन निकोल्स उस कड़ी सर्दी में घण्टे भर तक तो सड़कों पर घूमता रहा पर बाद में उसने प्लेस विक्टरगेलू की राह ली जहाँ मल्लाह लोग आमतौर पर जमा होते हैं। वहाँ एक मूर्ति के आधार पर ऊंघते हुए उसने स्ट्रिकलैण्ड को फिर देखा। उसने उसे जगाने के लिए एक लात लगाई।

"चलो, नाश्ता करलें दोस्त," उसने कहा।

"जाओ, जहन्नुम में," स्ट्रिकलैण्ड ने उत्तर दिया।

मैं अपने मित्र की सीमित शब्द-संख्या को पहचान गया और मैंने कैप्टन निकोल्स को एक विश्वसनीय साक्षी समझ लिया।

"तुम भी चलोगे ?" कैप्टन ने कहा।

"अमा जाओ लम्बे बनो," स्ट्रिकलैण्ड ने जवाब दिया।

"आओ मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें कुछ नाश्ता करा दूँ।"

क्षण भर के संकोच के बाद स्ट्रिकलैण्ड आहिस्ता से उठा और वे दोनों साथ-साथ बूची दि पेन को गये जहाँ भूखों को रोटी दी जाती है जो उन्हें वहीं बैठकर खानी पड़ती है क्योंकि उसे वहाँ से ले जाना निषिद्ध है और वहाँ से वे बुलियर दि सूप गये जहाँ एक सप्ताह तक सुबह दस बजे और शाम को चार बजे आपको एक प्याला पतले नमक के सूप का मिल सकता है। ये दोनों इमारतें बहुत दूर-दूर बनी हुई हैं ताकि केवल भूखे ही उनका इस्तेमाल करने के लिए ललचायें। इस प्रकार उन दोनों ने नाश्ता किया और इसी प्रकार

चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड और कैप्टन निकोल्स की विचित्र मित्रता आरम्भ हुई।

उन्होंने मार्सेय में लगभग चार महीने एक-दूसरे की संगति में बिताये होंगे। उनका वहाँ का जीवन साहसिक कार्य-विहीन था यानी वहाँ कोई अप्रत्याशित अथवा सनसनी-खेज घटना नहीं घटी थी इसलिए कि उनके दिन इतना कुछ पैसा कमाने में बीत जाते थे जितने रात को सोने की जगह और भूख मिटाने योग्य खाने के लिए होते है। काश मैं वे चित्र जो रंगीन और दिलचस्प थे यहाँ वर्णित कर सकता जिनका कैप्टन निकोल्स के क़िस्से सुनकर मैंने अपनी कल्पना में सृजन किया था। उनके एक बंदरगाह के क़स्बे में बिताये गये कठिन जीवन के वर्णन से एक अच्छी आकर्षक पुस्तक लिखी जा सकती है और जो पात्र उनके जीवन में आये उन्हें कलमबंद कर दिया जाय तो किसी भी विद्यार्थी के लिए बदमाशों का एक पूर्ण कोश तैयार हो सकता है। लेकिन चन्द पैराग्राफ से ही मुझे संतोष करना होगा। उन किस्सों से मुझे एक ऐसे जीवन का आभास हुआ जो प्रबल तथा निर्मम था पाश्विक और-रंग-बिरंगा था और साथ ही सजीव व प्रफुल्ल था। उनसे मार्सेय जो मैं देख चुका था प्रफुल्ल व प्रमुदित लगने लगा। वही मार्सेय जहां बड़ी सुखदायक होटलें और रेस्तोरां है जो धनवान जाने-पहचाने और मामूली लोगों से भरी हुई थी। मुझे उन लोगों से ईर्ष्या हुई जिन्होंने वे स्थान देखे थे जिनका कैप्टन निकोल्स ने वर्णन किया था

जब एल दि नू के दरवाजे उनके लिए स्ट्रिकलैण्ड और कैप्टन निकोल्स ने टफ बिल की आतिथ्यपरायणता की शरण ली। यह मल्लाहों के बोर्डिंग हाउस का मालिक था। वह काले-गोरे मा-बाप की संतान में से था, उसकी मुट्ठियां बड़ी भारी थीं और जो निःसहाय मल्लाह को तब तक भोजन देता था जब तक उसके लिए किसी उचित स्थान का प्रबंध न कर देता था। वे उसके साथ महीने भर तक साथ रहे और उन्हें वहां लगभग एक दर्जन दूसरे लोगों के साथ जिनमें स्वीड, हब्शी, ब्राज़ीली आदि थे फ़र्श पर सोना पड़ता था और हर रोज़ वे उसके साथ प्लेस विक्टर गेलू जाते थे जहां जहाज़ के कप्तान आदमियों

की तलाश में पाया करते थे। टफ़ बिल ने एक अमरीकी से जो मोटी बोमा और बड़ी मैली-कुचैली थी शादी की थी जो भगवान जाने किस सिलसिले में उसके पल्ले पड़ गई थी और हर रोज़ वहाँ ठहरने वालो को पारी-पारी से उस औरत का घर के कामों में हाथ बटाना पड़ता था। जब स्ट्रिकलैंड ने टफ बिल का एक चित्र बनाया तो कैप्टन निकोल्स ने सोचा चलो ज़रा कुछ काम तो बना। टफ़ बिल ने न केवल कैनवास, रंग, ब्रुश आदि के पैसे दिये बल्कि उसे एक पौण्ड पार किया हुआ तंबाकू भी पारिश्रमिक स्वरूप स्ट्रिकलैण्ड को दिया। मुझे पक्का विश्वास है कि आज भी यह चित्र क्वाइ दि ला जोलिएत के समीप किसी नीचे-से मकान के बरामदे को सुशोभित कर रहा होगा और मेरा ख़याल है यही चित्र आज डेढ़ हज़ार पौण्ड में बिक सकता है। स्ट्रिकलैण्ड का विचार था कि आस्ट्रेलिया या न्यूज़ीलैण्ड जाने वाले किसी जहाज़ पर सवार हो जाये और वहाँ से समोआ या टाहिटी चला जाय। मैं नहीं जानता कि दक्षिणी समुद्र की ओर जाने का विचार उसके दिल में कैसे आगया हालाँकि मुझे याद है कि उसकी कल्पना में प्रायः ऐसा द्वीप आया करता था जो हर ओर से धूपदार और हरा और ऐसे समुद्र से घिरा हुआ हो जो उत्तरी अक्षांशों के समुद्र से अधिक नीला हो। मेरा विचार है कि वह कैप्टन निकोल्स के पीछे इसलिए लगा हुआ था क्योंकि कैप्टन उन प्रदेशों से परिचित था और उसी ने उसे यह बताया था कि वह टाहिटी में अधिक सुख-चैन से रह सकेगा।

"आप टाहिटी के फ्रांसीसियों को जानते हैं," उसने मुझे समझाया, "फ्रांसीसी ऐसे लकीर के फ़क़ीर नहीं हैं।"

"हेड क्वार्टर में यदि आपका पेट भरा हुआ हो और एकाध लात भी आपके पड़ जाय तो कोई ग़म नहीं," कैप्टन निकोल्स ने कहा, "और मैं तो व्यक्तिगत रूप में कभी इसका बुरा मानता नहीं। अफसर को तो अनुशासन का हर सूरत में ख़याल रखना पड़ता है।"

कैप्टन निकोल्स के मुँह के बल उस तंग गैंगवे में गिरने और उस क्रोधित अफसर के बूट के उठे रहने और फिर कैप्टन का एक सच्चे अंग्रेज़ की नाईं

खुशी-खुशी उठ कर खड़े हो जाने का दृश्य मेरी नज़रों के सामने स्पष्ट तौर पर आगया।

मछली बाज़ार में भी अक्सर उन्हें कुछ फुटकर काम मिल जाया करते थे। एक बार तो एक ट्रक में असंख्य नारंगी के संदूक जो घाट पर जमा थे भरने की उन दोनों को एक-एक फांक मज़दूरी मिली थी। एक दिन उनकी क़िस्मत जाग गई: एक बोर्डिंग मास्टर को मैडागास्कर के एक जहाज का जो उत्तमाशा अंतरीप होकर वहाँ आया था रँगने का ठेका मिल गया और उन्होंने कई दिन एक तख्ते पर जो एक ओर लगा हुआ था जहाज के पेटे को रंगों से रँगते-रँगते बिता दिये। वह एक ऐसी स्थिति थी जो स्ट्रिकलैण्ड के घिनौने विनोद के लिए उपयुक्त लगी होगी। मैंने कैप्टन निकोल्स से पूछा कि उन मुसीबत के दिनों में उसने कैसा व्यवहार किया?

"मैंने उसे कभी एक भी अपशब्द कहते नहीं देखा," कैप्टन ने उत्तर दिया। "कभी-कभी वह कुछ उदास हो जाता लेकिन जब हमें सुबह से खाने को एक ग्रास भी न मिलता और चिक में लेट जाने तक के लिए पैसे नहीं होते थे तो वह प्रफुल्ल रहता था।"

इस पर मुझे अचरज नहीं हुआ। स्ट्रिकलैण्ड ऐसा ही व्यक्ति था जो परिस्थितियों से सदैव श्रेष्ठतर रहता था यदि वे उसमें निराशा व दुःख भरना चाहतीं लेकिन यह आत्मा के संतुलन के कारण हो या विपरीतता के, यह कहना कठिन है।

'चिक्स हेड' तट-वासियों ने रू बूतरी के सामने स्थित एक सड़ियल सराय का नाम रख दिया था जिसे एक काना चीनी चलाता था जहाँ छः सौस देने पर आप पलँग पर सो सकते थे और तीन सौस में फर्श पर। यहाँ उन्होंने उन लोगों से मित्रता की जो उन्हीं की तरह मुसीबतज़दा थे और जब उनके पास पैसा-धेला कुछ न होता और ठण्ड सख्त होती तो वे किसी भी व्यक्ति से जिसने दिन-भर में कुछ कमाया हो अपने सिर ढँकने की जगह की क़ीमत उधार ले लेते थे। वे आवारा लोग कंजूस नहीं थे और जिस किसी के पास पैसे होते वह

उन्हें बाक़ी में बाँटने या उन पर खर्च कर देने में ज़रा न झिझकता था। वे लोग संसार के सभी भागों से आये थे लेकिन भले व नेक आदमियों के लिए वह स्थान ठीक नहीं था। क्योंकि वे अपने को एक ऐसे देश के स्वतंत्र व्यक्ति समझते थे जिसकी सरहदें शेष को अपने में मिला लेती हैं और जिसे कोकिन का देश कहना चाहिए।

उसकी बात मेरी समझ में आगई।

स्ट्रिकलैण्ड के पास कोई काग़ज़ात नहीं थे लेकिन वह कोई ऐसी बात न थी जो टफ़ बिल को परेशान करती; उसने मुनाफा देखा (जिस मल्लाह के लिए उसने एक वर्ष का प्रबंध किया था उसकी पहले माह की तनख्वाह उसने वसूल करली) और एक अंग्रेज कोयला झोंकने वाले का पारिश्रमिक जो संयोगवश उसी के हाथों मारा गया था, उसने स्ट्रिकलैण्ड को दे दिया। लेकिन कैप्टन निकोल्स और स्ट्रिकलण्ड दोनों पूर्व की ओर जाना चाहते थे और कुछ ऐसा मौक़ा आ पड़ा कि उन्हीं लोगों के जाने के लिए अब अवसर था जो पश्चिम की ओर जाने वाले जहाज़ों में सवार हों। दो बार स्ट्रिकलैण्ड ने अमेरिका जाने वाले जहाज की बर्थ स्वीकार करने से इन्कार किया और एक बार न्यू कासल जाने वाले कोयले के जहाज में जाने से मना किया। टफ़ बिल इस प्रकार की ज़िद को बर्दाश्त नहीं कर सकता था जो उसी को नुक्सान पहुंचाये। चुनाँचे उसने अंतिम बार स्ट्रिकलैण्ड और कैप्टन निकोल्स दोनों को बिना किसी झमेले के अपने घर के बाहर निकाल दिया। अब फिर वे खानुमा बरबाद हो गये।

टफ़ बिल का खाना कभी-कभी ही अतिशय होता था और आपको उसकी मेज से उतना ही भूखा उठना पड़ता था जितने आप उस पर बैठते समय थे, लेकिन कुछ दिन तक वे जायज़ तौर पर उस नुक्सान पर अफसोस करते रहे। अब उन्हें असल में आटे दाल का भाव मालूम हुआ। वुलियर दि सूप तथा एल दि नू दोनों अब उनके लिए बंद हो चुके थे और अब उनका मात्र अवलंब वूची दि पेन से मिलने वाली रोटी पर था। जहाँ कहीं भी उन्हें जगह मिल जाती

थी वे सो रहते थे, कभी किसी खाली ट्रक में जो स्टेशन के पास खड़ी होती और कभी गोदाम के पीछे पड़े छकड़े में पड़ जाते; लेकिन सर्दी बड़ी कड़ाके की थी और वे घण्टे-दो-घण्टे बैचेनी से ठिठुर कर करवटें बदलने के बाद उठ बैठते और आवारागर्दों की तरह सड़कें नापना शुरू कर देते। जिस चीज़ की कमी उन्हें सबसे ज़्यादा अखरती थी वह था तम्बाकू और कैप्टन निकोल्स बेचारा उसके बिना जी नहीं सकता था, चुनाँचे उसने इधर-उधर के कूड़ाखाने तलाश करने शुरू कर दिये जहाँ रात को घूमने वाले सिगरेट और सिगार पी-पीकर टुकड़े फेंक गये होंगे।

"मैंने पाइप में बड़े बुरे तम्बाकू मिला-मिलाकर पिये हैं," उसने बड़ी दार्शनिक लापरवाही से कहा और उसने मेरे पेश किए हुए केस में से दो सिगार निकाले जिनमें से एक मुँह में और दूसरा जेब में रख लिया।

यदा-कदा वे कुछ पैसे कमा लेते थे। कभी कोई डाक-जहाज़ आकर रुकता और चूँकि कैप्टन निकोल्स ने टाइम-कीपर से कुछे जान-पहचान करली थी जो उन दोनों को माल उतारने-चढ़ाने पर लगा लिया करता था। और जब कभी जहाज़ इंगलैण्ड का होता तो वे उसे घुमा-फिराकर फोर कासल में ले जाते थे और मल्लाहों से खूब छककर नाश्ता मारते थे। उन्होंने जहाज़ के एक अफसर से भिड़ जाने का भी ख़तरा मोल लिया और उनके पीछे-पीछे जाने में वे लुढ़ककर गेंगवे में गिर भी पड़े और उस अफसर के जूते का सिरा उन पर पड़ा।

"लेकिन मेरा ख़याल है कि जब स्ट्रिकलैण्ड को कोई भड़का देता तो वह बहुत बुरा व्यक्ति सिद्ध होता था।" कैप्टन निकोल्स ने सोचते हुए कहा। "एक दिन हम टफ़ बिल की प्लेस में पहुँच गये और उसने चार्ली से अपने काग़ज़ों के बारे में पूछा।"

"अगर तुम्हें उनकी ज़रूरत है तो तुम खुद आकर लेलो," चार्ली ने कहा।

"टफ़ बिल बहुत भारी भरकम और शक्तिशाली मनुष्य था लेकिन उसे चार्ली की सूरत नापसंद थी इसलिए उसने उसे उलाहना देना शुरू कर दिया। कोई गाली उसने न छोड़ी और जो मुँह में आया कहता गया, और जब टफ़ बिल गाली

देता था तो उसकी गालियाँ सुनने योग्य होती थीं। तो चार्ली कुछ देर तक तो सहता रहा फिर वह एक क़दम आगे बढ़ा और बोला: 'बाहर निकल जा बे सूअर के बच्चे।' जो कुछ उसने कहा वह इतना जोरदार नहीं था बल्कि जिस अंदाज़ में कहा वह महत्वपूर्ण था। उसके बाद टफ़ बिल ने एक लफ़्ज़ भी नहीं कहा; वह पीला पड़ गया और वहाँ से चल दिया जैसे उसे एकदम कोई काम याद आगया हो।"

जैसा कि कैप्टन निकोल्स ने बताया, स्ट्रिकलैण्ड ने ठीक वे ही शब्द प्रयुक्त नहीं किये थे जो मैंने यहाँ लिखे हैं लेकिन चूँकि यह पुस्तक पारिवारिक पठन के लिये लिखी गई है इसलिए मैंने सत्योल्लंघन करके ऐसे शब्द उसके मुँह से बुलवाए हैं जो गृहस्थी में प्रचलित हों।

टफ़ बिल उन लोगों में नहीं था जो एक मामूली-से मल्लाह द्वारा किए गये अपमान को सहन कर लेता। उसकी शक्ति उसकी प्रतिष्ठा पर आधारित थी और यके-बाद-दीगरे उसके घर में रहने वाले मल्लाहों ने कहा कि हमने स्ट्रिकलैण्ड को जान से मार डालने की क़सम खाई है।

एक रात कैप्टन निकोल्स और स्ट्रिकलैण्ड रू बूतरी के एक बार में बैठे हुये थे। रू बूतरी एकमंज़िला मकानों से घिरी हुई एक संकुचित सड़क है जहाँ प्रत्येक मकान में केवल एक छोटा-सा कमरा है; वे ऐसे लगते हैं जैसे किसी भारी मेले में लगी हुई दुकानें या सर्कस में जानवरों के पिंजरे। प्रत्येक दरवाज़े पर आपको एक औरत बैठी हुई दिखाई देगी। कुछ खम्भों से टिकी अलसा रही हैं और अपने आपसे कुछ गुनगुना रही हैं या बड़ी कर्कश आवाज़ से किसी गुज़रने वाले को पुकार रही हैं और कुछ उदासीन बैठी पढ़ रही हैं। उनमें फ्रांसीसी भी हैं, इटैलियन भी, स्पेनी, जापानी और आफ्रिकी भी; कुछ मोटी हैं और कुछ पतली-दुबली; और उनके चेहरों पर पुते हुए पेण्ट तथा भवों पर लिपटे हुए रंग और होठों पर चुपड़े हुए लाल रंग के पीछे आपको उनकी अवस्था की झुर्रियाँ तथा उनकी नष्ट शक्ति के दाग़ दिखाई दे सकते हैं। कुछ काले जाँघिए और खुश रंग मोजे पहने हुए हैं, कुछ के घुँघराले बाल हैं जिन्हें उन्होंने

रंगकर पीला कर लिया है अपनी-अपनी भूषा में ऐसी लगती हैं जैसे छोटी-छोटी कन्याएँ रेशमी फ्राक पहने बैठी हैं। खुलेहुए दरवाजे में से आपको एक लाल टाइलों का फर्श दिखाई पड़ेगा, एक बड़ा-सा लकड़ी का पलंग रखा हुआ मिलेगा और डील टेबिल पर एक सुराही तथा बेसिन रखा हुआ दीखेगा। विभिन्न प्रकार के लोगों का हुजूम आपको सड़क पर घूमता हुआ दीख पड़ेगा; पी. तथा ओ. केलास्कार, गोरे उत्तरी प्रदेश के निवासी जो स्वीडन के जहाज में से उतर कर आये हैं, युद्ध पोत से आये हुए जापानी, अंग्रेज मल्लाह, स्पेनी, फ्रांसीसी जहाज से उतरे हुए खुशहाल फ्रांसीसी और अमरीकी नावों से आये हुए हब्शी इत्यादि। दिन में तो वह स्थान बड़ा उदास और नीरस रहता है लेकिन रात्रि को जब प्रत्येक झोंपड़ी में लैंपों की रोशनी होती है तो वहाँ पापपूर्ण सौंदर्य बिखरा हुआ जान पड़ता है। जिस पापमय वासना से वहाँ का वातावरण दूषित रहता है वह बड़ा भयंकर और दुःखदायी होता है लेकिन उस पर भी वहाँ के दृश्य में जो आपको झिझोड़ता है और साथ ही पीड़ित भी करता है उसमें कुछ रहस्य छिपा रहता है। न जाने आपको कौन सी प्राचीन शक्ति उस ओर आकृष्ट तथा विमुख करती है। यहाँ सभ्यता की तमाम शिष्टता तथा शीलता समाप्त हो चुकी है और आपको महसूस होता है कि मनुष्य एक मलिन वास्तविकता के सम्मुख खड़ा है। यहाँ पर एक ऐसा वातावरण उत्पन्न हो जाता है जो काफ़ी उत्तेजनापूर्ण है और साथ ही बड़ा दुःखद भी।

जिस बार में स्ट्रिकलैण्ड और निकोल्स बैठे हुए थे वहाँ एक यांत्रिक पियानो पर नृत्य संगीत बज रहा था। कमरे के अंदर लोग मेजों पर बैठे हुए थे, यहाँ छः-सात मल्लाह नशे में धुत्त बैठे हैं, वहाँ सैनिकों का एक गिरोह बैठा है और बीच में कुछ जोड़े नाच रहे हैं। दाढ़ी वाले मल्लाह जिनके कत्थई रंग के चेहरे थे और बड़े-बड़े खुरदरे हाथ थे, अपने-अपने साथियों को बड़ी सख्ती से भींचे हुए हैं। औरतें केवल जाँघिए पहने हुए हैं। कुछ-कुछ देर में दो मल्लाह उठते और साथ-साथ नाचने लगते। उनके शोर से कान बहरे हो रहे थे। लोग गा रहे थे, चीख रहे थे, हँस रहे थे; और जब कभी कोई शख्स अपने घुटनों

पर बैठी हुई लड़की का एक लम्बा-सा चुम्बन लेता तो अंग्रेज़ मल्लाहों की हा-हू और शोरगुल से वहाँ का शोर और भी बढ़ जाता था। वायुमण्डल उन लोगों के बूटों की धप-धप से उड़ी धूल और धुएँ से सफेद और भारी हो गया था। वहाँ बड़ी गर्मी हो रही थी। बार के पीछे एक स्त्री बैठी हुई अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। वेटर, जो नाटे क़द का, चपटे, दाग़दार चेहरेवाला लड़का था ट्रे में बियर के ग्लास रखे इधर-उधर फुर्ती से आ-जा रहा था।

कुछ देर में टफ़ बिल दो भीमकाय नीग्रो को साथ लिये वहाँ आया, वह नशे में धुत्त था। वह झगड़े के लिए अपने दुश्मन को ढूंढ रहा था। वह एक मेज पर झुका जहाँ तीन सैनिक बैठे हुए थे और बियर के एक ग्लास पर गिर पड़ा। सैनिकों और ट फ़बिल में गाली-गुफ़्तार हुई और बार के मालिक ने आगे बढ़ कर टफ़ बिल से बाहर निकल जाने को कहा। मालिक बड़ा लम्बा-चौड़ा शख़्स था और ग्राहकों की किसी भी मूर्खता को बर्दाश्त न करता था। टफ़ बिल कुछ सकुचाया। बार का मालिक कोई ऐसा आदमी नहीं था जिससे वह झगड़ता क्योंकि पुलिस उसकी पुश्त पर थी और बड़बड़ाता हुआ वह चलने को मुड़ा कि सहसा उसकी नजर स्ट्रिकलैण्ड पर पड़ी। वह लड़खड़ाता हुआ उसकी ओर बढ़ा। वह बोला कुछ नहीं बल्कि मुँह में थूक जमा करके उसने मुँह भर कर स्ट्रिकलैण्ड के मुँह पर थूका। स्ट्रिकलैण्ड ने अपना ग्लास झपट कर उठाया और उस पर दे मारा। नर्तक नाचते-नाचते रुक गये। क्षण भर के लिए पूर्ण स्तब्धता छा गई लेकिन जब टफ़ बिल उस पर पिल पड़ा तो सभी लोगों की युद्ध की भूख जाग उठी और लमहे भर में चारों ओर जंग छिड़ गई। मेज़ें उलट दी गईं और ग्लास फर्श पर गिर कर टूक-टूक हो गये। चारों ओर हो-हल्ला और भयंकर लड़ाई छिड़ी हुई थी। औरतें दरवाज़ों में जा छिपीं और कुछ बार के पीछे भाग गईं। सड़क पर जाने वाले भी बार में घुस पड़े। अब तो हर ज़ुबान की गालियाँ, घूसों की आवाज़ें, चीखें सुनाई देने लगीं और कमरे के बीच में कोई एक दर्जन आदमी अपनी भरपूर शक्ति के साथ जूझे हुए लड़ रहे थे। अचानक पुलिस आ गई और जो कोई भी भाग सकता

था दरवाजे में से निकल भागा। जब सारा बार खाली हो गया तो टफ़ बिल फर्श पर अचेत पड़ा हुआ था और उसके सिर में भारी घाव था। स्ट्रिकलैण्ड को जिसकी एक बाँह से खून बह रहा था और कपड़े फट गये थे कैप्टन निकोल्स सड़क पर से घसीट कर ले गया। कैप्टन की नाक पर भी एक भारी आघात लगा था जिससे उसका सारा चेहरा लहू-लुहान था।

"मेरा खयाल है कि पूर्व इसके कि टफ़ बिल अस्पताल से आये तुम मार्सेय से निकल जाओ," जब वे चिक्स हेड को वापस आये और अपने घाव धोने लगे तो कैप्टन ने स्ट्रिकलैण्ड से कहा।

"यह तो यों ही मुर्गों की-सी लड़ाई थी," स्ट्रिकलैण्ड ने कहा।

मैंने उसकी तिरस्कारपूर्ण मुस्कराहट की कल्पना की।

कैप्टन निकोल्स बेचारा चिंतित था। वह टफ़ की बदले की प्रवृत्ति से भली प्रकार परिचित था। स्ट्रिकलैण्ड ने उस काले भुजंग को नशे में दो बार पटख दिया था लेकिन वह कालिया जब नशे में नहीं होता था तो बड़ा भयंकर था। वह चुपचाप मौक़े की तलाश में रहेगा। उसे जल्दी कोई नहीं है लेकिन किसी भी रात को स्ट्रिकलैण्ड की पीठ में छुरा भोंका हुआ होगा और दो-तीन दिन में किसी नामहीन मल्लाह की लाश बन्दरगाह के गन्दे पानी में से निकलेगी। निकोल्स अगले दिन शाम को टफ़ बिल के मकान पर गया और वहाँ उसने मालूम किया। टफ़ बिल अभी तक अस्पताल में ही था लेकिन उसकी पत्नी ने जो उससे अस्पताल में मिलने गई थी उसे बताया कि मेरे पति ने क़सम खाई है कि ज्यों ही वह अस्पताल से निकलेगा स्ट्रिकलैण्ड को जान से मार डालेगा।

एक सप्ताह बीत गया।

"मैं हमेशा यही कहता आया हूँ," कैप्टन निकोल्स ने कहा, "जब तुम किसी को घायल करो तो बुरी तरह घायल करो ताकि जब तक वह चंगा हो तुम्हें कुछ और करने का समय मिल सके।"

फिर स्ट्रिकलैण्ड की तक़दीर चेत गई। आस्ट्रेलिया जाने वाले जहाज़ के अफसर ने मल्लाहों के दफ्तर से एक कोयला झोंकने वाला बुलवाया क्योंकि

उसका कोयला झोंकने वाला जिब्राल्टर के पास अचेतावस्था में समुद्र में कूद पड़ा था ।

"अब तुम ज़रा बन्दरगाह को लपक जाओ, मेरे दोस्त," कैप्टन ने स्ट्रिक-लैण्ड से कहा, "और अपने काग़ज़ पेश कर दो । तुम्हारे पास हैं तो कागज सब !"

स्ट्रिकलैण्ड फौरन चल दिया और वही कैप्टन निकोल्स की उससे आखिरी मुलाक़ात थी ।

जहाज़ बन्दरगाह में केवल छः घण्टे रुका रहा और शाम को कैप्टन निकोल्स ने जब वह पूर्व की ओर रवाना हुआ तो उसकी चिमनी से उठता हुआ धुआँ देखा और वापस आ गया ।

मैंने यह सब जितने अच्छे ढंग से मैं इन्हें पेश कर सकता था पेश किया है क्योंकि मैं स्ट्रिकलैण्ड के इस जीवन की घटनाओं और उस जीवन में जो उसने एशली गार्डेन्स में बिताया था, जब वह दल्लाली करता था, जो विरोध है उसे पसन्द करता हूँ, लेकिन मुझे एहसास है कि कैप्टन निकोल्स एक भयंकर झूठा था और शायद उसने मुझसे जो कुछ कहा उसमें ज़रा बराबर भी सचाई नहीं है ।

मुझे यह जानकर ज़रा भी आश्चर्य न होगा कि जिंदगी में वह कभी स्ट्रिकलण्ड से नहीं मिला था और मार्सेय के बारे में उसे जो कुछ ज्ञान था वह पत्रिकाओं से उसे प्राप्त हो गया था ।

मेरा उद्देश्य पुस्तक को यहीं समाप्त करने का था। पहले तो मेरा विचार था कि इस पुस्तक का आरंभ स्ट्रिकलैण्ड के टाहिटी में बिताए अंतिम दिनों और उसकी भयंकर मृत्यु से करूँ और उसके बाद उसके आरंभिक जीवन की वे बातें लिखूं जो मुझे ज्ञात हैं। मैं ऐसा स्वेच्छा से नहीं करना चाहता था बल्कि इसलिए कि स्ट्रिकलैण्ड की एकाकी आत्मा सर्वदा उन अनजान द्वीपों में भ्रमण करना चाहती थी और उन्हीं की कल्पना में वह सर्वदा लीन रहता था। और वे ही द्वीप थे जिन्होंने उसकी कल्पना को अनुप्रेरित एवं अनुप्राणित किया था। उसका चित्र —कि वह ४० वर्ष की आयु में जबकि अधिकांश व्यक्ति अपने घर-गृहस्थ में सुखपूर्वक रहने लग जाते हैं, घर-बार छोड़कर एक नये संसार की खोज में प्रस्थान—मुझे बहुत पसंद आया। मैंने उसे देखा जब वह फ्रांस से रवाना हुआ और यह देखता रहा कि झागों से भरपूर समुद्र वहाँ की हवाओं से त्रस्त उसकी नजरों से ओझल हो रहा है और वह उसे हमेशा-हमेशा के लिए छोड़े जा रहा है। और मैंने समझा कि वह साहसी है और उसकी आत्मा सर्वथा निर्भीक। इसलिए मैं इस पुस्तक को एक आशाजनक टिप्पणी के साथ समाप्त करना चाहता था। ऐसा लगा जैसे इसे यहाँ समाप्त करना मनुष्य की अजेय आत्मा पर बल देना है। लेकिन यह सब मुझसे नहीं बन पड़ा। मैं किसी तरह अपनी कहानी बना ही न सका और दो-एक बार प्रयत्न करने के बाद मुझे अपना विचार त्यागना पड़ गया। चुनाँचे मैंने साधारण तरीके से ही अपनी कहानी शुरू से कहना आरंभ किया और यह निश्चय कर लिया कि स्ट्रिकलैण्ड के जीवन

के बारे में जिन घटनाओं का मुझे ज्ञान है वे मुझे जिस क्रम से ज्ञात हुई हैं उन्हें उसी क्रम से लिपिबद्ध कर दूँगा ।

लेकिन जो तथ्य उसके बारे में मैंने जमा किये थे वे सारे अब असम्बद्ध हैं । अब मैं एक ऐसे जीव-विद्याशास्त्री की भाँति हूँ जिसे एक ही हड्डी से न केवल एक मुर्दे जानवर का शरीर खड़ा करना है बल्कि उसकी आदतें भी निर्मित करनी हैं । टाहिटी में जो लोग स्ट्रिकलैण्ड के सम्पर्क में आये उन पर उसका कोई विशेष प्रभाव नहीं छोड़ा । उनके नज़दीक वह एक मामूली मल्लाह था जिसे पैसों की हमेशा ज़रूरत रहती थी । उसमें केवल यही विशेषता थी कि वह चित्र बनाया करता था जो उसे बेहूदा लगते थे; और जब वह मर गया और उसकी मृत्यु के कुछ वर्ष बाद पेरिस तथा बर्लिन से कुछ एजण्ट वहाँ आये कि शायद उस द्वीप में अब भी उसके चित्र मिल जायें तब जाकर टाहिटी निवासियों को यह पता चला कि उन लोगों के बीच एक महत्वपूर्ण व्यक्ति रहा करता था । अब उन्हें याद आया कि वे उन चित्रों को कौड़ी के मोल ख़रीद सकते थे जिनकी अब बड़ी-बड़ी क़ीमतें लग रही हैं और वे अपनी उस कोताही के लिए जिसके कारण उन्होंने वह स्वर्ण अवसर गँवा दिया, अपने को कभी क्षमा न कर सकेंगे कोहेन नामक एक यहूदी व्यापारी था जिसके पास स्ट्रिकलैण्ड का एक अपूर्व चित्र था । वह एक छोटे क़द का बूढ़ा फ्रांसीसी था जिसकी नरम, भोली-भाली आँखें थीं और होठों पर एक सुखद मुस्कान थी; वह आधा व्यापारी और आधा मल्लाह था जिसके पास एक छोटा-सा जहाज़ था जिसमें वह पॉमोटस और मार्केसास की बड़ी निडरता से सैर करता था । वह बिकाऊ माल लेजाता था और वहाँ से खोपरा, घोंघे और मोती लाता था । मैं उससे मिलने गया क्योंकि मुझे मालूम हुआ कि उसके पास एक बड़ा-सा काला मोती है जो वह सस्ते दामों बेचना चाहता है और जब मैंने देखा कि मेरा उससे सौदा नहीं पटेगा तो मैंने उससे स्ट्रिकलैण्ड के बारे में बातें शुरू कर दीं । वह उसे भली-भाँति जानता था ।

"देखिए मुझे उसमें दिलचस्पी थी क्योंकि वह चित्रकार था," उसने मुझसे

कहा। "यहाँ इन द्वीपों में हमें बहुत चित्रकार तो मिलते नहीं हैं और मुझे उस पर खेद होता है कि वह बेचारा बड़ा बुरा चित्रकार था। मैंने ही यहाँ सबसे पहले उसे काम दिया। प्रायद्वीप में मेरे कुछ बाग़ थे और उनकी देखभाल के लिए मुझे एक अंग्रेज़ ओवरसियर की ज़रूरत थी। यहाँ के निवासियों से आप काम ही नहीं ले सकते जब तक उनके ऊपर एक गोरा न हो। मैंने उससे कहा, 'यहाँ तुम्हें चित्रकारी के लिए बहुत समय मिलेगा और थोड़ा-सा पैसा भी तुम कमा लोगे।' मुझे मालूम था वह भूखों मर रहा है लेकिन मैंने उसे अच्छी मज़दूरी दी।"

"मैं तो सोच भी नहीं सकता कि वह एक संतोषजनक ओवरसियर हो सकता था," मैंने मुस्कराते हुए कहा।

"लेकिन मैंने उसे रिआयतें दे रखी थीं। चित्रकारों से मुझे हमेशा हमदर्दी रही है। और यह हमदर्दी हमारे खून में रसी-बसी हुई है समझे? जब कैनवास और रंग खरीदने के लिए उसके पास काफी पैसे हो गये तो वह मुझे छोड़ भागा। तब तक इस जगह से भी वह उकता गया था और किसी झाड़ी में भाग जाना चाहता था। लेकिन यदा-कदा वह मुझे मिलता रहा। हर कुछ महीने के बाद वह पापीट में आता था और कुछ दिनों वहाँ ठहरता था; किसी से थोड़े-बहुत पैसे लेता और फिर ग़ायब हो जाता था। इन्हीं दिनों वह एक बार मेरे पास आया और उसने मुझ से दो सौ फ्रांक कर्ज़ माँगे। उसके चेहरे से ऐसा मालूम होता था कि उसने हफ्ते भर से कुछ नहीं खाया है और मैं उसे इन्कार न कर सका। यह तो तय था कि मेरे पैसे वापस नहीं आयेंगे। लेकिन साहब अगले साल फिर वह मुझसे मिलने आया और उस बार अपने साथ एक चित्र भी लाया। उसने मेरे कर्ज़ का तो कोई जिक्र नहीं किया बल्कि कहने लगा, 'यह लीजिए आपके बाग़ का यह चित्र। मैंने यह आप ही के लिए बनाया है।' मैंने उसे देखा। मेरी समझ में यह तो न आया कि उससे क्या कहूँ लेकिन मैंने उसे धन्यवाद जरूर दिया और जब वह चला गया तो मैंने वह चित्र अपनी पत्नी को दिखाया।"

"किस क़िस्म का था वह ?" मैंने पूछा।

"यह न पूछिए। मेरी तो वह ख़ाक समझ में न आया। वैसा चित्र मैंने ज़िन्दगी में कभी न देखा था। 'इसका हम क्या करेंगे ?' मैंने अपनी पत्नी से कहा। 'हम इसे कभी यहाँ न लटकायेंगे।' वह बोली। 'लोग हम पर हँसेंगे।' चुनांचे वह उसे अटारी पर ले गई और वहाँ जो दूसरा काठ-कबाड़ पड़ा था उसमें डाल दिया क्योंकि मेरी बीवी कोई चीज़ फेंकना तो जानती ही नहीं। यह उसमें एक रोग है। और ज़रा कल्पना कीजिये कि युद्ध से कुछ दिन पहले मेरे भाई ने पेरिस से मुझे खत में लिखा, 'टाहिटी में जो एक अंग्रेज़ चित्रकार रहा करता था क्या आप उसके बारे में कुछ जानते हैं ? ऐसा मालूम होता है कि वह एक मेधावी था। और उसके चित्र यहाँ बड़े महँगे दामों में बिक रहे हैं। देखिए अगर आपको उस का कोई चित्र मिल जाये तो मुझे भेज दीजिएगा। उससे मैं पैसे बना सकता हूँ।' इसलिए मैंने अपनी पत्नी से कहा: 'उस चित्र का क्या हुआ जो स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे दिया था ? क्या वह अभी तक अटारी पर होगा ?' 'बेशक,' उसने उत्तर दिया, 'आप तो जानते हैं कि मैं कोई चीज़ फेंकती नहीं। यह मेरा पागलपन है।' हम दोनों ऊपर गये और पिछले तीस वर्ष का जब से हम इस मकान में आये हैं जो कूड़ा-कचरा वहाँ जमा हो गया था उसमें वह चित्र मिल गया। मैंने फिर से उसे देखा और कहा: 'कौन जानता था कि प्रायद्वीप के हमारे बाग़ का वह ओवरसियर जिसे मैंने दो सौ फ्रांक उधार दिये थे एक मेधावी होगा। तुम्हें इस चित्र में कोई विशेषता दिखाई देती है क्या ?' 'नहीं।' उसने कहा, 'यह तो हमारे बाग़ का-सा लगता ही नहीं और मैंने कभी ऐसे नारियल नहीं देखे जिनमें नीले पत्ते हों; लेकिन पेरिस वाले उसके पीछे पागल हुए जा रहे हैं और मेरे ख़्याल से आपका भाई इसे दो सौ फ्रांक में बेच सकता है और इस प्रकार आपका वह कर्ज़ जो आपने स्ट्रिकलैण्ड को दिया था अदा हो जायगा।' लिहाज़ा हमने उसे पैक करके अपने भाई को भेज दिया। और आखिरकार मुझे उसने एक खत लिखा। जानते हैं उसने मुझे क्या लिखा ? 'मुझे आपका भेजा हुआ चित्र मिला,' उसने लिखा, 'और मैं

समझा आपने मुझसे मज़ाक़ किया है। मैं तो उस चित्र का डाक खर्च भी न देता। मैं उसे एक आदमी को जिसने मुझसे वह माँगा था दिखाते हुए भी कुछ डर रहा था। कल्पना कीजिए कि मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने कहा कि यह एक शाहकार है और उसने मुझे चित्र के तीस हज़ार फ्रांक दिये। मेरे खयाल से वह उसके कुछ अधिक दाम देता लेकिन साफ कहता हूँ मैं तो ऐसा घबड़ाया हुआ था कि कुछ बोल ही न सका; पूर्व इसके कि मैं अपना साहस बटोरूँ मैंने उस के दिये हुए दाम ही स्वीकार कर लिये।"

फिर मोशियो कोहेन ने एक बड़े मार्के की बात कही।

"काश, बेचारा स्ट्रिकलैण्ड अब तक जीवित होता। उस समय जब मैं उसे उसके चित्र के उन्तीस हज़ार आठ सौ फ्रांक देता तो न जाने वह मुझसे क्या कहता?"

४९

मैं होटल दि ला फ्ल्यूर में रहता था और श्रीमती जॉनसन ने जो होटल की मालकिन थी मुझे अपने प्रायश्चित्त की एक दुःखदाई कहानी सुनाई। स्ट्रिकलैण्ड के देहान्त के बाद उसकी कुछ चीज़ें पापीट के बाज़ार में नीलाम की गई थीं और वह खुद भी नीलाम में गई थी क्योंकि वहाँ एक अमरीकी स्टोव भी नीलाम होने वाला था जो वह खरीदना चाहती थी। उसने उसके सत्ताईस फ्रांक दिये।

"कोई एक दर्जन चित्र थे," उसने मुझसे कहा, "लेकिन वे सभी बिना फ्रेम के थे इसलिए कोई भी उन्हें लेना नहीं चाहता था। उनमें से कुछ के तो दस फ्रांक तक मिले लेकिन अधिकतर पाँच-छः में ही बिक गये। ज़रा सोचिए तो अगर मैं उन्हें खरीद लेता तो आज मैं एक धनवान स्त्री होती।"

लेकिन टियारे जॉनसन कैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न होतीं धनवान न हो सकती थी। वह पैसे रखना जानती ही न थी। उसकी मा टाहिटी की थी लेकिन बाप एक अंग्रेज़ जहाज़ी कप्तान था जो टाहिटी में बस गया था। जब मैंने उसे पहली बार देखा था तो वह लगभग पचास वर्ष की थी लेकिन उस से अधिक बूढ़ी और हृष्ट-पुष्ट दिखाई देती थी। वह बड़ी क़द्दावर और बड़ी तगड़ी थी और यदि उसके चेहरे पर भोलापन न होता तो वह एक भारी भर कम और प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्त्री सिद्ध होती। उसकी बातें ऐसी थीं जैसी बकरी की टाँगें; उसकी छातियाँ विशाल करमकल्ले की तरह थीं; उसका चेहरा जो चौड़ा-चकला और गोश्त-पोस्त से भरा था अशिष्ट नग्नता का आभास दिलाता था और उसकी ठोड़ी बड़ी चौड़ी थी जिसके नीचे बराबर निकले हुए थे। न मालूम कितने थे। वे उसकी थल-थल भारी छातियों पर लटके पड़े रहे थे। साधारणतया वह गुलाबी मदर हब्बर्ड पहना करती थी और दिन भर एक बड़ा स्ट्रा हैट ओढ़े रहती थी। लेकिन जब वह अपने बाल खुले रखती थी—जो वह यदा-कदा ही करती थी क्योंकि उसे उन पर बड़ा नाज़ था—तो वे लम्बे, काले और घुँघरियाले मालूम पड़ते थे। और उसकी आँखें अब भी ताजगीपूर्ण तथा प्रफुल्ल लगती थीं। उसकी हँसी इतनी आकर्षक थी कि मैंने कभी न देखी थी; वह धीरे-धीरे मुँह में से निकलती कुछ जोर पकड़ती और फिर इतनी जोर की हो जाती कि उसका सारा शरीर हिलने लगता। उसे तीन चीज़ों से बड़ा प्रेम था—लतीफ़े से, शराब के ग्लास से और सुन्दर नवयुवक से। उससे परिचित होना भी एक सौभाग्य है।

उस द्वीप में वह सर्वश्रेष्ठ भोजन बनाने वाली थी और अच्छे खाने की वह दिलदादा थी। सुबह से लेकर शाम तक वह अपनी रसोई में एक नीची कुर्सी

पर एक चीनी रसोइये के पास या दो-तीन देशी लड़कियों से घिरी हुई बैठी रहती थी कभी किसी को हुक्म दे रही है, तो कभी हर आला व अदना से बड़ी शिष्टता से बातें कर रही है और कभी उसके अपने ईजाद किये हुए स्वादु खाने चखकर देख रही है। जब कभी वह अपने किसी मित्र का समादर करती थी तो वह खाना अपने हाथ से पकाया करती थी। मेहमान-नवाजी उसके लिए प्रकार की भूख थी और जब उस द्वीप में कोई भूखा होता और होटेल दि ला फ़्ल्यूर में खाने को कुछ होता तो वह कभी भूखा नहीं रह सकता था। नवे ग्राहक जो अपने खाने के पैसे न दे सकते थे उन्हें वह किसी होटल से न निकालती थी। उसे हमेशा यह आशा रहती थी कि जब कभी भी उनके पास होगा दे देंगे। वहाँ एक शख़्स था जो विपत्ति में फँस गया था और उसने उसे कई महीने तक खाना और रहने के लिए जगह दी। जब चीनी लाण्ड्री वाले बिना पैसे उसके कपड़े धोने से इन्कार कर दिया तो श्रीमती जॉन्सन ने उसके कपड़े अपने कपड़ों के साथ भेज दिये। उसने बताया कि वह उस बेचारे को गन्दी कमीज पहने हुए घूमते नहीं देख सकती थी और चूँकि वह आदमी था और आदमी सिगरेट पीता है इसलिए वह एक फ्रांक रोजाना उसे सिगरेट के लिए दिया करती थी। वह उसके साथ भी वैसा ही मैत्रीपूर्ण और सुशील व्यवहार करती थी जैसा अपने उन ग्राहकों से जो उसे हर सप्ताह पैसे दे दिया करते थे।

उसकी ढली हुई उम्र और मोटापे ने उसे प्रेम के लिए अपात्र बना दिया था लेकिन उसके बावजूद वह नवयुवकों से प्रेमपूर्ण संबंध बढ़ाने में बड़ी गहरी दिलचस्पी लेती थी। आखेट को वह स्त्री, पुरुष दोनों के लिए एक स्वाभाविक व्यस्तता समझती थी और प्राणपण से अपना अनुभव बढ़ाने के लिए तत्पर रहती थी।

"जब मैं पन्द्रह वर्ष की ही थी कि मेरे पिता ने मेरे लिए एक प्रेमी तलाश कर लिया," उसने कहा। "ट्रॉपिक बर्ड नामक जहाज पर तीसरा अफसर था, बड़ा सुन्दर लड़का था।"

उसने एक हल्की-सी आह भरी । कहते हैं ना कि स्त्री अपने पहले प्रेमी को सदैव बड़े चाव से याद करती है। लेकिन शायद उसे हमेशा याद नहीं करती है ।

"मेरे पिता जी बहुत समझदार व्यक्ति थे ।"

"क्या किया उन्होंने ?" मैंने पूछा ।

"पहले तो उन्होंने मुझे मार-मार कर अधमुँआ कर दिया और मेरा विवाह कैप्टन जॉन्सन से कर दिया । मैंने कोई आपत्ति नहीं की । वह बूढ़ा जरूर था लेकिन वह भी था खूबसूरत ।"

उसके पिता उसे टियारे के नाम से पुकारते थे । टियारे एक अंग्रेजी सुगंधित फूल होता है जिसके बारे में कहा जाता है कि यदि आप उसे एक बार भी सूँघ लें तो फिर चाहे आप कहीं भी क्यों न चले जायें घूम-फिर कर फिर टाहिटी ही आयेंगे । टियारे को स्ट्रिकलैण्ड अच्छी तरह याद था ।

"वह कभी-कभी यहाँ आया करता था और मैं उसे पापीट के इर्द-गिर्द घूमता हुआ देखा करती थी । मुझे उस पर बड़ा तरस आता था क्योंकि वह बड़ा दुर्बल था और पैसे-कौड़ी का हमेशा मोहताज रहता था । जब कभी मुझे पता चलता कि वह शहर में है तो मैं एक लड़का भेज कर अपने साथ खाने के लिए उसे निमंत्रित करती थी दो-चार बार मैंने उसे काम भी दिलवाया था । लेकिन वह कहीं नहीं टिका । थोड़े ही दिन बाद वह झाड़ियों में जाने को कहता और किसी भी दिन सवेरे गायब हो जाता ।"

मार्सेय छोड़ने के कोई छः मास बाद ही स्ट्रिकलैण्ड टाहिटी चला गया था । ऑकलैण्ड से सांफ्रांसिस्को जाने वाले एक जहाज पर वह सवार हुआ और जब वह उतरा तो उसके पास रंगों का एक डिब्बा, एक ईज़ल और कोई एक दर्जन कैनवास थे । उसकी जेब में कुछ पौण्ड भी थे जो उसने सिडनी में काम करके हासिल किये थे और शहर से बाहर उसने एक छोटा-सा कमरा किराये पर ले लिया । मैं समझता हूँ जब वह टाहिटी पहुँचा तो उसने चैन की साँस ली । टियारे ने मुझे बताया कि उसने मुझसे एक बार कहा था :

"मैं जहाज का फर्श साफ कर रहा था और सहसा एक छोकरे ने मुझसे कहा, 'अरे वह देखो वह जगह ।' और ज्यों ही मैंने ऊपर को देखा मुझे एक द्वीप का नक्शा दिखाई दिया । और मैं फौरन समझ गया कि वही वह जगह है जिसे मैं उम्र भर तलाश करता आ रहा हूँ। फिर मैं उसके समीप गया और मैंने उसे पहचान लिया । कभी-कभी जब मैं इसका चक्कर लगाता हूँ तो सब कुछ जाना-पहचाना-सा लगता है । मुझे यह विश्वास हो जाता है कि मैं यहाँ पहले भी रह चुका हूँ ।"

"कभी-कभी यह द्वीप लोगों को इसी तरह मोह लेता है," टियारे ने कहा "मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो यहाँ कुछ घण्टों के लिए रुकते हैं कि उनके जहाज़ पर माल चढ़ जाय और इस भूमि से ऐसे आकृष्ट होते हैं कि जाने का नाम नहीं लेते। मैंने ऐसे लोगों को भी देखा है जो यहाँ किसी काम से साल भर के लिए आये हैं और इस जगह को उन्होंने कोसा है और जब वे गये हैं तो यह क़सम खाकर गये हैं कि अब चाहे गले में फाँसी ही क्यों न लग जाये इस मनहूस जगह का कभी रुख न करेंगे। और फिर छः महीने बाद ही वे फिर चले आ रहे हैं और कहते हैं कि हम और कहीं नहीं रह सकते ।"

५०

●●●

मेरा ऐसा विचार है कि कुछ लोग जहाँ उन्हें उत्पन्न होना चाहिए वहाँ पैदा न होकर कहीं और पैदा हो जाते हैं। कोई दुर्घटना उन्हें किसी वातावरण

विशेष में भले ही फेंक दे लेकिन वे किसी ऐसे घर की तलाश में तड़पते रहते हैं जो उन्हें नहीं मालूम कहाँ है। वे अपने ही जन्म स्थानों में अजनबी बने रहते हैं और पत्तों से भरी गलियाँ जिन्हें वे बचपन से जानते हैं या वे गुँजान सड़कें जहाँ वे खेले-कूदे हैं उनके लिए मात्र गुज़रने का स्थान बनी रहती हैं। वे अपने ही नाती-रिश्तेदारों में ग़ैरों की तरह रहते हैं और जिन स्थानों व दृश्यों को वे हमेशा से जानते हैं उन्हीं में वे अलग-थलग रहते हैं। शायद यही अजनबियत का आभास मनुष्यों को दूर-दूर स्थानों पर किसी स्थायी जगह की तलाश में भेजता है जहाँ वह जाकर वहाँ के लोगों में घुल-मिल जाना चाहते हैं। शायद उनके अन्दर पूर्वजों की-सी प्रवृत्ति जो गहरी जड़ें पकड़ लेती है उन्हें ऐसे देशों को वापस जाने के लिए उत्प्रेरित करती है जिन्हें इतिहास के आदि काल में उनके पूर्वज छोड़कर चले गये थे। कभी-कभी मनुष्य किसी ऐसे स्थान पर पहुँच जाता है जिसके बारे में वह रहस्यमय ढंग से यह सोचने लगता है कि वह वहीं का बाशिन्दा है। यही वह घर था जिसकी उसे तलाश थी और यहाँ उस वातावरण में वह रहेगा जो उसने पहले कभी नहीं देखा है, ऐसे आदमियों में बसेगा जिन्हें वह कभी न जानता था और ऐसा अनुभव करेगा जैसे उन्हें वह जन्म से जानता है। और यहीं पर आखिरकार उसे चैन मिलता है।

मैंने टियारे को टॉमस अस्पताल के एक ऐसे आदमी का क़िस्सा सुनाया जिसे मैं जानता था। वह यहूदी था, नाम था उसका अब्राहम। गोरा, मोटा-तगड़ा नौजवान था, बड़ा शर्मीला और आडम्बर-शून्य लेकिन वह बड़े अद्भुत गुणों का धनी था। अस्पताल में भर्ती होते समय उसे छात्रवृत्ति मिली थी और जिन पाँच वर्षों तक वह पढ़ाई करता रहा उनके दौरान में जो कोई भी इनाम रखा गया वह उसने जीत लिया। वह हाउस-फ़िज़ीशियन और हाउस-सर्जन बना दिया गया था। उसकी प्रतिभा का लोहा सभी मानते थे। आखिर में वह एक ऐसे ओहदे के लिए निर्वाचित कर दिया गया कि उसका जीवन सुनिश्चित बन गया। जहाँ तक मानवीय वस्तुओं की भविष्य वाणी की जा सकती है वह

अपने पेशे की महानतम बुलन्दियों को पहुँच सकता था। सम्मान तथा लक्ष्मी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। अपना नया काम सम्हालने के पहले वह कुछ छुट्टी लेना चाहता था और वह एक छोटे-से जहाज पर सर्जन बन कर लेवांट गया। आम तौर पर जहाज में डाक्टर नहीं चलता था लेकिन अस्पताल के एक सीनियर सर्जन उस कम्पनी के डायरेक्टर को जानते थे चुनांचे अब्राहम को एक मेहरबानी के तौर पर उन्होंने ले लिया।

कुछ ही सप्ताह बाद अधिकारियों को उसका त्याग-पत्र मिला और उसने स्टाफ़ के उस ईर्ष्यालु पद को लात मार दी। यह सुनकर सभी लोग हैरान रह गये और तरह-तरह की अफवाहें उड़ने लगीं। जब कभी कोई आदमी कोई अप्रत्याशित बात कर बैठता है तो उसके साथी उसके बड़े गंदे-गंदे कारण ढूंढ़ने लगते हैं। लेकिन वहाँ उन्हें एक और सुयोग्य व्यक्ति मिल गया और अब्राहम को लोग भूल गये। उसके बाद उसका कोई पता न चला। वह अदृश्य हो गया।

शायद दस वर्ष बाद एक दिन सवेरे मैं जहाज़ में सवार था और सिकन्दरिया में उतरने वाला था कि मुझसे कहा गया कि अन्य मुसाफ़िरों के साथ मैं भी डाक्टरी जाँच के लिए क़तार में खड़ा हो जाऊँ। डाक्टर बड़ा हट्टा-कट्टा आदमी था लेकिन बड़ा भद्दा लिबास पहने हुए था और जब उसने अपना हैट उतारा तो मैंने देखा कि वह बहुत गंजा था। मुझे लगा कि मैं इसे पहले भी देख चुका हूँ और सहसा मुझे याद आ गया।

"अब्राहम," मैंने कहा।

उसने घबराहट-भरी नज़रों से मेरी ओर मुड़ कर देखा और फिर मुझे पहचानते ही उसने मुझसे हाथ मिलाया। दोनों ओर से आश्चर्य प्रकट होने के बाद जब उसने सुना कि मैं रात सिकन्दरिया में ही बिताना चाहता हूँ तो उसने मुझे इंगलिश क्लब में रात के खाने पर निमंत्रित किया। जब हम दुबारा मिले तो मैंने उसे बताया कि यहाँ तुमसे मिलने पर मुझे आश्चर्य हुआ है। वह बहुत ही मामूली से ओहदे पर था और वहाँ उसकी आर्थिक स्थिति भी कुछ

कमज़ोर ही थी। और तब उसने मुझे अपना क़िस्सा सुनाया। जब वह छुट्टी लेकर भूमध्य सागर की यात्रा पर निकला तो लंदन वापस जाने और सेंट टॉमस में नौकरी करने का उसका पक्का इरादा था। एक दिन सुबह जहाज़ सिकन्दरिया में रुका और डेक पर से ही उसने शहर को देखा जो धूप में सफेद लग रहा था और बन्दरगाह पर लोगों की भीड़ लगी हुई थी। उसने वहाँ के बाशिंदों को जो भद्दे लिबास में थे देखा, सूडान के कालों को, यूनानियों के हो-हल्ला मचाते हुए हुजूम को और टारबुश पहने हुए उदास तुर्कों को देखा और वहाँ के सूर्य की किरणें और नीला आकाश क्या देखा कि उसे सहसा कुछ हो गया। वह उसका वर्णन न कर सका। पहले तो उसने कहा वह एक बिजली की तरह था फिर बोला नहीं, नहीं वह ऐसा था जैसे कुछ रहस्य खुल गया है। कोई चीज़ उसका हृदय मरोड़ती हुई जान पड़ी और अकस्मात उसे अपार आह्लाद अनुभव हुआ। उसे महसूस हुआ जैसे कि उसे महान् स्वतन्त्रता मिल गई हो। वह स्थान उसे सुखदायी प्रतीत हुआ और वहीं क्षण-भर में उसने निश्चय कर लिया कि अपनी बाक़ी ज़िन्दगी यहीं सिकन्दरिया में गुज़ारूँगा। जहाज़ छोड़ने में उसे कोई दिक़्क़त नहीं हुई और चौबीस घण्टे के अन्दर ही अन्दर वह अपने सामान सहित किनारे पर उतर आया।

"जहाज़ का कप्तान तुम्हें पागल समझा होगा," मैं मुस्करा दिया।

"किसने क्या सोचा इसकी मैंने ज़रा परवाह नहीं की। यह कोई मैंने थोड़े ही किया बल्कि मुझमें विद्यमान मुझसे भी अधिक प्रबल किसी शक्ति ने ऐसा कर डाला। मैंने सोचा किसी छोटे-से यूनानी होटल में जा ठहरूँगा और जब मैंने इधर-उधर देखा तो फौरन एहसास हुआ कि चलो अमुक जगह चलकर देखें। और जानते हो मैं सीधा उसी ओर चला और जब रुका तो मैंने उसे फौरन पहचान लिया।"

"क्या तुम पहले भी कभी सिकन्दरिया आये थे ?"

"नहीं ; मैं तो ज़िन्दगी में कभी इंगलैण्ड से बाहर गया ही नहीं ?"

उसे शीघ्र ही वहाँ सरकारी नौकरी मिल गई और तब से वह वहीं काम

कर रहा था।

"क्या कभी तुम्हें यहाँ आने पर खेद भी हुआ ?"

"कभी एक मिनट के लिए भी नहीं। जितना मुझे अपने लिए चाहिए वह मैं कमा लेता हूँ और मैं संतुष्ट हूँ। मुझे और कुछ नहीं चाहिए, बस मैं जैसा हूँ वैसा ही मर जाऊँ तो अच्छा है। यहाँ मेरा जीवन बड़ा सुखी है।"

अगले दिन मैं सिकन्दरिया से रवाना हो गया और अब्राहम को बिल्कुल भूल गया। फिर एक बार कुछ दिन हुए मैं अपने एक और पुराने दोस्त अलैक कार्माइकल के साथ, जो डॉक्टर थे और कुछ दिनों की छुट्टी पर इंग्लैण्ड गये थे, खाना खा रहा था कि मुझे अब्राहम याद आया। अलेक मुझे एक दिन सड़क पर मिल गया और मैंने उसे, उसने युद्ध के दौरान में जो महत्त्वपूर्ण सेवाएँ की थीं, उनके लिए उसे 'नाइट' की उपाधि मिली थी उसके लिए बधाई दी। हमने तय किया कि पुरानी दोस्ती की याद में हम शाम को खाना साथ ही खायेंगे और जब मैंने उसके साथ खाने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया तो उसने कहा कि मैं किसी और को नहीं बुलाऊँगा ताकि हम दोनों बिना किसी बाधा के बातचीत कर सकें। क्वीन एन स्ट्रीट में उसका बड़ा शानदार बंगला था और चूँकि वह शौक़ीन तबियत वाला था। इसलिए उसने उसे बड़ी खूबी से सजा रखा था। डाइनिंग रूम की दीवारों पर मुझे एक बड़ा सुन्दर बेलाटो और जोफ़ानी का एक जोड़ा दिखाई दिया जिसे देखकर मुझे उससे बड़ी ईर्ष्या हुई। जब उसकी क़द्दावर, ज़री के वस्त्रों में विभूषित पत्नी चली गई तो मैंने हँसकर उसकी वर्तमान परिस्थितियों और उस समय की परिस्थितियों की तुलना की जब हम दोनों डॉक्टरी के विद्यार्थी थे। उस समय वेस्टमिन्स्टर, ब्रिजरोड पर किसी गंदी-सी इटैलियन रेस्तोराँ में खाना खाना भी हम फ़िज़ूलखर्ची समझते थे। और अब अलैक कार्माइकल आधा दर्जन अस्पताल के स्टाफ़ का सदस्य था और मेरे ख्याल से कोई दस हज़ार सालाना कमाता था और शायद उसकी 'नाइट' की उपाधि सबसे पहला सम्मान था जो उसे मिला था।

"मैं बड़े मजे में हूँ," उसने कहा, "लेकिन अजीब बात यह है कि सब कुछ

एक जरा-से सौभाग्य के कारण हुआ है।"

"क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"अरे तुम्हें अब्राहम याद है ? असल में भविष्य तो उसी व्यक्ति का उज्ज्वल था। जब हम पढ़ते थे तो हमेशा वह मुझसे बाज़ी ले जाता था। जिन इनामों और वज़ीफ़ों के लिए मैं कोशिश करता था उन्हें वह ले भागता था। मैं हमेशा उससे पीछे रहा। अगर वह यहीं टिक जाता तो जो स्थिति मेरी है आज उसकी होती। सर्जरी में तो वह शख़्स दक्ष था। कोई उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता था। जब वह सेंट टॉमस अस्पताल में रजिस्ट्रार नियुक्त हुआ था तब मुझे स्टाफ़ पर भी आने का मौका नहीं मिला था। मुझे जनरल प्रैक्टिश्नर (G. P.) बनना पड़ा और जानते हो जी. पी. को उस एक ही जैसे बखेड़े से निकलने का कितना मौक़ा मिलता है। लेकिन अब्राहम हटा और वह जगह मुझे मिल गई। बस मुझे मौक़े मिले और मैं बढ़ गया।"

"सम्भव है यह सच हो।"

"हाँ, हाँ भई महज़ ख़ुशकिस्मती तो थी ही। मेरे ख़्याल से अब्राहम के दिमाग़ में कुछ ख़लल था। बेचारा सड़ रहा होगा कहीं। सिकन्दरिया में कहीं उसे कोई दो-तीन कौड़ी की नौकरी मिल गई है—शायद सैनिटरी आफ़िसर है या कुछ और, और बस उसी में मगन है भाई। मैंने सुना है कि वह वहाँ एक कुरूप यूनानी औरत के साथ रहता है और कोई आधा दर्जन गण्डमाला के रोगी बच्चे हैं उसके। असल बात तो यह है भाई जान कि अक्लमंद हो जाना ही सब कुछ नहीं है। सबसे महत्त्व की बात है चरित्र। अब्राहम में चरित्र नाम की कोई चीज़ नहीं।"

चरित्र ? मैं समझता हूँ कि आधे घण्टे के सोच विचार की ख़ातिर एक उच्च पद पर लात मार देना क्योंकि आप दूसरे ढंग के जीवन को अधिक महत्त्व देते हैं बहुत बड़े चरित्र वाले का काम है। और उस आकस्मिक परिवर्तन पर कभी न पछताने के लिए तो और भी बड़ा चरित्र चाहिए। लेकिन मैंने कुछ न कहा और अलैक कार्माइकल अपनी तक़रीर झाड़ते रहे :

"ज़ाहिर है अगर मैं यह कहूँ कि अब्राहम के चले जाने का मुझे भारी दुख है तो यह मेरी रियाकारी और ढोंग होगा। बल्कि मुझे तो उससे लाभ ही हुआ है।" उसने अपने लम्बे कोरोना से जो वह पी रहा था एक लम्बा कश खींचा। "लेकिन अगर मैं व्यक्तिगत रूप से इससे सम्बन्धित न होता तो वास्तव में मुझे उसकी इस मूर्खता पर रंज होता। बड़ी बुरी-सी बात है कि आदमी इस तरह अपनी जिन्दगी तबाह कर ले।"

मैं सोचने लगा कि क्या वाक़ई अब्राहम ने अपनी जिन्दगी तबाह कर डाली है। क्या ऐसा करना जो आप सर्वाधिक चाहते हैं—ऐसी स्थिति में रहना जो आपको सुखी रखे और अपने में संतुष्ट रहना—जिन्दगी तबाह कर लेना है; और क्या प्रतिष्ठित सर्जन बन कर दस हज़ार वार्षिक कमाना और एक सुन्दर बीवी रखना जीवन की सफलता है ? मेरे ख़्याल से इसका दारोमदार इस चीज़ पर है कि आप जीवन का क्या अर्थ लगाते हैं, समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाना या वैयक्तिक सुख प्राप्त करना। लेकिन इस बार भी मैंने ज़ुबान रोकी क्योंकि भला नाइट से तर्क-वितर्क करने वाला मैं कौन होता हूँ ?

५१

●●●

जब मैंने यह कहानी टियारे को सुनाई तो उसने मेरी बुद्धिमत्त की सराहना की और हम कुछ मिनट तक ख़ामोशी से काम करते रहे क्योंकि हम मटर छील रहे थे। फिर उसकी दृष्टि जो रसोई के कामों के बारे में बड़ी सतर्क

रहती थी चीनी रसोइये के किसी काम पर पड़ी और वह उस पर बरस पड़ी और अपनी गालियों का दहाना उसकी ओर कर दिया। चीनी उन दबे-कुचले तथा पिछड़े हुए लोगों में से न था जो मालकिन की गालियाँ सुनकर चुप हो जाता चुनांचे फलस्वरूप एक जोरदार कलह छिड़ गई। वे वहीं की जुबान में बोल रहे थे जिसके मैंने दर्जन-भर शब्द ही सीखे थे और वह ऐसी जुबान थी जिसे सुनकर ऐसा लगता था कि बस अब प्रलय हुआ और दुनिया डूबी। लेकिन जरा देर में ही अमन हो गया और टियारे ने उसे सिगरेट पेश किया। वे दोनों इत्मेनान से सिगरेट पीते रहे।

"जानते हैं आप मैंने ही उसे बीवी दिलवाई ?" टियारे ने सहसा कहा और उसके उस चौड़े चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

"किसे रसोइये को ?"

"नहीं, स्ट्रिकलैण्ड को।"

"लेकिन उसकी बीवी पहले से ही थी।"

"यही उसने भी कहा लेकिन मैंने उसे समझाया कि वह इंग्लैण्ड में है और इंग्लैण्ड संसार के दूसरे सिरे पर स्थित है।"

"सच है," मैंने जवाब दिया।

"वह हर दो-तीन महीने बाद जब उसे रंगों या तम्बाकू या पैसों की जरूरत पड़ती पापीट आया करता था और खोये कुत्ते की तरह भटकता फिरता था। मुझे उस पर बड़ा तरस आता था। उस वक्त मेरे पास अटा नामक लड़की थी जो कमरे साफ करने पर रखी गई थी, वह एक तरह से मेरी रिश्तेदार भी थी और उसके मा-बाप मर चुके थे इसलिए मैंने उसे अपने पास रख लिया था। स्ट्रिकलैण्ड यहाँ कभी-कभी खाना खाने या किसी लड़के से शतरंज खेलने आया करता था। मैंने भाँप लिया कि जब भी वह आता वह उसकी ओर देखा करती थी चुनांचे मैंने उससे पूछा क्या वह तुम्हें पसंद है। बोली मुझे वह बहुत पसंद है। जानते हैं ये लड़कियाँ किस क़िस्म की हैं; हमेशा किसी गोरे के साथ जाना

चाहती हैं।"

"क्या वह यहीं की रहने वाली थी ?" मैंने पूछा।

"जी हाँ, गोरों के रक्त का तो उसमें लेश भी न था। हाँ तो उससे बात कर लेने के बाद मैंने स्ट्रिकलैण्ड को बुलवाया और उससे कहा : 'स्ट्रिकलैण्ड अब समय आगया है कि तुम कहीं टिक जाओ। तुम्हारी उम्र वाले व्यक्ति को सामने वाली छोकरियों के साथ मिलना-जुलना शोभा नहीं देता। वे बहुत बुरी औरतें हैं और उनसे तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचेगा। पैसे-वैसे तुम्हारे पास हैं नहीं और दो-तीन महीने से ज्यादा तुम कोई नौकरी नहीं कर सकते। अब तुम्हें यहाँ कोई काम पर नहीं रखेगा। तुम कहते हो किसी न किसी देशी के साथ तुम हमेशा झाड़ियों में रह सकते हो और वे तुम्हें पसंद भी करते हैं क्योंकि तुम गोरे हो लेकिन एक गोरे आदमी को ऐसा रहना शोभा नहीं देता। तो मेरी बात सुनो स्ट्रिकलैण्ड।"

टियारे बातचीत में अंग्रेजी और फ्रांसीसी दोनों मिलाकर बोलती थी क्योंकि उसे दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। वह ये दोनों भाषाएँ गीत के-से उच्चारण के साथ बोलती थी जो कानों को बुरे नहीं लगते थे। ऐसा महसूस होता था कि यदि पक्षी अंग्रेजी जानते तो वे भी ऐसे ही स्वर में बोलते।

" 'हाँ तो यदि अटा से तुम्हारी शादी हो जाय तो कैसा रहे ? वह बड़ी अच्छी लड़की है और अभी सत्रह वर्ष की ही है। यहाँ की दूसरी लड़कियों की तरह वह आवारा कभी नहीं रही—कोई कप्तान या पहला जहाजी अफसर तो उसे चख गया होगा लेकिन यहाँ के किसी बाशिंदे ने उसे कभी छुआ भी नहीं है। वह आत्मसम्मानी है, क्या तुम नहीं जानते ? ओहू जहाज के अकाउण्टेण्ट ने अपने आखिरी सफर पर मुझसे कहा था कि अटा से बेहतर कोई लड़की उसे उन द्वीपों में नहीं मिली। उसके लिए भी अब जिंदगी बसाने का समय है और इसके अलावा जहाजी कप्तान और पहले अफसर वगैरह स्थिर चित्त वाले नहीं हैं। वे कभी-कभी मुँह का मजा बदलना चाहते हैं। मैं अपनी लड़कियों को ज्यादा अर्से तक नहीं रखती। ट्रावेसो के पास इस प्रायद्वीप से कुछ पहले उसकी कुछ

जायदाद है और खोपरे भी हैं और उनके आजकल जो दाम मिलते हैं उनसे तुम दोनों आराम के साथ रह सकते हो। एक मकान भी है और वहाँ तुम पेंटिंग के लिए जितना समय चाहोगे मिल सकता है। क्या कहते हो फिर ?' "

टियारे साँस लेने के लिए रुकी।

"तब उसने मुझे बताया कि उसकी पत्नी इंगलैण्ड में है। 'अरे भई स्ट्रिकलैण्ड,' मैंने उससे कहा, 'सभी की पत्नी कहीं-न-कहीं हैं इसीलिए तो वे इन द्वीपों में आते हैं। अटा बड़ी समझदार लड़की है और वह मेयर के पास जाकर कोई रस्म भी नहीं अदा करना चाहती। प्रोटेस्टण्ट है और तुम जानते हो वे लोग इन विधि-संस्कारों को इतना महत्त्व नहीं देते जितना कैथोलिक देते हैं।'

"फिर उसने कहा: 'लेकिन अटा क्या कहती है इस विषय में ?' 'ऐसा मालूम होता है जैसे उसने तुम्हीं से शादी करने की क़सम खाई हो।' मैंने कहा। 'अगर तुम तैयार हो तो वह तो राज़ी है। बुलाऊँ क्या उसे ?' वह अपने विशिष्ट रूखे ढंग से हँस पड़ा और मैंने उसे पुकारा। वह चुड़ैल जानती थी मैं क्या बातें कर रही थी और मैंने कनअँखियों से देख लिया था कि जब वह मेरे ब्लाउज़ पर इस्तरी करने का बहाना बना रही थी तो बड़े ध्यान से हमारी बातें सुन रही थी। वह आगई। वह हँस रही थी लेकिन मैंने देखा कि वह कुछ शर्मा रही है और उधर स्ट्रिकलैण्ड बग़ैर कुछ कहे उसकी ओर तकता रहा।"

"क्या वह सुन्दर थी ?" मैंने पूछा।

"ख़ासी थी। लेकिन आपने तो उसके चित्र भी देखे होंगे। उसने उसके अनेक चित्र बनाये थे, कुछ में वह पेरियो पहने हुए है और कुछ में बिल्कुल नंगी। हाँ, वह काफ़ी ख़ूबसूरत थी। और खाना-पकाना भी अच्छी तरह जानती थी वह। मैंने ही ख़ुद उसे सिखाया था। मैंने देखा कि स्ट्रिकलैण्ड उसके बारे में सोच रहा है और मैंने उससे कहा; 'मैंने इसे अच्छी-ख़ासी मज़ूरी दी है जो इसने जमा कर रखी है और कप्तानों और दूसरे अफ़सरों ने भी कभी-कभी इसे कुछ दिया है। इसने कई सौ फ्रांक जमा कर लिये हैं।'

"उसने अपनी लंबी, लाल दाढ़ी खेंची और मुस्करा दिया।

" 'हाँ तो अटा,' उसने कहा, 'क्या मुझे अपना पति बनाना स्वीकार करती हो ?'

"अटा ने कुछ नहीं कहा सिर्फ़ खी-खी करके हँस दी ।

" 'लेकिन मैं तुमसे कहे जा रही हूँ भई कि छोकरी ने तुम्हारे लिए क़सम खा रखी हैं,' मैंने कहा ।

" 'मैं तुम्हें पीटा करूँगा,' उसने अटा की ओर देखकर कहा ।

" 'और भला आपके प्रेम की पहचान ही क्या होगी अगर आपने मुझे पीटा नहीं,' उसने जवाब दिया ।

टियारे ने अपना क़िस्सा खत्म किया और मुझसे मुख़ातिब हुई:

"मेरे पहले पति कैप्टन जॉन्सन मुझे नियमित रूप से मारा करते थे । वह मर्द थे, खूबसूरत थे और छः फीट तीन इंच ऊँचे थे और जब वह नशे में होते थे तो कोई क़ाबू न पा सकता था । कभी-कभी तो निरंतर कई दिन तक मेरे जिस्म पर नील पड़े रहते थे । लेकिन जब वह मरे तो मैं दहाड़ मारकर रोई । मैं समझी अब अपना ग़म कभी न भुला सकूँगी; लेकिन जब तक मैंने जार्ज रेनी से विवाह न कर लिया, मुझे यह एहसास ही न हुआ कि मैं क्या खो चुकी हूँ । जब तक आप किसी शख्स के साथ रह न लें तब तक उसके स्वभाव आदि के बारे में आप कुछ नहीं कह सकते । किसी भी मनुष्य के बारे में मुझे इतना धोखा कभी नहीं हुआ जितना जॉर्ज रेनी के बारे में । वह भी बहुत अच्छे और नेक आदमी थे । लम्बे भी वह लगभग उतने ही थे जितने कैप्टन जॉन्सन और वह ताक़तवर भी दीखते थे । लेकिन यह सब ऊपरी टीपटाप थी । उन्होंने कभी शराब नहीं पी । न ही कभी मुझ पर हाथ उठाया । वह तो यदि धर्मप्रचारक होते तो ज्यादा अच्छा था । इस द्वीप में आने वाले हर जहाज़ के अफसरों से मैंने प्रेम किया और जॉर्ज रेनी कभी कुछ न समझे । आख़िरकार मैं उनसे उक्ता गई और मैंने उनसे तलाक़ लेली । उस जैसे पति का भला क्या फायदा ? कुछ मर्द औरतों से बड़े भयंकर तरीक़े से व्यवहार करते हैं ।"

मैंने टियारे को सान्त्वना दी और सच्चे दिल से कहा कि मर्द हमेशा धोखेबाज होते हैं और फिर उससे स्ट्रिकलैण्ड का क़िस्सा जारी रखने के लिए कहा।

" 'देखो, इसमें जल्दी की कोई बात नहीं है", मैंने उससे कहा, 'तुम अच्छी तरह इस पर ग़ौर कर लो। अटा के पास इसी मकान में एक बढ़िया कमरा है। एकाध महीने उसके साथ रहकर देखो कि तुम्हारी उससे कैसी निभती है। तुम खाना भी यहीं खा सकते हो। महीने के अंत में अगर तुम उससे शादी करने का निश्चय कर लो तो जाकर उसकी जायदाद वग़ैरा लेकर तुम अपना घर बसा लेना।'

"और इस पर वह राज़ी हो गया। अटा घर का काम करती रही और मैंने स्ट्रिकलैण्ड को वादे के मुताबिक़ महीने-भर खाना खिलाया। मैंने अटा को उसके मनपसन्द दो-तीन पकवान तैयार करना भी सिखा दिया। उन दिनों उसने अधिक चित्र नहीं बनाये। वह पहाड़ियों में घूमता रहता और सोतों में नहाता था। सामने बैठकर वह झील को निहारा करता और सूर्यास्त के समय वह जाकर मुरिया द्वीप को देखा करता था। चट्टान पर वह मछली के शिकार पर भी जाया करता था। बन्दरगाह में घूमना और यहाँ के निवासियों से बातें करना उसे बहुत भाता था। वह बड़ा अच्छा, शान्त स्वभाव का व्यक्ति था। हर रोज शाम को वह अटा के साथ उसके कमरे में चला जाता था। मैं समझ रही थी कि वह झाड़ियों में जाने के लिए तड़प रहा था और महीना समाप्त होने पर मैंने उससे पूछा कि तुमने क्या फैसला किया है। उसने जवाब में कहा कि यदि अटा मेरे साथ चलने को तैयार हो तो मैं भी उसे अपनाने के लिए राज़ी हूँ। चुनांचे मैंने उन्हें विवाह-भोज दिया। मैंने खुद ही भोजन तैयार किया। मैंने उन्हें मटर का सूप और पोर्तुगीज़ लाब्स्टर, शोरबा और नारियल का सलाद—आपने तो मेरे यहाँ नारियल का सलाद कभी नहीं खाया ना? आपके जाने के पहले मैं आपको जरूर खिलाऊँगी वह और मैंने उन्हें आइसक्रीम भी बनाकर दिया। हमारे यहाँ बहुत-सी शैम्पेन और दूसरी शराब थीं जो उन्हें

पेश कीं मैंने तो अपनी जानिब से जो कुछ दे सकती थी दिया और भोजन के उपरान्त हम लोगों ने ड्राइंग रूम में नृत्य भी किया। उस जमाने में मैं इतनी मोटी नहीं थी और नाच से मुझे बड़ा प्रेम था।"

होटेल दि ला फ्ल्यूर का ड्राइंग रूम एक छोटा-सा कमरा था जहाँ एक छोटा-सा पियानो और महोगनी का फर्नीचर लगा हुआ था जिन पर छपा हुआ मखमल लगा था और वह दीवारों के सहारे बड़ी खूबसूरती से सजाया गया था। गोल मेजों पर फ़ोटोग्राफ-अल्बम रखे थे और दीवारों पर टियारे तथा उसके पहले पति केप्टन जॉन्सन के बड़े-बड़े चित्र लगे हुए थे। अब भी हालाँकि टियारे बूढ़ी और मोटी होगई थी, कभी-कभी हम एक-दो लड़कियों और टियारे के दो-तीन दोस्तों को साथ लेकर ब्रुसेल्स कार्पेट पर नाच लेते थे और अब चूँकि पियानो न था इसलिए ग्रामोफ़ोन के संगीत पर ही नृत्य करना पड़ता था। बरामदे की हवा टियारे फूल की भभकती हुई सुगन्ध से महक रही थी और ऊपर घन-शून्य आकाश में दक्षिणी तारा चमक रहा था।

जब उसने बीते दिनों के सुख की याद की तो टियारे जी-भरकर हँसी।

"हम तीन बजे रात तक आमोद-प्रमोद करते रहे और जब हम सोए तो किसी को भान न था क्या हुआ। मैंने उनसे कह दिया था कि पक्की सड़क जहाँ तक है वे मेरी गाड़ी ले जा सकते हैं क्योंकि उसके बाद कच्ची सड़क पर उन्हें बड़ी दूर तक पैदल चलना था। अटा की ज़मीन-जायदाद पहाड़ की एक खोह में थी। वे सुबह सवेरे यहाँ से रवाना हुए और जिस लड़के को मैंने उनके साथ भेजा था वह अगले दिन तक वापस न आया।

"हाँ तो इस प्रकार स्ट्रिकलैण्ड का विवाह हुआ।"

५२

मेरा अनुमान है कि उसके बाद के तीन वर्ष स्ट्रिकलैण्ड के जीवन के सुखीतम रहे वर्ष होंगे। अटा का मकान उस बड़ी सड़क पर जो द्वीप में जाती थी आठ किलोमीटर ऊँचा था। वहाँ तक जाने के लिए आपको एक चक्करदार मार्ग से जो अयनवृत्तीय घने वृक्षों के साये से ढका हुआ था जाना पड़ता था। वह वेरंगी लकड़ी का एक बँगला था जिसमें दो छोटे-छोटे कमरे बने हुए थे और बाहर की ओर एक सायबान पड़ा था जिसका इस्तेमाल रसोई के लिए होता था। फर्नीचर में सिवाय चटाइयों के जिन्हें वे बिस्तर की तरह इस्तेमाल करते थे और एक घुमाऊ कुर्सी जो बरामदे में पड़ी रहती थी, कुछ न था। केलों के बड़े-बड़े सूखे पत्ते विपत्तिग्रस्त सम्राज्ञी के फटे चिथड़ों की नाईं मकान के इर्द-गिर्द एकत्र हो गये थे। मकान के ठीक पीछे नाशपाती के पेड़ खड़े थे और चारों ओर नारियल के दरख़्त थे जो उनकी आमदनी का साधन थे। अटा के बाप ने अपनी ज़मीन में क्रोटोन बो दिये थे और वे भाँति-भाँति के रंग वाले क्रोटोन बड़े सुन्दर और चमकदार लगते थे और वे ज़मीन की मेंड़ बने हुए थे। मकान के सामने आम का एक दरख़्त था और फ्लैम बोयांट के दोहरे वृक्षों में आने वाले नारंगी रंग के फूल नारियलों के सुनहरेपन को मात कर रहे थे।

यहीं स्ट्रिकलैण्ड रहा करता था और फ़सल कटते समय सिर्फ कभी-कभी पापीट जाया करता था। वहीं एक छोटा-सा झरना था जहाँ वह स्नान किया करता था और वहीं कभी-कभी एकाध मछली उसके हाथ लग जाती थी। फिर वहाँ के निवासी भाले लेकर जमा हो जाते थे—और खूब शोर-गुल मचाते थे

और उनसे मछलियों को छेदते हुए समुद्र की ओर भाग जाते थे। कभी-कभी स्ट्रिकलैण्ड चट्टान पर जाता और छोटी-छोटी रंगीन मछलियाँ एक टोकरी में भरकर ले आता जिन्हें अटा नारियल के तेल में भूनती या लो ब्स्टर में पकाती और कभी-कभी वह पैरों तले आने वाले केंकड़े इधर-उधर से पकड़ लेती और उनके बड़े स्वादिष्ट पदार्थ तैयार करती। पहाड़ के ऊपर नारंगी के अनेक वृक्ष थे जहाँ अटा गाँव की दो-तीन औरतों के साथ जाती थी और खूब बहुत से सुगन्धित, मीठे और हरे फल लादकर लाती थी और तब नारियल तोड़ने के क़ाबिल हो जाते और अटा अपनी बहनों को (दूसरे निवासियों की भाँति अटा के भी बहुत-से सम्बन्धी थे) पेड़ों पर चढ़ा देती और वे वहाँ से पके-पके नारियल-तोड़-तोड़कर नीचे गिरातीं, वे उसे छीलतीं और धूप में सुखाने के लिए रख देती थीं। फिर वे उसमें से खोपरा निकालकर बोरों में भर लेतीं और उन्हें नीचे झील के पास एक व्यापारी को दे देतीं। जो बदले में उन्हें चावल, साबुन, डिब्बे का गोश्त और थोड़े-से पैसे दे देता था। कभी-कभी आस पड़ौस में भोज होता और सूअर काटा जाता। फिर वे एकत्र हो उसे इतना खाते कि अपच हो जाय, नाचते और भजन गाते थे।

लेकिन मकान गाँव से बहुत दूर था और टाहिटी-वासी होते हैं महा आलसी। उन्हें यात्रा और गप्प से बड़ा लगाव है लेकिन पैदल चलना उनके बस का नहीं। और कभी तो हफ्तों स्ट्रिकलैण्ड और अटा अकेले ही रहते थे; वह चित्र बनाता था और पुस्तकें पढ़ता था और शाम को वे दोनों बरामदे में बैठे धूम्रपान करते और रात्रि को निहारते थे। फिर अटा के एक बच्ची हो गई और वह बूढ़ी औरत जो उसकी मदद करने ऊपर जाया करती थी वहीं रहने लगी। कुछ ही दिनों बाद बुढ़िया की पोती उसके साथ रहने के लिए आई और फिर एक नौजवान वहाँ दिखाई दिया—वह कहाँ से आया था कहाँ का था यह कोई न जानता था—लेकिन वह उन्हीं के साथ बस गया और वे सब साथ-साथ रहने लगे।

५३

"वह देखो कैप्टन ब्रुनो आगये !" टियारे ने एक दिन फ्रेंच भाषा में कहा जब मैं, उसने जो स्ट्रिकलैण्ड के बारे में मुझे बताया था, उसे एक जगह जमा करके सम्बद्ध कर रहा था। "वह स्ट्रिकलैण्ड को अच्छी तरह जानते थे। वह उससे उसके मकान पर जाकर मिले थे।"

मैं एक बड़ी खिचड़ी दाढ़ी वाले फ्रांसीसी से जो अधेड़ उम्र का होगा, मिला। उसका चेहरा धूप से झुलसा हुआ था। और बड़ा था और उसकी चमकीली आँखें थीं। वह डक का एक स्वच्छ सूट पहने हुए था। मैंने उसे दोपहर के खाने पर देखा और आह लिन नामक एक चीनी लड़के ने मुझे बताया कि वह पामोटस से उस नाव में बैठकर आया है जो आज ही यहाँ पहुँची है। टियारे ने उससे मेरा परिचय कराया और उसने मुझे एक कार्ड थमा दिया, एक बड़ा-सा कार्ड था जिस पर 'कैप्टन भ्रमण पर' छपा हुआ था और उसके नीचे 'अंत में' छपा हुआ था। रसोई घर के बाहर के छोटे-से बरामदे में हम बैठे हुए थे और टियारे बैठी हुई वहाँ की एक लड़की की पोशाक काट रही थी। वह हमारे साथ आ बैठा।

"जी हाँ, मैं स्ट्रिकलैण्ड से भली भाँति परिचित था," उसने कहा। "शतरंज का बहुत शौक़ीन हूँ और वह तो सदा उसके लिए तरसा करता था। मैं साल में तीन-चार बार अपने व्यापार के सिलसिले में टाहिटी आता हूँ और जब वह पापीट में था तो वहाँ आ जाया करता था और हम दोनों खेल लेते थे। जब उसने शादी कर ली"—कैप्टन ब्रुनो मुस्कराया और अपने कंधे हिलाये—"देखो,

जब वह उस लड़की के साथ जो टियारे ने उसे दिलवाई थी रहने लगा तो उसने मुझसे वहाँ आ कर मिलने के लिए कहा। विवाह-भोज पर मैं भी एक अतिथि के रूप में आया था।" उसने टियारे की ओर देखा और वे दोनों हँस दिये। "उसके बाद वह पापीट में ज़्यादा न आता था। और कोई एक वर्ष बाद न जाने किस काम से मुझे द्वीप के उस भाग में जाना पड़ गया और जब मैं अपना काम ख़त्म कर चुका तो मैंने अपने आपसे कहा 'चलें चलकर उस बेचारे स्ट्रिक-लैण्ड से क्यों न मिल लिया जाय ?' मैंने वहाँ के दो-चार के बाशिंदों से उसके बारे में पूछा तो मालूम हुआ कि उसकी जगह जहाँ मैं खड़ा था वहाँ से मुश्किल ही से पाँच किलोमीटर की ऊँचाई पर होगी। लिहाजा मैं वहाँ गया मेरी वहाँ की यात्रा मैं कभी न भूलूँगा। मैं निचले द्वीप पर रहता हूँ जिसके बीच में एक झील है; वहाँ की सुन्दरता आकाश और समुद्र की सुन्दरता है; और झील के भाँति-भाँति के रंग और नारियल के दरख़्तों की सुन्दरता आदि; लेकिन जहाँ स्ट्रिकलैण्ड रहता था वह स्थान तो ईडन के बाग़ की नाईं सुन्दर है। काश मैं आपको उस स्थान का जादू दिखा सकता। ऐसा है जैसा एक कोना संसार से बिल्कुल अलग कर दिया गया हो जिसके ऊपर नीला आकाश फैला हुआ है और चारों ओर फलदार वृक्ष उगे हुए हैं। पेड़ों के रंग आँखों को बड़े प्यारे मालूम होते हैं। और जगह सुगन्धमय तथा ठण्डी है। उस स्वर्ग का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। यहाँ वह दुनिया से बेख़बर एक ऐसे आदमी की तरह रह रहा था जिसे दुनिया ने भुला दिया था। मेरा ख़्याल है कि यूरोप-वासियों की नजर में यह जगह आश्चर्यजनक रूप से मलिन होगी। मकान भग्नावस्था में था और कुछ ख़ास साफ-सुथरा भी नहीं था। जब मैं वहाँ पहुँचा तो तीन-चार बाशिंदे बरामदे में लेटे थे। जानते हैं आप यहाँ के बाशिंदे किस प्रकार एक-दूसरे से सटकर रहना पसन्द करते हैं। एक नौजवान लेटा हुआ सिगरेट पी रहा था और वह **पैरियो** के सिवाय कुछ पहने हुए न था।"

पैरियो सूती कपड़े की एक लम्बी पट्टी होती है लाल या नीले रंग की जिस पर सफेद चारख़ाने बने हुए होते हैं। यह कमर से लेकर घुटनों तक

पहना जाता है।

"एक पंद्रह वर्षीय लड़की पाण्डानुस के पत्तों से हैट बना रही थी और एक बुढ़िया अपने पुट्ठों के बल बैठी पाइप पी रही थी। फिर मुझे अटा दिखाई दी। वह एक नव-जन्मे बच्चे को दूध पिला रही थी और दूसरा नंगा बालक उसके पैरों के पास खेल रहा था। जब उसने मुझे देखा तो स्ट्रिकलैण्ड को पुकारा और वह दरवाज़े में आया। वह भी केवल पैरियो ही पहने हुए था। दाढ़ी, बिखरे हुए बाल और बालों भरे चौड़े चकले सीने से वह एक भारी-भरकम शरीर वाला लग रहा था। उसके पैर खुरदरे थे और उनमें बिवाइयाँ पड़ी हुई थीं जिनसे मैंने अनुमान लगाया कि वह हमेशा नंगे पैर चलता होगा। वह उन लोगों में बदले की भावना से रस-बस गया था। मुझे देखकर वह बड़ा खुश लगा और उसने अटा से कहा कि हमारे शाम के खाने के लिए मुर्गी काट लो। वह मुझे अन्दर अपना वह चित्र बताने के लिए ले गया जो वह उस समय बना रहा था कि मैं वहाँ पहुँच गया। कमरे के कोने में बिस्तर रखा था और बीच में चित्र रखने का स्टैण्ड रखा हुआ था। चूँकि मुझे उसकी दुर्दशा पर दुःख हुआ इसलिए मैंने उसके दो-चार चित्र सस्ते दामों में खरीद लिये और कुछ मैंने फ्रांस अपने दोस्तों को भेज दिये। और हालाँकि मैंने उन्हें उस पर दया करने के उद्देश्य से खरीदा था लेकिन जब वे मेरे सामने रहे तो मुझे अच्छे लगने लगे। और वास्तव में मुझे उनमें एक विचित्र सौंदर्य दिखाई देने लगा। हरेक यही समझता था कि मेरा दिमाग़ खराब हो गया है लेकिन मेरा विचार सही निकला। इन द्वीपों में मैं ही उसका पहला प्रशंसक था।"

वह टियारे को देखकर द्वेष से मुस्कराया और टियारे ने फिर वही पश्चातापपूर्ण स्वर में मुझे वह क़िस्सा सुनाया कि किस प्रकार उसके सामान में से उसने चित्र तो छोड़ दिये थे और एक अमरीकी स्टोव सत्ताइस फ्रांक में खरीद लिया था।

"क्या अब भी आप के पास वे चित्र हैं ?" मैंने पूछा।

"जी हाँ मैं उन्हें तब तक के लिए रख रहा हूँ जब तक मेरी पुत्री विवाह

योग्य न हो जाय और उसके बाद मैं उन्हें बेच डालूंगा। वे उसका दहेज होंगे।"

फिर उसने स्ट्रिकलैण्ड की मुलाक़ात का अपना क़िस्सा जारी रखा।

"उसके साथ जो शाम मैंने बिताई थी वह मैं कभी न भूलूंगा। मेरा तो वहाँ एक घण्टे से अधिक ठहरने का इरादा न था लेकिन उसने आग्रह किया कि मैं रात को वहीं रहूँ। मैं कुछ सकुचाया क्योंकि मुझे वे चटाइयाँ ज़रा अच्छी न लगीं जिन पर वह मुझे सुलाना चाहता था; लेकिन मैंने कंधे सिकोड़े और उस का सुझाव स्वीकार कर लिया। जब मैं पामोटस में अपना घर बनवा रहा था तो एक सप्ताह से अधिक मुझे उससे भी ज़्यादा सख्त बिस्तर पर सोना पड़ा था जहाँ सिवाय जंगली झाड़ियों के और कुछ ढँकने के लिए न था। और कीड़े-मकोड़े तो मेरे शरीर पर असर ही नहीं कर सकते थे।

"जब अटा घर में भोजन तैयार कर रही थी तो हम दोनों सोते में नहाने के लिए गये। और खाना खा चुकने के बाद हम बरामदे में बैठ गये। हम धूम्रपान करते रहे और बातें करते रहे। उस नवयुवक के पास एक कंसर्टिना था और वह उस पर वे धुनें बजा रहा था जो बारह वर्ष पूर्व म्यूज़िक हालों में बनाई जाती थीं। सभ्यता से हजारों मील दूर उस अयनवृत्तीय प्रदेश में वे बड़ी विचित्र लग रही थीं। मैंने स्ट्रिकलैण्ड से मालूम किया कि क्या तुम्हें इस भ्रष्ट वातावरण में रहते हुए तकलीफ नहीं होती। उसने कहा, नहीं; वह चाहता था कि उसे मॉडल क़रीब में ही मिल जायें। कुछ देर में जमाइयाँ लेते हुए वहाँ के निवासी तो सोने चले गये और सिर्फ मैं और स्ट्रिकलैण्ड ही वहाँ रह गये। रात की गहन निस्तब्धता का मैं आपके सामने वर्णन नहीं कर सकता। पामोटस में मेरे द्वीप पर ऐसा गहरा सन्नाटा मैंने कभी नहीं देखा जो यहाँ देखने को मिला। तट पर विविध पशुओं की सरसराहट अन्य पशु-पक्षियों के रेंगने की आवाजें और शोर मचाते हुए केकड़ों के दौड़ने की आवाजें वहाँ की शांति भंग करती हैं। कभी झील में मछली के कूदने की आवाज आ रही है और कभी बाज की तेजी से झपट्टा मारने की आवाजें वहाँ आती रहती हैं। और इन सबके अतिरिक्त चट्टानों की गरज तो समय की नाईं कभी रुकती ही नहीं है।

लेकिन यहाँ किसी प्रकार की आवाज़ नहीं थी और हवा रात्रि के फूलों की सुगन्ध से महकी हुई थी। यहाँ की रात इतनी सुन्दर और मनोरम होती है कि आपकी आत्मा शरीर-कारावास को भी अनुभव नहीं करती। आपको यहाँ महसूस होता है कि आपकी आत्मा शरीर से निकल कर हवा में विलीन हो जाना चाहती है और यहाँ की तो मृत्यु भी एक प्रिय मित्र की नाई प्रतीत होती है।"

टियारे ने ठण्डी साँस ली।

"काश, मैं दोबारा पन्द्रह वर्ष की हो जाती !"

फिर सहसा उसकी दृष्टि एक बिल्ली पर पड़ी जो रसोई की मेज़ पर से प्रॉन मछली की रकाबी सपोट रही थी और फिर निपुण हाव-भाव के साथ उसने गालियों की बौछार उस पर की और एक किताब उसकी हिलती हुई दुम पर फेंक कर मारी।

"मैंने उससे पूछा कि तुम अटा से खुश भी हो।"

" 'हाँ, क्योंकि वह मुझे अकेला रहने देती है" उसने कहा। 'वह मेरा खाना बनाती है और अपने बच्चों की देख भाल करती है। जो कुछ मैं उससे कहता हूँ वह उस पर अमल करती है। और वह मुझे जो कुछ मैं स्त्री से लेना चाहता हूँ, देती है।'

" 'और क्या यूरोप छोड़ने का तुम्हें कभी दुःख नहीं होता ? क्या कभी लन्दन या पेरिस की सड़कों की रोशनी के लिए तुम नहीं तरसते ? क्या अपने मित्रों और बराबरी वालों की याद तुम्हें कभी नहीं आती ? वहाँ के थ्येटर, अख़बार और सड़कों पर बसों की धड़-धड़ तुम्हें आकृष्ट नहीं करते ?'

"काफी देर तक वह चुप रहा। फिर कहने लगा :

" 'मैं तो जब तक ज़िंदा हूँ यहीं रहूँगा।'

" 'लेकिन क्या तुम्हें उकताहट या एकान्त नहीं सताता ?' मैंने पूछा।

"वह हँस दिया।

" 'मैं क्या जानूँ ?' उसने कहा। 'तुम्हारी बातों से साफ ज़ाहिर है कि तुम

कलाकार किसे कहते हैं यह बिल्कुल नहीं जानते ।' "

कैप्टन ब्रुनो मेरी ओर मुड़ कर विनम्रता से मुस्करा दिया और उसकी गहरी भोली आँखों में मुझे अजीबो-ग़रीब सुन्दरता दिखाई दी।

"उसने मेरे साथ अन्याय किया क्योंकि आकांक्षा रखना मुझे भी आता है। मेरे भी अपने विचार हैं। अपने ढंग का मैं भी एक कलाकार हूँ।"

कुछ देर के लिए हम सब खामोश रहे और फिर टियारे ने अपनी भरी हुई जेब में से थोड़े-से सिगरेट निकाले। उसने हम सबको एक-एक दिया और हम तीनों सिगरेट पीने लगे। अंततः उसने कहा :

"चूँकि यह महाशय स्ट्रिकलैण्ड से दिलचस्पी रखते हैं तो इन्हें आप डॉ० कोट्रास के पास क्यों नहीं ले जाते ? वह इन्हें उसकी बीमारी और मृत्यु के बारे में कुछ बातें बता देंगे।"

"बड़ी खुशी से आइए," कैप्टन ने मेरी ओर देख कर कहा।

मैंने उसे धन्यवाद दिया और उसने अपनी घड़ी देखी।

"छः बज चुके हैं। अगर आप अभी चलें तो वह हमें घर मिल सकते हैं।"

बिना और सोचे मैं उठ खड़ा हुआ और हम दोनों उस सड़क पर चले जो डॉक्टर के घर की ओर जाती थी। वह शहर के बाहर रहते थे लेकिन होटेल दि ला फ्लयूर उसके किनारे पर थी और हम फुर्ती से उस गाँव में पहुँच गये। वह चौड़ी सड़क पेपर के दरख्तों से ढँकी हुई थी और उसके दोनों ओर बाग़ तथा नारियल एवं वनिला के पेड़ थे। खजूर के पत्तों में चिड़ियें चहचहाती फिर रही थीं। फिर हम एक उथली नदी पर बने पत्थर के पुल पर आये और कुछ देर वहाँ के लड़कों को नहाते हुए देखने के लिए रुक गये। वे चीखते-चिल्लाते और हँसते-गाते एक दूसरे का पीछा कर रहे थे और उनके शरीर जो कत्थई रंग के और गीले थे धूप में चमक रहे थे।

५४

जब हम चलते जा रहे थे तो मैं एक घटना-विशेष पर विचार कर रहा था जो स्ट्रिकलैण्ड के बारे में अब तक सुनी हुई बातों ने मेरे मस्तिष्क पर लाद दी थी। यहाँ इस दूर दराज़ द्वीप में अपने देश की तरह उसने लोगों की घृणा या तिरस्कार नहीं प्राप्त किया बल्कि उसे यहाँ मिली करुणा: और उसकी मन मौजों को लोगों ने सहिष्णुता के साथ स्वीकार किया था। यहाँ के देशी तथा यूरोपवासियों के लिए वह एक अद्भुत प्राणी था लेकिन उन्हें अद्भुत प्राणियों की ही आदत भी थी और उन्होंने समझ लिया कि वह एक आसाधारण व्यक्ति है। संसार विचित्र लोगों से भरा पड़ा है जो विचित्र बातें करते हैं और शायद के जानते थे कि मनुष्य वह नहीं है जो वह होना चाहता है बल्कि जो उसे होना चाहिए। इंग्लैण्ड और फ्रांस में तो वह वातावरण के बिल्कुल प्रतिकूल था, लेकिन यहाँ तो कैसा ही वातावरण क्यों न होता उसके लिए सर्वथा अनुकूल था। मैं नहीं समझता वह यहाँ पर शीलता से रहा होगा—पहले से कम स्वार्थी तथा कम निर्मम—बल्कि उसकी परिस्थितियाँ उसके अधिक अनुकूल थीं। यदि यहाँ के वातावरण में ज़िन्दगी बसर करता तो दूसरों की तरह ही रहता। लेकिन यहाँ उसे वह चीज़ मिली जिसकी न उसे आशा थी और न जिन्हें वह अपने लोगों में चाहता था—सहानुभूति।

मैंने कैप्टन ब्रुनो के सामने अपना महान् आश्चर्य प्रकट किया तो वह कुछ देर तक चुप रहे।

"यह कोई अजब नहीं कि मैं जब कभी भी उससे मिलता उससे हमदर्दी

ज़ाहिर करता," अंत में उसने कहा, "क्योंकि यद्यपि हममें से कोई न जानता था लेकिन हम दोनों का लक्ष्य एक ही था।"

"आखिर वह कौन-सी चीज़ थी जो आप और स्ट्रिकलैण्ड जैसे दो विभिन्न लोगों का सामन्य लक्ष्य थी ?" मैंने मुस्कराकर पूछा।

"सौंदर्य।"

"यह भी खूब रही," मैं भुनभुनाया।

"जानते हैं आप लोग प्रेम के पीछे ऐसे पागल हो जाते हैं कि दीन-दुनिया से बिल्कुल बेख़बर रहते हैं ? तब अपने ऊपर उनका उतना ही स्वामित्व रहता है जितना गैली की बैंचों से बँधे दासों का। जिस उत्कण्ठा ने स्ट्रिकलैण्ड को बेड़ियों में जकड़ रखा था वह प्रेम से किसी क़द्र कम निर्मम नहीं थी।"

"कितनी अजब बात है कि आप भी ऐसा ही कह रहे हैं !" मैंने उत्तर दिया। "क्योंकि बड़े लम्बे अर्से तक मेरा यह विचार रहा कि वह किसी शैतान के असर में है।"

"जिस उत्कण्ठा ने स्ट्रिकलैण्ड को जकड़ रखा था वह उत्कण्ठा सौंदर्य सृजन के लिए ही थी। उससे उसे शांति नहीं मिलती थी। वह उसे इधर-उधर दौड़ाती थी। वह एक अनन्त यात्री था जिसे कोई दैवी शक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजती थी और उसके अंदर जो शैतान था वह बड़ा निर्दयी था। ऐसे लोग भी हैं जिनकी सत्य-प्राप्ति की इच्छा इतनी प्रबल होती है कि उसे प्राप्त करने के लिए वे अपने संसार की बुनियादें तक हिला देने को तैयार हो जाते हैं। ऐसे ही लोगों में स्ट्रिकलैण्ड भी था। फ़र्क़ सिर्फ इतना था कि वह सत्य की बजाय सौंदर्य की खोज में था। मैं तो उसके प्रति अपनी अपार करुणा ही प्रकट कर सकता था।"

"यह भी बड़ी विचित्र बात है। एक शख्स ने जिसके साथ उसने घोर अन्याय किया था मुझे बताया कि उसे उस पर बड़ी दया आती थी।" मैं क्षण भर के लिए खामोश हो गया। "क्या आपको वहाँ एक ऐसे चरित्र की व्याख्या प्राप्त हुई जो मुझे सदैव दुर्बोध प्रतीत हुआ है। वह आपने कैसे किया ?"

वह मेरी ओर मुड़कर मुस्करा दिया।

"मैंने आपसे कहा नहीं था कि मैं भी अपने ढंग का एक कलाकार ही हूँ ? मैं भी अपने हृदय में वैसी ही उत्कण्ठा लिये हुए था जो उसे प्रेरित करती थी। लेकिन फ़र्क़ यह था कि उसका माध्यम चित्रकारी था और मेरा जीवन।"

फिर कैप्टन ब्रुनो ने मुझे एक कहानी सुनाई जिसे मुझे यहाँ ज़रूर दोहराना चाहिए क्योंकि चाहे विरोध के रूप में ही सही उसने मेरे स्ट्रिकलैण्ड के बारे में विचारों में वृद्धि ही की थी। साथ ही इसने मेरे मस्तिष्क को अपना सौंदर्य भी प्रदान किया है।

कैप्टन ब्रुनो ब्रिटेनी का निवासी था और फ्रांसीसी जल सेना में रह चुका था। शादी के बाद उसने फ़ौज से इस्तीफा दे दिया और क्विम्पर के पास जो उसकी ज़मीन-जायदाद थी उसमें शांति से रहने लगा। लेकिन वकील की असफलता ने सहसा उसे निर्धन बना दिया और जिस जगह उन पति-पत्नी ने ऐश किये थे वहाँ कंगाली में रहना उन दोनों के लिए दूभर हो गया। अपनी समुद्र यात्रा के दौरान में वह दक्षिणी सागरों में भी गया था। और अब उसने वहीं जाकर अपनी क़िस्मत आज़माने का निश्चय किया। उसने कुछ महीने पापीट में बिताये ताकि अपनी योजना बना ले और साथ ही कुछ अनुभव भी प्राप्त कर ले ; फिर फ्रांस में अपने एक मित्र से कुछ पैसे उधार लेकर उसने पामोटस में एक द्वीप ख़रीद लिया। वह कई ज़मीनों का एक मिला-जुला टुकड़ा था जिसके बीच में एक झील थी; ज़मीन पर कोई नहीं बसता था सिर्फ़ झाड़ियाँ और जंगली अमरूद के वृक्ष लगे हुए थे। अपनी निर्भय पत्नी और कुछ देशी बाशिंदों के साथ वह वहाँ उतरा और अपना मकान बनाना और झाड़ियाँ साफ करना शुरू कर दिया ताकि वह वहाँ नारियल के दरख़्त लगा सके। यह सब बीस वर्ष पहले की बात है और आज वही द्वीप जो बिल्कुल उजाड़ था, बाग़ बना हुआ था।

"पहले-पहले काम बड़ा सख्त और चिंताजनक था और हम दोनों बड़ा कठिन परिश्रम करते थे। हर रोज़ पौ फटते ही मैं उठ बैठता था और सफाई-बुआई और घर का काम करता और रात को जब मैं बिस्तर पर लेटता तो ऐसे घोड़े बेचकर सोता कि सवेरे ही आँख खुलती। मेरी बीवी भी उतना ही परिश्रम करती थी जितना मैं करता था, फिर हमारे बच्चे हुए, पहले एक लड़का और बाद में लड़की। मैंने और मेरी पत्नी ने उन्हें हम जो कुछ जानते हैं सब कुछ बता दिया है। हमारे पास एक पियानो था जो फ्रांस से आया था और पत्नी ने उन्हें वह बजाना और इंग्लिश बोलना सिखा दिया है और मैंने उन्हें लैटिन तथा गणित पढ़ा दी है और इतिहास तो हम सब मिलकर पढ़ते हैं। अब वे नाव खेह सकते हैं। वे उतनी ही अच्छी तरह तैर सकते हैं जितने यहाँ के बाशिंदे। ज़मीन के आस-पास ऐसी कोई जगह नहीं है जिसे वे न जानते हों। हमारे पेड़ खूब फलते-फूलते रहते हैं और मेरी मूँगे की चट्टान में घोंघे हैं। अब मैं टाहिटी में एक स्कूनर खरीदने आया हूँ। मैं अगर तलाश करूँ तो मुझे काफ़ी घोंघे मिल सकते हैं और क्या ख़बर मुझे मोती भी मिल जायें? मैंने भी उस जगह जहाँ कुछ न था बहुत कुछ पैदा कर दिया है। मैंने भी सुन्दरता पैदा की है। ओहो, आप तो जानते ही नहीं उन ऊँचे-ऊँचे, मोटे वृक्षों को देखकर और यह सोचकर कि वे सब मैंने लगाये थे क्या महसूस होता है।"

"मुझे भी आप से वही प्रश्न पूछने दीजिये जो आपने स्ट्रिकलैण्ड से पूछा था। क्या आप फ्रांस और ब्रिटेनी के अपने घर को कभी याद करके पछताते नहीं?"

"किसी दिन जब मेरी लड़की की शादी हो जायगी और मेरे लड़के की पत्नी घर में आ जायगी और वे द्वीप का काम-काज सम्हाल लेंगे तो हम दोनों वापस चले जायेंगे और अपनी ज़िन्दगी के बाक़ी दिन उसी घर में बितायेंगे जहाँ मैं पैदा हुआ था।"

"तो फिर आप वहाँ जाकर अपनी पिछली सुखी ज़िन्दगी को याद करेंगे," मैंने कहा।

"स्पष्टतया यहाँ द्वीप का जीवन कुछ उत्साहपूर्ण नहीं है और हम संसार से बड़ी दूर जा पड़े हैं—सोचिए तो सही मुझे टाहिटी आने में चार दिन लग जाते हैं।—लेकिन फिर भी हम वहाँ सुखी हैं। यह बहुत कम लोगों का हिस्सा होता है कि वे किसी कार्य के लिए प्रयत्न करें और उसमें उन्हें सफलता मिल जाये। हमारी जिन्दगी सादी और भोली है। आकांक्षा हमें छू नहीं गई है और हमें केवल उसी काम पर गर्व होता है जो हम समझते हैं कि हमारे अपने हाथों से किया गया है। द्वेष हमारे पास फटक नहीं सकता और न ईर्ष्या हमें दबा सकती है। आह, अजी साहब, लोग कहते हैं परिश्रम ही वरदान है और यह एक निरर्थक कहावत है लेकिन मेरे लिए इसका बड़ा गहरा महत्त्व है। मैं परिश्रम की बदौलत आज सुख से रह रहा हूँ।"

"और आपका हक़ है कि सुखी रहें," मैं मुस्करा दिया।

"काश मैं भी ऐसा ही समझ सकता। मैं जानता ही नहीं कि मेरे भाग्य में ऐसी पत्नी कैसे लिखी गई जो एक श्रेष्ठ मित्र और सहायक तथा एक श्रेष्ठ गृहस्थिन और श्रेष्ठ मा सिद्ध हुई है ?"

कैप्टन ने जिस जीवन का मुझे आभास दिलाया मैं उस पर कुछ देर ग़ौर करने लगा।

"यह स्पष्ट ही है कि ऐसा जीवन-यापन करने के हेतु और उसे इतना सफल बनाने के लिए आप दोनों में एक प्रबल इच्छा और निश्चित चरित्र की आवश्यकता पड़ी होगी।"

"शायद ; लेकिन यदि एक और चीज़ हमारी सहायक न होती तो हमें कुछ भी हाथ न आता।"

"और वह क्या था भला ?"

वह नाटकीय ढंग से रुका और उसने अपनी बाँह ऊपर को उठाई।

"ईश्वर में विश्वास। यदि हममें वह न होता तो हम कहीं के न रहते।"

और तब हम डॉ० कोट्रास के मकान पर पहुँच गये।

५५

डॉ. कोट्रास एक बूढ़ा फ्रांसीसी था जो बड़े भारी-भरकम शरीर वाला और बेइन्तेहा मोटा था। उसका शरीर ऐसा था जैसे बत्तख का बड़ा-सा अण्डा; उसकी तीखी, नीली तथा विनीत आँखें यदा-कदा उसकी तोंद पर टिक जाती थीं। उसका रंग सुर्ख था और बाल सफ़ेद। उसे देखकर प्रत्येक के दिल में सहानुभूति उमड़ पड़ती थी। उसने हमारा एक कमरे में स्वागत किया जो ऐसा मालूम होता था जैसे फ्रांस के किसी प्रान्तीय क़स्बे के मकान का कमरा हो और वहाँ की एक-दो पोलिनेशियन वस्तुएँ जो वहाँ रखी थीं बड़ी अटपटी लगती थीं। उसने मेरा हाथ अपने दोनों हाथों से दबाया—वे बड़े विशाल थे—और उसने मुझे बड़े हर्षमय नेत्रों से देखा जिनमें महान् चातुर्य झलक रहा था। जब उसने कैप्टन ब्रुनो से हाथ मिलाये तो उससे उसकी पत्नी तथा बच्चों के बारे में पूछा। कुछ मिनटों तक तो तकल्लुफ़ की बातें रहीं फिर द्वीप के बारे में इधर-उधर की गप्पें लगीं, खोपरे और वनिला की फ़सलों पर विचार-विनिमय हुआ, और फिर हम अपने असली उद्देश्य पर आये।

डॉक्टर कोट्रास ने मुझे जो कुछ बताया वह मैं उन्हीं के शब्दों में न कह कर अपनी भाषा में बयान करूँगा। क्योंकि उसके प्रफुल्ल वार्तालाप को मैं पुराना कह कर नहीं पेश करना चाहता। उसकी आवाज़ बड़ी गहरी और भारी थी, ठीक वैसी ही जैसी उसके भारी भरकम शरीर के लिए उपयुक्त थी और उसे नाटकीयता का भी ख़ासा ज्ञान था। उसकी बातें सुनना ऐसा था जैसे नाटक देखना; बल्कि कहीं-कहीं तो नाटकों से भी बढ़कर था।

ऐसा मालूम होता है कि एक दिन डॉ० कोट्रास किसी बूढ़ी चीफ़ेस को जो बीमार थी देखने के लिए ट्रावाओ गया था और उसने उस मोटी थुलथुल बुढ़िया का बड़ा सजीव चित्र हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया—वह एक बड़े से बिस्तर पर लेटी हुई सिगरेट पी रही थी और उसके आस-पास काले नौकर बैठे हुए थे। जब उसने बुढ़िया को देख लिया तो उसे एक दूसरे कमरे में ले जाया गया जहाँ उसे खाना खिलाया गया—खाने में कच्ची मछली, भुने हुए केले और मुर्ग़ी थी—और न जाने क्या-क्या? खाना वहाँ के लोगों का बड़ा विचित्र था और जब वह खा रहा था तो एक तरुण कन्या रोती हुई दरवाज़े में से बाहर निकाली जा रही थी। उसने उसकी ओर ध्यान न दिया लेकिन जब वह बाहर आकर अपनी गाड़ी में बैठा और घर के लिए रवाना होना चाहता था कि वही लड़की रास्ते से कुछ दूर खड़ी उसे दिखाई दी। लड़की ने कातर नेत्रों से उसकी ओर देखा और उसकी आँखों में आँसू छलक आये। डॉक्टर ने किसी से पूछा कि इसे क्या हुआ है और उसे पता चला कि वह उसी को लेने पहाड़ पर से आई थी; वहाँ पहाड़ी पर कोई गोरा बीमार था। उन लोगों ने कहा कि डॉक्टर को तंग मत करो। डॉक्टर ने उसे बुलाया और स्वयं पूछा कि तुम क्या चाहती हो। उसने उसे बताया कि अटा ने मुझे भेजा है, वही अटा जो होटेल दि ला फ्ल्यूर में रहा करती थी और कहा है कि वह 'लाल' बीमार है। उस लड़की ने एक अखबार का एक मुड़ा-तुड़ा टुकड़ा उसके हाथ में थमा दिया और जब डॉक्टर ने उसे खोला तो वह सौ फ्रांक का नोट निकला।

"यह 'लाल' कौन है?" उसने पास ही खड़े एक आदमी से पूछा।

उसने बताया कि हम उस अँग्रेज़ चित्रकार को लाल ही कहते हैं; वह यहाँ से सात किलोमीटर की ऊँचाई पर अटा के साथ रहता है। उन लोगों के बयान से वह समझ गया कि यह शख्स स्ट्रिकलैण्ड ही है। लेकिन वहाँ जाने के लिए पैदल चलना पड़ता था। उसके लिए वहाँ जाना असम्भव था इसीलिए उन लोगों ने उस लड़की को वहाँ से भगा दिया था।

"मैं यह इक़बाल करता हूँ," डॉक्टर ने मेरी ओर घूमकर कहा, "कि

मैं कुछ सकुचाया। उस गंदे रास्ते पर चौदह किलोमीटर चलना मेरे बस का न था और फिर उसी रात वहाँ से पापीट को लौटना भी मुहाल था। इसके अलावा स्ट्रिकलैण्ड मुझसे हमदर्दी नहीं करता था। वह एक आलसी, बेकार क़िस्म का बदमाश था जिसने यहाँ की एक औरत के साथ उस पर निर्भर रहना बेहतर समझा बजाय दूसरों की तरह अपनी जीविका स्वयं कमाने के। हे भगवान, मुझे क्या पता था कि संसार एक दिन इस नतीजे पर पहुँचेगा कि वह एक मेधावी था ? मैंने लड़की से पूछा कि क्या वह यहाँ नहीं आ सकता। मैंने उससे यह भी पूछा कि आखिर तुम्हें मालूम तो होगा उसे क्या बीमारी है। लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैं क्रोधित हुआ, मैंने उसे डरा-धमका कर पूछा; अपने कंधे सिकोड़े लेकिन सब बेसूद रहा; वहाँ जाना तो आखिकार मेरा कर्त्तव्य था ही और बड़े गुस्से में मैंने उससे कहा चलो मुझे ले चलो कहाँ है वह ?"

जब वह वहाँ पहुँचा तो बुरी तरह पसीने में शराबोर था और प्यास के मारे बेदम इसीलिए उसका मिज़ाज भी निश्चय ही कुछ गरम था। अटा उसकी बाट जोह रही थी और उसे लेने के लिए काफी दूर तक आ गई थी।

"इससे पहले कि मैं उसे देखूँ मुझे कुछ पीने को दो वरना मैं प्यास के मारे मर जाऊँगा," उसने चीखकर कहा, "भगवान के प्रेम के लिए मुझे नारियल दो।"

अटा ने आवाज़ दी और एक लड़का दौड़ा हुआ आया। वह फुर्ती से एक पेड़ पर चढ़ा और वहाँ से एक पक्का नारियल उसने गिराया। अटा ने झट उसमें एक छेद किया और डॉक्टर ने छककर उसे पिया। फिर उसने अपने लिए एक सिगरेट बनाया और तब जाकर कहीं उसकी जान में जान आई।

"अब बताओ वह 'लाल' कहाँ है ?" उसने पूछा।

"वह अन्दर मकान में चित्रकारी कर रहे हैं। मैंने उन्हें यह नहीं बताया था कि आप आ रहे हैं। जाकर अन्दर देख लीजिए।"

"लेकिन उसे शिकायत क्या है ? अगर वह चित्रकारी करने के क़ाबिल

है तो वह ट्रावाओ भी आ सकता था और मुझे यहाँ पैदल चलकर आने की तकलीफ़ से बचा सकता था। मेरा ख़याल है कि मेरा वक्त उसके वक्त से कुछ कम क़ीमती नहीं है।"

अटा ने कुछ नहीं कहा बल्कि उस लड़के के साथ वह भी डॉक्टर के पीछे-पीछे मकान में गई। जो लड़की उसे लेकर आई थी वह अब बरामदे में बैठी हुई थी और यहीं एक और बुढ़िया दीवार से टिकी बैठी थी और देशी सिगरेट पी रही थी। अटा ने दरवाजे की ओर संकेत किया। डॉक्टर उन लोगों के विचित्र व्यवहार पर झुँझला रहा था और जब वह कमरे में दाखिल हुआ तो उसने देखा कि स्ट्रिकलैण्ड बैठा हुआ अपनी रंगों की पैलेट साफ कर रहा है। स्टैण्ड पर एक चित्र रखा हुआ था; स्ट्रिकलैण्ड पैरियो पहने दरवाजे की ओर पीठ किये खड़ा था लेकिन जब उसने बूटों की आवाज़ सुनी तो घूमकर देखा। डॉक्टर को देखकर वह कुछ घबड़ाया। उसे वहाँ देखकर वह चकित हुआ और उसके बिना इजाजत अन्दर आने पर उसे क्रोध आया। लेकिन डॉक्टर हाँप रहा था, वह शर्म से जमीन में गड़ गया। उसने घूर कर उसे देखा। उसे ऐसे कुव्यवहार की आशा न थी। घृणा से उसका हृदय भर गया।

"तुम बिना इजाजत यहाँ आ गये हो," स्ट्रिकलैण्ड ने कहा। "मैं तुम्हारी क्या खातिर कर सकता हूँ?"

डॉक्टर ने संतोष की साँस ली लेकिन उसके कण्ठ से शब्द ही न निकले। उसकी सारी झुँझलाहट काफ़ूर हो चुकी थी। उसका हृदय करुणा से उमड़ पड़ा।

"मुझे डॉक्टर कोट्रास कहते हैं। मैं नीचे ट्रावाओ में चीफेस को देखने आया था कि अटा ने मुझे तुम्हें देखने के लिए बुला भेजा।"

"वह निरी मूर्खा है। मुझे आजकल कुछ दर्द-सा हो जाता है और कभी-कभी बुखार आ जाता है लेकिन वह ऐसी कोई ख़ास बात नहीं है। अपने आप दूर हो जायगा। अब जब कभी कोई पापीट जायगा मैं उससे कुछ कुनैन मँगवा लूँगा।"

"ज़रा अपना चेहरा आईने में तो देखो।"

स्ट्रिकलैण्ड ने उसे देखा, मुस्कराया और दीवार पर लगे हुए एक सस्ते से शीशे की तरफ गया।

"हाँ, क्या हुआ ?"

"क्या तुम्हें अपने चेहरे में कुछ अजीब-सी तबदीली नहीं दिखाई देती ?" तुम्हें अपने नक़्शों का मोटापन और चेहरे का बिगड़ना नहीं दीखता ?—कैसे समझाऊँ तुम्हें—किताबों में ऐसे चेहरे वाले को कोढ़ी कहते हैं। अरे मेरे दयनीय मित्र, कहना चाहिए कि तुम किसी भयंकर रोग में फँस गये हो।"

"मैं ?"

"जब तुम अपना चेहरा शीशे में देखोगे तो तुम्हें कोढ़ी का-सा अजीब चेहरा दिखाई देगा।"

"तुम तो मज़ाक कर रहे हो," स्ट्रिकलैण्ड ने कहा।

"भगवान करे मैं ऐसा ही कर रहा हूँ।"

"क्या तुम यह कहना चाहते हो कि मुझे कोढ़ हो गया है ?"

"हाँ, बदक़िस्मती से। मुझे तो इसमें कोई शक है नहीं।"

डॉ कोट्रास ने बहुतों के चेहरे देखकर उनकी मृत्यु की भविष्य वाणी की थी और ऐसा करते समय रोगी को उससे जो घृणा होती होगी उससे वह कभी न बच सका। वह हमेशा महसूस करता था कि जब वह किसी आदमी को मौत का संदेशा देता है तो वह व्यक्ति अपनी उस सचेत तथा स्वस्थ डॉक्टर से जिसे असीम जीवन का अधिकार प्राप्त है तुलना करते समय उससे बड़ी भयंकर घृणा करता होगा। स्ट्रिकलैण्ड ख़ामोशी से उसकी ओर तकता रहा। उसके चेहरे पर, जो उस भयंकर रोग ने विकृत कर दिया था, कोई विशेष भय का भाव न दिखाई दिया।

"क्या ये लोग भी जानते हैं ?" अन्त में उसने बरामदे में चुपचाप और निश्चित बैठे हुए लोगों की ओर संकेत करके कहा।

"ये लोग कोढ़ के चिन्ह भली प्रकार जानते हैं," डॉक्टर ने कहा। "वे

शायद तुम्हें बताने से डर रहे थे।"

स्ट्रिकलैण्ड दरवाजे तक गया और उसने उन्हें देखा। उसके चेहरे पर अवश्य कुछ भयंकरता होगी जिसे देखकर वे सब-के-सब जोर-जोर से दहाड़कर रोने लगे। उनके रोने की आवाजें और भी तेज हो गई। स्ट्रिकलैण्ड कुछ न बोला। क्षण भर उनकी ओर देखकर वह फिर कमरे में चला गया।

"तो तुम्हारे खयाल से मैं कितने दिन और जी सकता हूँ ?"

"कौन जाने ? कभी-कभी यह रोग बीस वर्ष तक जारी रहता है। अगर यह जल्दी किसी को समेट ले तो समझो बड़ी मेहरबानी हुई इसकी।"

स्ट्रिकलैण्ड अपने स्टैण्ड के पास गया और बड़ी ग़ौर से उस पर रखे हुए चित्र को देखने लगा।

"तुम्हें बड़ा लम्बा सफ़र तै करना पड़ा है। तुम जैसे शुभ समाचारवाहक को कुछ इनाम जरूर मिलना चाहिए। यह चित्र ले जाओ। आज तो यह तुम्हारी समझ में न आयगा लेकिन शायद किसी दिन तुम इसे अपने यहाँ रखकर प्रसन्न होओगे।"

डॉ० कोट्रास ने विरोध करते हुए कहा कि मुझे अपने सफ़र का कोई पारिश्रमिक नहीं लेना है। उसने सौ फ्रांक का नोट भी पहले ही अटा को लौटा दिया था, लेकिन स्ट्रिकलैण्ड ने उसे चित्र स्वीकार करने पर जोर दिया। फिर वे दोनों बाहर बरामदे में आये। देशी निवासी अब भी बड़े बिलख-बिलखकर सिसकियाँ भर रहे थे।

"चुप हो जा बस ! अपने आँसू पोंछ," स्ट्रिकलण्ड ने अटा से कहा। "कोई बड़ा नुक्सान नहीं हुआ है। मैं तुझसे जल्द ही विदा हो जाऊँगा।"

"वे तुझे कहीं लेजा तो नहीं रहे हैं ?" उसने रोते हुए कहा।

उस समय द्वीपों में कोढ़ियों को अलग नहीं रखा जाता था और यदि वे चाहते तो उन्हें छूट दे दी जाती थी।

"मैं ऊपर पहाड़ पर चला जाऊँगा," स्ट्रिकलैण्ड ने कहा।

फिर अटा उठी और उसने ग़ौर से उसे देखा।

"दूसरे चाहें तो चले जायें लेकिन मैं तुझे नहीं जाने दूँगी। तू मेरा पति है और मैं तेरी पत्नी। अगर तू मुझे छोड़कर चला गया तो मैं घर के पीछे वाले पेड़ से लटककर फाँसी लगा लूँगी। मैं भगवान की क़सम खाकर कहती हूँ।"

उसके ऐसा कहने से साफ़ जाहिर होता था कि कोई अदृष्ट शक्ति उसे प्रेरित कर रही है। अब वह पहले की-सी अबला, नरम दिल देशी लड़की न थी अब वह एक दृढ़-संकल्प स्त्री थी। उसमें अब असाधारण परिवर्तन हो गया था।

"तू मेरे साथ क्यों रहना चाहती है? तू पापीट जा सकती है और वहाँ जल्द ही तुझे कोई और गोरा मिल सकता है। वह बुढ़िया तेरे बच्चों को सम्हालेगी और टियारे तुझे खुश होकर फिर से अपने यहाँ रख लेगी।"

"तू मेरा आदमी है और मैं तेरी औरत। जहाँ भी तू जायगा मैं तेरे साथ चलूँगी।"

क्षण-भर के लिए स्ट्रिकलैण्ड का धैर्य टूट गया और उसकी दोनों आँखों से एक-एक आँसू निकलकर उसके गालों पर लुढ़क आये। फिर उसके चेहरे पर भी वही तिस्कारपूर्ण मुस्कराहट जिसका वह आदी था, नाच गई।

"औरतें भी कैसी अजीब जानवर होती हैं।" उसने डा० कोट्रास से कहा, "आप उनसे कुत्ते की तरह बर्ताव कीजिये, उन्हें जी भरकर मारिये लेकिन फिर भी वे आपसे प्रेम करेंगी।" उसने अपने कंधे सिकोड़े। "ईसाई धर्म का यह अत्यन्त मूर्खतापूर्ण भ्रम है कि स्त्रियों में आत्मा होती है।"

"तू डॉक्टर से यह क्या कह रहा है?" अटा ने सशंक हो पूछा। "तू नहीं जायगा ना?"

"अगर तेरी यही मर्जी है तो मैं यहीं रहूँगा, मेरी नन्हीं।"

अटा झट घुटनों के बल उसके सामने बैठ गई और उसने उसके पैर कसकर दबा लिये और उन्हें चूम लिया। स्ट्रिकलैण्ड एक हल्की-सी मुस्कान के साथ डॉ० कोट्रास की ओर तकता रहा।

"अंत में वे आपको पकड़ लेती हैं और आप उनके हाथों मजबूर हो जाते

हैं। चाहे आप गोरे हों या कत्थई, सब एक समान हैं।"

डॉ० कोट्रास ने महसूस किया कि ऐसी भयंकर विपत्ति के समय खेद प्रकट करना बेहूदगी है और उसने जाने के लिए इजाजत माँगी। स्ट्रिकलैण्ड ने टाने से जो लड़का वहाँ था कहा कि इन्हें गाँव तक छोड़ आओ। डॉ० कोट्रास क्षण-भर के लिए रुका और फिर मुझसे मुखातिब हुआ।

"मुझे वह जरा न भाया, मैंने आपसे कहा था, कि उसे मुझसे बिल्कुल हमदर्दी न थी। लेकिन जब मैं ट्रावाओ को लौट रहा था तो रास्ते में मैं उसके सामाजिक साहस की सराहना किये बिना न रह सका जिसने उसे अत्यन्त भयंकर कष्टों व पीड़ाओं को सहन करने की शक्ति प्रदान की थी। जब टाने मुझे छोड़कर लौटा तो मैंने उससे कहा कि मैं कुछ दवा भेज दूँगा जो उसे फ़ायदा देगी, लेकिन मुझे बहुत कम आशा थी कि स्ट्रिकलैण्ड उसे पीने के लिए राजी होगा और इससे भी कम आशा इस बात की थी कि यदि उसने उसे पी भी ली तो उसे वह फ़ायदा पहुँचायेगी। मैंने लड़के से कहलवाया कि अटा से कह देना जब भी कभी वह मुझे बुलायेगी मैं आ जाऊँगा। जीवन बड़ा कठिन और कष्टकर है और प्रकृति कभी-कभी अपने बालकों को पीड़ित करने में बड़ा भयंकर आनन्द अनुभव करती है। जब मैं पापीट अपने सुखदायक मकान को लौटने लगा तो मेरा हृदय उस दुःख के भार से बोझिल था।"

काफ़ी देर तक हम में से कोई भी नहीं बोला।

"लेकिन अटा ने मुझे नहीं बुलाया।" आखिरकार डॉक्टर ने क़िस्सा जारी रखा, "और कुछ ऐसा हुआ कि मैं काफ़ी अर्से तक द्वीप के उस भाग में नहीं गया। स्ट्रिकलैण्ड की भी मुझे कोई ख़बर न मिली; एक-दो बार मैंने सुना कि अटा पेंटिंग की सामग्री खरीदने पापीट आई लेकिन मैं उससे न मिल सका। दो वर्ष से भी अधिक हो चुके थे जब मुझे दुबारा ट्रावाओ जाना पड़ा और उस बार भी उसी बूढ़ी चीफेस को देखने के लिए। मैंने उन लोगों से स्ट्रिकलैण्ड के बारे में पूछा। तब तक हर एक को यह पता चल गया था कि उसे कोढ़ हो गया है। पहले तो टाने घर छोड़कर चला गया और फिर कुछ दिनों बाद वह बुढ़िया और

उसकी पोती भी चली गई। अब स्ट्रिकलैण्ड, अटा और उसके बच्चे ही रह गये। कोई बाग़ के समीप तक न गया क्योंकि आप तो जानते ही हैं कि यहाँ के बाशिन्दे इस रोग से बहुत डरते हैं और पुराने ज़माने में तो जब लोगों को मालूम हो जाता था तो वे कोढ़ी को मार डालते थे। लेकिन कभी-कभी गाँव के लड़के खेलते-कूदते पहाड़ी पर चले जाते तो उस गोरे को इधर-उधर घूमता हुआ देखकर भय से काँप उठते और भाग खड़े होते थे। कभी-कभी अटा रात के समय गाँव में आती और व्यापारी को उठाकर उससे ज़रूरत की चीजें ख़रीदती थी। वह जानती थी कि लोग उससे भी उसी तरह बचते हैं जिस तरह वे स्ट्रिकलैण्ड से बचते थे और इसीलिए वह खुद उनसे बचने लगी थी। एक बार कुछ स्त्रियाँ बाग़ के क़रीब पहुँचीं तो उन्होंने अटा को झील में कपड़े धोते हुए देखा और उस पर पत्थर फेंकने लगीं। उसके बाद व्यापारी से अटा को यह सन्देशा देने के लिए कहा कि आइन्दा अगर उसने झील का पानी इस्तेमाल किया तो आदमी आकर उसके मकान में आग लगा देंगे।"

"जानवर कहीं के," मैंने कहा।

"लेकिन नहीं साहब, आदमी हमेशा एक ही जैसे होते हैं। भय उन्हें क्रूर बना देता है ·········मैंने स्ट्रिकलैण्ड से मिलने की ठानी। और जब मैं चीफ़ेस के उपचार से निवृत्त हुआ तो मैंने एक लड़के से साथ चलने को कहा लेकिन कोई तैयार न हुआ और विवश हो मुझे अकेले ही उसका मकान ढूँढना पड़ा।"

जब डॉ० कोट्रास बाग़ में पहुँचा तो उसे बड़ी बेचैनी-सी हुई। हालाँकि पैदल चलने से उसमें गर्मी आगई थी फिर भी वह लरज़ रहा था। हवा कुछ ऐसी दूषित थी कि वह सकुचाया और उसे महसूस हुआ जैसे कोई अदृष्ट शक्तियाँ उसका मार्ग अवरुद्ध कर रही हैं। अनदेखे हाथ जैसे उसे पीछे की ओर खींच रहे हैं। अब तो कोई नारियल तोड़ने भी न जाता था और वे ज़मीन पर पड़े-पड़े ही सड़ जाते थे। झाड़ियों का साम्राज्य बढ़ता जा रहा था और ऐसा लगता था कि कुछ ही दिन में वह प्राचीन जंगल ज़मीन के उस

टुकड़े को जिसे बड़ी सख्त मेहनत के बाद उससे छीनकर आबाद कर लिया गया था, फिर अपने अन्तर्गत कर लेगा। उसके जिस्म में एक सनसनी-सी हुई कि वह कष्ट के घर में पहुँच गया है। जब वह मकान के समीप पहुँचा तो उसे एक अस्वाभाविक सन्नाटा-सा अनुभव हुआ और उसने सोचा कि वह उजाड़ बियाबान होगया होगा। फिर उसने अटा को देखा। वह अपने पुट्ठों के बल उस बरामदे में बैठी थी जो उसकी रसोई के काम आता था और बर्तन में कुछ पकते हुए देख रही थी। उसके पास ही एक छोटा-सा बालक चुपचाप धूल में खेल रहा था। जब उसने डाक्टर को देखा तो वह मुस्कराई नहीं।

"मैं स्ट्रिकलैण्ड से मिलने आया हूँ," उसने कहा।

"मै जाकर उनसे कहे देती हूँ।"

वह घर में गई और दो चार सीढ़ियाँ चढ़कर बरामदे में गई। डॉ० कोट्रास उसके पीछे पीछे गया लेकिन बाहर उसके संकेत की प्रतीक्षा में खड़ा रहा। ज्योंही उसने दरवाजा खोला डॉक्टर को रोग की वह मीठी गंध आई जो कोढ़ी के पड़ौस को भी दूषित कर देती है और जिसे सूँघकर जी मतलाने लगता है। उसने बाहर खड़े हुए ही अटा को बोलते हुए और फिर स्ट्रिकलैण्ड को उत्तर देते हुए सुना लेकिन वह स्ट्रिकलैण्ड की आवाज न पहचान सका। वह कर्कश और अस्पष्ट होगई थी। डॉ० कोट्रास ने अपनी आँखें ऊपर को उठाईं। उसने फौरन ताड़ लिया कि रोग ने उसकी वाक्शक्ति पर भी आक्रमण कर दिया है। फिर अटा बाहर आई।

"वह आपसे नहीं मिलेंगे। आप फौरन चले जाइये।"

डॉ० कोट्रास ने आग्रह किया लेकिन उसने उसे अन्दर नहीं जाने दिया। डॉ० कोट्रास ने अपने कंधे सिकोड़े और क्षण-भर सोचने के बाद वह जाने के लिए मुड़ा। वह उसके साथ-साथ चली। उसने महसूस किया कि वह भी अब उससे पिण्ड छुड़ाना चाहती थी।

"क्या मैं उसके लिए कुछ भी नहीं कर सकता?" उसने पूछा।

"आप उनके लिए कुछ रंग भेज सकते हैं," उसने कहा "और उन्हें किसी

चीज़ की ज़रूरत नहीं है।"

"क्या वह अब भी पेण्ट कर सकता है?"

"अब वह घर की दीवारें पेण्ट कर रहे हैं।"

"तुम्हारी जिन्दगी बड़े ख़तरे में है, बच्ची।"

फिर आख़िरकार वह मुस्करा दी और उसकी आँखों में दैवी प्रेम झलक आया। डॉ० कोट्रास उसे देखकर चौंक गया और स्तंभित हो गया। और भय ने उसे दबोच लिया। वह कुछ न कह सका।

"वह मेरा पति है," उसने कहा।

"तुम्हारा दूसरा बच्चा कहाँ है?" उसने पूछा। "पिछली बार जब मैं यहाँ आया था तो तुम्हारे दो बच्चे थे।"

"हाँ थे तो; पर वह मर गया। आम के दरख़्त के नीचे हमने उसे दफ़ना दिया।"

जब अटा उसके साथ कुछ दूर तक आगई तो उसने कहा कि मुझे अब लौटना चाहिए। डॉ० कोट्रास ने अनुमान लगाया कि वह आगे इसलिए नहीं जारही कि कहीं गाँव का कोई आदमी उसे न देख ले। डॉक्टर ने उससे एक बार फिर कहा कि जब कभी मेरी ज़रूरत पड़े तो तुम बुला भेजना मैं फ़ौरन आ जाऊँगा।

५६

फिर दो वर्ष और बीत गये या शायद तीन वर्ष क्योंकि टाहिटी में समय बड़ी फ़ुर्ती से गुज़रता है और उसका हिसाब रखना कठिन है; लेकिन आख़िर-

कार डॉ० कोट्रास के पास एक संदेश आया कि स्ट्रिकलैण्ड मर रहा है। जो गाड़ी डाक लेकर पापीट जाती थी अटा ने उसे रास्ते में रोक लिया और उसके हाँकने वाले से अनुरोध किया कि वह फौरन डॉ० कोट्रास के पास चला जाये। लेकिन जब बुलावा आया तो डाक्टर घर पर नहीं था और उसे शाम को वह खबर मिली। उस समय रात को वहाँ से जाना असंभव था इसलिए दूसरे दिन सूर्योदय होते ही डाक्टर कोट्रास वहाँ से चल पड़ा वह ट्रावाओ पहुँचा और अंतिम-बार वह सात किलोमीटर की चढ़ाई तै करके अटा के मकान में गया। रास्ते में झाड़-झंकाड़ फैले हुए थे और यह स्पष्ट था कि बरसों उस पर कोई नहीं चला है। रास्ता ढूँढना तक दूभर हो गया था। कभी तो वह सोते की पट्टी पर चलता और कभी घनी, काँटेदार झाड़ियों को कुचलता हुआ आगे बढ़ता; अक्सर उसे चट्टानों का रास्ता पकड़ना पड़ता ताकि डिगारे जो उसके सिर के ऊपर लगे हुए थे वह उनसे बच जाय। चारों ओर छाया हुआ सन्नाटा बड़ा भयानक लग रहा था।

जब आखिरकार वह उस बिना रंगे मकान पर पहुँचा जो अब और भी गंदा और अस्त-व्यस्त हो चुका था तो वहाँ की निस्तब्धता उसे और भी असह्य प्रतीत हुई। वह ऊपर गया और एक छोटा लड़का जो बेखबर खेल रहा था उसकी आहट सुनते ही भाग खड़ा हुआ। उसे वह अजनबी दुश्मन जैसा लगा। डॉ० कोट्रास को ख्याल हुआ कि वह बालक पेड़ के पीछे छिपकर उसे देख रहा है। दरवाज़ा चौपट खुला हुआ था। उसने पुकारा लेकिन कोई जवाब नहीं आया। वह आगे बढ़ा। उसने किवाड़ पर दस्तक दी लेकिन फिर भी किसी ने जवाब न दिया। उसने हत्था घुमाया और अंदर दाखिल हो गया। वहां की दुर्गन्ध ने उस पर हमला किया और वह एकदम पीछे को हटा। उसने रूमाल निकाल कर नाक पर लगाया और बरबस अंदर गया। प्रकाश धुंधला था और जब सूर्य का उज्ज्वल प्रकाश कमरे में हुआ तो वहाँ उसे कुछ न दीख पड़ा। फिर वह चौंका। उसकी समझ ही में न आया वह कहाँ था। सहसा उसे आभास हुआ कि वह किसी जादू के संसार में पहुँच गया है। उसे कुछ अस्पष्ट-सा आभास हुआ कि वह उसी

पुराने जंगल में पहुँच गया है और वही नग्न लोग पेड़ों के नीचे चल-फिर रहे हैं। फिर उसने देखा कि दीवार पर चित्र लगे हुए हैं।

"हे भगवान्, कहीं मुझ पर सूर्य ने तो कोई असर नहीं डाल दिया," वह बड़बड़ाया।

एक हल्की-सी जुंबिश ने उसका ध्यान आकृष्ट किया और उसने देखा कि अटा फर्श पर लेटी हुई सिसकियाँ ले रही है।

"अटा," उसने पुकारा। "अटा !"

अटा ने कोई ध्यान न दिया। फिर उसी पाशविक दुर्गंध ने उसे बेहोश सा कर दिया और उसने चुरट सुलगाया। उसकी आँखें अंधेरे की आदी हो गई थीं और अब वह दीवारों के चित्रों को देखकर घबड़ा रहा था। वह उन चित्रों को न समझ सकता था परन्तु उनमें कुछ ऐसी असाधारण बात अवश्य थी जिसने उसे प्रभावित किया था। फर्श से लेकर छत तक दीवारें एक विचित्र और विस्तृत बनावट से भरी पड़ी थीं। वह सब इतना आश्चर्यजनक और रहस्यमय था कि वर्णन नहीं किया जा सकता। वह उन्हें देखकर स्तंभित रह गया। उसमें ऐसे भाव उत्पन्न कर दिये जिन्हें न तो वह समझ सका और न ही उनका विश्लेषण कर सका। उन्हें देखकर उसे वह आतंक और उल्लास अनुभव हुआ जो उस शख्स को अनुभव हुआ होगा जिसने किसी संसार का आरंभ देखा होगा। वह सब बड़े अद्भुत,कामुक तथा उत्तेजनापूर्ण थे; और फिर भी उनमें कुछ भयानक था जिसने उसे आतंकित कर दिया था। वह ऐसे व्यक्ति का सृजन था जो प्रकृति की गुप्त गहराइयों में पैठा था और ऐसे रहस्य उसने खोजे थे जो सुन्दर तो थे ही पर साथ ही साथ डरावने भी। वह ऐसे व्यक्ति की कलाकृतियाँ थी जिसने वे चीजें ज्ञात की थीं जिनका ज्ञान प्राप्त करना मानव के लिए अपवित्र समझा जाता है। उनमें कुछ अत्यंत आदिम तथा भयंकर तत्त्व थे। वे कृतियाँ मानवीय नहीं थीं। उन्हें देखकर उसे काले जादू का स्मरण हो आया। वह सब सुन्दर भी था और साथ ही अश्लील भी।

"हे भगवान, यह तो वास्तव में मेधावी है !"

शब्द उसी के मुख से निकले थे किन्तु उसे पता न चला कि कौन बोल रहा है।

फिर उसकी नज़रें कोने में पड़े चटाई के बिस्तर पर पड़ीं, वह वहाँ गया और वहाँ उसने उस भयंकर, विकृत और डरावने स्ट्रिकलैण्ड को देखा। वह मर चुका था। डॉ० कोट्रास ने साहस बटोरा और उस विकृत, घृणित शव पर झुका। फिर वह बड़े जोर से चौंक पड़ा और उसका दिल दहल गया क्योंकि उसने महसूस किया जैसे कोई उसके पीछे खड़ा है। यह अटा थी। उसने उसके उठने की आवाज़ नहीं सुनी थी। वह उसकी बाज़ू में खड़ी देख रही थी कि वह क्या देख रहा है।

"हे भगवान, मेरा तो रोम-रोम आतंकित और व्याकुल होगया।" उसने कहा। "तुमने तो मुझे ऐसा डरा दिया कि मैं बस मरते-मरते बचा।"

उसने फिर उस दयनीय मृत पदार्थ को जो कभी मनुष्य के रूप में था, देखा और फिर वह संतप्त हो पीछे को हट गया।

"लेकिन यह तो अंधा है।"

"हाँ, कोई एक साल हुआ वह अंधे हो गये थे।"

५७

उस समय मदाम कोट्रास ने आकर दखलन्दाज़ी की। वह कई बार आ चुकी थी। जब वह अन्दर आई तो लगा जैसे जहाज़ पूरी तरह लदा हुआ

बड़ी तेज़ी से चला आया हो। उसका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली था, वह लम्बी और तगड़ी थी। चौड़ा-सा चेहरा था और उसका वक्ष तथा पेट सीधी व तंग अँगिया से कसकर बँधा हुआ था। उसकी बड़ी तथा टेढ़ी नाक थी और तीन ठोड़ियाँ थीं। वह सदा तनी रहती थी। अयनवृत्तीय, क्षीण करने वाली जल-वायु ने उस पर तनिक प्रभाव न डाला था बल्कि उसके विपरीत उन लोगों से जो ऐसी समशीतोष्ण जलवायु में रहते हैं वह कहीं अधिक सक्रिय, कहीं अधिक कार्यव्यस्त तथा दृढ़-स्वभाव थी। ज़ाहिर था कि वह बड़ी वाचाल है और आते ही उसने क़िस्से, कहानी व अपनी टिप्पणियों का ऐसा सोता खोला कि सुनते ही बना। उसने हमारे वार्तालाप को, जो हम कर रहे थे, बिल्कुल अवास्तविक और अविश्वसनीय बना दिया।

कुछ ही देर में डॉ० कोट्रास मुझसे मुख़ातिब हुआ।

"मेरी मेज़ में अब भी वह चित्र मौजूद है जो स्ट्रिकलैण्ड ने मुझे दिया था," उसने कहा। "क्या आप उसे देखेंगे?"

"बड़ी ख़ुशी से।"

हम उठे और वह हमें बरामदे में लेगया जो उसके मकान के चारों ओर बना हुआ था। हम उसके बग़ीचे में महकते हुए फूलों को देखने के लिए रुके।

"एक लम्बे अर्से तक मैं अपने दिमाग़ से स्ट्रिकलैण्ड की असाधारण सजा-वट, जिससे उसने अपने घर की दीवारें रँगी थीं, की याद न निकाल सका।" उसने चिंतनपूर्ण स्वर में कहा।

मैं भी यही बात सोच रहा था। मुझे अनुभव हुआ कि यहीं स्ट्रिकलैण्ड ने अंततः अपने आपको पूरी तरह अभिव्यंजित किया है। शान्ति से पेंण्ट करते हुए और यह जानते हुए कि यही उसका अन्तिम अवसर है मैं सोचता हूँ कि यहाँ उसने वह सब कुछ कर डाला होगा जो वह जीवन के बारे में जानता था और उसने अनुमान लगाये थे। साथ ही मैंने यह भी विचार किया कि यहाँ ही उसे अन्त में शान्ति भी मिली होगी। जिस प्रेत ने उसे दबोच रखा था

वह आखिरकार झाड़-फूंक से उतार दिया गया था और उसकी उद्देश्य-पूर्ति के साथ ही, जिसके लिए वह आजीवन कष्ट सहता रहा, अब उसकी दूरस्थ तथा उत्पीड़ित आत्मा को सुख प्राप्त हुआ। अब वह मरने के लिए तैयार था क्योंकि उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया था।

"चित्रों का विषय क्या था ?" मैंने पूछा।

"मैं खुद नहीं जानता। बस यह जानता हूँ कि वह सब कुछ था बड़ा विचित्र और हास्यास्पद। उसमें उसने संसार के आदि का—ईडन के बाग़ का जिसमें आदम और हौवा भी थीं—चित्र प्रस्तुत किया है—और न जाने क्या २ बनाया है ?—वह मानव के शरीर—स्त्री तथा पुरुष की सुन्दरता की स्तुति में लिखा गया एक गीत है और उन्नत, उदासीन, सुन्दर तथा क्रूर प्रकृति की प्रशंसा है। उसे देखकर आपको स्थान की निस्सीमता तथा समय की अनन्तता का एक आतंक-पूर्ण आभास होता है। चूँकि उसने वे ही वृक्ष पेण्ट किये हैं जिन्हें मैं रोज़ाना अपने आस-पास देखता हूँ—नारियल, बड़, फ्लैम, बायण्ड्स, नाशपातियाँ आदि अब मैं उन्हें विभिन्न प्रकार से देखने लगा हूँ जैसे उनमें कोई ऐसी शक्ति और ऐसा रहस्य छिपा हुआ है जिसे मैं सदैव दबोचने को होता हूँ और वह सर्वदा मेरे हाथ से निकल जाता है। उसके रंग मेरे जाने-पहचाने थे लेकिन फिर भी वे कुछ भिन्न थे। उनमें कुछ ऐसी विशेषता थी जो उनकी अपनी थी और उन नग्न पुरुष तथा स्त्रियों के तो क्या कहने हैं ! वे इसी संसार के थे पर फिर भी इसके नहीं दीखते थे। उनमें वही मिट्टी दृष्टिगोचर होती थी जिसके हम बने हुए हैं लेकिन फिर भी उनमें कुछ अलौकिकता थी। आप उसमें आदिम मनुष्य की प्रवृत्तियाँ देखकर ऐसे भयभीत होते गोया आप अपने ही को उसमें देख रहे हों।"

डॉ० कोट्रास ने अपने कंधे सिकोड़े और मुस्करा दिया।

"आप मुझ पर हँसेंगे। मैं भौतिकवादी हूँ और मैं बहुत ही स्थूलकाय हूँ है ना ?—कविता जैसी सुकुमार बातों के मैं योग्य नहीं हूँ। उनका प्रयोग करते हुए मैं अपने को ही उपहासास्पद बनाता हूँ। लेकिन मैंने आज तक कभी ऐसा

दूसरा चित्र नहीं देखा जो मुझ पर इतना गहरा प्रभाव छोड़ता। लेकिन हाँ, मुझे वैसा ही अनुभव हुआ जैसा तब हुआ था जब मैं रोम के सिस्टिन चर्च को देखने गया था। वहाँ भी मैं उस व्यक्ति की महानता का विचार करके चकरा गया था जिसने वहाँ की छत पेण्ट की थी। वह भी बड़ा मेधापूर्ण, अद्भुत और घबरा देने वाला चित्र था। मैंने उसे देखकर अपने आपको बड़ा हेय और महत्त्वहीन समझा था। माइकल एंजेलो के महात्म्य को स्वीकार करने के लिए तो आप तैयार रहते हैं लेकिन सभ्यता से कोसों दूर द्रावाओ के पास पहाड़ी में स्थित उस झोंपड़ी में बने चित्रों की आश्चर्यजनक महानता के लिए मैं सर्वथा तैयार न था। और माइकल एंजेलो के चित्र तो स्वस्थ और नीरोग हैं। उसकी वे महान् कृतियाँ उन्नत व शान्त प्रभाव वाली हैं लेकिन यहाँ ये कृतियाँ सुन्दर होते हुए भी कष्टप्रद हैं। मैं नहीं जानता वह क्या था लेकिन उसने मुझे व्याकुल कर दिया। मुझ पर उसका वैसा ही प्रभाव पड़ा जैसा आप पर उस समय पड़ता है जब आप एक कमरे में बैठते हैं और यह जानते हुए कि अगला कमरा खाली है लेकिन फिर भी आपको न जाने क्यों यह भयानक आभास होता है कि नहीं उसमें कोई जरूर है। आप अपने आप पर खीझते हैं और यह विश्वास दिलाते हैं कि वह आपका भ्रम-मात्र है—लेकिन फिर भी, फिर भी.......... और जरा-सी देर में जो आतंक आपको आ दबोचता है उसका प्रतीक आपके लिए असंभव हो जाता है और किसी अदृष्ट भय तथा घृणा के पंजों में पहुँच कर आप निष्प्राण-से हो जाते हैं। हाँ, मैं यह इक़बाल करता हूँ कि जब मुझे ज्ञात हुआ कि वे अद्भुत व महान् चित्र नष्ट कर दिये गये हैं तो मुझे तनिक दुःख न हुआ।"

"नष्ट कर दिये गये ?" मैं चीख पड़ा।

"ठहरो ! नहीं मालूम आपको ?"

"मुझे भला कैसे मालूम होता ? यह सत्य है कि मैंने उसकी इन कृतियों के बारे में कुछ नहीं सुना : लेकिन मैंने सोचा कि वे किसी प्राइवेट मालिक के हाथ पड़ गये होंगे। यहाँ तक कि अब भी स्ट्रिकलैण्ड के चित्रों की कोई निश्चित

सूची प्राप्य नहीं है ।"

"जब वह अंधा हो गया तो वह घण्टों उन दोनों कमरों में बैठकर अपनी प्रकाशविहीन आँखों से अपनी उन कृतियों की ओर देखता और शायद वह सब कुछ देखता था जो उसने अपने जीवन में पहले कभी न देखा था। अटा ने मुझे बताया कि उसने अपने भाग्य का कभी गिला नहीं किया और न ही कभी साहस हाथ से जाने दिया। अन्त तक उसका मस्तिष्क शांत एवं निर्बाध रहा। लेकिन उसने अटा से वचन ले लिया था कि जब तुम मुझे दफ़न कर चुको—मैंने आपको बताया नहीं मैंने अपने हाथों से उसकी क़ब्र खोदी थी क्योंकि कोई भी देशी आदमी कोढ़ाक्रांत मकान के पास आने को तैयार न था और फिर मैंने और अटा ने उसे तीन पैरियों में लपेट कर आम के दरख़्त के नीचे दफ़ना दिया—उसने उससे वचन ले लिया था कि मेरे मरने के बाद तुम इस घर को आग लगा देना और ऐसे जलाना कि इसकी हर चीज़ राख में परिणत हो जाय।"

मैं कुछ देर तक तो बोल ही न सका क्योंकि मैं सोच रहा था फिर मैंने कहा :-

"तो वह अंत तक वैसा ही रहा।"

"समझते हैं आप ? मैंने अटा को घर में आग लगाने से रोकना अपना कर्त्तव्य समझा।"

"उस सब कुछ के बावजूद जो आपने अभी कहा है ?"

"जी हाँ ; क्योंकि मैंने सोचा कि वे एक मेधावी की कृतियाँ हैं और मैंने इसे उचित नहीं समझा कि संसार को उनसे वंचित किया जाय। लेकिन अटा ने मेरी एक न सुनी। वह वचन दे चुकी थी। मैं तो उस अमानुषिक कृत्य को अपनी आँखों से देख नहीं सकता था। चुनाँचे चला आया, बाद में मुझे उसके घर में आग लगाये जाने की ख़बर मिली। उसने सूखे फ़र्शों पर और पाण्डेनस चटाइयों पर पैराफ़िन छिड़का और फिर आग लगा दी। थोड़ी ही देर में सब कुछ स्वाहा हो गया और उसकी वह महान् कृति जलते हुए अंगारों में परिणत

हो गई।"

"मेरे ख़याल से स्ट्रिकलैण्ड स्वयं भी जानता था कि वह उसकी सर्वश्रेष्ठ कृति है। जो वह प्राप्त करना चाहता था वह उसने प्राप्त कर लिया था। उसका जीवन पूर्ण था। उसने एक निश्चित संसार की सृष्टि की थी और वह जानता था कि वह सृष्टि अच्छी थी। फिर उसने गर्व और ग्लानि से अभिभूत हो स्वयं ही उसका नाश कर दिया था।

"लेकिन मैं आपको अपना चित्र भी तो दिखा दूँ," डॉ० कोट्रास ने अन्दर जाते हुए कहा।

"अटा और उसके बच्चे का क्या हुआ?"

"वे मार्कवेसास चले गये। वहाँ उसके कुटुम्बी थे। मैंने सुना है कि लड़का कैमरॉन के एक जहाज़ पर काम करता है। कहते हैं कि वह शक्ल-सूरत में अपने पिता से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।"

उस दरवाज़े पर पहुँचकर जो बरामदे से डॉक्टर के कंसल्टिंग रूम में खुलता था वह रुका और मुस्कराया।

"यह एक फल-चित्र है। आप सोचेंगे कि यह डॉक्टर के कंसल्टिंग रूम के लिए उपयुक्त नहीं है लेकिन क्या किया जाय। मेरी पत्नी उसे ड्राइंग रूम में लगाने नहीं देती। वह कहती है कि यह तो बहुत ही अश्लील है।"

"फल-चित्र?" मैंने अचरज से कहा।

हम ज्यों ही कमरे में दाखिल हुए मेरी नजर एकदम चित्र पर पड़ी। मैं उसे बड़ी देर तक देखता रहा।

वह आमों, केलों, नारंगियों और न जाने क्या-क्या फलों का संग्रह था और एक बार देखने पर तो वह बड़ा ही निर्दोष चित्र लगा। यदि वह किसी इंप्रेशनिस्टोत्तर चित्रकारों की प्रदर्शिनी में रखा जाता तो कोई लापरवाह उसे उस शाला का एक बहुत ही सुन्दर किन्तु विशेष या महान् चित्र न समझकर आगे बढ़ जाता लेकिन शायद बाद में जब उसे याद आता और वह सोचता कि क्यों ऐसा है, तब मेरा यक़ीन है कि वह उसे पूरी तरह कभी न भूलता।

रंग इतने विचित्र थे कि उनके विचलित कर देने वाले भाव को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। कुछ गहरे नीले थे, ऐसे गहरे जैसे लेपिसलेजुली हीरे का बड़ी कोमलता से खोदकर प्याला गढ़ लिया हो फिर भी उनमें एक अद्भुत चमक थी जो रहस्यमय जीवन की सजीवता प्रकट करती थी; कुछ जामनी रंग थे जो कच्चे और बूदार माँस जैसे लगते थे लेकिन फिर भी उनमें भड़कीली-सी कामुकता झलक रही थी जो हेलिगैब्युलस के रोमन साम्राज्य का धुँधला स्मरण कराती थी; कुछ लाल रंग थे जो सुर्ख़ वेरी की तरह भड़कीले लाल लगते थे—जिन्हें देखकर इंग्लैण्ड का बड़ा दिन याद आ जाता था, वहाँ का बर्फ; आह्लाद और बच्चों की किल्लोल आदि—लेकिन फिर वे सहसा ऐसे नरम और साधारण बन जाते थे जैसे फाख्ता का सीना। कुछ पीले रंग थे जो मिलकर हरे रंग में बदल गये थे जो वसंत की नाईं सुगंधित और पहाड़ के सोते के पानी की नाईं पवित्र लग रहे थे। कौन बता सकता था कि इन फलों को देखकर किस चीज़ की कल्पना होती थी? वे हेस्परिडेस के एक पोलिनेशियन बाग़ के फल थे। उनमें कुछ विचित्र सजीवता मौजूद थी जैसे वे संसार की उस अन्धकारमय अवस्था में बनाये गये हों जबकि चीज़ों का अपरिवर्तित और निश्चित रूप नहीं था। उनका अतिशय बाहुल्य था। वे अयनवृत्तीय सुगन्धों से भरपूर थे। उनमें अपनी एक उत्कण्ठा-विशेष विद्यमान थी। वह एक जादुई फल था जिसे चखने से भगवान जाने कल्पना में कौन-कौन से रहस्यमय स्थान तथा आत्मा के आंतरिक भेद आ जाते थे। वे मलिन तथा भयानक थे और शायद उन्हें खाने के पश्चात मनुष्य या तो हिंस्र जंतु बन जाता या भगवान बन जाता। जो कुछ स्वस्थ तथा स्वाभाविक था, जो कुछ सुखद सम्बन्धों और साधारण मनुष्यों के साधारण सुखों से सम्बन्ध रखता है उन चित्रों में उसका कहीं नाम न था; फिर भी उनमें एक डरावना आकर्षण था और भले-बुरे के ज्ञान के वृक्ष पर लगे हुए फल की भाँति उनमें अज्ञात की भयंकर सम्भावनाएँ भरी हुई थीं।

आख़िरकार मैंने अपनी नज़रें वहाँ से हटाईं। मैंने महसूस किया

स्ट्रिकलैण्ड ने अपना रहस्य क़ब्र में ही रख लिया।

"देखो मेरे मित्र रेने," मदाम कोट्रास की बुलंद उल्लसित आवाज़ आई, "आप लोग इतनी देर से यहाँ क्या कर रहे हैं ? यह लीजिए।"

"इन महाशय से पूछिए क्या क्विक्विना दुबोने का एक ग्लास पियेंगे क्या।"

"बड़ी खुशी से मदाम," मैंने बाहर बरामदे में जाते हुए कहा।

मेरा जादू टूट चुका था।

५८

मेरे टाहिटी से प्रस्थान की घड़ी आ पहुँची। द्वीप के धार्मिक रिवाज के अनुसार जिन लोगों से मेरा सम्पर्क रहा था उन्होंने मुझे उपहार दिये—नारियल के पत्तों से बनी टोकरियाँ, पाण्डेनस की चटाइयाँ, पंखे ; और टियारे ने मुझे दो हीरे दिये और अमरूद के मुरब्बों के जो उसने स्वयं अपने मोटे-मोटे हाथों से तैयार किये थे तीन घड़े दिये। जब डाक जहाज़ ने जो वेलिंग्टन से सांफ्रांसिस्को जाते हुए चौबीस घण्टे के लिए वहाँ रुकता था, मुसाफिरों को सवार होने के लिए सावधान करते हुए सीटी दी तो टियारे ने मुझे अपने विशाल वक्ष से चिपटा लिया और भींचा ; मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक लहरदार समुद्र में डूब गया हूँ और फिर उसने अपने लाल होठों को मेरे होंठों पर रखकर दबाया उसकी आँखों में आँसू निकल आये और जब हमारा जहाज भाप

छोड़ता हुआ झील से निकला और फिर घूमता हुआ चट्टानों से बचता हुआ विशाल सागर में प्रविष्ट हुआ तो एक खास क़िस्म की उदासी ने मुझे आ घेरा। हवा अब भी उस भूमि की सुखद सुगन्धों से महक रही थी। टाहिटी बहुत दूर स्थित है और मैं जानता था कि अब मैं उसे कभी न देख सकूँगा। मेरे जीवन का एक अध्याय समाप्त हो चुका था और अब मुझे मृत्यु समीपतर दिखाई देने लगी थी।

महीने से कुछ दिन ऊपर हुए होंगे कि मैं लन्दन पहुँच गया। और बहुत ही जरूरी काम जो मेरे जिम्मे थे और फौरी होने चाहिए थे मैंने कर लिये क्योंकि मैंने खयाल किया कि श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड मुझसे जरूर पूछेगी कि मेरे पति के बारे में आपने क्या सुना। चुनांचे मैंने एक खत लिखा। मैं युद्ध से भी कई वर्ष पहले तक उनसे न मिल सका था और मुझे उनका पता टेलिफोन डायरे-क्टरी में देखना पड़ा। उन्होंने मुझसे मिलने का वक्त तै किया और मैं उनसे कैम्पडन हिल पर उनके छोटे-से सुन्दर मकान में जहाँ वह अब रहती थीं, मिलने के लिए गया। अब वह लगभग साठ वर्ष की हो चुकी थीं लेकिन चूँकि उन्होंने अपने शरीर को एहतियात से रखा था इसलिए वे अधिक से अधिक पचास की लगती थीं। उनका चेहरा पतला था और उस पर अभी झुर्रियां बहुत कम पड़ी थीं और जिसे देख कर यह महसूस होता था अपनी जवानी में यह स्त्री कहीं सुन्दर रही होगी यद्यपि वास्तव में ऐसा नहीं था। उनके बाल जो अभी तक सफेद नहीं हुए थे बड़ी खूबसूरती से सजाये गये थे और उनका काला गाउन उस समय के प्रचलन के अनुकूल ही था। मुझे याद आया कि मैंने सुन रखा था कि उनकी बहन श्रीमती मैकएण्ड्र्यू कोई दो-तीन वर्ष पूर्व जब विधवा हो गईं तो उन्होंने अपनी सम्पत्ति श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड को दे दी। और घर की बाहरी टीमटाम और घर की सुन्दर नौकरानी को जिसने दरवाजा खोला, देख कर मैंने नतीजा निकाला कि उन्होंने अच्छी खासी रक़म दी होगी ताकि विधवा सुख से जीवन-यापन कर सके।

जब मैं उनके ड्राइंग रूम में दाखिल हुआ तो श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड का कोई मुलाक़ाती वहाँ बैठा हुआ था और जब मैंने उसके बारे में जान लिया कि वह कौन था तो मैंने यह भी अनुमान लगा लिया कि उन्होंने उसकी मौजूदगी में मुझे किसी मक़सद से ही बुलाया था। वह मुलाक़ाती वान बुशे टेलर नामक एक अमरीकी था और श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने उसकी ओर एक सुन्दर मुस्कान से देखते और क्षमा करते हुए उसके बारे में मुझे विवरण बताया।

"आपतो जानते ही हैं कि हम अंग्रेज़ कितने अज्ञान होते हैं। क्षमा कीजिएगा अगर मुझे इन्हें समझाना ज़रूरी पड़ जाय तो।" फिर वह मुझसे मुख़ातिब हुई, "मि० वान बुशे टेलर एक प्रतिष्ठित अमरीकी आलोचक हैं। यदि आपने इनकी पुस्तक नहीं पढ़ी है तो आपकी शिक्षा बड़ी लज्जाजनक रूप से कम हुई है और बेहतर है कि आप अपनी इस भूल को फ़ौरन ठीक करलें। यह चार्ली के बारे में कुछ लिख रहे हैं और मुझसे कुछ मालूमात करने के लिए यहाँ पधारे हैं।"

मि० वान बुशे टेलर बहुत ही पतला-दुबला व्यक्ति था जिसका बड़ा-सा गंजा सर था जो बहुत चमकता था और उसकी मेहराब रूपी विशाल खोपड़ी के नीचे जो पीली थी और जिस पर गहरी झाइयाँ पड़ी हुई थीं वह बहुत छोटा लगता था। वह शांत स्वभावी और अतिशय विनम्र था। उसके उच्चारण प्रकट करते थे कि वह न्यू इंग्लैण्ड का निवासी है और उसके व्यवहार में कुछ ऐसा रक्तविहीन निरुत्साह जिसके कारण मुझे उससे यह पूछना पड़ा कि वह चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड पर क्यों कुछ लिखना चाहता था। श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने जिस शीलता से अपने पति का नाम लिया था उससे कुछ मेरे शरीर में गुदगुदी-सी हुई और जब वे दोनों बातें करने लगे तो मैंने उस कमरे का जायज़ा लिया जिसमें हम लोग बैठे हुए थे। श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ज़माने की रफ्तार के साथ चलती थीं। मोरिस पेपर्स, एरुन्डेल प्रिन्टस वग़ैरह जो एशले गार्डन में उनके मकान की सजावट बने हुए थे, सब समय के साथ-साथ लुप्त हो गये, सारा कमरा

विविध रंगों से भरा पड़ा था और मैंने अनुमान लगाया कि वे विविध रंग जो आधुनिक फैशन ने उन पर लाद दिये थे कहीं दक्षिणी सागर के द्वीप में रहने वाले उस बेचारे चित्रकार के स्वप्नों के कारण तो उन्हें नहीं भाये थे। उन्होंने मुझे स्वयं उसका उत्तर दिया।

"आपके तकिये कितने सुन्दर हैं!" मि० वान बुशे टेलर ने, कहा।

"क्या आपको पसन्द हैं?" उन्होंने मुस्कराते हुए कहा। "बाक्स्ट हैं ये आप जानते हैं।"

और अब भी दीवारों पर स्ट्रिकलैण्ड के सर्वश्रेष्ठ चित्रों की आवृत्तियाँ लगी हुई थीं जो बर्लिन के एक प्रकाशक ने साहस करके छाप लिये थे।

"आप मेरे चित्रों को देख रहे हैं," उन्होंने मेरी ओर देखकर कहा। "असल चित्र तो मेरी गुंजाइश से बाहर थे लेकिन मैं इन्हीं को हासिल करके संतुष्ट हो गई। प्रकाशक ने स्वयं मुझे ये भेज दिये। मेरे लिए सांत्वना के साधन हैं।"

"इन्हें अपने यहाँ रखना आप के लिए बड़ा सुखद होगा," मि० वान बुशे टेलर ने कहा।

"जी हाँ; ये हैं भी तो बड़ी सजावट वाले।"

"यही मेरा पक्का विश्वास है," मि० वान बुशे टेलर ने कहा। "महान् कलाकृति सर्वदा सजावट वाली होती है।"

उनकी आँखें एक नग्न स्त्री के चित्र पर पड़ गईं जो अपने बच्चे को दूध पिला रही है और दूसरी ओर एक लड़की—फूल लिये उस बच्चे पर झुकी हुई है और उनके ऊपर एक बुढ़िया फूस अपना झुर्रियों भरा चेहरा लिये खड़ी हुई है। स्ट्रिकलैण्ड की पवित्र परिवार की यही कल्पना थी। मुझे संदेह हुआ कि जिस घर में वे आकृतियाँ बनी थीं वह ट्रावाओ के ऊपर स्थित उसका घर था और वह स्त्री तथा बच्चा अटा और उसका पहला लड़का था। मैंने अपने दिल से पूछा कि क्या श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड को असलियत के लेश-मात्र का भी ज्ञान है।

वार्तालाप आरम्भ हुआ और मैं मि० वान बुशे टेलर की उस चाल पर

आश्चर्यचकित हुआ जिसके द्वारा उसने वे सब विषय नजर अन्दाज कर दिये जो जरा भी परेशानकुन न होते और साथ ही श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड की युक्ति पर भी मैं दंग रह गया जिसके द्वारा उन्होंने बिना एक भी असत्य शब्द कहे यह प्रकट किया कि मेरे अपने पति से सर्वदा बहुत अच्छे सम्बन्ध रहे थे। अंततः मि० बुशे टेलर जाने के लिए उठा। अपनी मेजबान से हाथ मिलाते हुए उसने बहुत विनम्र किन्तु आवश्यकता से अधिक लंबा धन्यवाद-भाषण दिया और वहाँ से चला गया।

"कहीं उन्होंने आपको बोर तो नहीं किया," उन्होंने दरवाजा बंद करते हुए कहा। "हालाँकि कभी-कभी मुझे इससे झुँझलाहट तो होती है किन्तु मैं सोचती हूँ चार्ली के बारे जो भी सूचना मैं लोगों को दे सकूँ अच्छी बात है। एक मेधावी की पत्नी होने के नाते मेरी एक निश्चित जिम्मेदारी भी तो है।

फिर उन्होंने मुझे अपनी उन्हीं आँखों से देखा जो अब भी उतनी ही स्पष्ट, उतनी ही हमदर्द थीं जितनी बीस वर्ष पहले थीं। मुझे खयाल हुआ कहीं वह मुझे बेवकूफ तो नहीं बना रहीं।

"मालूम होता है आपने अपना व्यवसाय खत्म कर दिया ?" मैंने कहा।

"जी हाँ, उन्होंने प्रफुल्ल हो कहा। "मैं तो उसे यों ही शौक़ के मारे चला रही थी और कोई फ़ायदे की वजह से नहीं, फिर मेरे बच्चों ने भी मुझे उसे बेचने पर मजबूर किया। वे समझे मैं उस पर अपनी शक्ति नष्ट कर रही हूँ।"

मैं भाँप गया कि अब श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड अपने उन दिनों को भूल गई थीं जब उन्होंने अपनी जीविका अर्जित करने के लिए काम किया था और शायद अब उनकी नजर में वह एक शर्मनाक बात थी। अब वह उन भली स्त्रियों में से थीं जो दूसरों की संपत्ति पर ऐश करना शिष्टता तथा शुभ समझते हैं।

"वे आज कल यहीं हैं," उन्होंने कहा, "मैंने सोचा कि वे भी अपने पिता के बारे में आपसे कुछ सुनने के इच्छुक होंगे इसलिए उन्हें बुला लिया। आपको रॉबर्ट तो याद होगा न ? मुझे आपको बताते हुए खुशी हो रही है कि उसकी मिलिट्री क्रॉस के लिए सिफ़ारिश की गई है।"

वह दरवाजे पर गई और उन्हें पुकारा। और एक लम्बा-चौड़ा नौजवान खाकी पोशाक पहने अंदर आया। वह सुन्दर था लेकिन कुछ भारी होगया था, लेकिन उसकी आँखों में अब भी वही चमक थी जो मैंने तब देखी थी जब वह लड़का ही था। उसके साथ ही उसकी बहन भी आई। अब उसकी वही उम्र थी जो उस समय उसकी मा की थी जब पहले-पहल मैंने उन्हें देखा था और उसकी सूरत-शक्ल में भी वह उन्हीं पर थी। उसे देखकर भी यही आभास होता था कि जब वह बच्ची रही होगी तो अधिक सुन्दर होगी हालाँकि ऐसा नहीं था।

"मेरे ख्याल से आपको ये दोनों बिल्कुल याद नहीं हैं," श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड ने गर्व व मुस्कान से कहा। "मेरी पुत्री अब श्रीमती रोनैल्डसन है। इसके पति गनर्स में मेजर हैं।"

"वह तो कहना चाहिए पक्के सैनिक हैं," श्रीमती रोनैल्डसन खुश हो बोलीं। "यही कारण है कि वह अभी तक सिर्फ मेजर हैं।"

मुझे अपना वह पुराना अनुमान याद आगया कि वह जरूर किसी सैनिक से विवाह करेगी। वह अवश्यम्भावी था। एक सैनिक की पत्नी की तमाम विशेषताएँ उसमें मौजूद थीं। वह बड़ा सभ्य तथा विनीत था लेकिन वह अपनी वह पृथकता न छिपा सकी और दूसरों से भिन्न लगती थी। रॉबर्ट बड़ा प्रफुल्ल था।

"यह बड़े सौभाग्य की बात है कि आप वापस आये और मैं लंदन में ही हूँ," उसने कहा। "मेरी अब सिर्फ़ तीन दिन की छुट्टी बाक़ी है।"

"यह तो बस वापस जाने को बेचैन है," उसकी मा ने कहा।

"ख़ैर मुझे यह मानने में कोई शर्म नहीं है कि मोर्चे पर मेरा समय बड़ा अच्छा कटता है। मैंने वहाँ बहुत से मित्र बना लिये हैं। वहाँ का जीवन बड़ा सुखद है। यह सही है कि युद्ध भयंकर तथा नाशकारी होता है लेकिन साथ ही यह भी मानना पड़ेगा कि वह मनुष्य में सर्वश्रेष्ठ खूबियाँ पैदा करता है।"

फिर मैंने उन्हें वह सब बताया जो चार्ल्स स्ट्रिकलैण्ड के बारे में मैंने टाहिटी में सुना था। अटा और उसके बच्चे की बाबत कहना मैंने अनावश्यक समझा लेकिन शेष सब बातें बहुत ही सच्चाई और सफाई के साथ मैंने उन्हें बता दीं।

जब मैंने उन्हें उसकी दु:खद मृत्यु के बारे में बताया तो सहसा मेरा कण्ठ रुँध गया। दो-तीन मिनट तक हम सब खामोश रहे। फिर रॉबर्ट स्ट्रिकलैण्ड ने माचिस की तीली घिसी और सिगरेट सुलगाया।

"भगवान् की चक्कियाँ धीरे-धीरे पीसती हैं लेकिन पीसती बहुत बारीक हैं," उसने कुछ प्रभावशाली ढंग से कहा।

श्रीमती स्ट्रिकलैण्ड तथा श्रीमती रौनेल्डसन ने किंचित पवित्र भाव से नीचे की ओर देखा जिससे मेरा दृढ़ विश्वास है, यह प्रकट हुआ कि उन्होंने रॉबर्ट के वाक्य को बाइबिल का उद्धरण समझा। असल में मुझे भी विश्वास होगया कि रॉबर्ट स्ट्रिकलैण्ड स्वयं भी इसी भ्रम का शिकार था। मैं नहीं जानता सहसा मुझे स्ट्रिकलैण्ड के अटा से पैदा हुए बच्चे की बातें याद आगई। लोगों ने मुझे बताया था कि वह बड़ा प्रफुल्ल और एकचित्त नवयुवक है। मैंने अपने मानसिक नेत्रों से उसे उस जहाज पर काम करते हुए देखा उसने डुँगारीस के अतिरिक्त कुछ नहीं पहना था; और रात को जब हल्की हवा में जहाज चलता था और मल्लाह ऊपरी डेक पर जमा हो जाते थे और जब जहाज का कप्तान और दूसरे अधिकारी डेक पर बिछी कुर्सियों में बठे अपने पाइप पी रहे थे तो मैंने उसे एक दूसरे लड़के के साथ नाचते हुए—कंसर्टिना के संगीत पर बेतहाशा नाचते हुए देखा। ऊपर नीला आकाश फैला हुआ था जिसमें तारे छिटक रहे थे और चारों ओर प्रशांत महासागर की निर्जनता विद्यमान थी।

बाइबिल का एक उद्धरण मेरे होठों तक आया पर मैंने जुबान रोक ली क्योंकि मैं जानता हूँ कि जब आम लोग उनके भण्डार में से कुछ चुरा लेते हैं तो वे उन्हें ईश्वर-निदंक क़रार देते हैं। मेरे चाचा हेनरी जो बीस वर्ष तक व्हिस्टेबल के नगर-पादरी रहे थे ऐसे मौक़ों पर कहा करते थे कि अपने मतलब के लिए ही शैतान भी धर्मग्रंथों के उद्धरण पेश कर सकता है। उसे वे दिन याद आये जब आप एक शिलिंग में १२ शाही-देशी निवासियों को खरीद सकते थे।